❀ श्री सद्गुरुचरण कमलेभ्यो नमः ❀

❀ श्रीमिथिला विहारिणी विहारिणौ बिजयतेतराम् ❀

❀ श्रीमन्मारुत नन्दनाय नमः ❀

❀ सर्वेश्वर्यैं श्री मत्यै चन्द्रकलायै नमः ❀

❀ सर्वेश्वर्यैं श्रीमैत्यै चारुशीलायै नमः ❀

श्री मिथिला मधुर विलास

संकलनकर्ता—

श्री वैदेही वल्लभशरण जी

प्रकाशक :—

महान्त-श्री जगदीश जी महाराज तथा
श्री वैदेही वल्लभ शरण जी

विक्रमीय सम्वत् २०५२ सन् १९९६ बसन्त पंचमी

प्रथम संस्करण १००० प्रति] [न्यौछावर ३०/-

प्रकाशक :—

महान्त—श्री जगदीश जी महाराज तथा

श्री वैदेही वल्लभशरण जी

विक्रमीय सम्वत् २०५२, सन १९९६ बसंत पञ्चमी

प्रथम संस्करण १००० प्रति

न्यौछावर ३०/—

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान :—

१— श्री हनुमानबाग, श्री वासुदेवघाट
श्रीअयोध्याजी (उ० प्र०)

२— श्री वैदेहीशरण श्री अवध वस्त्रालय
निकट तुलसी उद्यान, नयाघाट अयोध्या

३— श्री रसमोद कुञ्ज
ऋणमोचनघाट, श्रीअयोध्याजी

४— श्री तपेश्वर जी पुजारी श्री जानकी महल
श्री जनकपुर धाम (विहार)

५— श्री महन्त अनन्तराम जी
श्री रामानन्द आश्रम दुलहा भगवान श्रीजनकपुर धाम

मुद्रक :— मनीराम प्रिंटिंग प्रेस शास्त्रीनगर अयोध्या

❀ श्री सीतारामाभ्यां नमः ❀

* दो शब्द *

बड़े हर्ष की बात है कि श्रीपूज्य नाम, रूप, लीला, धाम, श्री युगल मन रञ्जन लाल जू की नित्य लीला में लीन रहने वाले श्री वैदेहीबल्लभ शरण जी श्री हनुमान बाग श्री अयोध्या जी, के अथक परिश्रम से श्री मिथिला मधुर बिलास, प्रेमी सन्त भक्तों के समक्ष प्रस्तुत है। श्री महाराज जी की बहुत दिनों से यह अभिलाषा थी कि श्री किशोरी जी के प्राकट्य से लेकर बाललीला, विवाह विदाई पुनः श्री मिथिला जी आगमन और श्री युगल सरकार का श्री मिथिला जी में नित्य विहार, नित्य उत्सव मधुर मय विस्तार से वर्णन हो जिसमें ऐसा एक ग्रन्थ श्री युगल सरकार की कृपा से प्रेमी भक्तों के लिये तैयार होता तो प्रेमियों को एक विशेष रस सम्पत्ति प्राप्त होती। सो श्री सन्त सद्गुरुओं की, श्रीयुगल सरकार की दया से आज यह ग्रन्थ तैयार हुआ। इसमें श्री किशोरी जी का प्राकट्य, बाललीला, श्री विश्वामित्र जी का श्री अवध आगमन, पुनः श्री रामलाल जी एवं श्री लषनलाल जी को लेकर यज्ञ रक्षा, श्री मिथिला जी पधारना, श्री मिथिलेश जी महाराज का स्वागत, नगर दर्शन फुलवारी, धनुष यज्ञ, श्री अयोध्या जी दूत भेजना, श्री चक्रवर्ती जी महाराज का बरात लेकर श्री

मिथिला जी पधारना, श्री विदेह जी का अगवानी सत्कार वर्णन, जनवासा में चारों भाइयों के विवाह का विचार विमर्श, निर्णय, विवाह प्रकरण, कलेवा, चौठारी, कोहवर, रहस्य, होली, आदि का प्रकरण विस्तार पूर्वक है। इससे रसिक प्रेमीजनों को आनन्द वर्धन होता रहेगा।

श्री कौशिल्या अम्बा जी श्री सुनयना अम्बा जी का मिलन, विदाई, वरात का अवध आगमन, परिछन, श्री चक्रवर्ती जी महाराज का श्री मिथिला जी पत्र भेजना, श्री लक्ष्मी निधि भइया जी का श्री अवध आगमन, श्री किशोरी जी का मिथिला आगमन, श्री किशोरी जी की श्री अम्बा जीं से वार्ता, श्री विदेह जी महाराज का श्री अवध पत्न भेजना, श्री सरकार एवं श्री लषनलाल जी का श्री मिथिला जी आगमन, स्वागत, होली, झूला, रास, षट् ऋतु विहार आदि बर्णन, श्री मिथिला जी में शाली, सरहजों के साथ हास्य विनोद, श्री विदेह जी महाराज एवं श्री सुनयना अम्बा जी का श्री सरकार का दुलार, प्यार, गोप कुमारियों का पत्र श्री अवध से श्री मिथिला जी सुग्गी का लाना। श्री भरतलाल जी का श्री मिथिला जी आगमन, श्री चारो भाइयों का श्री मिथिला जी में अनेक प्रकार के हास्य बिनोद आदि वर्णन है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में अनन्तानन्त विभूषित परमाचार्य रसिक सम्राट श्री श्री १००८ श्रीमद् स्वामि अग्रदेवाचार्य जी महाराज कृत ध्यान मञ्जरी से, श्री सूर किशोर जी महाराज

श्री जानकी महल जनकपुर धाम कृत श्री मिथिलाबिलास से, श्रीमद् गोस्वामि तुलसीदास जी महाराज कृत ग्रन्थों से, श्री कृपानिबास जी महाराज कृत श्री जानकी जन्म खंड से, श्री युगलप्रिया जी कृत श्री सिंगार रस रहस्य दीपिका से, श्री जनकराज किशोरी शरण जी महाराज (श्री रसिकअली जी) कृत श्री मिथिलानिवास से, श्री रामप्रिया शरण जी महाराज कृत श्री सीतायन जी से, श्री रसरङ्गमणी जी कृत श्री जानकी जशावली से, पूज्य श्री युगलानन्य शरण जी महाराज कृत श्री जानकी सनेह हुलास से श्री रघुराजसिंह जी कृत श्री राम स्वयंवर से, श्री नवलसिंह जी कृत श्री जानकी जन्म खण्ड से, श्री मिथिला बिवाह खंड से श्री जयरामदेव जी कृत श्री जानकी अवतार ग्रन्थ से, श्री रामनाथ प्रधान जी कृत राम कलेवा से, श्री बाल अली कृत नेह प्रकाश से श्री राम-सनेहीदास जी महाराज कृत श्री जानकी चरितामृत से श्री वसुनायक जी श्री सियारामशरण जी महाराज (श्री गुधरौली) कृत ग्रन्थों से श्री विदेहजाशरण जी महाराज कृत युगल बिभू-तिका प्रकाशिका से श्री शत्रुहनशरण जी महाराज (श्री रसिकान्ति लता जू) कृत ग्रन्थों से श्री अवधकिशोर दास जी महाराज कृत ग्रन्थों से, बिवाह मिथिला खंड साकेत खंड परिकर्ण वना के दिये थे लिखकर श्री रामहर्षणदास जी महा-राज कृत प्रेम रामायण मिथिला खंड से, श्री मन्नारायणदास जी महाराज भक्तमाली जी कृत ग्रन्थों से, और श्री पूर्वाचार्यो

के ग्रन्थों से संकलन कर क्रम बद्ध भावना मय ग्रन्थ तैयार किया गया है, जिसमें श्री किशोरी जी की मधुर लीलावों का विस्तार से वर्णन है । दूसरा विषय ग्रन्थ के प्रकाशन कार्य में सहायक पूज्य श्री रामसनेहीदास जी महाराज (श्री लता जी) श्री वैदेही शरण जी (भाविक) श्री रामाधार दास जी (मधुकर) श्री रामबल्लभा शरण जी (वेदान्ती) सन्त सेवा निष्ठ, परोपकार परायण श्री रामभजनदास जी (मधुकर) आदि सन्तों ने अपने अकथनीय परिश्रम से प्रेस कापी लिखने की कृपा की, मुझ दीन से श्री महाराज जी ने प्रेस कापी संशोधन कराने की कृपा की खेद की बात यह है कि गुप्तार घाट में रहने के कारण मैं पूरी सेवा नही कर सका श्री सीता-रामीय सेवा मन्दिर (गुजराती मन्दिर) नजर बाग श्री अयोध्या के श्री राम जी दास महाराज (श्री सखा जी) ने प्रूफ शोधन कार्य सन्पन्न किया है श्री महाराज सभी सन्तों के विशेष आभारी हैं । आशा है इस ग्रन्थ रस को रसिक प्रेमी-जन अवलोकन कर विशेष आनन्द को प्राप्त होंगे । अतएव प्रातः स्मरणीय पूज्य चरण दिवंगत रसिकाचार्य स्वामी श्री शत्रुहन शरण जी महाराज के श्री चरणों में हम सबों के कोटिशः नमन है । तच्चरण चञ्चरीक अवधेश वस्त्रालय वाले श्री वैदेही शरण जी (जानसठ) भी इस ग्रन्थ के प्रकाशन में असीम सहयोग के लिये धन्यवाद है । पुस्तक का समस्त कागज श्री राधेश्याम अग्रवाल गणेश पेपर डिट्रीब्यूटर वाले रिकाबगंज फैजाबाद से आया है । प्रूफ सोधन में जो त्रुटी हो गये हैं सो अशुद्धि-शुद्धि विवरण-पत्र कृपा कर सुधारलेंगे ।

रसिक महानुभावों का लघु अनुचर
सियाराम शरण

* विषय सूची *

क्र० विषय पृष्ठाङ्क

क्र० विषय पृष्ठाङ्क

* अशुद्धि शुद्धि पत्र *

पृ.सं.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	१४	सरिस	सरित
४	२१	महिमबृषम	महिषिबृषभ
५	३	लोमाई	लोभाई
५	२०	सुलिकललक	सुतिलक
७	१२	वरम	परम
१०	७	अपरिकर	सपरिकर
१३	१५	जावों	जीवों
१७	१२	नम	मम
१९	५	से वेषिकेके	को देखिके
१९	२०	सुभासिष	सुआशिस
२०	८	विवारि	विचारि
२५	१९	बरंबूहि	वरंब्रूहि
३२	५	मउन्जु	मंजु
३२	६	कउन्जु	कंजु
३३	५	सवैंश्वरी	सर्वेश्वरी
३३	९	छाई	जाई
३८	१६	छआाही	छवही
३८	१९	लट्ट	लट्टू
४०	४	रिजाइ	रिझाइ
४०	६	किशोर	किशोरी
४०	६	नृत्यपति	नृत्यति
४१	५	मनिभय	मनिमय

पृ.सं.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४४	४	जाल	जल
४४	४	अहबाई	अन्हवाई
४६	४	गुन आय	गुन गाय
४७	४	किलोल	विलोकत
५५	९	पति पाई	पद जाई
५९	११	षोडश	षोडस
६१	९	धरनी	घरनी
६५	१	ललहिं	ललिहिं
६४	३	कृसरान्न	सुअन्न
६६	१२	धनि	धुनि
६८	१६	माँति	भाँति
७०	८	कलरखराति	कला करतीं सुखकारी
७०	२२	विलकि	किलकि
७१	१	नराधिय	नराधिप
७१	१८	माल	भाल
७४	१	मैले ढौले	मिली भली
७७	१७	अस्थिर	स्थिर
७८	१८	खेत	खेल
७८	१६	यक	चक
८०	३	मिविला	मिथिला
८०	१०	मुति	मुनि

पृ०	पँक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८०	१३	वामिन	वासिन	११७	२०	कहुंरु	कहुँऊ
८३	१	वाकिा	वाटिका	११७	२०	त्रिसल्य	त्रिकाल्य
८७	१५	अवसंस	अवतंस	११६	४	भवहि	भवनहि
८८	१०	ढिब	ढिग	१२१	५	सिगर	सिगरे
९१	६	धरी	घरी	१२४	१२	मद	मन
९५	१५	अलदेली	अलबेली	१३१	७	नृणगण	नृपगण
९७	१	भयख	भयऊ	१३१	९	घरन	धरन
१०३	८	रसपुत	रसयुत	१३२	१	भूरि	मूरि
१०३	११	सिमिर	सुमिरि	१३२	६	धूप	धूम
१०४	५	सुण	सूप	१३६	१०	पीर	भीर
१०४	१०	समपि	समर्पि	१३९	९	बिदहे	विदेह
१०६	१६	मोह	मेह	१४३	१७	मुख	मष
१०७	११	सुमहु	सुनहु	१४४	१	सुन	सुत
१०८	१	शाठा	शाखा	१४४	११	तीरा	सारा
११०	२०	कृनज्ञ	कृतज्ञ	१४४	१९	सुनीना	सुनैना
११०	२१	अबति	अमित	१५०	११	समूरे	समूह
१११	१	श्वाम	श्याम	१५१	१९	लद्यौ	लह्यो
१११	२	पुति	पुनि	१५८	१	राजकुमको	राजकुमार
१११	१७	सिंहध्वनि	सिंह ठवनि	१५८	२	ध्रम नाई	भूमि बनाई
११२	४	नुर्महि	तुमहिं	१५८	३	निभिबँश	निमिवंश
११२	१८	बहत	बहुत	१६५	१९	लखत	लावत
११२	२१	कुंवषिन	कुंवरिन	१६६	१८	जलकी	जालकी
११३	६	उधरि टुम	उघरि तुम	१७२	१	पासे	यासे
११४	२	रोग	रोम	१७२	१८	विताई	विहाई
११४	७	कान्तधाम	कान्तिधाम	१७७	१९	फंज	कंज
११६	६	धसि	घसि				
११७	३	सुधर	सुघर				

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८९	११	जोहू	जूही
१९०	१	बिधन	बिघन
१९२	७	उधारी	उघारी
१९२	८	गढ़े	खड़े
१९४	६	स्नवस	स्वबस
१९७	१३	लाड़ाली	लाड़िली
१९८	४	बड़गनानी	बडि जानी
१९९	१३	लवलगि	अबलगि
२०९	४	नैदेद	नैवेद
२०९	५	ढ़ाठी	ठाढ़ी
२१०	१२	मुकृत	सुकृत
२१०	१९	सोहन	सोहत
२११	४	भके	भने
२१६	२	भाँयकहिमैंन धारो	भाथ कर सें न धारौं
२१६	१०	सूर	सूर्य
२१७	१०	में	मेलें
२१७	१२	सुहावब	सुहावन
२१८	३	कंकद	कंकन
२१९	१८	दाय	दाप
२२०	७	मोल	भाल
२२१	२१	पहिरहैं	पहिरइहैं
२२४	१४	दमलि	दमकि
२२५	१७	दासा	दीसा
२३०	१	नअथोरी	अथोरी
२३०	१५	कुज	कंज
२३०	१८	दृगलजा	दृगलाजा
२३१	२	सबी	सखी
२३२	१२	कहँ	कहु
२३३	४	धरके	घरके
२३४	१	मूषित	भूषित
२३५	१	आयुध	आयसु
२४०	१०	घाटा	ठाटा
२४३	६	बिबभ्राता	दोउ भ्राता
२४४	७	गये	गई
२४४	१३	द्रतहिं	द्रुतहिं
२४४	१४	वत	भट
२४४	१९	बधुवर	बंधुबर
२४६	१५	तुति	स्तुति
२४८	२	नाना	नाता
२४९	४	निस्चय	निश्चय
२४९	६	भपा	भूपा
२५०	४	वलारू	बजारू
२५०	११	जूय	भूप
२५०	१३	कतहँ	कतहुँ
२५५	१२	मधवाना	मघवाना
२५५	१५	छपल	छयल
२५६	१	हम	हेम
२५६	३	ध्वसी	ध्वंसी
२५६	७	शत्रुजाय	शत्रुंज्य
२५६	१२	स्पंदन	स्यंदन

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५७	३	स्पंदन	स्यंदन
२५८	१५	सुरजा	मुरजा
२६२	१	वितुलपतके	विपुलपताके
२६३	१२	मृगभाल	मृगमाल
२६३	१३	सर्षय	सर्पय
२६६	१६	सुलम	सुलभ
२६८	१४	अवधेघा	अवधेसा
२६८	२२	राजाकुक्कार	राजाकुमार
२६९	८	बिपेह	विदेह
२७०	२	गरजः	गइ जब
२७०	८	बिये	किये
२७१	७	सुकुमार	सुकुमारी
२७२	१	घृति	धृति
२७३	१९	तुतंता	तुरंता
२७७	१४	धुलाई	बुलाई
२७९	१	ह्लासविासा	हासविलासा
२८०	१	मिथिलापधि	मिथिलाधिप
२८१	६	प्रभु	भू
२८१	१४	तीनपास	तुमपास
२८६	१९	भुष	भूप
२८७	३	कीशिक	कौशिकै
२८७	८		पोस
२८७	११	तन	तब
२८८	१	कठित	कठिन
२९०	१५	माक्यो	माच्यो
२९२	८	ममाजा	समाजा
२९२	२१	भुजारा	भुआरा
२९४	४	मिविलापति	मिथिलापति
२९४	१६	मुसाहिब धनिबादा	सुसाहिब धनबादा
२९८	१३	लोसू	लोगू
२९९	४	बणिष्ठ	वशिष्ठ
३००	५	स्पंदन	स्यंदन
३०१	११	शुयरा	सुयस
३०४	८	वांज	कंज
३०५	३	राम	राउ
३०५	६	मधवान	मधवाना
३०५	२०	अनहन	अगहन
३०७	७	उभगहीं	उमगहीं
३१०	१३	खंख	खंभ
३११	१५	ततु गुफित	तंतु गुँफित
३१२	१३	देवकोक	देवलोक
३१२	२१	सुअरध	सुअरघ
३१४	७	कति	अति
३१७	१९	दामिनि	यामिनि
३१८	१०	ब्रह्मदासथैल	ब्रह्मदारुथल
३१८	१६	सवाद	संबाद
३२०	१९	सलक	सकल
३२१	१२	चेले	चले
३२४	४	ननसप्त	नवसप्त
३२८	८	अनुबिधु उजिअरी	जनुबिधु उजियारी

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२८	११	ध्रारि धरि	धीर धरि
३२८	२०	सुअँमगलहारी	अमंगल हारी
३३०	१२	गुरुवश घोरिन	रघवर घोरन
३३६	४	रिपुसून	रिपुसूदन
३३७	६	आर्घ्य	अर्घ
३३९	३	भोगा	भोमा
३३९	७	सुभोगे	सुभागे
३४०	१९	पदेउ	पढ़ेउ
३४०	२०	अरध	अरघ
३४१	६	सुर्गधन	सुगंधन
३४१	११	अरध भजनन	अरघ भाजनन
३४१	१९	दगन	दृगन
३४२	६	रथ छिवाई	रथछुवाई
३४४	३	खौरी	खौर
३४४	२०	पुरु	गुरु
३४७	२	घारी	धारी
३५५	५	सुदासना	शुदर्शना
३५८	५	मारे	हमारे
३५८	१६	समबली	समपली
३५९	९	लौहौं	लगइहौं
३६०	१२	कछ	कछु
३६५	९	इलह	दूलह
३६८	२	निज	निजदेवी
३६९	१३	जनक	कनक
३६९	२१	गगे	गये
३७०	४	चेतक	चेटक
३७१	५	यथा	जुवा
३७२	१	लाडनि	लाड़िलि
३७२	६	बोर	वोर
३७३	५	सिश्वावन	सिखावन
३७३	१२	सबावन	खवावन
३७३	१३	धुंधट	घुंघट
३७४	१	घरिलई	धरिलई
३७४	४	बाहु	खाहु
३७४	१४	उवलोकि	अवलोकि
३७५	१५	अघर	अधर
३७६	१३	घरी	धरी
३७७	११	भाकति	ताकति
३७७	१४	मुसुस्याति	मुसुक्याति
३७८	४	हे	हैं
३७९	२०	उठाइ	उढ़ाइ
३८०	५	महाला	मराला
३८०	१३	केतल	केवल
३८३	१२	पर्यक	पर्यंक
३८३	२०	भज्जन	मज्जन
३९३	२	सुघासे	सुधासे
३९३	४	जेनन	जेवन
३९९	४	वाबी	बाती
४०१	७	गाँढ़	गाँठ
४०२	९	गाँढ़ी	गाँठी
४०७	२	उड़ी	उठी

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४०७	१८	ललकोरे	ललकारैं
४१४	१६	मरि	भरि
४१६	६	राम	राज
४१६	११	राम	राज
४१६	२०	जाह	जहँ
४१७	१४	मुख	सुख
४१७	१६	श्रिभङ्गी	त्रिभंगी
४१७	१८	मोर	मौर
४१८	४	झलकैंमपन	अलकैंमदन
४१८	१०	नवधन	नवघन
४१८	२०	बिजापठ	विजायठ
४१८	२२	सदकादि	सनकादि
४१९	५	मामे	नामैं
४१९	१२	सुनन	सुनत
४२२	२	तबे	तव
४२४	२०	सुनीश सगलाजी	मुनीश सगलागी
४२५	१३	बधी	बँधी
४२५	१७	यसिन	ऋसिन
४२६	३	तुमने	तुम न
४२६	६	करो	करौं
४२९	४	तह	तहँ
४३२	११	सीत	सित
४३२	१६	तीसपरदान	तिस परदान
४३२	१७	सख	रव
४३३	१४	मत्त्र	मन्त्र
४३५	७	जोवक	जावक
४३५	८	कोप-२	कोपर
४३५	९	कजलाजति	कज्जलअति
४३५	२०	विजसेवा	निज सेवा
४३९	१६	मुतसम	सुतसम
४४४	२२	तुतर	तुरत
४५०	१८	धापनो	थापनो
४५१	१	सीते	सीं तैं
४५२	२	पावई	पवाई
४५७	३	मियिला	मिथिला
४५८	१२	अचर्य	आश्चर्य
४५९	१२	विचोरि	बिचार
४५९	१९	सुल	कुल
४६२	५	कुभकेतुहिं	कुशकेतुहिं
४६२	१४	युरनारि	पुरनारि
४६३	१३	सुगन	सगुन
४६५	५	क्षमेड	छमेउ
४६८	८	गुणगान	गुणगाथ
४६९	१८	परिछत	परिछन
४७०	११	मियिला	मिथिला
४७०	११	रोवस	रोवहि
४७३	१२	गुहग	ग्रहण
४७३	१८	कदेव	कदंब
४७७	१२	मदवति	मदबंति

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७८	७	महामीर	महाभीर
४७९	१	उतारिस खीजन	उतारि सखीजन
४८०	१०	ललनी	जननी
४८२	८	अर्ध्य	अर्घ
४८७	१२	नखानी	बखानी
४९१	१९	प्रबल मणीदिब्यं	प्रवाल मणि दिय
४९२	१२	मियिलेन्द्र	मिथिलेन्द्र
४९३	१	नव रतन बुझना	न बरनत आवा
४९३	२	जीना	जीवा
४९६	९	सुधी	सूँघि
४९८	९	अवधन्य	अवध या
४९८	११	लखहु	लावहु
५०१	४	झँकी	झाँकी
५०१	८	पुरतृन	पुर तिन
५०२	१	लोजधूरि	लोटतधुरि
५०२	२०	वररातिं	बतरातिं
५०७	१५	वियजुत	विनययुत
५०९	१४	पये अधरा	ये अधरा
५१०	१३	बपुआहा	पहं जहुँ
५१२	३	पवमानंद	परमानन्द
५१४	४	भूरि	मूरि
५१६	१२	ढुवाय	डुबाय
५१६	१४	विभूइति	विसूरति
५२०	१५	विरहि	विहरहिं
५२०	७	गतमुक्ता	गजमुक्ता
५२४	७	विलहि	विमलहि करि
५२५	१६	सुरी	जुरीं
५३१	९	दसर	दशरथ
५३३	५	कुमामी	कुमारी
५३५	३	रिद्धि	सिद्धि
५३५	६	नप्रीनी	नबीनी
५३६	४	असिमाथा	असिभाथा
५४१	७	समाग	सुभाग
५४४	५	उभोहे	उछाहैं
५४५	१२	करिकर	कटि कर
५४७	१९	रीतो	रीतिं
५४८	८	अझबाद	अहलाद
५४८	१०	सन्मायो	सन्मान्यो
५४८	१६	प्रयक	प्रयंक
५४९	७	पखेसर	पर बेसर
५४९	१३	क्षण क्षम	छण छण
५५१	१७	जोवन	जीवन
५५१	२०	ढ़िढाई	रिझाइ
५५३	१	पुलिन	पुलक
५५३	६	अजोर	जाकोनहि
५५४	१८	परजकअक	परजंक अंक
५६०	३	लिखावन	लिवावन

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५६२	२१	जीगी	जोगी
५६६	३	व्यंजन	व्यजन
५६७	३	कलभाष	कलमाष
५६८	५	भजन	भंजन
५६९	४	मुहाये	सुहाये
५७०	५	स्वार	द्वार
५७१	३	बिलविये	बिलमिये
५७१	१०	पयकेन	पयफेन
५७५	३	कीर	कीर
५७७	१०	होढ़ीनरति	होड़ीनटति
५७८	१	अयत	अयन
५७८	२	सयत	सयन
५७८	१३	वरबीर	
५७९	९	करणिन	वरणि न
५८४	४	अबहि	आवहि
५८५	२	विमन	विभुषन
५८५	९	अलकै अलकै	अलकैं अलकैं
५८७	१	भार	मार
५८७	१७	जनइ	जननी
५८८	४	धोरी	घोरी
५८८	११	रावव	राघव
५८८	१३	पंजर	पिंजर
५८८	१६	प्रतिबिबं	प्रतिबिंब
५९२	१४	तिपन	तियन
५९२	१६	त्मौ	त्यौं
५९३	२०	दूध	दो
५९६	२१	निनप्रति	दिन प्रति
५९७	४	मुभ	शुभ
५९७	१३	सुध्पावत	सुध्यावत
५९९	११	ससुझि	समुझि
५९९	१३	सेज	सेन
५९९	१६	पत्तिन	पाँतिन
६००	२०	धन	घन
६०१	१३	बलन	बचन
६०३	९	अबिधा कठकर	अविद्या कटककर
६०३	१९	मंच रंग	पंच रंग
६०७	४	वणि	वाणि
६११	५	प्रही	प्रती
६१७	१८	मौन	भौन
६१९	१८	चटै	चढ़ै
६२३	१३	मुकुर मधुरा:	मुकुरं मधुरम्

।। श्रीमते भगवते रामानन्दाचार्याय नमः ।।

卐 मंगलाचरण 卐

दोहा—श्रीमद्रामाननन्द गुरु, स्वयं राम भगवान।
नमो नित्य श्री पद--पदुम, देहु युगल बरदान।।
सहचरि श्री सर्वेश्वरी, चन्द्रकला सिय प्रान।
अग्राचारज बपु धरयो, महि मंडल पै आन।।
भाव भेद सम्बन्ध वर, प्रगटे सुचि रसकन्द।
अवगाहन सिय यस सुधा, रसिकन हित सुखवृन्द।।
सर्वोपरि सिय यश रसिक, सिय--सिय पीय उदार।
बन्दौं पुनि--पुनि अग्र श्री, रसिकन रस दातार।।
तव पद-पदुम पराग तजि, और ठौर नहिं मोर।
हरहु मोह तम शीश धरि, हिय महँ होय अँजोर।।
बन्दौं श्री मन्मारुती, चरन विशोक महान।
सजल नयन कर जोरि सिय, रामकथा कर पान।।
सिय दुलार वर बपु धरुयो, भक्त सुखद हित काम।
युगल चरित पीयूष निधि, मगन होत वसु याम।।
युगल नाम सेवा सुयश, गान निरत मति जासु।
सिय सहचरि परिकर युगल वन्दौं पद रज तासु।।
जिनकी कृपा कटाक्ष सों, सूझै युगल विहार।
युगल ललन घूमत फिरैं, तिन पीछे मनहार।।

॥ सोरठा ॥

सुमिरत मिथिला नाम, हटत अविद्या कटक कर।
भूमि तिलक अभिराम, जहँ प्रगटी सिय लाड़िली ॥
ध्यान धरत मन मोद, कंचन वन कमला सरित।
नित्य विलास विनोद, भूमि सकल मणि काँचनी ॥
जहाँ वसत निमि वंश वर, सदा एक रस रूप।
उचित अवस्था देखिये, लीला कलित अनूप ॥
सीरध्वज नृप राज वर, जनक राय जेहि नाम।
भये विदेही नेह वस, मूरति निरखत श्याम ॥

श्रीमिथिलाजी सप्त आवरण वर्णन

सप्त कोट चहुँ ओर सुहाये। नगर मध्य अति सुभग बनाये ॥
कलस कँगूरे ध्वजा पताके। अगनित सुन्दर नवरंग जाके ॥
अगनित द्वार बीर चहुँ ओरा। ठाढ़े सुन्दर नवल किशोरा ॥
भूषन वसन सुअंग सँवारे। धनुष आदि आयुध सब धारे ॥
द्वार द्वार प्रति नौवत बाजे। अमित सुसाज संग सुख साजे ॥
सप्त कोट के बाहर सुन्दर। सोहत चहुँदिशि चारि सरिस वर॥
प्रथम कोट नव खंड ऊँचाई। तेहि भीतर मनि भूमि सुहाई ॥
तहँ चहुँ ओर सुषोडस भूधर। नाम कहों जानव धातू कर ॥
दूसर कोट खँड ऊँचो दस। तेहि भीतर जो भूमि चहुँ दिस ॥
तहाँ महाँवन खोडस सुन्दर। जानब नाम कहौं वस्तू कर ॥

ग्यारह खंड ऊँच दुर्ग तीसर। चहुँ दिसि कनक भूमि तेहि भीतर
तहँ सुद्रन के भवन सुहाये। तामें जाति अनेक गनाये ।।
चौथ कोट द्वादस खँड ऊँचा । तेहि भीतर मधि भूमि सुनीचा।।
तहँ वयसन के भवन मनोहर । चहुँदिशि बने मनिन के सुन्दर।।
तेरह खंड ऊँच द्रुग पंचम । तेहि भीतर मनि भूमि मनोरम ।।
तहँ बजार चहुँ ओर सुचारी । वरनि न जाहि देखि मन हारी।।
चौक पचीस बजार मँझारी । चौबिस चहुँदिशि एक मधिभारी
चारहु मध्य भिन्न यहि भाँती । सोभा अमित वरनि नहिं जाती
चौदह खंड ऊँच दुर्ग षष्टम । तेहि भीतर अवनी सुन्दर सम ।।
तहँ छत्रिन के लसत अगारा । चहुँदिसि मनिमय सुभग अपारा
ऊँचो दस अरु पाँच सुखंडा । सप्त दुर्ग लषि हेहु अखंडा ।।
तेहि भीतर भू अति विस्तारा । तहँ ब्राह्मन के बने अगारा ।।
सप्त कोट तामे चहुँ ओरैं। बाहेर कंचन बनचित चोरैं ।।
तामधि सरिता चहुँदिसि चारी । अति पावनि बह सुन्दर वारी
मनि सोपान कमल षग भृँगा । नाव जहाज चलहिं बहु रंगा।।
पूरब दिशि सोभित श्रीकमला ।दक्षिन दिसा विमल छवि विमला
पश्चिम श्रीलक्ष्मणा सुहाई । उत्तर दूध मति मन भाई ।।
अब सुनु सातहु कोट की रचना । देखत बनै न आवै बचना ।।
ध्वजा पताक बहु कलस कँगूरे । चित्र विचित्र बने अतिरुरे ।।
बाहेर प्रथम कोट में सुन्दर । चहुँदिसि सोभित द्वार अमित वरै
सोरह खंड नभ लसति ऊँचाई । प्रति द्वारे नौबत धुनि छाई ।।
एक एक अक्षोहिनि वीरा । प्रति द्वारे चहुँदिसि रन धीरा ।।

सजग खड़े आयुध सब साजिक । धनुष बान असितोप सु आदिक
बसन विभूषन मनिमय धारे । नव किशोर मन मथ छवि हारे ॥
द्वारपाल सिंगार सँवारे । ठाढ़े कनक छडी कर धारे ॥
कुलिश कपाट लगे प्रति द्वारे । दुर्गम कल से जाहि उघारे ॥
सिय पिय चरित के चित्र अपारे । नवरंग मनि रचि कोट सँवारे ॥
कोट के बाहर कछुक दूरि पर । चहुँ दिसि चारि बजार मनोहर ॥
चहुँदिसि की सब वस्तु सुहाई । भिन्न चहुँ दिसि विकतसु आई ॥
तहँ ब्रह्मा को मन्दिर सोहैं । अति सुन्दर अनूप मन मोहैं ॥
उत्तर रमाकेलि बन सुन्दर । तहँ बद्रीनारायन मन्दिर ॥
दोहा:-यहि विधि चहुँदिसि दुर्ग के, बाहेर की छवि जोह ।
कंचन बन सरिहाट वर, देवालय गिरि सोह ॥
कोट के भीतर पुनि जो भूमी । तहँ जल नहरि चहूँदिसि घूमी ॥
अमित नहर कमला से आई । महल महल प्रति लगी सुहाई ॥
बाग कलप तरुकी दुहुँ तट पर । मनि सोपान स्वच्छ जलसुन्दर ॥
विविध रंग के पत्र फूलफल । दुहुँ तट डारि झुकी परसत जल ॥
बेदी बंगले कुँज बहु सुन्दर । तीर तीर देवन के मन्दिर ॥
विविध भाँति के चिरियाँ सुन्दर। बोलत कलरव मधुर मनोहर ॥
कुमुद कमल फूले बहु रंगा । गुँजत कलरव मंजुल भृंगा ॥
पूरब दिसि गजसाल बनो है । अगनित पीलवान गजसो है ।
दक्षिन दिसि हयसाल सुहाये । हय रंग जाति अनुगवहु छाये ॥
पश्चिम महिम वृषम गोसाला । अमित अनुग सेवहिं सब काला ।
तामधि यक यक सरसु मनोहर। चहुँ दिसि लगि वाटिका सुन्दर ॥

विविध जाति की फूल किआरी। नव रंग मनी सो बनी संवारी
तामधि छुटत सुगंध फुहारे। यक सत दुइ सत धार हजारे ।।
ऋतु बसंत नित रही लोमाई। सोभा अमित बरनि नहि जाई ।।
षोडस सर अब कहौं बखानी। नाम वस्तु से लेवसु जानी ।।
तिन्ह परवत पर यक यक तरुवर। छत्राकार विसाल मनोहर ।।
यक यक मंडप तिन्ह वृक्षन तर। बरनि न जाय बनाव मनोहर।।
यक सौ आठ द्वार प्रति मंडप। खंम सहस अनुपम प्रतिमंडप ।।
ध्वजा पताक कलस मनि जाला। फरस वितान सुवंदन माला।।
एक एक सिंहासन मंडप प्रति। चतुर खंड के सोह सुभग अति।।
ता मधि कुंज अनेक बनाये। कुंज कुँज प्रति पलँग विछाये ।।
तहँ विदेहजा दूलह विहरैं। अलिगन सहित महासुख भरैं ।।
दोहा-तेहि भीतर जो भूमि नव, चहुँ दिसि अति विस्तार।
षोडस भ्रातन्ह के तहँ, भिन्न भिन्न आगार ।।
चहुँ दिसि चारि मध्य रचना। देखत बनै न आवै बचना ।।
अपर कुँज चहुँ ओर सुअगनित। जूथेस्वरि तहँ बसत अलि-
नजुत ।।
पंचम मध्य लक्ष दल सुन्दर। मध्य करनिका सोह मनोहर ।।
मध्य व्याह को माडव कुँजा। बरनि न जाय नवल छवि पुंजा।।
नवल सिंगार अमित सखि कीन्हे। चहुँ दिसि खड़ी सुसेवा लीन्हे।।
दोहा-चित्रकूट वृन्दा विपिन, पर नारायन धाम।
मिथिलापुर चौथा वरनि, भूमि सुलिक ललक ललाम ।।
जनक राय अरु रानि सुनयना। शोभा खानि महा सुख अयना।।

जगत विदित जिनकी प्रभुताई। दम्पति को यश वेद न गाई॥
तिरहुत देश जनकपुर धामा। तहँ दम्पति राजत अभिरामा॥
धर्मपाल सबही विधि साधू। सीय चरण अनुराग अगाधू॥
धर्मराज नय अरु परमारथ। कोउ न जनक सम जान जथारथ
ब्रह्म विचार निपुन महिपाला। निजानन्द में रह सब काला।
जिनकी महिमा वरहि न जाई। श्रुति पुराण सब बहुबिधि गाई
सतचित आनन्दधाम जनकपुर।जेहिध्यावत विधिहरिहर सबसुर
मणि मय भूमि धाम सब सोहे। रचना सकल मुनिन मन मोहे
हय गज रथ संकुल सब काला। अमित मृगन की राजत माला
कोउ चतुर्दिशि उपवन राजे। ऋतु वसन्त तहँ निशिदिन भ्राजे
फुलन भार ते डार भूमिगत। मनहु पथिक हित अति उदारमत
विविध कुसुम वृक्षावलिसोहे। छूटि सुगन्ध दिशानके पोहे॥
नगर नारि नर अति छवि खानी। जाहि सिहात रमा ब्रह्मानी॥
सब सुधर्म सब नीति परायन। निशिदिन पढ़त रहत सीतायन
कोइ कहुँ पक्षी ललित पढ़ावें। विमल सियायश नितहि सिषावें
जनकलली कहु जनक दुलारी। रानि सुनयना की अति प्यारी
बहुरि कहहु छबिनिधि गुणखानी। चन्द्रमुखी दामिनि दुतिहानी
कहु लाड़िली पद्म इव लोचनि। प्रीति सागरी शोच विमोचनि
अलवेली पुनि राजकुमारी। कहु निमि कुल की पावनिकारी॥

दोहा

अस कोऊ नहिं तहँ देखियत, मणि भूषण जेहि नाहिं।
नखशिष सब मनहरण छबि, लखि रति काम लजाहिं॥

कल्प वृक्षनहिं देखिये, अस मन्दिर कोउ नाहि।
घर-घर कामद गाय हैं, पूरण सुख दरशाहि ॥
असनर नर नारी कोउ नहीं जो न करत अचार।
सब सुधर्म में चलत हैं, क्षण क्षण विमल विचार ॥
श्री कमला जहँ बहति हें, अतिहिं विमल वर वारि।
ब्रह्मादिक सुर चकित हैं, देखि विभूति अपारि ॥
रत्न मणिन के घाट सब, बँधी महा छबि देत।
कमल चर्तुविधि सोहअति, उड़त भ्रमर रस लेत ॥
अमित नाव बहु मणिन की, जरित महा छबि ऐन।
ध्यज पताक युतलसत सो, किमि कहे वैन अनैन ॥
डोरि लाल अरु श्वेत शुचि, हरित नील अरु पीत।
केवट कामहुँ ते अधिक, सुन्दर वरम विनीत ॥
किंकिनि कलरव करत हैं, डांड़िन लसत अनूप।
को कबि छबि तेहि कहि सके, जेहि पर विहरत भूप ॥
जल कुक्कुट अरु हंस बहु, मीन लसत जल माँहँ।
घाट उपर अति मन हरण, कल्प वृक्ष की छाँह ॥
अमित निकेतन ते लसत, कमला पुलिन अनूप।
फिरत चतुर्दिशि नारि नर, सब रति काम सरूप ॥
राज दुन्दुभी बजत हैं, राजद्वार छवि अयन।
धन्य सो नर अरुनारि है, जे निरखत भरि नयन ॥
भूप भीढ़ निशि दिन रहत, राज महल के द्वार।
मागध बन्दी नर अमित, विरद करत उच्चार ॥

अमित बजाज सराफ के, लसत दुकान अपार।
वस्तु विना गथ पाइये, देत न लावत वार ॥
अस कोउ नहिं जो धन हरत, पक्की जुक्ति बनाइ।
बरु आपन निधि देते हैं, जो चाहे सो पाइ ॥
देश देश की वस्तु सब, देश देश के लोग।
तिनकी अमित दो कान हैं, सब विधि वरणो जोग ॥

चौपाई

सब विधिपुरी मनोहर दरसे। सकल सिद्धि प्रद तेहि जो परसे।
तहाँ जनक बहु भाइ सहीता। करत राज सु अखंड पुनीता ॥
सब दिशिके ऋषि नायक आवहिं। देषिपुरी विरागविसरावहिं।
करहिं जनक नृप सो संवादा ।वचनामृत सुनि-सुनि अहलादा॥
सब ऋषि मुनि सत संगति पाई।तृप्ति होइ पुनि करहि बड़ाई।
अमित दान दिन प्रति नृप देहीं। सादर विप्र बन्दी जन लेहीं॥
जनकरायकी प्रिय महारानी। नाम सुनयना छबि गुणखानी।
सुवृति अनपति वर्तन माही। जनक रानि सम दूसर नाहीं ॥
पति अनुकूल सदा रहती हैं। जोइ अज्ञा सेवा गहती हैं।
परम मनोहर चरित अपारा। करति सुनयना महल मझारा॥
बहु रानिन में ई पटरानी। शोभा तेज शील गुण खानी।
धर्मराज नय जानति नीके। निज छबि निदरति रुपरती के॥
अमित सहेली सेवा करहीं। व्यजन चारु चामर शिर धरहीं।
षट ऋतु कुंज अनेक महल में। अमित किंकरी रहति टहलमें॥

दोहा–योगन भोगन में रहत, राय रानि निर्लेप।
दम्पति कथा विचित्र है, कहेउँ बहुत संक्षेप॥

卐 साकेत सुषमा 卐

जहँ अनन्त ब्रह्माण्ड को विभव लजावनि हार।
येक येक तहँ देखिये, वस्तु अनेक प्रकार॥
सत चित आनन्द रूप सब, ब्रह्मा विष्णु शिव ध्यान।
उमा रमा शारद शची, निशि दिन करति बखान॥
जहाँ नवल प्रीतम प्रिया, निशि दिन करत विहार।
षट ऋतु की जहँ कुँज बहु, रचना विविध प्रकार॥
सकल विमल चिन्मय अकल, परमानन्द सुख रूप।
नव रंग मणिमय लसत सों, सब आतमा सरूप॥
सकल कामना हीन ह्वै, रहे सदा आनन्द।
यह सुख तब उर आवई, जब छूटे सब छन्द॥
विमल भक्ति जब उर बसे, सिय की आर्शीवाद।
तब शक्ती अहल्यादनी, हिय बसि कर अह्लाद॥
युगल रूप श्यामल गवर, करहि नयन गृह वास।
तव विहरे सिय महल में, सदा रहे पिय वास॥
दिव्य धाम साकेत सों, निज इच्छा तनु धारि।
प्रगटी जिमि सिय स्वामिनी, यथा देन फल चारि॥
सो प्रसंग वर्णन करूं युगल चरन सिर नाय।
कही कथा सिय जन्म जिन, सब मिलि होहु सहाय॥

छन्द–कलप–कलप प्रति भेद प्रभू बहु कारन करन लागी।
बैकुण्ठादिक प्रिया अवतरहिं प्रति–हित पागी।
श्री साकेताधीश प्रिया साकेत विहारी।
शरणागत सुख देन हेतु नित अवनि पधारी ॥
युगलाकर्षण हेतु अन्य समरथ नहिं कोई।
स्वायम्भू,-मनु हैं प्रमाण अविदित नहिं सोई ॥

श्रीयुगलसरकार के अवतार का हेतु श्रीकिशोरीजी की करुणा

एक समय साकेत धाम अभिराम राम अपरिकर।
सिंहासन आसीन सीय--सिय पिय सुषमाकर ॥
कोटि काम रति मदन मान जनु कमल दिवाकर।
दृष्टि मात्र अघ हरण शरण करुणा बरसाकर ॥
सेवा में संलग्न सहचरी अष्ट प्रधाना।
निज–निज परिकर सहित रूप की रासि महाना ॥
कोऊ कर छत्र शुभ्राज कोऊकर व्यंजन ललामा।
चँवर काहु कर काहु मोर छल कर अजिरामा ॥

दो०-कृपा दृष्टि आकस्मिकी, मृत्यु लोक महँ जाय।
कृपा मयी के मुख कमल, दियो आसु कुम्हलाय ॥
प्राण प्रिया प्राणेश्वरी, को मुख चन्द मलीन।
सहज सच्चिदानन्द निधि, निरुपम कृपा अधीन ॥
अकस्मात् लखि मुख कमल, प्यारी को कछु म्लान।
सहजानन्द प्रदान रत, बोले जीवन प्रान ॥

(श्री प्रीतम वचन)

हे करुणामयि बल्लभे, क्यों मुख भयो मलीन।
जासु अंसजा सक्ति जग, थिति जन्मान्त प्रवीन ।।
यदि हम सों ही हो सके, यह तव चिन्ता दूरि।
कहहु तुरत प्राणेश्वरी, हे मम जीवन मूरि ।।
नहिं समर्थ मैं आपका, देखन को मुख–चन्द।
अप्रसन्न इस भाँति नित, वरषण परमानन्द ।।

(श्री प्रिया वचन)

हे प्राण प्रिय आजु मम, सहज दृष्टि नरलोक।
सोइ दशा दयनीय लखि, भई हृदय प्रद--सोक ।।
सुनहिं ताहि एकाग्र मन, हे मम जीवन प्रान।
युक्ति निवारण की करैं, जो मम सुख सुख मान ।।

चौपाई--हम दोनों के सम तनु पाये।
दोनों के ही अंश कहाये ।।
माया बस जग रूप लुभाने।
सत को असत असत सतमाने ।।
साधन धाम द्वार मुक्ती का।
हर चोरासी लख भुक्ती का ।।
कृपालभ्य लहि यह नर देही।
भये कुविषयानन्द सनेही ।।
किन्तु यथेष्ट न ताकहुँ पावहिं।
समय चूकि सिर धुनि पछितावहिं ।।

जेहि सुख का कछुहूँ नहिं ज्ञाना ।
किमि तेहि पावहिं वे प्रिय प्राना ।।

मुक्त बद्ध दोऊ मोहिं समाना ।
भोग भेद लखि मुख कुम्हि लाना ।।

प्यारी की सुनि यह हित बानी ।
कृपा द्रवित बोले प्रिय बानी ।।

(श्री प्रीतम बचन)

दो०-जीवों का दुःख दूरि कर, सुखी बनावन हेतु ।
युग--युग में अवतार हरि, विविध रूप सों लेत ।।
मुनियन सन करवायऊँ, आगम निगम पुरान ।
उपनिषद् स्मृति संहिता, सहित प्रचार महान ।।

चौपाई–माया मय जग को समुझाई ।
विषयानन्दहिं तुच्छ बताई ।।

सुख के मार्ग कोटि दरसाये ।
दयामयी तिन्ह महँ मन भाये ।।

मृत्यु लोक प्राणिन मंगल हित ।
मैंने नहिं कीन्हें उपाय मित ।।

यथा शक्ति निज मति अनुसारा ।
प्रिये दोष तब कहा हमारा ।।

(श्री प्रिया बचन)

सुनि पिय गिरा प्रेम युत सत्वर ।
बोली प्रिया लोक हित तत्पर ।।

सत्य कहेहु पिय नहिं सन्देहू ।
माया मोह करी सत एहू ॥
जो ज्ञानिन को मोह करावै ।
अज्ञानिन की कहा बसावै ॥
वाही माया के भरमाये ।
गहि असार निज प्यार भुलाये ॥

दो०--वहुत काल सों जीव ये, दिव्य धाम सुख लीन ।
किमि प्रत्यक्ष विहाय के, हों यहि सुख मति दीन ॥
उनहिं देन हित दिव्य सुख, हम दोउ नर लोक ।
इसी दिव्य वपु सों चलें, करन अवस्य विसोक ॥
निज ऐश्वर्य छिपाय के, घुल मिलि सबहीं माहिं ।
मंगलमय निज चरित सों, दें यह सुख सब काहिं ॥

चौपाई–सर्वजीव सुख दायक बानी ।
प्यारी की पिय सुनि सुख मानी ॥

(श्री प्रीतम बचन)

जोवों के प्रति रोस दिखावत ।
बोले पुनि निज भाव जनावत ॥
हम इनके संग खेलन चहहीं ।
दिये पीठ ये मम दिसि रहहीं ॥
छन–छन मम अपराध कमावहिं ।
जानतहूँ भय नेक न लावहिं ॥
मम अतुष्टि कर कर्महिं करहीं ।

जे हठ बस ते किमि उद्धरहीं ॥

कहेहु सीय वात्सल्य अगाधा ।
लखहिं मातु पितु शिशु अपराधा ॥
पितु ऐश्वर्य देखि किमु डरहीं ।
बालक निज रुचि नहिं आचरहीं ॥
सब क्रीड़ा सुखदायक होई ।
सिसु की तिन्हहिं जान सब कोई ॥

दोहा–इनके अवगुन हेरिके, प्राप्त निठुरता भाव ।
परित्याग करि दुर्दसा, देखि दया उर लाव ॥
सर्वजीव अनुकम्पिनी, प्यारी के सुनि बैन ।
चतुर सिरोमनि लाड़िले, बोले पुनि सुख ऐन ॥

चौपाई–प्राण प्रिये ! जो कीन्ह विचारा ।
वामें कछु सन्देह हमारा ॥
तासु निवारन पहिले कीजै ।
पुनि यथेष्ट निज सम्मति दीजै ॥
अज अचिन्त्य आदिक बहुनामा ।
वेद भनित जानहिं मुनि ग्रामा ॥
जो अवतार भूमि हम लइहैं ।
झूठे वे सबही होइ जइहैं ॥
नाम असत्य सिद्ध जब होइहैं ।
कैसेहु वेदहु सत्य कहइहैं ॥
श्रुति असत्यता सिधि जग मंगल ।

करिहैं का कहिये विचारि भल ॥
यह सुनि तर्क युक्ति युत वानी ।
बोलीं प्रिया प्रेम रस सानी ।
गुन स्वरूप नव गावत हारे ।
हम दोउन के वेद विचारे ॥
दोहा—नेति—नेति कहि तब भये, प्रेम मगन चहुँसोय ।
इद मित्थं निर्णय बिना दिये, झूठ किमि होय ॥

(श्री प्रीतम बचन)

चौपाई--प्रिया बचन चातुर्य निहारी ।
बोले पुनि जन आनन्द कारी ॥
सरणागत रक्षा हित प्यारी ।
मुख्य प्रतिज्ञा अहइ हमारी ॥
तदपि मोरि यदि सरण न आवैं ।
कहा दोष मम आप बतावैं ॥
सुनि पिय बचन प्रिया मुसकानी ।
बोली गिरा परम हित मानी ॥
जबलों हृदय अपेक्षा कोई ।
दया भाव कछु सिद्ध न होई ॥
नहिं उदारताहू तब कोई ।
तबलों सिद्ध प्राण प्रिय होई ॥
मातु पिता सन सावक कवहीं ।
तब हम अहहिं कहत का नवहीं ॥

का हित उनकर तवहुँ भूलहिं।
हरहिं न वे निज भरसक सूलहिं ॥

छन्द--भरसक न का सिसु हरनि सूलहिं ताहि कबहुँ भुलावहीं।
गुनवंत नाहिं बनाय अवगुन देखि खेद बढ़ावहीं ॥
प्रतिकूल लखि कर कोप का अनुकूल नाहिं बनावहीं।
पितु मातु लावन योग्यता नहिं यतन करहिं करावहीं ॥

दोहा--जब झूठे पितु--मातु का, इस प्रकार व्यवहार।
साँचेन का किमि चाहिए, तबसों करिय विचार ॥

चौपाई--जे दम्पति हम दोउ हित लागी।
कीन्हेउ अनुपम तब अनुरागी ॥
विधि हरि हरहू लोभ कराई।
सके जिन्हहिं नहिं सो महि आई ॥
स्वायम्भुव मनु दसरथ रूपा।
प्रगटे आइ अवध नर भूपा ॥
सतरूपा तिन्ह की महरानी।
कौसल्या यहि जन्म बखानी ॥
उन्ह कर व्याह उनहिं संग भयऊ।
दोउन का तीसर पन गयऊ ॥
जो वरदान उन्हहिं दे आये।
पूर्व जन्म किमि ताहि भुलाये ॥
ब्रह्मादिक वाही आसा पर।
युगलागमन प्रतीक्षा तत्पर ॥

सुत बनि उनके बर अनुसारा ।
भाव पूर्ति का करिय विचारा ।।

दोहा—मैं मिथिलाधिप राज के, यज्ञ वेदि सों आय ।
प्रगट होहुँगी प्राण प्रिय ! सह परिकर समुदाय ।।
सर्व जीव आनन्द प्रद, केवल चरित लखाइ ।
हम दोऊ अनुराग रस, सरिता देहिं बहाय ।।
जो सुख सुलभ न आजु लगि, भयो विधातहु हेतु ।
मिथिला अवध बहावहीं, ताहि प्रचुर रस लेत ।।
यह विधि बाद बिबाद वर, हारि सुपुलकित गात ।
प्यारे करुणानिधि प्रिया, सों बोले मृदु बात ।।
धन्य धन्य प्यारी कृपा, तब ऐसी निष्काम ।
मम हियहूँ जब यह नहीं, सम्भव पुनि केहि ठाम ।।
सर्व लोक कल्याण हित, यही कृपा तब एक ।
साधन परम अमोघ है, जानहिं कोऊ सविवेक ।।
हेतु रहित तब यह कृपा, मोहिं कीन्हेउ अधीन ।
पूर्ण स्वतन्त्र अजेय को, जीति सर्वहि विधि लीन ।।
विस्वविमोहन मोहिं यह, कृपा विमोहेउ आज ।
जिमि विचार दीन्हेहु प्रिये ! तिमि होइहैं सब काज ।।

छन्द—होइहैं सबहिं विधि काज वैसहिं जस कहेहु करुणामयी ।
भावानुगामी मैं सदा तब बात यह नहिं कछु नयी ।।
अब सीघ्र ही हम लेहिंगे अवधेस गृह अवतारहीं ।
होइ आपहू मिथिलेस मख भू, प्रगट कार्य सम्हारहीं ।।

दोहा--युगल ललन संवाद सुनि, सुखद सुजन हित जानि।
युग परिकर बरषहिं सुमन, परमानन्द मन मानि॥
बलिहारी लै दुहुँन की, पुनि--पुनि तन मन वारि।
पुनि पुनि सब सखि जयति जय, जयजय जयति उचारि॥

छन्द--सुनहिं सुजन जेहि हेतु भयउ नित सिय अवतारा।
तजि कुतर्क अनुपम विधान सो परम उदारा॥
सर्वेश्वर अवधेश—सदन साकेत बिहारी।
प्रगट भये अंशन समेत, जब प्रभु अवतारी॥
जन्म महोत्सव माहिं आपने चहुँ सुत वरके।
किय आमन्त्रित नृपति सकल महि मंडल भरके॥

श्री सरकार के जन्म महोत्सव में श्री मिथिलेश आदि
राजाओं का आगमन

आकर सबहीं राज सभा महँ भूप विराजे।
महामुदित मन देखि शिशुन कों भूषण साजे॥

॥ श्री नारद जी का आगमन ॥

परम भक्त देवर्षि सुवन ब्रह्मा के आये।
हरि गुन गावत अंग अंग पुलकावलि छाये॥
देखि तिन्हैं श्री कोशलेन्द्र उठि कीन्ह दण्डवत्।
निज सिंहासन पर विठाइ पूजेउ पुनि विधिवत॥
जोरि पानि कर विनय भाग्य निज भूरि बखानी।
सादर पूँछे हेतु आगमन नृप मृदु बानी॥

उज्वल यश रघुलाल का, छाइ रहा भरपूर ।
भूलि भूलि भटकत फिरे, सकल देव मशहूर ॥८७॥
क्षीर सिंधु ढूँढ़त हरी, वर ढूँढ़त कैलाश ।
हंसहि ब्रह्मा ढूँढ़ते, तज्यो मिलन कै आश ॥८८॥
राहू खोजत चंद्रमहिं, ऐरावत सुरनाथ ।
यहि गति राम स्वरूप करि, उज्वल यश रघुनाथ ॥८९॥

॥चौपाई॥

जेहि द्युति रबि शशि जाहिं छिपाई। तहँ खद्योत प्रभा कस गाई ॥
अस विचारि भ्रम तजि बड़ ज्ञानी। राम रहस ध्यावत बनि ध्यानी॥
राम रहस मुनि कहेउँ अखंडित। व्यास समास यथा मति मंडित ॥
राम चरित अस तजि केहि ध्यावै। जेहि बिनु जिव थिर नेक न पावै॥
जे यह चरित करहिं उर पूजा। तिन समान त्रय लोक न दूजा ॥
तुम विज्ञान रूप मुनि राई। दीन्ह हमहिं सुख आश्रम आई ॥
बूझेहु राम रहस गुणकारी। भावन मुनि विरंचि त्रिपुरारि ॥
राम चरित जस देखन पायउँ। कहेउँ तोहिं नहिं नेक छिपायउँ ॥
राम रहस कर आदि न अंता। गावत सुर नर नाग प्रयंता ॥
राम सिया अवधी सुख गेहा। तब मम ऊपर करहिं सनेहा ॥

॥ दोहा ॥

करि करि सुमिरन रहस का, पुनि पुनि होत निहाल।
राम सीय जय राम सिय, कहत प्रभंजन लाल ॥९०॥
सुनि हनुमत के बैन बर, देखि रहस रसपाग ।
घट सम्भव बोले हरषि, बिगत मोह भ्रमदाग ॥९१॥

॥ चौपाई ॥

अब कृत कृत्य भयउँ तव बैनन । नूतन प्रेम भयउ उर नैनन ॥
मोह सिंधु तुम ह्वै जल स्यंदन । मोहिं सुख दीन्ह पवन प्रिय नंदन ॥
तुम प्रभु कस न होहु उपकारी । जस गिरि तरु तस आप बिहारी ॥
तुम कृपालु तन मन मति संता । बंदौं पुनि पुनि पद हनुमंता ॥
करि पूजा कपि सुयश बखानी । लै उपदेश गयउ मुनि ज्ञानी ॥
राम रहस सोइ कहेउ सलोना । बिमल होहिं मन पिय श्रुत दोना ॥
सीता राम चरण मन लागहि । भव भ्रम नास भक्ति रस पागहि ॥
सब साधन द्रुम फूल समाना । राम रहस सुंदर अरघाना ॥

॥ दोहा ॥

रस श्रृंगार अनूप फल, मोहि जात सब कोइ ।
राम रूप रस माधुरी, पिय पिय तृप्त न होइ ॥९२॥
सो कुलवंत पुनीत सुत, परम पूज्य गुणधाम ।
जे जन रघुबर राम रस, मगन रहत सब याम ॥९३॥
यहि बिधि रहस अनूप कौं, बरणि ब्यास सुखधाम ।
निज सुत कर संदेह हरि, कीन्ह बानि विश्राम ॥९४॥

॥ चौपाई ॥

यह शुकदेव ब्यास सम्बादू । सदा सुखद भ्रम समन प्रमादू ॥
मोहिं जस मति कछु परो बुझाई । भाषा बद्ध कीन्ह सुखदाई ॥
हैं परमोद तीन अरु चारी । लीला धाम रूप सुखकारी ॥
यहि महँ नाम ललित बिस्तारा । जेहि महिमा जग सकल पुकारा ॥
जो चह राम प्रेम उर अंतर । सो गावहिं यह चरित निरंतर ॥
मानत राम इष्ट जे अपने । ते यह रहस न त्यागत सपने ॥
राम सीय बिनु कृपा सहाई । रुचिर चरित मन दीन्ह न जाई ॥

दोहा–बड़ी कृपा इस दास पर, कीन्ह महामुनि राय ।
मम सुत जन्म सुपर्व पर, स्वयं पधारे आय ।।

।। श्री नारद बचन ।।

नाना विधि साधन करत, जो न होहिं हिय धीर ।
सो प्रभु नृप तब भवन बस, हरण भक्त भव पीर ।।
तप प्रभाव से वेषिके के राउर मुनि समुदाय ।
हम सबहीं अतिसय चकित सत्य सत्य नृप राय ।।
दर्शन हित आतुर हृदय हम आये तब पास ।
वेगि लाल जी को दिखा, सब पुरबहु चिर आस ।।

।। श्री चक्रवर्ती बचन ।।

तप प्रभाव प्रभु मम नहीं, यह है कृपा प्रभाव ।
आप सभी मुनि बरन के, मम मन निश्चय आय ।।

चौपाई--इमि प्रतोषि मुनि राजहिं राऊ ।
कहेउ सुमंतहिं रावल जाऊ ।।
चारहु शिशुन सपदि लै आवहु ।
मुनिवर पद स्पर्श करावहु ।।
सुनि आय सु सो सदन सिधाये ।
चारो तनय तुरत लै आये ।।
नृप मुनिवर पग शिशु सिर राख्यो ।
मीलित नैन देखि इमि भाखेऊ ।।
नाथ ! लाल मम करत प्रनामा ।
देहु सुभासिष पूरन कामा ।।

दर्शन हेतु बुलायहु जिन्हको।
क्यों न बिलोकहु आयेहु तिन्हको॥
मुनिहिं मौन बेसुध लखि सबको।
बुड़ेउ मोद सिन्धु मन नृप को॥
यहि प्रकार लखि सबहिं अधीरा।
बोले मुनि निज मन करि थीरा॥

॥ श्री देवर्षि वचन ॥

दोहा--पाइ असम्भव प्राप्ति सुख, केहि इमि दशा न होइ।
जनि आश्चर्य भुलावहूँ, नृप विचारि उर सोइ॥
बड़े लाल जी आपके, पूरण ब्रह्म परेस।
ब्रह्म बन्द्य सेवक अनुज, इनके तीनो शेस॥
चौपाई--इमि भूपहिं महिमा समुझाई।
प्रभु की सादर आगम गाई॥
पुनि प्रमुदित हरि हृदय लगाई।
ब्रह्म लोक गवने मुनिराई॥
सभा मध्य सुनि सो संवादा।
नृप मुनि कर भव हरण विषादा॥

॥ श्री मिथिलेश विचार ॥

श्री मिथिलाधिप अति अनुरागे।
हृदय विचार करन अस लागे॥
धन्य भाग भूपति अवधेसू।
पद सम्राट सुपुत्र परेसू॥

नृप वात्सल्य भाव सब पाई ।
जग कृतार्थ जीवन भये आई ।।
ये ही सब महँ मम मति पागी ।
धिग तेहि बिनु मम जन्म अभागी ।।
पितु, गुरु, श्वसुर, तीन अधिकारी ।
यहि सुख के मम मति अनुसारी ।।
सोरठा--पितु पद श्री अवधेश, श्री वशिष्ठ गुरु पद लहेऊ ।
रहेउ श्वसुर पद शेष, दायक मम वात्सल्य सुख ।।
चौपाई--सो पद प्राप्ति भाग्य महँ जाके ।
सर्वेश्वरी सुता हो जाके ।।
मम कन्या साधारण नाहीं ।
केहि विधि हम सुख पावहिं ताहीं ।।
सोचत इमि सो हृदय अधीरा ।
देश काल लखि पुनि भये धीरा ।।
समय पाइ प्रभु गोद बिठाई ।
नृप विदेह निज विनय सुनाई ।।
जब प्रभु आप लोक महँ आये ।
निज भक्तन के भाव बिकाये ।।
सुत सम्बन्ध कीन्ह स्वीकारा ।
करन हेतु सब अंगीकारा ।।
मम जामातृ भाव अपनाई ।
जीवन सफल करहु सुरराई ।।

कछु दिन रहि श्रीअवध नरेसू।
मिथिला गमन कीन्ह मिथिलेसू ॥
समाचार सब श्रवण करायो।
रानिहि राउ न नेक दुरायो ॥
प्रात काल निज सभा प्रचारे।
पुलकित उर इमि बैन उचारे ॥

(श्री मिथिलेश जी का सभा बोलाना)

छन्द--चक्रवर्ति दशरथ सुवन जन्मोत्सव माहीं।
गये रहे हम आप सभी से अविदित नाहीं ॥
उत्सव को आनन्द बरनि सक त्रिभुवन माहीं।
मम बिचारि सामर्थ्य वान असकवि कोउ नाहीं ॥
नारद मुनि विधि तनय देव ऋषि सत्वर आये।
चकित मुदित अवलोकि पूजि नृप विनय सुनाये ॥
बड़े भाग मम आजु आप जो स्वयं पधारे ॥
सफल मनोरथ करन हेतु सब भाँति हमारे ॥
तप प्रमाण अवलोकि चकित तव सब तप रासी।
ध्यान अगोचर रमैं जासु गृह अज अविनासी ॥
लोचन गोचर दे कराइ तिन्ह को मम सत्वर।
सफल मनोरथ करैं मोहिं जग जनक जनकवर ॥
सुनि परत्व आश्चर्य चकित नृप सुत कर राजा।
दर्शन दियो कराइ मुनिहिं सह नृपति समाजा ॥
छवि समुद्र अवलोकि सकल भये प्रेम विभोर।

ऋषि नरेश मोहिं सहित हृदय आनन्द अथोरा ।।
करि दर्शन देवर्षि मुदित विधि धाम सिधारे ।
सहसा तब उर उदित भाव अस भये हमारे ।।
चक्रवर्ति पदलोक ब्रह्म सुत भवन विराजे ।
बड़भागी अवधेश सुकृति मुद मंदिर भ्राजे ।।
कछुक दिवस रहि अवध मूक निज विनय सुनाई ।
आयेहु यहाँ बहोरि हृदय सर्वेश्वर लाई ।।
दोहा-नृप भोगी जेहि भाव सुख वाही मोहि सुहान ।
तासु प्राप्ति साधन बिना, मन मेरो समलान ।।
सोरठा--किमि पूरन यह होइ, आस मनोरथ प्रबल मम ।
करौं सुसाधन सोइ, परम हितैषी सुहृद जन ।।
दोहा-एतदर्थ मुनिवर सभी, मिथिला लेहिं बुलाइ ।
साधन निधि कछु अवसि वे, साधन देहिं बताइ ।।
चौपाई--मन्त्र नरेशहिं यह अति भायो ।
मुनिन बुलावन दूत पठायो ।।
(श्री आद्याशक्ति के प्राकट्य के लिए महर्षियों को बुलावा)
सुनि विदेह विनती मृदु बानी ।
दूतन सों मुनि गन सुख मानी ।।
सबहीं मिथिला धाम पधारे ।
कुम्भज रिषिवर संग सुखारे ।।
स्वागत कीन्ह दीन्ह सुख बासू ।
तिन्हहिं विदेह सुपरम हुलासू ।।

सेवाधीन भये मुनि झारी ।
अति प्रसन्न श्रम पन्थ बिसारी ॥
सतानन्द नृप विनय सुनाई ।
लाये सबहिं सभा नर राई ॥
वह शोभा नहिं वरणन जोगू ।
जानहिं ते जिन देखिय लोगू ॥
सभा द्वार पर भूपति ठाढ़े ।
दरशन आश पुलक तन बाढ़े ॥
मुनिन स्वयं अधिकार विचारी ।
लखि आसन आसीन सुखारी ॥
मिथिलेशहिं अगस्त्य तपखानी ।
निज ढिग बैठायो गहि पानी ।
सादर पुनि बोले मुनिराई ।
बहु विधि नृप की करत बड़ाई ॥

दोहा-ज्ञान सभा महँ आपकी, अनायास सुधि आइ ।
ज्ञान पराकाष्ठा सुमिरि, सबकी मति चकराइ ॥
कुशल क्षेम सो कोष पुर, राष्ट्र सहित परिवार ।
अन्तःपुर युत सुखी रहि, करत प्रजा पर प्यार ॥
केहि कारण नृप या समय सबहीं मुनि समुदाइ ।
एक साथ पठये बुला, निर्भय कहिय बुझाइ ॥
जन्म महोत्सव महँ गये, हमहूँ अवध मुनीस ।
अकस्मात आये तहाँ, नारद त्रिदश ऋषीष ॥

महिमा सुत अवधेश की, सुनि तिन सों मुनिराय ।
उनहिं जमाई भाव सों, पावन मन अकुलाय ।।
जब सर्वेश्वर ब्रह्म वे, दशरथ राज कुमार ।
ससुर तासु सर्वेश्वरी, सुता जासु निरधार ।।
आसु साध्य संसिद्धि प्रद, साधन जानब हेत ।
युगपत सबहिं बुलायऊ सम्प्रति कृपा निकेत ।।
सुनि विनती नृप मौन लखि, सबहिं हताश अधीर ।
भये देखि बोले बचन, कुम्भज अति गम्भीर ।।
प्रश्न कठिन दुर्लभ परम, नृपति मनोरथ जानि ।
हम सब भये विचार बस, भये कछुक अनुमानि ।।
जनि निरास हो नृपति इमि, सिद्ध हेतु निज आस ।
यतन सोचि वरणन करूँ, कीजै दृढ़ विश्वास ।।
आसु साध्य संसिद्धि प्रद, साधन हित नृप आप ।
शिवहिं प्रतोषहुँ तिन्ह कृपा मिटिहि सकल संताप ।।

यहि बिधि श्रीअगस्त्य नरनाथहिं।तोषि गये आश्रममुनि साथहिं।
श्री विदेहपुर पूरब जाई । हर हित उग्र तपहिं मन लाई ।।
पूरन भये जबहिं बसु बरषा । भयउ तबहिं शिव उर आकरसा।।
प्रगटे हर उर अहि लपटाये । चन्द्रमौलि तन भस्म लगाये ।।
बरंब्रूहि सुनि नृप मृदु बानी । करि प्रणाम बोले युत पानी ।।
मोर मनोरथ जानहु स्वामी । पुरबहु शीघ्र सो अन्तर्यामी ।।
सुनि नृप विनय देखि विकलाई । हरषे शिव बोले मुसकाई ।।
धीरज धरहु और कछु काला । सफल मनोरथ होहु भुआला ।।

जिन्हहिं लहेउ श्रीअवधेशनरेश। जिन्हहित आप विकल मिथिलेश॥
वही युगल सरकार हमारे। सीताराम प्राण सो प्यारे॥
एक समय साकेत मझारी। जीवों का कल्याण बिचारी॥
कीन्हेउ बर सम्बाद परस्पर। तिन्हँ महँ यह निर्णय श्रीसियकर॥
दोहा—आप अवध नृप के तनय, होहिं मही तल जाइ।
हम विदेह मख भूमि सो प्रगट होहिंगीं आइ॥
यज्ञ प्राप्ति हित कीजिये, यासों शीघ्र नरेश।
प्रगठ होहिं सर्वेश्वरी, ध्रुब तासो मिथिलेश॥
जो सौभाग्य न आजु लगि काहुहिं मिलेहु भुवाल।
सुलभ न आगेहु होहिं सों, तुम्हहिं सुलभ यहि काल॥
असकहि अन्तर्हित हर भयऊ। तब महीप निज मन्दिर गयऊ॥
गुरु अनुशासन पाय सुनायो। जो वरदान सम्भु सन पायो॥
सुनि सो सभी हृदय हरषाने। जयजय कहि भूपति सनमाने॥
शतानन्द पद बंदि बहोरी। सकल सभा सदयुग कर जोरी॥
शीघ्र यज्ञ आरम्भन हेता। कीन्ह विनय अति प्रेम समेता॥
पुनि सब निजनिज भवन सिधाये। करि प्रनाम उर आनन्द छाये॥
शतानन्द निज आश्रम आई। शुभ मुहूर्त चिन्तत मनलाई॥
प्रात काल मख भूमि विशोधन। लखि मुहूर्त वर भये मगन मन॥
दिन मणि उदय पूर्व नृप गेहा। पहुँचे मुनिवर सहित सनेहा॥
प्रातकाल गुरु दरसन पाई। नृपति मगन मन महँ अधिकाई॥
शतानन्द बोले पुनि सादर। श्रवणामृत सम बचन मनोहर॥
आज मुहूर्त आसु फलदाई। यज्ञ भूमि शोधन शुभराई॥

दोहा–अति उत्तम तिथि पञ्चमी, सुकला माधव मास ।
इसी वर्ष एक बरस में सर्व सिद्धदा भास ॥
यात्रा आज पञ्चमी आशा । सकल पूरनी मन अभिलाषा ॥
सरि लक्ष्मणा पुनीत किनारे । होइ यज्ञ आदेश हमारे ॥
न्योतहु सकल मुनिन नृप सन्तन । द्विजवर सुहृद गुनीजन सज्जन ॥
पुनि विशिष्ट नृप बृन्द बुलावन । पठवहु निज मंत्रिन्हहिं धावन ॥
जाइ सुदर्शन अवध भुवालहिं । लावहिं रानिन सह चहु लालहिं ॥
सबके बास प्रथम बनवावैं । जहँ बसि सब–सब ऋतु सुख पावैं ॥
दोहा--जस आज्ञा प्रभु आपकी, वैसा ही सब होइ ।
अस कहि तेहि क्षण सचिव सब, बोलि बुझाये सोइ ॥

(प्राकट्य के लिये यज्ञारम्भ)

यज्ञ भूमि सजवाय सुहावन । तेहि महँ वेदि मध्य जग पावन ॥
कदली खम्भा वन्दनवारा । ध्वज पताक रचना विस्तारा ॥
दर्शक वास बनावहु जाई । यथा उचित सब भाँति सुहाई ॥
ऋषि थल बाहर नगर बनाई । स्वागत साज धरौं सजवाई ॥
ऋषिन मुनिन कहु न्योत बुलावहु । विप्र साधु सनमान जिवावहु ॥
मंगल हेतु ललित बैदेही । दान मान प्रिय बचन सनेही ॥
अति सत्कार भूप सन पाये । असन सयन सब भाँति सुहाये ॥
भयो काज सब यथा निदेशू । देखि महा प्रमुदित मिथिलेशू ॥
आइ गये जबसब आमन्त्रित । मुनि हरि जन द्विज नृप गुनि पंडित
सबके दर्शन करत विदेहू । पहुँचे श्री कौशल पति गेहू ॥
चारों सुत भूपाल विलोकी । उर अधीरता सके न रोकी ॥

सावधान करि कोशल राया। सादर भूपहिं हृदय लगाया ॥
नृप विदेह बोले कर जोरी। सुनिय नाथ एक विनती मोरी ॥
यज्ञ भूमि अवलोकन कीजै। त्रुटि बुझाय हित परिचय दीजै ॥
सुनि यह विनय अवधपति तेहि छन। गुरु वशिष्ठ सहसुवनभूपगन
श्रीमिथिलापति क्रतु की रचना। जाइ देखि बोले मृदु बचना ॥
दोहा--राजन सब विधि शुद्ध यह, जनि कीजै सन्देह।
यज्ञारम्भ सुकार्य हित, गवनहु गेह विदेह ॥
सकल ऋतुन महँ वर्य यह, अति पुनीत ऋतुराज।
तामधि मासोत्तम अमल, माधव मास विराज ॥
कीन्ह यथाविधि शास्त्र निबेरी। चले भूमि शोधन शुभ बेरी॥
माधव सित शरतिथि गुरुवारहिं। करि विधिवत मंगलशृंगारहिं
कुल गुरुका शुभ पाइ निदेशू। रानी सहित विदेह नरेशू ॥
चले तहाँ सब सहित समाजा। सचिव विप्र भट परिजन राजा॥
यज्ञभूमि पहुँचे नृप ज्ञानी। सबहिं प्रनाम करत युत पानी ॥
आज्ञा लहि जब आसन राजे। बाजन लगे सुमंगल बाजे ॥
यज्ञारम्भ सर्व सम्मत से। सुरविलोकि लागे सुमन बरसे ॥
इन्द्रादिक आये सुरसर्वा। सेवा हेतु त्यागि निज गर्वा ॥
सुख समृद्धि यह विधि तहँ छाई। निज गृह सुधि सब गयेभुलाई
मिलिहि न याचक खोजेहु कोई। भोजन जो नृप रंकहिंसोई ॥
यहि विधि बरस बीति जब गयऊ। चिन्ताकुलभुवालमनभयऊ॥
शतानन्द सो तत्छन जानी। बोले वचन श्रवण सुख दानी ॥
वर वैशाष मास हित जानहु। परा सिद्धिदा नवमिहिंमानहु ॥

मिथिला वन कंचन की खानी। प्रगटी सिय प्रगटत जियजानी
मणिमय खानि गिरिन प्रगटानी।शृंगनविविध धातु दरसानी।।
ऋतु बसंत फूले बन बागा। गावहिं जानकि जस अनुरागा।।
शीतल मन्द सुगन्ध समीरा। परसि करत सानन्द शरीरा।।

दोहा-मही मृदुल मई अमल जल, विकसे कमल तड़ाग।
धूम सहित पावक सिखा, ज्वलित जान बड़ भाग।।

जड़ चेतन मय सब जग जीवा। सबै मगन मन होत अतीवा।।
सन्त हृदय मन मोदित भयऊ। सो सुख जानहिं जेहिंहरिदयऊ
मगन विमल संकुल सुर वृन्दा।गावहिं जानकि जस सानंदा।।
देव वधू नाचहिं गुनगाई। करत वेद धुनि मुनि समुदाई।।
सबहिं मनहिं मन रस उपजावैं।सबहिं विलक्षणभावदिखावैं।।
शक्तिन युत विधि हरिहर देवा।बरसहिं सुमन करहिंसियसेवा।
दस दिसि देवहिं सगुन जनाई। फरकहिं अंग सुभग समुदाई।।
सर्व दिसाँ मंगलमय भासे। वेदि अदृश्य स्व भूरि प्रकासे।।
सब प्रकार मंगल सुखदाई। लखहु सिद्ध सूचक नरराई।।
यहि विधि गुरु सो पाइ प्रतोषा।धरि केहुँ भाँति तीनदिन तोषा
नवमिहिं कहँ अति प्रेम अधीरा।अर्चन कीन्ह श्रवण दृग नीरा।।

दोहा-अर्पित करि पुष्प अञ्जलि, दम्पति सहित विदेहू।
परा प्रेम हिय पुलकि तन, जोरि पानि ससनेह।।
करन लगे संस्तव विमल, जय सिय बल्लभ स्वामि।
जय सर्वेश्वर बल्लभे, जय-जय जयति नमामि।।

(अस्तुती-दम्पति प्रागट्य करते हैं)

छन्द—नमामि सर्ववत्सलामशेष लोक मङ्गलां ।
समस्तसौख्यदायिकां सदा दया विधायिकाम् ।।
न जीवदोषदर्शिनीं कृपासुधैक वर्षिणीं ।
कृपाकटाक्ष भाजनं करोतु सा हि माँजनम् ।।
नतोऽस्म्यतुल्य बैभवां परामसन्निभार्जवां ।
कृपाविधान विश्रुतां महामुनीन्द्रसंस्तुताम् ।।
सुखाकृति रसाकृतिं समस्त सौभगाकृतिं ।
करोतु सा प्रतिक्षणं मयि प्रसन्न वीक्षणम् ।।
प्रदाय चारुदर्शनं समस्तशोक नाशनं ।
महाप्रमोद वर्षणं नवं नवं प्रतिक्षणम् ।।
गुरूदितं हरोदितं तथा धरोद्भवोदितं ।
ऋतं वचो विधीयतां मयित्वयानुकम्प्यताम् ।।
अहैतुकी कृपानिधे धरादिकंक्षमाम्बुधे ।
प्रसीद मे प्रसीद मे प्रसीद शक्ति सत्तमे ।।
महारमादि वन्दिते पदाब्ज भक्ति देहि मे ।
क्षमोऽस्म्य सो दुर्मत्यकं बिलाम्बमष्यतोऽधिकम् ।।

दोहा-परतम ब्रह्म अनादि श्री, सीता नाम उदार ।
सुनि स्तव तब मरव वेदि सों, प्रगटीं तेज पसार ।।

(प्रगट कालीन स्तुति)

भइ प्रगठ किशोरी, ससि सम गोरी, दिब्य वसन तन सारी ।
अनुपम श्रृंगारा, मणिमय हारा, नील कमल कर धारी ।।

अंग अंग मनोरम, कोटिन रबि सम, छायेउ दिब्य प्रकासा ।
भक्तन भव मोचन, ललित विलोचन, चन्द बदन मृदु हासा।।
चम-चम द्यु ति वस्त्रा, परम पवित्रा, विद्यु त ज्योतिहु लाजैं ।
अति दिब्य सुभूषण, सब निर्दूषण, कंकन किंकिन बाजै ।।
मणिमय सिंहासन, पै पद्मासन, राजति परम पुनीता ।
सिर छत्र सुलहरै, चमर सुफहरै, बसु सखि गावैं गीता ।।
जय रस रूपे, प्रेम स्वरूपे, महाभाव रसखानी ।
जय ब्रह्म स्वरूपे, आनन्द रूपे, कृपा स्वरूप महानी ।।
जय आनन्द बर्द्धिनि, प्रेम समृद्धिनि, जय–जय कर मुनि देवा।
सुमनांजलि बरषैं, अति हिय हरषैं, करैं बिबिध बिधिसेवा ।।
पितु जनक सुनैना, मातु बनैना, भनत कछुक मुख बानी ।
अभिलाष पुजावहु, दम्पति भावहु, वात्सल्य रस सानी ।।
अति सुखद सुशीला, करि शुभ शीला, पावन प्रेम प्रकासी ।
सुनि–सुनि बड़भागी, होय अनुरागी, पावैं पद अविनासी ।।
दोहा-श्री साकेत विहारिणी, सत् चिद आनन्द सार ।
युगल प्रपन्नन हेतु निज, सिय श्यामा अवतार ।।
शुक्ल पक्ष बैशाष शुचि, नवमी तिथि सुखदाय ।
नखत पुष्य वर कर्क शुभ, लग्न भौम दिन आय ।।
मख वेदी मधि बसुधा विकसी । प्रथम प्रेममय प्रभा सुनिकसी।।
श्वेत छत्र पुनि छवि दरसानी । संग चँवर शोभा सरसानी ।।
मणिमय सोहत सुभग सिंहासम।कंचन रतन रचित तम नासन
अष्ट कमल दल ता महँ सोहै । मध्य कर्णिका भुवन विमोहै ।।

तेहि पर परतम ब्रह्म स्वरूपा । प्रिय स्वामिनि राजै श्री भूपा ॥
द्वादश बर्ष अवस्था शोभित । तनु शृंगार निरखि मन लोभित ॥
अरुणगौर तनतरणि लजावत।हेम तड़ित शतशशि छबिछावत॥
आनन आन न जेहि सम सोहै । सहजहिं राम श्याम मन मोहै ॥
दोहा-वरदायक वरदाने छबि, वरणत बनै न मउन्जु ।
अरुण अधर विहँसत मनहुँ, विकसित सुषमा कउन्जु ॥
नासा नासा भरण अनूपा । कल कपोल कुंडल रचि रूपा ।
तिमि कानन ताटंक सुहाये । सह सानन सन जाहिं न गाये ॥
कबरी केश रशेसहिं रंगा । चूड़ामणि सुचन्द्रिका संगा ।
बाल सुभाग सुहाग सुशाला । तिलक विन्दु सिन्दूर रसाला ॥
सब कहँ सौंह भौंह अति बंका । शरणागत कहँ करहिंअशंका॥
कृपा कलित कल कंज विलोचन।राम रसिक भक्तनभवमोचन
अंजन श्याम राम मन रंजन।लगे ललकि जनु आप निरंजन ॥
श्याम विन्दु छवि देत चिबुक पर।पियहियलोभबसेउजनुछविधर
बसन स्वयं पिय श्यामल रूपा।परसत तनु छबि छटा अनूपा ॥
पद पदांगुली मंगल खानी । नख सुखमा नहिं जाय बखानी ॥
लाल कमल सम पद तल प्यारे।रेख कंज आदिक उजियारे ॥
कल नूपुर कल धौत मणिन के।मदन मराल नवल जनु नीके॥
पंकज श्याम बाम कर सोहै । मुद्रा अभय दहिन मन मोहै ॥
नेति-नेति कहि थके चारि तेहि।षष्ट अष्टदश आदि गावजेहि॥
सत चित आनन्द कन्द समेता । परतम ब्रह्म रूप साकेता ॥
सीता नाम अनादि आजु सोइ ।भक्तन हित प्रगटी महिजाहोइ

दोहा-कोटि--कोटि शत चन्द्रहू, लाजै लखि मुख तासु।
अमृत रस झर--झर झरै, बूँद सखी सब जासु ।।
अष्ट सखी सेवा करहिं, चँवर छत्र छबि सोह।
विजन पान इत्रादि वर, लिए कृपा कर जोह ।।

सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला अलि।सिय तद्‌रूप दिब्यगुनढलिभेलि।।
चारुशिला सुभगा अलबेली । हेमा क्षेमा नवल नवेली ।।
लक्षमणा सुखदा शीतल तर । गंधा पदुम बरारोहा वर ।।
सेवैं सिय स्वामिनी प्राण सम । रूप शील गुन आदि सबै छम।।
चकाचौंध सबके दृग छाई । तेज पुँज छवि वरणि न छाई ।।
जय-जय धुनि पूरी ब्रह्मण्डा । आनन्द उमड़ि डुबायो अंडा ।।
पुष्प माल झर-झर झरि बरषहिं।भूमि अकाशहिं तेमनकरषहिं
गंध वृष्टि बहु गगनहिं तेरे । होत हर्ष पगि प्रीति घनेरे ।।
दुँदुभि स्वर सुर करहिं सुखारी।भूमि ढोल बाजादिक भारी।।
वीणा वेणु मृदंग नगारे । बाजहिं शंख घड़ी करतारे ।।
किन्नर सिद्ध नाग गंधर्वा । रम्भादिक अप्सरा सुसर्वा ।।
नाचहिं गावहिं गगन मझारी।जयति जयति जय बचन उचारी

दोहा-ताही विधि शुचि भूमि महँ, पंच शब्द धुनि होय ।
नाग देव मुनि विप्र गण, स्तुति कर मुद भोय ।।

तापस सिद्ध संत योगेश्वर । विधि हरिहर ऋषि सुर देवेश्वर।।
समय जानि मिलि निकट बहोरी।करिएकसाथविनय करजोरी
जय अनन्त ब्रह्मांड निरूपिनि।जन प्रतिपालनकृपास्वरूपिनि।।
जय श्री सीता श्रुति जस गीता।हम बन्दहिं तव पद बहुप्रीता।।

जय श्रीसीता बीज निवासिनि।भजत भक्त भववीजबिनासिनि॥
तुही ब्रह्म प्रानिन में प्राना। तुही प्रान पति वेद प्रमाना॥
अगणित शैल सुता श्री बानी। जासु अंश जा शक्ति बखानी॥
जगत जननि तव विभव अनन्ता।हम सबकोऊ न पावहिंअंता॥
दोहा-तब गुण रूप प्रभाव सब, वेद अगोचर मात।
तुही न पावति अन्त निज, औरन की का बात॥
पुनि प्रसून वरषा झरि लाये। जय-जय कार करहिं हरषाये॥
जब करि कृपा स्वामिनीजी ने।दिव्य दृष्टि दम्पति कहँ दीने॥
तब यथेष्ट करि दरशन पाये। परमानन्द पुलकि तन छाये॥
तेजो मय सिय सखि युत लखि तिन।दम्पति भयउ विशेषदेहबिनु
परवश भये प्रेम सुधि हीना। पूर्व राग जनु तनु धरि लीना॥
मूर्छित भये परे महि माहीं। सीय शरण राखे तिन काहीं॥
उतरि सिंहासन सिय अतुराई।कर गहि भूपति रानि उठाई॥
कृपा पाय श्रीजनक भुआरा। हिय महँ माने मोद अपारा॥
देखि नृपति अति आनन्द पावा।निरखहिं एकटक रूपसुहावा॥
जोरि पाणि स्तुति अनुसारी। जय-जय जय सब जगतअधारी
ब्रह्मरूप अह्लादिनि रूपे। सब सुखदानि अनंद अनूपे॥
अर्चा व्यूह विभव भगवाना। अन्तर्यामी ब्रह्म सुजाना॥
शक्तिन युत विधि हरिहर देवा।तव विरचित बहुबिधिकरसेवा
कोउ नहि जानि सकै तब रूपा।कहि न सकै जस नाम अनूपा॥
महिमा तासु और को जानै। नेति-नेति जेहि वेद बखानै॥
सुता भाव सों पावन तिनको। अभिलाषहुँ शिवध्यावहिंतिनको

दोहा-रोम-रोम ब्रह्मांड शत, भासे जेहि तन सोइ ।
केहि प्रकार वात्सल्य सुख, प्राप्ति सुलभ मम होइ ।।
जो अभीष्ट सुख देन हित, मोहि प्रगट भई आइ ।
तो शिशु बपु धारण करिय, निज ऐश्वर्य छिपाइ ।।
बार-बार बर बिनय करि, चरण कमल परि भूप ।
कृपा सिय सत समुझि शुचि, मानहुँ आनन्द रूप ।।

पुनि उठाय अनन्य हिय जानी । अमृत कल्प भाषी सियबानी।।
सुनहु मात पितु बैन सुहावन । पूरब प्रेम पगेव मन भावन ।।
सुता भाव तब बहु विधि सेवा । कीन्हेसि प्रगट मोहिगुनलेवा।।
सत-सत सत्य मातु पितु मेरे । पुत्रि मानि पालिय निज नेरे ।।
देन प्रनीति रूप दरसायो । मुनि मन अगम नेति श्रुति गायो।।
बोले नृपति धन्य मैं भयऊ । तव पद रेनु शीश जो लयऊ ।।
मोहि सम भाग्यवंत कोउ नाहीं।निज मुखपिताकहेउमोहिकाहीं
देवि एक वर विनय हमारी।लखहिं ललित शिशु केलि तुम्हारी
विहरहु सदा मोर अँगनाई । रहौं निरखि अनुपम सुख छाई ।।

सोरठा-अस संस्तुति सुनि सिय, जग जननी परमेश्वरी ।
कल कोमल कमनीय, भई विमल बपु बालिका ।।

पितहिं प्रेम दीन्हेउ करि दाया । मुद माधुर्यमयी मुद माया ।।
परम ईश्वरी भाव भुलाई। पागे सुता प्रीति उर छाई ।।
तब सिंहासन के ढिग जाई । लियो ललकि सिय अंक उठाई ।।
देखि विवुध अतिसय अनुरागे । सुर प्रसून बरषा वन लागे ।।
मुनिवर जय-जय कार उचारैं । लखि छबि मन महँ मोदअपारैं

तेहि छन सिंहासन सखिगन तहँ।भे बिलीन सियपरसुतेजमहँ।।
रोदन करि कर चरन चलाई। कहाँ कहाँ करि लगतु सुहाई।।
मातु सुनैना ह्वै प्रेमातुर। उमगेउ अति वात्सल्य भाव उर ।।
स्रवत पयोधर पय अकुलाई। नृप सों लै निज उर लिपटाई ।।
महा मुदित छवि सिन्धु निहारी।लली लाड़िली वैन उचारी ।।
पाय अपूर्व गोद सुख माँ का।सुख निधिहूँ सिय लिपटी अंका ।।
परमानन्द मगन महतारी। रोमांचित तनु दशा बिसारी ।।
दोहा–भाव लीन सिय की कृपा, जननिहिं भयउ सचेत।
सत चित रूपा बाल छवि, दरशन करि सुख लेत ।।
दम्पति सिय धन पाय के, शोभित सहित समाज।
करि प्रवेश अन्तः पुरहिं, गनेउ निजहिं कृत काज ।।
(श्रीमिथिलेशजी लली जी को लेकर अन्तःपुर प्रवेश)

रानी राय भवन निज आये। सिय शिशु छबि लखि मोदबढ़ाये
निरखि रूप चिद बाढ़ी प्रीती। पगे प्राण वत्सल रस रीती ।।
मन प्रसन्न तनु पुलकित राजा। कहे बजावन मंगल बाजा ।।
किय बहु बेष बजनिहा बृन्दा। लगे बजावन मन सानन्दा ।।
जनक द्वार बहु बाजन बाजे। तोप तुपक रव दस दिशिगाजे।।
पंच शब्द धुनि चहुँदिशि गूँजी। होत महामंगल मन पूजी ।।
करि सनमानि गुरुहिं नृप आनी। श्राद्धनन्दि-मुख कियोबखानी
बिधिवत जातकर्म सब कीन्हा। विपुल दान मुनि विप्रन्हदीन्हा
दोहा–जाग बलिक गौतम असित, शतानन्द मुनि आदि।
सबहिं कनक मनि धेनु बहु, दिये जनक अहलाद ।।

देहिं अशीष विप्र मुनि राई। पढ़हिं सुमंगल शांति सुहाई ॥
बृन्द-बृन्द मिलि चलीं लुगाई। सहज शृंगार किये उठि धाई॥
चहुँदिशि आवत नारिन यूथा। सिंधु जाहिं जिमिनदीबरूथा॥
कनक कलश भरि कोपर थारा। गावति पैठहिं भूप दुआरा ॥
उमा रमादि सहित सुर सुँदरि।गावहिं गीत तियनसंगमिलिकरि
इक प्रविशहिं इक निकसहिंछन-छन।राजमहलपुरनारिमुदितमन
करहिं आरती जनकलली की। रूपराशि उर मोद थली की॥
करि नेवछावर हिय हुलसाई। चरण परैं सब बलि-बलि जाई
दै अशीष लखि होहिं अनन्दा। मनहूँ कुमुदिनी पूरण चन्दा ॥

(पुरनारियों का भेंट लेकर आना)

आवहिं पुर रमनी हरषाई। करहिं भेंट मंगल मन भाई ॥
कोऊ फल कोउ फूलन माला।कोउ धन रतन महामणिजाला॥
निरख सुता मुख करहिं बड़ाई। धन्य रानि कन्या अस पाई ॥

चकई भँवरा गोली झुन झुन मोती हो।
जेहि निरखत भइ मंद चंद की ज्योती हो ॥
मोर चकोर शुकादिक कल धर लाई हो।
पवन प्रसंगहिं बोलत मधुर उड़ाई हो ॥

॥ सुगन्धा छन्द ॥

बड़हिन लाई मोर चकोर बनाय के।
काठन की रचना तेहि मणिन जराय के ॥
भवँरा चकई विविध खिलौना लाई है।
तेहि महँ अमित प्रकार कि मणिन लगाई है ॥

कोइ बढ़हिनि हाथी घोड़ा अरु पालकी ।
काठ रु मणिन जराव कि सुन्दर नालकी ॥
बहुरि सोनारिन भूषण मणिन जराव के ।
लाई अमित प्रकार के पाट गुथाव के ॥
बहुरि खेलौना अमित प्रकार मणिन के ।
कंचन की रचना जड़े रत्न कणीन के ॥
ता महँ हीरा बज्जिरत सब मणि लागी है ।
जहर अपर जे मणि गण तित कहँ त्यागी है ॥
जो मणि रसना लगत पुष्ट कर अंग है ।
तेहि के रचित खेलौना मानहुँ बंग है ॥
झिंगुली टोपी दरजीन लाई भाव ते ।
राजित अद्भुत मोती मणिन जरावतें ॥
पुनि पटवा की नारी आई छबि भरी ।
लीन्हे अमित प्रकार की घोरी मणि जरी ॥
मणि मोतिन की झब्बा अद्भुत राजहीं ।
आंगन में सब षढ़ि अति छबि छाअहीं ॥
पुनि महाजनी चटनी मोतिन की जरी ।
झुन झुन चकई डोरि लिये आंगन खरी ॥
रत्न विनिर्मित घिरनी लट्टू लाइहै ।
अमित दाम की पलना लाइ दिखाइ है ॥
कोइ पलना रंग हरित जरित मरकत घने ।
कोइ पलना रंग लाल पिरोजामय बने ॥

कंचन की पलना मरकत हीरा लसे ।
परम सोहावन लागत पावत राजहीं ।।
मालिन आई गहना फूल ले आइ है ।
विविध फूल के भूषन बरणि न जाइ है ।।
बन्दनवार विचित्र सो सुखमा ऐन है ।
मनहुँ बनायउ फन्द बझत मृग मैन है ।।
वरण वरण की गुड़िया कंचन मणि मई ।
लाई दौरनि सांजि अजिर शोभित भई ।।
यहि विधि सकल पावनियां आंगन में खरी ।
नख सिख अमित शृंगार किये शोभा खरी ।।
रानी अति प्रसन्न मन द्रव्य लुटावहीं ।
मन वांछित धन पाइ मुदित घर आवहीं ।।
बोले सब निज निज भवनन जाई ।
करन लगे उत्सव हुलसाई ।।

दोहा—मातु सुनैना भाग की करहिं प्रशंसा भूरि ।
सोऽपि सबै सन मानहीं, बचन सुधा रस पूरि ।।

अगर धूप चहुँ जनु अँधियारी।उड़त अबीर मनहुँ अरुणारी ।।
भरि-भरि मूठ गुलाल चलावहिं।कोउ मुख लेपहिं रंग बनावहिं
दधि केशर अतरादिक भरि-भरि गेद बनाय चलावहिंबलकरि
एक-एक कहँ पकरि नचावहिं । रंग भरी पिचकारि चलावहिं
चोंवा चंदन अतर अरगजा । दधि अवीर केशर मृग मद जा।।
छिरकहिं कुसुमन सार हरषहीं । अरु गुलाब जल धरबरषहीं।।

मृगमद चन्दन कुंकुम कीचा मची सकलवीथिन्हबिचबीचा
पुरजनपरिजनमिलिएक साथा उत्सवकरि सब होहिसनाथा
नाचन लागीं नटीं नवेली। तरल तान गावहिं अलबेली॥
नटिन संग नटकोतुक करहीं सबहिं रिजाइ मोदमनभरहीं
पुर नर नरि मगनसब होहीं। पुलकित तन हिय प्रेयसमोहीं॥
भई प्रगट मिथिलेशकिशोरी।अस कहिसब नृत्यपतिचहुँओरी॥
दो०—कोष भवन खुलवाय नृप, सबहि लुटावत दान।
धरनि परे मनि गन लसत, जनु नभ नखत लखान॥
मंत्री दान देत अनुरागे। लै-लै निज कर बाँटन लागे॥
रतन कनक मनिबसन अनूपा।दिये लुटाय याचकनभूपा॥
धन कंचन मुक्ता मनि हारा। हीरा पन्ना नीलम प्यारा॥
लाल महानग आदि सुहाये।देत सबन्हि कहँ जेहिजोभाये॥
सूत बन्दि नट नटी समाजा। दै–दै सब परितोषे राजा॥
याचक देत लेत पुनि औरहिं।लेत लुटावत सोतेहिठौरहिं॥
सरवस दान दीन्ह सब काहू।जो पावा राखा नहिं ताहू॥
इमि अपारदीन्हेउ बहु दाना।भरोइ देखियतसकलखजाना॥
परतम ब्रह्म सीय अवतारी।तिलक भूमि प्रगटीसुखकारी॥
तहँपर अस सिधि काहे नहोवै।जाकीकृपा लोक-पतिजोवै॥
दो०- मागध बंदी सूत गन, विरदहिं करत बखान।
नटी विदूषक भाट भल,सजहिं स्वाँगसुख खान॥
चौ०—इतनेहि महँएक ढाढ़िनि आई।आपनरूपविचित्रबनाई॥
दम्पति नृपतिकीन्ह सनमाना।निमि कुल यसकहिलागीगाना॥

गाय–गाय यशनाचन लागी।ललित लाड़िली छबि अनुरागी।।
कौतुक करन लगी हरषाई। बाजे बहुत प्रकार बजाई ।।
तान तरंग रंग अति भारी। असिपर नृत्य कियो सुखकारी ।।
लीला करि पुनि हास्यबखानी।तबहिं ललीसियमृदुमुसुकानीं।।
न्योछावरि तब कीन्ह भुआला। कंचनकंकन मनिभयमाला।।
बोली ढाढ़िनि नृपति उदारा। दीजै मोहिं सकल श्रृंगारा ।।
सुनि प्रिय बचन हृदय हुलसाई।दीन्हे भूषन बसन मगाई ।।
चूड़ा मणि बेशरि मनभाई कर्ण फूल दुलरी छबि छाई ।।
दो०–चन्द्रहार चम्पाकली बिन्दा बाजू बन्द।
कंठा अरु कटि किंकिनी,नूपुर ध्वनि आनंद ।।
चौ०–साठिकोटिको लहँगा बादल।सारीमोल सवाई लागल।।
साठि लाख की चोली सुन्दरि।मोतिन मणिन जड़ाईमनहरि।।
खोलि पिटारी से अतोलकी। दीन्ह चूंदरी एक अमोल की ।।
जगत मिले नहिं मोलजाँचकी। लगी किनारी पदुम पाँचकी ।।
भूषण बसन अनेक प्रकारा।साजि सकल नख शिख श्रृंगारा।।
पुनि दीन्हें गज रथ अरु ग्रामा।ढाढ़िनि भइमन पूरन कामा ।।
देत अशीष हरषि हिय भारी। युग-युग जीवो जनकदुलारी ।।
भूषण बसन मूल को कहुरी। कमला देखि सिहाई जहुरी ।।
इन्द्र कुबेर सुमेर आदि धन।सुनि लखि लागतचौथाई कन।।
ढाढ़िनि बिदा भई मन भाई। निकसि महल ते द्वारे आई ।।
सम्पतिसकल लुटावन लागी।राखी नहिंकछु सिय अनुरागी।।
संम्पति सकल लुटावन लागे। तेसब सिय सनेह रस पागे ।।
उत्सव लीला देखन हेता। आये संभु भुसुंडि समेता ।।

बाल रूप धरि महलन माँही। विचरत कोउ पहिचानतनाहीं।।

दो०—ध्वज पताक तोरन कलश, राज भवन जस राज।
मंगलमय मिथिलापुरी, भवन-भवन तस भ्राज।।

चौ०—राजभवन महँ उत्सवजैसो। घर-घर देखिय आनंदतैसो।।
सब घर पुर महँ बाज बधावा। उत्सव मूर्तिमान जनु आवा।।
मंगल उभय पहर दिन बीता। प्रगटि पुनीत लगनजब सीता।
तेहिपाछे त्रयरानि महल महँ। त्रयभगिनी भई चहलपहलतहँ।।
सीय विमातृ कांतिमति नामा। जन्मी श्रीउर्मिला ललामा।।
युगल रानि कुसकेतु बखानी। युगल सुता प्रगटी छबिखानी।।
श्री सुदर्सना मातु सयानी। जाई लली मांडवी रानी।।
पुनि लघुरानि सुभद्रा प्यारी। जन्मी श्रुतिकीरति मनहारी।।
मंगल महँ मंगल अधिकाना। महामोद मिथिला प्रगटाना।।
सिया माँडवी उर्मिला प्यारी। श्रुतिकीरति लघु ललीदुलारी।।
चारुचन्द सम चारों बहिनी। निज इच्छा सिसुतनधरिअवनी।।
प्रगटि भई युग युगलकिसोरी। द्वै श्यामल द्युतिद्वैतन गोरी।।
जबते नृपति सुता भईं चारी। तबते मुदित अधिक नरनारी।।
गृह-गृह नाचहिं मंगल गाई। बाजत चौगुन अनंद बधाई।।
भवनवेद ध्वनिअतिमृदु बानी। लगत सुखदसबविधिसरसानी।।
पुर अरु ब्योम मच्योमन भावा। अकथनीयसुखसरससुहावा।।
अद्‌भुत उत्सव रंगन जोही। गये सकल संसार सुमोही।।
विधि हरि हर सुरपतिसुरबृन्दा। सकलमनुजतनुधरि सानंदा।।
रमणिन सहित नेह सुखफूले। मिथिलागलिन फिरहिंमनभूले।।
लखि उछाह रबिरथथकिगयऊ। मासदिवसकरदिवससोभयऊ।।

देखत बाढ़यो दिवस अपारा।हय युत भानु गती हिय हारा ।।
यह रहस्य काहू नहिं जाना । दिनमनि चलेकरत गुनगाना ।।
प्रमुदित हृदय सकलपुरवासी । मिलीसबहिं परमानंद रासी।।
दो०-सिय जन्मोत्सव मोद रस, रंग तरंग न माहिं ।
छिन सम बीते पाँच दिन, काहुहितन सुधिनाहिं।।

❀ छठी उत्सव ❀

दो०-जन्मवार के छठे दिन, भों रबिवार पुनीत ।
तेहिदिन कुँवरिन कीछठी,सजत साज तिय प्रीत ।।
चौ०-आयउछठीदिवसअतिपावन। पुरजनपरिजनमोदबढ़ावन।
सिया छठी उत्सव हित राजा।साजेउ परमम नोरमसाजा ।।
घर-घर बंदनवार बँधाई । मणि मोतिन सोंचौक पुराई ।।
नाचगान युत बाजें बाजा । छठी साज सजवाये राजा ।।
आयउ गौतमादि मुनि बृन्दा । पढ़हिं सुवेद शान्ति सानंदा ।।
फल फूलादिक साज मगाये । मनि मोतिन सों चौकपुराये ।।
गलिन-गलिन सुगन्ध छिरकाई । बसन द्वार बहु रचे बनाई।।
मनिमय रची सकल फुलबारी । दीप बृक्ष बहु रचे सँवारी ।।
कदली खम्भ लतन के द्वारा । ध्वज पताक तोरन के हारा ।।
दो०-ध्वजपताक गृह-गृह सजे, रोपेकदली द्वार ।
मंगलमय चित्राम लिखि, बाँधे बंदन वार ।।
चौ०-उत्सवघर-घर नगर मझारी।राजमहल शोभाअतिभारी
सुर दुंदुभी बजावहिं हरसहिं।बारहिंबार सुमन स्त्रकबरसहिं।।
मिथिला ललित उछाह गठी है।मुनि गन मंगलशांति पठीहै।।

शतानन्द मुनि आदिक आये। लोक रीतिहित साजसजाये॥
आयसु दीन्ह महल महँ आई। प्रथमसियहिं अन्हवावहु जाई॥
सुनिप्रिय वचन हरषिहिय रानी।करन लगी कुलविधिसुखमानी
सिय के अंग सुगंध लगाई। उबटित कमलाजाल अह्वाई॥
दिब्य बसन भूषन पहिराये। झलमल झलकत लगत सुहाये॥
सीय बाल छबि वरनि न जाई।नयनन निरखत हीबनिआई॥
अंजन अँखियन माहिं लगायो।वंकभृकुटि मसि विन्दु सुहायो॥
अरुणिम अधर हरत हियहासा। गोल कपोल मनोरमनासा॥
दोहा-चरण कमल कोमल लसत, चमकत नख मणि जोति॥
नख सिख दामिनि सी दमक, लखि चकचौंधी होती॥
रानि सुनयना की सखि आई।करि विधान रानिहिं नहवाई॥
करन लगी रचि-रचि शृंगारा। साजे बसन अनेक प्रकारा॥
बेनी गूँथहिं कला दिखाये।विच-विच सुन्दर सुमन लगाये॥
मोतिन सों रचि माँग सँवारी।शीश फूल शोभा अति भारी॥
नख शिख रचि शृंगार सोहावन।बाजूबंद भुजन मनभावन॥
कंकंन किंकिन स्वर श्रुतिसारा।उर दुलरी तिलरीमणिहारा॥
जावक रंजित चरण सुहाये। नूपुरादि भूषन पहिराये॥
राजति पीत रंग की सारी। चहुँदिशि मोती लगी किनारी॥
दोहा-सीय मातु शोभा अमित, सिर सिंदूर सुहाय।
कज्जल दृगन लगाय सखि, वीरी दई बनाय॥
पान खात मुख अधिक सुहाये।तब सखि अतर सुगंध लगाये॥
करि शृंगार सुनयना रानी। लीन्ही गोद सियहिं पुलकानी॥

मोतिन पूरी चौक सुहाई । कंचन चौकी तहाँ बिछाई ।।
तापर बैठीं मातु सुनयना । गोद सुता राजति छबि अयना ।।
मनहुँ सिंधु रमनी श्रीगंगा । लक्ष्मिहिं गोद लिए उमंगा ।।
जनक नृपतिहू करि शृंगारा । आये लगत परम सुकुमारा ।।
शतानन्द तब हिय हरसाई । करवाई कुल रीति सुहाई ।।
ब्राह्मण बृन्द वेद ध्वनि करहीं।जय-जय-जय तिय नरउच्चरहीं
दोहा—गावन लागीं गीत सब, सजनि समय अनुसार ।
बाजन लगे बाद्य बहु, मधुर महल के द्वार ।।
छन्द—बरसहिं सुमन सुर वृन्द सुन्दरि बृन्द मंगल गावहीं ।
कुलदेव पूजि सप्रेम रानी राय शीश नवावहीं ।।
माता सुनयना बार--बार पसारि अंचल याचहीं ।
युग—युग जियो मेरी लली सिय शेष सिर जौ लौ महीं ।।
दोहा-करत नृपति यहि विधि महल, छठी दिवस सबिधान ।
चहुँदिशि उत्सव नगर महँ, मंगल गान महान ।।
द्विजन दान दिय भूप उदारा । पहिरावन अरु नेग अपारा ।।
पाइ जहाँ तहँ देहिं अशीसा । कन्या चिरजीवै जगदीसा ।।
द्वार भीर लखि नृप हरसाये । देश-देश के मुनि जन आये ।।
कौतुक विविध प्रकार दिखावहिं।नृत्यकलादि अमितप्रगटावहिं।
नाना विधि के खेल सुहाये । बहु संगीत कला दरसाये ।
ह्वै प्रशन्न सनमानहिं राजा । देहि ग्राम गज धन सुख साजा।।
याचक वृन्द भीर बहु आई । देखि नृपति मन सुख न समाई ।।
मन्त्रिन सों नृप कहेउ सहरसा । धन रतनन की कीजै बरसा।।

ते चढ़ि ऊँचे महल अटारी । लगे लुटावन धन जिमि बारी ॥
स्वर्ण रतन धन भूषण अम्बर । हीरा मोती लाल जवाहर ॥
दोहा—सुर भिक्षुक बंदी बनें, नर कौतुक महँ आय ।
लूटन लागे प्रेम सों, जनक राय गुन आय ॥
पुनि नृप जनक हृदय हरसाये । पीरे बसन अनन्त मगाये ॥
आयसु दीन्हीं नगर मझारी । सबहिं करहुँ पीताम्बर धारी ॥
नगर माहिं सब कहँ पहिराये । पीरे–पीरे बसन सुहाये ॥
बालक बृद्ध सकल नर नारी । पीरेइ सब दरसत छबि भारी ॥
पीरी सकल पुरी छबि न्यारी । फूली मनहुँ पीत फुलवारी ॥
सीय छठी कहि-कहि सब नाचत।सुखी रहै सिय बिधि सों याँचत
यहि विधि उत्सव होत अनूपा।महलन गमन कियो तब भूपा॥
बोलि सुसेवक आज्ञाकारी । करहु जिमावन केरि तयारी ॥
दोहा--प्रथमहिं मंत्रिन्ह नगर महँ, नेवते सब नर नारि ।
बिप्र बृन्द मुनि बृन्द बहु, आये समय बिचारि ॥
नेवते सादर सब पुर बासी, परिजन प्रियजन सुजन प्रवासी ॥
जनक नगर के सब नर नारी । सबहिं बुलाये नेवति सु झारी
यथा योग्य सब कहँ बैठारी । परसत भोजन रुचि अनुहारी॥
पूरी पुआ मधुर मिष्ठाना । ब्यंजन विविध सुखद पकवाना ॥
मोदक मोहन भोग सुहावन । पायस पापर रुचि उपजावन ॥
रसगुल्ला अरु बालूसाही । परसन लगे वस्तु मन चाही ॥
चारि भाँति षटरस के भोजन।को गिन सकै पदारथ अनगन ॥
कढ़ी पकौड़ी चटनी प्यारी।दधि ओदन अतिसय रुचि कारी ॥

दोहा-आम अनेकन भाँति के, परसे प्रेम समेत।
पावत सब आनन्द मगन, उठन नाम नहिं लेत ॥
शतानन्द आदिक ऋषिराई। तृप्त भये सुख कहि नहि जाई॥
बिप्र बृन्द आनन्द किलोल। सिय छठी की जय-जय बोलत ॥
कहहिं परस्पर सकल प्रजाजन।देख्यो सुन्यो न कहुँ अस भोजन
देब वृन्दहू नर तनु धारी। करन लगे भोजन रुचिकारी ॥
स्वाद सराहिं वस्तु पुनि माँगहिं।सबहिं सराहत निज-निज भागहिं
अद्‌भुत आनन्द बरनि न जाई। सबहीं दीन्हेउ तृप्त जिमाई॥
पुनि अंचवाय सहित सनमाना। सुखद सुगंधित दीन्हो पाना॥
विप्र सप्रेम दक्षिणा पाई। चले अशीषत करत बड़ाई ॥
दोहा-यहि विधि सबहीं के हृदय, रहे मोद महँ छाय।
भयउ छठी उत्सव सरस, सो कछु बरनि न जाय ॥
छन्द-उत्साह अमित उछाह आनन्द सिन्धु सों उमड़त भयो।
नृप रानि महलन सखि सहेलिन प्रीति युत भोजन कियो॥
यहि भाँति आई ललित रजनी छठी की आनन्दमयी।
छाई मनोहर चाँदनी नभ चन्द द्युति अतुलित भयी ॥
दोहा-सित चौदसि वैशाख की, छिटकी चांदनि राति।
छठी सिय चहु भगिनि की, सुख उमगत सब भाँति ॥
छकी छेम छबि सिय छठी है। मानहुँ मंजुल मोद मठी है ॥
सिया छठी लखि प्रीति सुपागी।युवती यामिनि जागन लागी॥
नहिं जागै को अस हत भागी। आपुहिं नींद भामिनी जागी ॥
गावहिं सखी जागरण गीता। वाद्य बजावहिं मधुर सुरीता ॥

नारि परस्पर नात लगाई। व्यंग गारि देती बहू गाई ॥
कौतुक करहिं विचित्र बनाई।नृत्य गान करि सुनहिं सुनाई ॥
चढ़ी विमानन लखि-लखि हरषहिं।सुर सुँदरी सुमनसुरबरषहिं
कहैं सुनैना मातु निहारी । रहै मुबारक लली तुम्हारी ॥

दोहा-चहुँ कुँवरिन की भइ छठी, चहुँदिशि बरषत रंग ।
अवनि गगन रस महँ मगन, सबके पुलकित अंग ॥
शतानन्द गुरु को भयो, पूजन विबिध प्रकार ।
दे अशीष गवने भवन, चतुर कुँवरि उर धार ॥
बदरी नारायण चरण रानिन नाइन माथ ।
निज कुल देव निहारी छवि, लोचन भई सनाथ ॥
कर जोरे बिनती करें, प्रेम न हृदय समाइ ।
चारों कुअँरि चिर जीवहीं, यह अशीष सुभ पाइ ॥
जय-जय श्री सर्वेश्वरी, जनकलली सुर वृन्द ।
करि गवने निज धाम सब, ब्रह्मादिक सानन्द ॥

नित उत्सव आनन्द अनूपा । निसिदिन जात न जान्यो भूपा॥

(अथ बरहीं उत्सव नामकर्ण)

आयेउ बरही दिवस सुहावन । मंगलमय अति पावन धावन ॥
छठी माहिं जिमि उत्सव कीन्हों।भोजन भयो दान जिमिदीन्हों
तादृश दूनों बरही माहीं । उत्सव में कहि जात सो नाहीं ॥
चढ़े विमान बिबुध बर बृन्दा । पुर ऊपर आये सानन्दा ॥
मिथिला घर-घर बाजत बधाई।राजमहल मंगल अधिकाई ॥
महल सज्यो अतिसय छबि पायो।अद्भुतबिधिसब नगरसजायो

सींचि सुगन्धन गली बजारा । चौके रचे दुआर दुआरा ।।
तान तरंग रंग सुखभारी । पीताम्बर धारी नर–नारी ।।
करि शृंगार जनक नृप आये । बैठि सिंहासन लगत सुहाये ।।
रानि सुनयना करि शृंगारा । आईं उर आनन्द अपारा ।।
गौतम शतानन्द सानन्दा । आये संग लिए मुनि वृन्दा ।।
मख कर्ता हरि भक्ति उपासी । मंत्र विसारद श्रुति अभ्यासी।।
वन्दे पद नृप रानि सबहिं के । दिये सबहिं आसन अतिनीके ।।
ललिहिं उबटि उर अति सुख पायो । नाउनि नेह सहित नहवायो
दोहा–लगीं करन शृंगार सो, सुर–सुर तीय सिहाहिं ।
हनि दुंदुभि बरसहिं सुमन, हरसहिं अति मनमाहिं ।।
केश कुटिल कारे सुकुमारे । सुरभित तैल लगाय सँवारे ।।
कंचन सूत कलित कल कुलही।जनुघन पर थिर दामिनि उलही
अंजन रंजित अँखियाँ सोहैं । बंक भृकुटिया जनमन मोहैं ।।
नासा ललित अधर अरुनारे । मधुर हँसनि लागत अतिप्यारे।।
गोल कपोल चिबुक मनमोहै । लघुमणि कंठ विभूषण सोहै ।।
झीन झँगुलिया तनु छवि कारी। पंकज पानि पहुँचिया प्यारी।।
चरण अंगुलिन नख युत जोती । कमल दलन बिलसै जनुमोती।।
करत मधुर धुनि नूपुर सीके । मन भावतो सुआसिनि नीके ।।
दोहा–सिय शिशु तन शृंगार करि, नाउनि नेह निहार ।
जन्म सुफल निज लेखि पुनि, आपु गई बलिहार ।।
निमिकुल राज नहाय नव, युग पीताम्बर धारि ।
सहित सुनयना चौक पर, बैठे आसन मारि ।।

ललौ मातु की गोद महँ, शोभित सहज सुभाय ।
मानहुँ प्रतिमा हेम की, चन्दहि रही खेलाय ।।

शोभित ललौ मातु के अंका । थिर दामिनि जनु लिये मयंका।।
नाम करन कर अवसर जानी । बोले मुदित हृदय नृप ज्ञानी ।।
पुत्रिन नाम करन करि दीजै । यह मन इच्छा पूरन कीजै ।।
उपरोहित तब हृदय विचारी । विधिवत लागे करन तयारी।।
पूजे कलश गनेश प्रधाना । दिगपति षट त्रय ग्रह सविधाना ।।
पढ़ी शाँति गौतम सुत ज्ञानी । करि अभिषेक कहा मृदुबानी।।
सुनहु महीपति तत्व उचारा । भयो उदय बड़ सुकृत तुम्हारा।।
दम्पति तब दुहिता शुभ हेरो । नीके नखत जन्म इन्ह केरो ।।
उत्तम लग्न बलिष्ठ प्रमानौ । उच्च अखिल ग्रह मंडलजानौ।।
जनक राय यह तुम्हरी कन्या । विधि हरिहर वंदित पदधन्या।
इनके नाम अनंत अनूपा । जानहिं संतन सुर सुर भूपा ।।
तदपि यथा अवसर अनुसारी । कहिहौं नृपति नाम दुइचारी।।
साक्षात् सीता अविनाशिनि । राम प्रिया साकेत निवासिनि।।
सीतानाम प्रसिद्ध सुखाकर । मीन मंजुनयना सुरासि कर ।।
तुम्हरो नाम जनक जग अहई । यासो नाम जानकी कहई ।।
प्रगट भई भूमी सो आई । सोइ भूमि जा नाम सुहाई ।।
श्री हू को श्री की यह दाता । नाम सत्य श्री जग विख्याता ।।
कहियत नाम विदेह तुम्हारो । इमि वैदेही सबहि पियारो ।।
सब प्रानी की देहन माहीं । जो विशेष थित रहत सदाहीं ।।
ताते इनहिं कहिय वैदेही । प्रान प्रान जिव केजिव जेही ।।

सुता सुनयना की गुन धामा। धरिय सुनयना नन्दिनि नामा।।
प्रगटि आपुही सब जग जानै। इमि अयोनि जा नाम बखानै।।
सदा दिव्य छवि इक रस गोरी। यासो कहिये नित्य किसोरी।
यहि विधि इनके नाम अपारा। होइहैं प्रगट सकल संसारा।।
दोहा—इन्ह मँह सीता नाम को, अमित प्रभाव प्रताप।
अपौरषेय सुवेद महँ, प्रगट करत मुनि जाप।।
एक अक्षरी कोष में 'स', है ब्रह्म को नाम।
"इता" प्राप्ति वाची सु वह, कियो तासुमैं धाम।।
तत्त्व मसी वेदान्त को, महा वाक्य सिद्धान्त।
सोउ संभव सिय नाम सो, बिना बूझ भवभ्रान्त।।
तत्पद रुचिर तकार है, त्वं पद मधुर अकार।
सी मिलि असी प्रसिद्ध ही, कीजै विशद विचार।।
रस पाँचो श्रीजानकी, नाम मध्य निरधारु।
सूक्षम मति से समझिये, भाव भावना गारु।।
'सी' सकार शृंगार रस, ललित युगल रस रूप।
सख्य इकार रसाल सुठि,श्रुति सद सुवच निरूप।।
शान्त क्रान्त रस सरस सोइ, रूप तकार प्रमान।
गुरु अकार सो दास्य रस, जानहिं सुबुध सुजान।।
लघु अकार वात्सलय रस, विगत निरसता रीति।
यहि विधि पाँचो रस विदित, भक्तन हृदय प्रतीति।।
"सी" सिंदूर सदृश लसत, भक्ति भामिनी भाल।
"ता" तारादिक शक्ति को, हेतु विचित्र रसाल।।

'सी' सिर भूषण विश्व कर, निरदूषन गुन खान ।
'ता' तप हर तारीफ तन, तोषत ज्ञान प्रधान ।।
'ता' तर तुला विचित्र चित, तौलत नेह नवीन ।
समते जे इनमें रहे, अपर ऊन दिन दीन ।।
श्री श्रुति कीरति माँडवी, ललित उर्मिला रूप ।
इनहीं के अन्तर लसत, समझे संत अनूप ।।

सुखद 'स' अक्षर सब संसारा । 'इ' अक्षर ईश्वरी उचारा ।।
कहियत 'त' कहुँ तत्व परात्पर । प्रद आनन्द परम 'अ'अक्षर।।
ब्रह्मा संस्था ब्रह्म स्वरूपा । परतम ब्रह्म अनादि अनूपा ।।
ब्रह्म वेत्तन प्राप्ती देखी । ताते सीता नाम सुलेखी ।।
यहि बिधि सीता नाम सुहावन । जगदीश्वरी प्रगट जग पावन
सीता नाम जाप मन लावै । परम धाम परमानंद पावै ।।
सीता नाम जपै जो कोई । तत्व परात्पर दर्शन होई ।।
अस कन्या तुम्हरे गृह आई । निमि कुल की तिहुँ लोक बड़ाई।
सुनि सीता महिमा मन भाई । रानि राय अति सुख न समाई
महिमा नाम सुनत अनुरागे । सब कोउ आसिष देवन्ह लागे ।।

छंद–पुनि औरसी दुहिता महिप तौ श्रीमती कान्ती जनी ।
मतिवन्त परे अनन्त से, लक्षमण शक्ति सुगुन भनी ।।
निरवाध भाव अगाध साधक, साध्य हित पहिचानिए ।
तिहिको सनातन नाम शोभन, उर्मिला कर जानिए ।।

दोहा–सुदर्शना कुश केतु केतिय, सुभद्रा शुभ रूप ।
भई सुता द्वै भाग बड़, दोउ सुर्गम ते भूप ।

नित्य धाम नित भरत को, शक्ति प्रथम है सोय ।
नाम मांडवी तासु को, दुहुँफुल मण्डन होय ।।
शक्ति नित्य शत्रुहन अनूपा । सोहै श्रुतिन कि कीरति रूपा ।।
वरणाश्रम के धर्म उचारी । भव को पंथ लगावन हारी ।।
ताते श्रुति कीरति तिहि नामा । इन्हते सब पूरहि मन कामा।।
चहु भगिनी सुरतिय सिर भूषन । शक्ती शुद्ध अनादि अदूषन।।
चिरआयसु चिर होंहिसुहागिनि।बिलसहिचिरसम्पतिबड़भागिनि
पती ब्रतन्ह महँ मुख्य अनूपा । महानन्द अम्भोधि सरूपा ।।
चक्रवर्ति श्री दशरथ नृप के । ह्वै हैं पुत्र वधू प्रिय पिय के ।।
गुन छवि रूप अनन्त सो होई । शीलवती कुल मंर्डाहि दोई ।।
प्रेम भक्ति करनी जग वन्दिनि । महाविषम भवरोग निकन्दिनि
दुहिता चहुँ परि पालहु राऊ । यदपि तुम्हार विराग सुभाऊ।।
इनके बाल बिनोद निहारी । अनुदिन लहत रहब सुखभारी।।
जो शत पुत्रन से सुख होई । इन पुत्रिन से पावहु सोई ।।
आयो परम मनोहर पालन।रचित विचित्र कनक मनि जालन
तापर ललित ललिन्ह पौढ़ाई । गावहि मातु मल्हाइ मल्हाई।।
देखत शोभा दृष्टि मिलाई । हँसे हँसत किलके क़िलकाई ।।
दम्पति दशा न कछु कहि जाई । भये सुखी नहि हृदय समाई।।
सिय बरहौ बारहौं विभाकर । विकसे लखि सरोज नर मुनिबर
शतानन्द को पूजन कीन्हों । विप्रन्ह सहित दान नृप दीन्हों ।।
याचक नेगिन जो जेहि भावा । सो सोइ पाइ अशीष सुनावा।।
दोहा—यथा योग कुल रीति करि, उत्सव कीन्ह अनूप ।

सकल सराहत देव मुनि, धनि-धनि मिथिला भूप ।।
चहुँ कुँवरिन की जस कियो, उत्सव श्री मिथिलेश ।
तस न सकहिं त्रय भुवन महँ, कहि कवि शारद शेष ।।

(बाल बिनोद) लली जू के

सुभग सेज महँ कबहुँ सुमोदा । माता लसहिं लली लै गोदा ।।
कबहुँ पौढ़ि पय प्याय सप्रेमा।सिय मुख लखहिं छकी सुख छेमा
कबहुँ गोद लै–लै दुलरावति ।रानि सुनयना अतिछबि पावति
शरद चन्द ते अधिक सुहावन।दिन-दिन बढ़ति छटामनभावन।।
दिव्य वदन छबि निरखि सुहाई।चूमति पुनि-पुनि कंठ लगाई।।
कबहुँक ऊँचे अधिक उठावैं । कबहुँक कंधन पर बैठावैं ।।
कबहुँ मधुर स्वर गाय गवावैं । कबहुँक लै झुनझुना बजावैं ।।
कबहुँ उबटि अन्हवाय सिंगारी।निरखि सुनयना नैन सुखारी।।
कबहुँ किलकलति बाल उमंगन।जानु पानिधावहिंमणिअंगन।।
कर गहि माता चलनि सिखावति।चुटकी करन बजायबजावत
कबहूँ जनकलली लै अंका । दुलरावत लखि सुमुख मयंका ।।
दोहा-सिय स्वामिनि सर्वेश्वरी, व्यापक परमा शक्ति ।
सो सिय खेलति गोद महँ, बस भई प्रेमा भक्ति ।।

(श्री नारद जी का आगमन, हस्त, चरण, रेखा देखना)

बैठि बालिका वदन निहारहिं।जनक सुनयना सहित दुलारहिं।।
तेहि अवसर नारद मुनि आये । करत राम गुन गान सुहाये ।।
उठे जनक लखि सहित समाजा । बन्दे पद रानी युत राजा ।।
सियहिं उठाय प्रणाम कराये । लीला लखि ऐश्वर्य भुलाये ।।

दिये मुनीश अशीष विशेषी। बड़भागी भूपहिं हिय लेखी ॥
मुदित महिप मुनि पाँय पखारे। सादर सिंहासन बैठारे ॥
पूजे बहु विधि मुदित महीशा। कहे भयउँ मैं धन्य मुनीशा ॥
दोहा-सुनि मुनि कहे नरेश सन, हमहूँ धन्य विदेह।
जग जननी के जनक तुम, पूजेहु जेहि कर नेह ॥
सुनि सीरध्वज प्रेम प्रमोदी। सिय बैठाये मुनि की गोदी ॥
कहकर जोरि सुनिय मुनि नाथा।कहियललीलक्षणलखिहाथा॥
कह मुनि सुनहु भूप सुख छाके। लोक विलक्षण लक्षण याके ॥
कहँ लगि कहौं सुता प्रभुताई। विधि हरिहर बन्दित पतिपाई।
सीर ध्वज तब सुता पताका। भई करनि कुल कीरति साका॥
सीता सीतल क्षमा-क्षमा की।स्वामिनि शिवा सु महारमाकी॥
भजत चरन जन भव भय भानी।सात द्वीप महि मंडल रानी ॥
रति शत सम सुन्दरि शुभ शीला।दयावतीयुतललितसुलीला॥
छन्द—लीला सलोनी करनि कल, महिमा महोदधि जानकी।
मिथिला मही भव मंजु मणि, पर शक्ति पुरुष प्रधान की ॥
पूजित परम हंसादि पद प्रद, परम पद निर्वान की।
जग बन्दिता सुर अर्चिता, जगदीश्वरी प्रिय प्रान की ॥
दोहा-जानहु जनक जनेश, जननी जगदानन्द की।
कहि न सकै शिव शेष, याके लक्षण गुन सुयस ॥
बगिया माहिं याहि एकबारा। मिलिहै श्यामल राजकुमारा॥
तिनहीं के संग होइहि ब्याहा।होइहि जग स्वामी सिय नाहा ॥
श्याम काम शत सम अभिरामा।रूप सच्चिदानन्द सुधामा ॥

जगत बंद्य जग पूज्य प्रतापी। संतन हृदय बसहिं सुखथापी॥
कृपा सिन्धु जन बन्धु उदारा। अधम उधारन हरन बिकारा॥
पतिब्रता चूड़ामणि सीता। अस पति लहि सेइहै बिनीता॥
बसिहिं परम पद दायक पुर महँ। बैकुण्ठादिक बंदत जाकहँ॥
पैहै ससुर सुरेश सहायक। चक्रवर्ती पद पालक लायक॥
लैहैं देवर तीन दुलारे। ललित भाव भगनिनि पति प्यारे॥
दोहा--यहि कहँ सुन्दर सात शत, सासु सहित परिवार।
प्रेमिनि पुत्री ते अधिक, करिहैं प्यार दुलार॥
निज सुख तजि पति सुख यश देनी। रमन प्रान मनबसकरलेनी
पति पितु बंश प्रशंस पताका। सुजस सुकीरति जिमिशशि राका
सीता नाम अर्थ युत ठीका। सो मम पिता सुनाये नीका॥
मीन मंजु नयना रस धामा। जानहु जनक रासि कर नामा॥
धन्य-धन्य तुम जनक महीपा। अस तनया पायहु कुल दीपा॥
धन्य तुम्हारि रानि कह नारद। सुता सुनयनहि दिये बिशारद
चौंसठ चिन्हन कर फल भाखे। सुनि नृप रानि हृदय महँराखे॥
दोहा--पुनि चरणन के चिन्ह कहि, चालिस अष्ट प्रभाव।
गुनि मन महिमा सीय की, अनुरागे मुनि राव॥
राजहिं रानी राज पुर, सियहिं सहित परिवार।
दै आशीष प्रशंसि पुनि, गये ब्रह्म आगार॥

(श्री शंकर जी को तान्त्रिक रूप में आगमन)

एक बार शिव बेष बनाये। तान्त्रिक रूप धारि करि आये॥
अद्भुत लीला करि दिखराई। महलन लै गई दासि सिखाई॥

सिय प्यारी के दर्शन पाई। शिव कैलाश गये हरषाई ।।
एक बार सनकादिक आये। बाल रूप कोउ जानि न पाये ।।
जनक भवन महँ कौतुक कीन्हा।सिय दर्शन करिमारगलीन्हा।।

दोहा--जब तें सीता जनक के, भवन प्रगटव भइ आइ ।
सुर कन्या सब दिन प्रती, आवहिं वेष बनाई ।।
सिय सों भाव जनावहीं, सेवहिं सदा सप्रेम ।
मर्म न काहू लषि परे, आवति जाति सनेम ।।

॥ श्री चन्द्रकला जी की जन्म ॥

दोहा--चाचा श्री मिथिलेस के, नृप बर सुब्रत राव ।
भक्ति भाव गुन आगरी, रानी भावा नाव ।।
पुत्र प्रवर तिनके भये, अबिरल रति के धाम ।
चन्द्रभानु तिय सुन्दरी, चन्द्रप्रभा तेहि नाम ।।
एक रासि एक भक्ति रति, युगल चन्द में भाव ।
भाव एक प्रगटी सुता, चन्द्रकला बर नाव ।।
अभिजित मूहूरत नखत, स्वाती माधव मास ।
शुक्ल पक्ष तिथि चारि दस, मध्य दिवस सुभ खास ।।
जेहि दिन छट्ठी लली की, भली भई उत्साह ।
तेहि दिन चन्द्रकला कुँवरि, प्रगटी उत्सव माह ।।

छन्द-भई निमिकुल कन्या,त्रिभुवन धन्या,परम सुमन्या,मनहारी
छबि रूप लवण्या, अग्र सुगण्या, सीय अनन्या सुख कारी ।।
निज मणि जनु खोई, तेहि हित रोई,प्रेम सुबोई, अमिझारी।
पर प्रभा पसारी, प्राकृत न्यारी, पलक न पारी, महतारी ।।

पुनि-पुनि दुलरावे, मातु खेलावै, अंक लगावै, हिय लाई।
तन गौर सुहाई, सुधा लजाई, अमित जुन्हाई, शरमाई ॥
अंचल तर झाँकी,तड़ित प्रभा की,जनु घन ढाँकी, रमकाई।
जनु विधु के अंका, विगत कलंका, बैठि मयंका,छबि छाई ॥
सिय तद्रूपा, बाल स्वरूपा, रहस अनूपा, अबिनासी।
धाई सुनि दासी, जे प्रिय खासी,महल उपासी सुखरासी ॥
तजि-तजि निज काजैं, मंगल साजैं, नौबत बाजैं, रसरासी।
लखि बिबुध सुहरसै,कुसुम सुबरसै,चहुँ श्रुतिसरसैंगुनरासी॥
जय-जय करि बन्दैं, जय रस कन्दै, परमानन्दैं, मुनि-ज्ञानी।
श्रीचन्द्रकला की,झलक झला की,झाँकी-झाँकी झक आनी ॥
'मधुरी' श्रुति सोधी, कहै सो को धी,पुण्य पयोधी,नृपरानी।
यह स्तव करहीं, ते सिय लहहीं,पिय रस चखहीं,मनमानी॥

दोहा—श्यामा श्याम स्वतन्त्र नित, रहस मन्त्र के हेतु।
आई तिलक सुपुण्य थल, रसिक जनन जस केतु ॥
वारि--वारि जल पान करि, राई लोन उतारि।
सर्वेश्वरी सुबाल छबि, लखि जननी बलिहारि ॥
चन्द्रप्रभा नृप भानु की, सुकृत रूप तनु धारि।
प्रगटी मनु मिथिला महल, भइ 'मधुरी' अनुहारि ॥
मणिमय महल बिचित्र अति, चन्द्रभानु के धाम।
तामें चन्द्रकला छयो, शीतलता बिश्राम ॥
मिथिलापति सुनि सुख भयो, छठी सभा के माहिं।
प्रिय भ्रातहि संतान की, रही बासना नाहिं ॥

बजत बधाई छठी की, जन्म बधाई आज।
आये नृप अनुराग युत, मुनि-गन ज्ञात समाज॥
देत दान नृप राजमणि, जात कर्म निज हाथ।
किये दिये सुख बन्धु को, सब बिधि भये सनाथ॥
कहत जोरि कर मृदु बचन, सुनिये नृप मणिराज।
पराशक्ति अह्लादिनी, शक्तिन के सिरताज॥
नैमिषार थल तप किये, तहाँ लही बरदान।
तहाँ साथ ही हमहु कछु, तप करि लहि सनमान॥
तेहि ते तिनकी सहचरी, मेरे गृह अवतार।
याज्ञवल्क्य हँसि करि कह्यो, सत्य गिरा निरधार॥
षष्ट अष्ट षोऽश सखी, दल प्रति सेवति ताहि।
षष्टहिं महँ यह मुख्य गनि, ताते षष्टी माहि॥
प्रगट भई छइ चन्द्रगति, चन्द्रकला बर नाम।
है अनादि ग्रन्थन्हि लही, सुनि नृप मणि सुख धाम॥
कह्यो बजावहु बाजने, साजि नृत्य सब साज।
नट मागध गावहि नचहिं, जय नृप मणि महराज॥
गाय वधाई के पदहिं, आये चारों वेद।
बड़े गुनिन के बेष धरि, गावत शुचि रस भेद॥

श्री ललीजू के बरही के बाद के हैं—परिकर्ण

॥ श्री किशोरी जी का प्रेम चौपाई ॥

एक दिवस आनन्द भयो भारी।काह कहौं कह्योजात न प्यारी॥
तदपि कहे विनु रह्यो न जाई। बढ्यो सुहृदय बेगि उमड़ाई॥

चहुँदिशि अली सखी गण जोहैं । मध्य सुनैना रानी सोहैं ॥
लेत मोद भरि गोद सुता को । करत पान मुख-चन्द्र सुधाको॥
ताहि समय सिय मचलि परी है।पय प्यावत नहिं पान करीहै।
रोवति अतिसय करि किलकारी।सुता देखि दुख भइअतिभारी
दासी भेजि शतानन्द आये । रानी गिरि तब चरण में जाये ॥
बहुत दिवस में सुता अस पाई।कौन अभागिन दृष्टि लगाई ॥
छिनक विलम्ब विचारि कियो जब।आयो हृदयबातफुरिअसतब
सुता श्री चन्द्रप्रभा घर जाई। प्रीति दुहू ँ की अनादि है माई॥
इतउत की दोउ प्रीति एक जस। दसा दुहुँन की भई एक रस॥
चाहत हैं एक संग मिलन को। ताते करो संयोग दुहुँन को ॥
इतने में एक दासि दौड़ि कै। आइ सुनाइ दशा सब रोइकै ॥
मिलि दोउ रानी एक संग बैठीं।सिया ललकि उत गोदमेंपैठीं॥
चन्द्रप्रभा दोउ सुता गोद भरि। भयो मोद को सकै लेख करि॥
मिलि दोउ प्यारी करि किलकारी।लिपटि गई दोउ भुजापसारी
देखि कै चंद्रप्रभा सुख भूलैं । सावन घनमयूरलौं फूलैं ॥

॥ श्री चारुशीला जी का प्रागट्य ॥

दोहा—नखत चित्रा लग्न धनु, शुभ मुहूर्त ग्रह योग ।
माधव पूनो भौम दिन, दून सुखी पुर—लोग ॥
शत्रुजीत दम्पति महल, भयो सुदिब्य प्रकास ।
चारुशिला श्री सिय सखी, प्रगटी भयो हुलास ॥
चन्द्रकान्ति की कुक्षि से, शिशु तनु धर्‌यो स्वरूप ।
वात्सल्य रस आय जनु, सुकृत सुरानी भूप ॥

सखी सदा की सेविका, सीता अंश सुरूप ।
जन्मी बहु निमि बंश में, तिन महँ युगल अनूप ।।
सीय जन्म के समय से, षट सुमाह परयन्त ।
राज सदन परिवार महँ, पूत्रि बहुत प्रगटन्त ।।

—: बधाई पद :—

बधाई बाजै हो मन हरनी ।।
मिथिलापुर में मंगल घर घर, सुख शोभा को बरनी ।
लघु भ्रात श्री मिथिला पति के, शत्रुजीत सुठि करनी ।।
सम कुल रूप सकल गुन की निधि, चन्द्र कीर्ति तासु धरनी ।।
ताकी कूष प्रगट कन्या भइ, छबि शोभा की धरनी ।।
जनकलली जू की सुख द्रुम लतिका, नाना मुद फल फरनी ।।
'रसिका' लघु भगनी है ताकी, सिय पद रज अनुसरनी ।।

—: बाल बिनोद :—

विमल सेज राजती सुनयना, विमल सिया शिशु गोद लिये ।
एकटक सिय मुख चन्द विलोकति,लोचन विमलचकोरकिये।।
कबहुँ सैन करि दूध पिलावति, कबहुँ के लावति चूमि हिये ।।
बाल चरित गावति प्रमुदित मन, छकि रहि नेह पियूष पिये।।
प्रेम मगन मन दिन अरुराती।जाहि पलक सम सुखसरसाती।।
कबहुँ पालने कबहुँ उछंगा । मातु मल्हावहिं प्रीति अभंगा ।।
बाल चरित गावति दुलरावति।कबहुँ पौढ़ि पयपानकरावति।।
कबहुँ घुनघुना वाद्य मनोहर । सरस मंद नादति सिय सुखकर
किलकति हँसति सिय सुखदानी।उछरति हृदय अमित हरषानी

लक्ष्मीनिधि जब आइ दुलारैं। सिय महा मन मोद प्रसारैं॥
दोहा—यहि विधि नगर आनन्द महँ, वीत्यो पंचम मास।
लाग्यो छठवाँ मास पुनि, अति हुलास रनिवास॥

—: अन्नप्रासन विधि :—

एक दिवस नरनाह तब, गुरु मन्दिर महँ जाइ।
गुरु पद पंकज परसि कै, बार बार शिर नाइ॥
बोले बचन विनीत ह्वै, सुनिये देव दयाल।
अब आयो कुँवरिन सकल, अन्न प्राशनी काल॥
यथा उचित तस कीजिये, करि लीजिये बिचार।
मंत्रिन आयसु दीजिये, करन हेतु उपचार॥

—: छन्द चौबोला :—

सतानन्द सुनि हुलसि कह्यो हिय भले कह्यो महराजा।
चारि कुमारि अन्न को प्राशन, करवावहु कृत काजा॥
अस कहि शुभ दिन शोधि सतानन्द तुरत सुमन्त्रि बुलायो।
कार्तिक मास तिथी द्वादशि को, दिवस सुसुखद सुनायो॥
बगरि गई यह मोदमयी सब खबरि जनकपुर माहीं।
नृप कुँवरिन की अन्न प्राशनी होति द्वादशी काहीं॥
नगर नारि नर अति आनन्दित, यथा विभव जिन केरैं।
लगे बनावन बाल विभूषण हीरा हेम रतन घनेरे॥
सुनि कुँवरिन की अन्नप्राशनी, भरि उमंग अनुरागीं।
पृथक पृथक विदेह महरानी, साज सजावन लागीं॥
घर घर तोरण विमल पताके, कञ्चन कुंभ धराये।

क्रमुक रंभ के खंभ विराजत पथ जल सुरभि सिंचाये ॥
आइ गई द्वादशी हुलासिन, अन्नप्राशनी वाली ।
खर भर माच्यौ सुजनकपुर चलीं सकल जुरि आली ॥
दो०–उठि प्रभात नरनाह तब, सहित उछाह नहाय ।
नित्य कृत्य निरबाहि सब, जावक चरण दिवाय ॥

–: छंद चौवोला :–

गावहिं मंगल गीत प्रीत भरि कनक कुंभ शिर धारे ।
कोउ दधि दूब हरदि अक्षत भरि चली कनक कर थारे ॥
यहि विधि परिकर सह सब आये अति हुलास महिपाला ।
सब कुँवरिन को देखि देखि के रानी होहिं निहाला ॥
बद्रीनारायण के मंदिर में पहुँचे सहित भुआला ।
वंदन करि पुनि दैं परदक्षिण वैठे सब खुशियाला ॥
विविधभाँति बाजन तहँ बाजैं सुर सुमन न झरि लाये ।
गायक नर्तक गावत नाचत कौतुक कला देखाये ॥
तव मंत्रिन कहँ वोलि महीपति शासन दियो सुनाई ।
निमिवंशिन कहँ वेगि वुलावहु सादर नेवत पठाई ॥
कियो महीपति कुलदेवा को पूजन सकल प्रकारा ।
वार वार वंदन करि शिरसों, करि स्तुति वहु वारा ॥
चारि कुँवारिन के करते तहुँ नेउछावरि करवाई ।
वोलि परम परवीन सुवारन वहु व्यञ्जन मँगवाई ॥
वद्री नारायण आगे सब थारन पुरट भराई ।
सतानन्द तहँ बद्रीनाथ कहँ दियो निवेद लगाई ॥

दोहा:—मन रञ्जन गंजन सुरुचि वहु विधिवने विरंजु।
पय प्रकाँर वहु भाँति के, कलित मसाले मंजु॥

—: छंद चौवोला :—

दधि प्रकार ओदन प्रकार वहु, तिमि कृसरान्न परकारा।
मृदु मिष्टान्न प्रकार अनेकन, सुधा स्वाद सुख सारा॥
विविध वटी वट फल प्रकार वहु पूरी पूप सुहाये।
तिमि प्रकार आचारन के वहु, षटरस रुचिर मिलाये॥
चारि भाँति के परम मनोहर औरहु सब पकवाना।
सुरभित सलिल अनेक भाँति के, सूपकार मतिमाना।
यथा योग्य निमिवंशिन परुसे भृत्यन कहँ तिमि दीने।
औरहु साधुन विप्रन कोतहँ परुसे परम प्रवीने॥
भोजन प्रथम सन्त सब कीन्हे पुनि द्विज वृन्द जेवाँये।
दै दक्षिणा भूपमणि निज कर पुनि सादर सिर नाये॥
पाय अशीश महीश शीश धरि सतानन्द ढिग जाई।
गुरु के अंक कुमारिन को तहँ बैठाये सिर नाई॥
बद्रीनाथ की लै प्रसाद मुनि सीतहिं दियो खवाई।
बहुरि खवायो तिहुँ कुँवरिन कँह रहेउ अनँद सुख छाई॥
मुनि कह सुनहु महीप शिरोमणि लै निज अंक कुमारी।
करहु अन्नप्राशनी पाणि निज जैसी रीति तुम्हारी॥
पढ़न लगे स्वस्तयन सतानँद गाइ उठी सब नारी।
लै नरनाथ अंक सीतहि को बद्रीनाथ सम्हारी॥

तनक तनक सिगरे सुख ब्यंजन ललहिं खबावन लागे।
ललि बिधु बदन निरखि हिय आनन्द पुलकि परम अनुरागे।।
दोहा--जो षटरस नव रस स्वरस, रस अनरस मय देव।
ताहि चटावत षटरसन, धन्य धन्य नर सेव।।
चारि कुमारिन की करी, अन्नप्राशनी भूप।
पुनि निमि वंशिन के सहित भोजन कियो अनूप।।

--: बाल विनोद :--

दोहा--मातु पिता आनन्द में, फूले नहीं समायँ।
झुलवत ललि को प्रेम सों, वारि वारि बलि जायँ।।
श्री जनकललीजू झूलत पलना मातु सुनैना झुलावै।
चकई लट्टू और फिरकिनी अपने हाथ खेलावै।।
ललिया कहल अब निंदिया कबहुक मृदु स्वर गावै।
पीत झीन झिंगुली पहिरावति फूलन शीश सजावै।।
मन्द मन्द गति झुलावति पलना निरखि निरखि सुख पावै।
लखि लखि विहँसति पलना माहीं हरसि हरसि दुलरावै।।
पलना झूलत राजदुलारी मातु सुनैना मोद भरी।
जनकलली की प्रमुख सहचरी सिया की प्राण अधारी।।
निज शिशु छबि मणि जड़ित पालनहिं निरषत बारम्बारी।
किलकति उछरति मुसकावति अति मगन होत महँतारी।।
लखि लखि पितु निज भाग्य सराहत, मातु बजावति तारी।
कबहुँ मातु पितु संग मिलि झुलवत कबहुँ जात बलिहारी।।
छन्द--पुनि पुनि दुलरावै मातु खेलावै अंक लगावै हिय लाई।

तन गौर सुहाई सुधा लजाई अमित जोन्हाई शरमाई ।।
अंचल तर झाँकी तड़ित प्रभा की जनु धन ढाँकी रमकाई
जनु विधु के अङ्का विगत कलंका बैठि मयंका छबि छाई
जनकलली निज अंकहि लीन्हें,चूमत बदन सनेह भरी।
ललिया कहि कहि हिय में ल्यावति,अतिसय मोदआनंदभरी
कबहुँ चिबुकपरकरकमलनधरि,मंगलचाहकरतिहियमेंधरी
कबहूँ छबि लखि लेति बलैया,पुनि पुनि हर्ष अपनपौवारी

—: बाल लीला :—

अति सनेह राजा ढिग राखी।पुनि कुँअरिन ल्याई अभिलाषी।।
सब कुँअरिन चौकी पर राजैं । भूषण सकल अङ्गमृदु भ्राजैं ।।
नयन बनज महँ अञ्जन सोहैं।वरणौ छबि असमति कवि कोहैं।।
क्िलकि सिया राजा कि गोद में।गईं मगन पितु भली मोद में।।
तप्त हेम इव तन दुति अलकैं।पग नूपुर धनि सुनि सुनि पुलकैं।
पुनि उर्मिला सिया ढिग आईं।सिय पितु कन्ध बैठि किलकाई।।
राजा कर सिर धरे बिराजैं। ताहि समय कोटिन छबि छाजैं ।।
बहुरि उर्मिला उर लपटानी । किलकति कहतीं तोतरि बानी।।
कबहि गोद लै आँगन आवति । कंठ लाइ चुम्बति हलरावति ।।
कबहुँ चलावति आंगन माहीं।चलत-फिरत किलकत मुसकाहीं।।
कभी घुनघुना दै दुलारती । किलकि बजावति सो मन भावती।।
राय मुनी कि यूथ इक आई । देखत मधुर उड़ात सुहाई ।।
बोलत मधुर-मधुर मन हरणी।चलत उड़त विचरत मणि धरणी
तिन्हकहँनिरखिकुंवरिसबकिलके।पकरनचलहिं घुटुरु निमिलिके

कोई आगे पीछे चलि जाही। काहू ते नहिं लाल धराहीं ।।
लड़त लाल लखि डरि फिरि आवइ।जननिचूमिमुखकंठलगावहिं
दोहा—जनक महल की रानि सब, निरखहिं होत सनाथ ।
क्षण-क्षण परमानन्द में, मगन कहति गुण गाथ ।।
बोली जनकलली सुकुमारी।जननी निरखि-निरखि बलिहारी।।
बोलति मधुर सुहावन मनहर। द्वै-द्वै दशन परम सुख आकर ।।
नैन सजल करि भूख जनाई। मातु गोद लै दूध पिलाई ।।
बहुरि उतरि भागइँ अँगनाई। मातु मधुर कहि लेत बोलाई ।।

श्री माता जी के साथ भोजन करना

दधि ओदन मणि को पर आई। माता निज कर देति खवाई ।।
कबहुँ छीनकर निज कर पावति।कछुक खातिकछुमुखलपटावति
सकल कुंवरि ओदन दधि खाई। बहुरि मातु मुख देत धोवाई ।।
किलकि दौरि गोदन में आवहिं।मुख ते पुनि स्वरविमलबजावहिं
पुर नारी सब दिन प्रति आवहिं।देखि बाल सियछबिसुख पावहिं
करहिं प्रशंसा दम्पति भागा।क्षण-क्षण मगन होहिं अनुरागा ।।
दोहा—कबहुँ अपर रानी जनक, सिय की छबि लखि नारि ।
गोद लेति चूमति अधर, बार—बार बलिहारि ।।
पगनूपुर बाजत रहत, छण छण अतिहिं अनूप ।
परम मनोहर शब्द तेहि, सब रागिनि को रूप ।।
छोट अनुज महराज के, जिन्हको कुशध्वज नाम ।
तिन्हकी द्वै कन्या विमल, एक गौर इक श्याम ।।
प्रथम गौर सौ माण्डवी, नख—शिख शोभा ऐन ।
श्रुति कीरति सो श्याम द्वै, ज्यहि छबि कहत बनैन ।।

यह सब कन्या एक संग, रहति सदा आनन्द ।
खेलति प्रीति परस्पर देखिए, दिन दिन बढ़त मृदुचंद॥
कबहुँ कुशध्वज के महल, जदपि करत बहु खेल ।
कबहुँ खेलत सखिन्ह संग, करति रहत अति मेल ॥
कबहूँ खेलत गोद में, कबहूँ रानिन के संग ।
कबहूँ झूलत पालने, हिय में अधिक उमंग ॥
सवैया-करिश्रृंगार निरखति नयनन भरि,जननी सकल तृणतोरी
छम-छम चलति अरति पुनि दौरति, मणि प्रतिबिम्ब गहोरी॥
निरखति छबि प्रतिब्रिम्ब एक रस, उर आनन्द भरोरी ।
पुनि तेहिं ते बतलात बात मृदु, भइ जिमि चन्द चकोरी ॥
हँसति हँसावति अति मन भावति, बढ़ि छबि सिन्धु हलोरी ।
यहि विधि बाल बिनोद करत सब, हंसत परस्पर टकनटकोरी
दिवस एक सब सहित समाजा।महलांगन श्रीजनक बिराजा ॥
चौकी मंच चतुर्दिश राजे । तेहि पर सब रनिवास बिराजे ॥
मध्य जो चौकी मंच सुहाई । तापर बैठ जनक हरषाई ॥
सकल कुआँरिन रानिके गोदा।अँगणित भाँति बढ़ावतिमोदा॥
शरद निशा पुनि सोम सुहावन । पूरण कला उदय मनभावन॥
ताहि समय सीता मन आई । चरित विशेष करौं सुखदाई ॥
छं०-लड़ैती मोरी बालकौतुककरति,निरखिमातुसुमोदमनभरति
कबहुँ तुरंग मतंग चुचकारति, कबहुँ तुरंग विहंगन धारति ॥
कबहुँ पकरि कर ठुमक ठुमक चलती मोद मातुमनमधुरीभरति
किलकि किलकि आंगन बिचरत।निजछविछाँहविलोकतिडरति

सादर सुमुखि निहारि लली मुख, जनराज नृप लेत सुकइयां ।
गौर सरोज बदन अति शोभित,मनहुँ चन्द्र अवतरेउ धरनियाँ।।
मन्द हँसनि मुख चन्द्र विराजत,निरखत लाजत चंद्र किरनियाँ।
चंचल चपल लोल लोचन अलि,चोरति चितहिचारुचितवनियाँ
मैया जगावति जागो मेरी राजदुलारी कहि कहि प्यारी ।
बैठी जनक दुलारी सुख सर्बस किलकत निरखि प्रमोद भरी ।।
जागहुँ समय भयो क्रीड़न की, आय जुरी सखी सारी ।
चुम्बति नयन कमल कर कंजनि, विशद मयंक मझारी ।
बहु विधि गाय मल्हाइ मधुर स्वर लेति सुभुज अंकवारी ।।
दोहा–कब चलिहहु तुम पगन ते, मणि आँगन के माह ।
चहुँदिशि मणिमय झलकहीं, अतिहि छबीली छाह ।।
सो अभिलाष रानी के, मन में क्षण क्षण होत ।
बरणै को वह प्रेम को, पल पल नेह निशोत ।।
करि सिंगार निरखति नयनन भरी, जननि सकल तृण तोरी ।
क्षमक्षम चलति अरति पुनि दौरति मणि प्रतिबिम्ब गहोरी ।।
निरखत छवि प्रतिबिम्ब एकरस, उर आनन्द भरोरी ।
पुनि तेहि ते बतलाति बात मृदु, भई मृदु चन्द्र चकोरी ।।
हँसति हँसावति अति मन भावति, बढ़ि छबि सिन्धु हलोरी ।
यहि बिधि बाल बिनोद करति सब,हँसति परस्पर मुख मोरी ।।
मातु सुनैना बहु दुलरावै । चन्द्र कला को वेगि बुलावै।।
रतन खेलौना अमित मँगावैं । जा बिनु खेलब भाव न भावै ।।
शिशु पन ते निज हित पहिचानी।खेलति संग खाति एक थारी।।

पल वियोगसिय बिनुदु:खरूपा।रुचिलखिखेल करहिंअनुकूला॥
घुटुरुवन धावति राज दुलारी,निरखि मातु सुता मोदभारी ॥
कटि किंकिणी करकंकन बाजत,पग नूपुरधुनिमिलि सुखकारी।
मनहु अलौकिक नाँद त्रिवेणी विहरण मणिमयमहल मँझारी।
जबहिंविहँसिकिलकतिछिनहिंछिन,दसनकान्तिदमकतिदुतिकारी
मानहुँ दामिनि मगनगगनतजि, ललीअधरविलसतिछविधारी।
गगनचन्द्रकीकला मलिनभई, अवनि लाड़लीलखिलखिप्यारी।
कबहुँक ठुमकचलतिआँगन बिच,कवहुँकलरखराति सुकुकारी।
दौरि मातु लै अंक भरति तब, मुख चूमति लेती बलिहारी।

पगन कब, चलिहो राजदुलारी, लड़ैती सिया प्यारी।
ठुमुक ठुमुक कब मणि आँगन में पग धरिहौ सुकुमारी।
कब सुनिहौं तव बोल तोतरे श्रवण सुखद किलकारी।
कवहिं निरखिहौं इन नैनन ते,क्रीड़ा सखिन मँझारी।
कवहिं मातु कहि मोहि टेरिहौ, पूजहि आस हमारी।
जननि निरखि मुख लाड़ैतीजू को,कहति लेति बलिहारी।

दो०-प्रथम वर्ष वय मे सिया, बाल विनोद जु कीन।
बरनहिं ते क्रमतै कछुक, सुनि मुद लहै प्रवीन ॥

एक संग भगिनी मिलि खेली। रही निकट किहिनाम सहेली॥
अनुदिन तन नूतन दुति होई।उपमा खोज न त्रिभुवन कोई॥
कथन न पाइ सुनैना रानी। पूरन काम भई सुख मानी॥
गोदिहिं लै चुम्बहिं दुलारती।चुटकी धुनि सुनिसुनि किलकाती
कबहुँ किलकि मातन्ह ढिग जाहीं।आवहिं कबहुँ सुकान्तीपाहीं

कबहुँ नराधिय कहँ ते देहीं । जनक सप्रीति अंक धरि लेहीं ।।
निज मंदिर सिया महतारी।लाड़ ल्यावत आली महँ पारी ।।
सरद चन्द ते अधिक लोनाई। चूमत बदन सुग्रीव नवाई ।।
कदली तुल्य जंघन युग जोरी। बैठारत घुटिरिन तृण तोरी।।
राख पिष्ट पर बाम सुपाना । साधे रहत महामति माना ।।
चिव्वुक पर अंगुलिन लगाई । विहँसावत करकै निपुनाई ।।
दृष्टि मिलाइ बदन दुति देखी।हँसत प्रसन्न भाग बड़ लेखी ।।
ऊपर अंचल डार महरानी । लगत पियावन पय मुदसानी ।।
दो०-ऐसे निसिदिन मोद मैं, जानै जात न दिन रात ।
अंतहपुर वासिन सबै, परिकर देख सिहात ।।
कीड़त महिजा मुदित सु तैसौं। दृढ़ कर पकरत मृदुलमुठीसौं।।
वटिका द्वै बजावत माई । जेहि मेरुन झुन धुनि अति भाई ।।
लघु परयंक कबहु पौढ़ावै । सुरभित चंपक तेल लगावै ।।
मृग सावक सदृग मन रंजन । तिन मैं जननि लगावतिअंजन।।
दृष्टि दोषनहिं करहिं प्रचारा।असमसिविन्दु रचहिकरप्यारा।।
कबहूँलखिप्रेतिबिम्बन नाचति।कवहूँचलिचलिगिरिमुसुकावति।।
विहंगराज की चोंच समाना। शुभ सुढार नासा छबिवाना ।।
दुइ दुइ दसन अधर अरु नारे। माल तिलक कोवर ने पारो ।।
सुन्दर श्रवन सुचारु कपोला। अति प्रिय मधुर तोतरे बोला।।
चिक्कन कचकुँचित गभुआरे वहु प्रकार रचि मातु सँवारे ।
पीतझगुलिया तनुपहिराई सौजानु पानि विचरनि मोहिभाई।।
अरुण अधर वर सोहत तैसो।विद्रुम द्युति बिम्बाफल कैसो ।।

चिबुक समत्व न लहत रसाला।लसत कंवु सो कंठ विसाला।।
दो०-जथा उचित सुचि सोहते,रूचिर अंगप्रति अंग।
कर पद कोमल कमल से, अमल प्रकास अभंग ।।
सिय प्रकास कारन अनुरागा।खीजहिं दृष्टि दोष अनुलागा।।
जंत्र मंत्र तोटक विधि ठाई। लवन मिलाइ उतारहिं राई।।
बोलत किलकत देख कुमारी।रहैंसुचित लखिलखि महतारी।।
तनक अनमनी जौं अनुमानै।नहि तिनके मन रहत ठिकानै।।
सीता दरसन कै मुद छाये। इक दिन सतानन्द मुनि आये।।
खबर पाइ देवरानी भागी। उपरोहित के पाइन लागी।।
यथा उचित विधिकर सनमानी।बोली परम चतुर मृदु बानी।।
नाथ तुमार अनुग्रह पाई। भयौ तोष इन कन्या पाई।।
बाल रोग दृग दोष न होई। पुतनादिक नहिं बासहि कोई।।
सुखित रहैं नित मान सनेहू। अस कछु जतन आप करिदेहू।।
गुटिका चार पवित्र बनाये। चारहुँ कन्यन को पहिराये।।
मातन के उर हुव विश्वासा। दीन्हे विविध दान हूलासा।।
दो०-रक्षामिस मुनि सवनके, कर मस्तक अभिराम।
पाय भूरि पूजा विपुल, गये मुदित निज धाम।।
सीतहिं कबहु सुनैना रानी। लै पौढ़ति मणि पलंग सयानी
दूध पियावत हृदय लगाई। निरखत मृदुमुख की मधुराई।।
नानाचित्र लखततिहि थाना।मुकता झालरकेविविधखेलौना।।
अधकट आखर निकसहिं सोई। सुनै तिनहि सबको सुखहोई।।
निसि के समय दीपगन देखी।निमिजा अलिन सनेह विशेषी।।

उजियारौ लखि किलकन लागैं। जननी तै अगता पुनि जागैं।।
वाही समय महाछवि छाई। धाई बसुमतितिहि पल आई ।।
दूरहि तै सीता पहिचानी। लेहि मोहि इच्छा चित आनी ।।
नृपति अंक ते उतर सुखारी। किलकि किलकि अतिकरनपसारी
हँसी बसुमति धाइ पुनीता। लई तुरत कनिया महँ सीता ।।
बाक् बिलासन कर लइ ल्याई। गई सदन ते कंठ लगाई ।।
दोहा-जाल रंध्र ह्वै गमन लखि करत कछु बतरावत्।
सुनत सुनैना ढिग परी, कल वल तोतरे बात ।।
बयवत रुचिर वस्त्र पहिराये। बाल बिभूषण मणिन सजाये ।।
प्यार गोद पयपान करावा। किंचित मधुर सुअन्न खवावा ।।
कबहुँ रतन पलना पौढ़ाई। धाय झुलावत गीतन गाई ।।
अपने बहु प्रतिबिम्ब निहारी। किलकत कलवल बचनउचारी।।
राज सुता अरु राजकुमारी। सम वय कोउ अधिक वय वारी ।।
लिये बिबिध क्रीड़ा मुद सानी। खेलैं राजसदन में आनी ।।
कबहुँ रोवत जननी मुख जोवत।पय पियति पियावत महतारी।।
साँझ समय भूपति निज आवत। सुखी होत लली मुख जोहत ।।
अंक उठावत ललिहि दुलारत।अपने को अति बड़ धन मानत ।।
दोहा-एक समय पय पान की, बिलम भई बश काम।
पद को अंगूठो निज मुखै, मेलि लियो तेहि ठाम ।।
आवै कै कर चरण चलावै। कंठ उठावत नहिं उठ पावैं ।।
चितवत लम्बी धाय सुजाना। देहिं उतारी सिय तेहि थाना ।।
जानु पानि रींगत लखि जैसे। रींगत आपुन तिनके अनुतैसे ।।

उर्मिलादि भगिनी इहि मैले। रींगत घुटुरुवन सौतिमि ढौलै ॥
पाइन पुरट पैजनि रव होई । मुरकि मुरकि हेरति सुन सोई ॥

(श्री पिता जी के साथ लली जू का भोजन पाना)

मणिमय खचित आँगन माहीं । मोहित होहिं देख परछाहीं ॥
बढ़त होस रींगत तिन माहीं । क्रीड़ा करत लौट कहि जाहीं ॥
बैठहिं कबहुँ घुटुरुवन होई । होड़ी होड़ा विचरहिं सोई ॥
मातु सुनैना निकट बुलावै । जाहिं नयन पुनि शीश हलावै ॥
दोहा—मध्य दिवस भोजन करन, बैठे नृपति विदेह ।
बुलवावैं तब कन्यकन, करत दुलारत अति नेह ॥
चारहु सुता थार के पासा । बैठहिं हिलि मिलि सहितहुलासा॥
असन करत जेहि मैं रुचि पाई । ताहि अँगुरिन देहिं बताई ॥
श्रुति कीर्ती कैंया महँ लीनै । जाय सू आपु जुहुवत मुद भीनै॥
तेहि अनुचरी श्रीमती दिवरानी।लै उर मिलिहि जात सुखसानी
माण्डवी लै धाय सुभागिनि । चढ़हि महल कौतुक अनुरागिनि
तिन पीछे सचिवन के भामा । लै लै सुता जाहि तेहितेहि धामा
बोलति मृदु बचन न महतारी । है कोऊ निज सखी तुम्हारी ॥
बोलि लेहु निज सखी बुलाई । टेरहिं तब अँगुरिन चलाई ॥
कबहुँ गोद लै आँगन आवति । कंठ लाइ चुम्वति हलरावति ॥
कबहुँ चलावति आँगन माहीं । चलत गिरति किलकतमुसुकाहीं
कबहुँ झुनझुना देति दुलारति।किलकि बजावत मो मन भावति
सकल बहिनि एहि बेर संग हैं । मात-पिता मन अति उमंगहैं॥
उतरी गोद से आँगन ठाढ़ी । चलति-फिरति अद्‌भुत छबि बाढ़ी

कबहु नाचती मणि अँगनाहीं। लक्ष्मी निधि को मध्यकराहीं।।
सिय नूपुर अति मधुर बजाई।सब कुँअरिन तेहिसुरनमिलाई।।
थेइ थेइ करति किलकि मुसकाई। देव सुमनगंधन झरिलाई।।
अति अद्भुत गति कुँअरि बजाई। देव नटी सब गई लजाई ।।
छबिदीपति चहुँदिशि अँगनाई।रानि रायलखि गयउ बिकाई।।
महली सब प्रमुदित भइ मनमें।लखिछबिगति पुलकावलितनमें
तब सीता प्राची दिशि देखी ।विमलचन्द कहँ आँगन पेखी ।।
जननी सन बोलति सुखदाई। एक बात माँ देहु बताई ।।
नभमें उगेउ सी को है मैया।अति छबिराजत अतिसुखदइया।।
मइया हँसि कह नभ को राजा।सब उड़गनएक चन्द्रबिराजा।।
बोली सीता प्रेम बढ़ाई। मातु चन्द्र मोहि देहु मँगाई ।।
मइया बोली चन्द्र अकाशा। आवै कैसे तुम्हरे पासा ।।
हठ करि माँगत जनकदुलारी।मइया देहु चन्द मोहिं प्यारी ।।
ठुमुकि-ठुमुकि पटकतिपगुधरणी।नूपुर बजति महाधुनिकरणी।।
नूपुर धुनि सुनि राजा रानी। पुलक गात नैनन झरै पानी ।।
परमानन्द कहै को गाई। शारद शेष न बुद्धि समाई ।।
चन्द्र खिलौना माँगति सीता। धीर न धरति भई विपरीता।।
भूमिआकाशमाय मुखनिरखति।अद्भुतभावन कोरसबरषति।।
भूमहि निरखिति चिन्ता माहीं। चाहति हैं सो पावति नाहीं।।
निरखति सिया चन्द्र की ओरा। है कि गयावह चन्द्रचकोरा।।
जननी मुख निरखति रिसिआई।मातु चन्द्र मोहिं देउ मँगाई।।
रिसि भरि-भरि बोलति बहु बानी।जनकरानिमनमँहअनुमानी

दो०–दर्पण तुरत मँगाइ कै, पुत्री आगे कीन्ह।
मुख सन्मुख दर्पण करी,मुख चन्दहिं लखि लीन॥
कोटि चन्द्र की छबि हरत, सीता को मुख चन्द।
तेहि प्रतिबिम्ब निहारि के, भई परम आनन्द॥
सकल सुता निमि वंश की, सीता दरसन लाग।
प्रतिदिन सब आवत रहति,क्षण क्षण नवअनुराग।
अमित खेलौना संग में ल्यावति किंकरी तासु।
सबमिलि जनक अजीरमें,विहरतविविध विलासु॥
मिटिं वासना चन्द्र की, निज प्रतिबिम्ब निहार।
रानी सब प्रमुदित भई, बहु विधि बारम्बार॥
मेवा बहुरि मँगाइ के, सब कुँअरिन कहँ देत।
निजकर सिय बाँटत सबहि,निरखि मातु सुखलेत॥
सकल सुख के सींव रति भट कोटि शोभा करनि।
सहज शुचि नख-शिख सुहावनि माधुरी मन हरनि॥
चरण कंज प्रफुल्लित निवासति अरुणाता तजि तरनि।
विमल पद में विमल नुपुर लसत रुनझुन करनि॥
तप्त कंचन मृदुल तनु अनुहरति भूषन भरनि॥
लसत कर पद मणि महल आँगह घुटुरुवनि वरनि।
उर सिन्धु हरषत रंग लखि सिय जनक जू कीघरनि॥
गोद लै चुम्बिति दुलारति भाव होत अपरनि।
चुटकि धुनि सुनि नाचती कबहूँ चलीं गिरि अरनि।
परस्पर खेलाति कुँअरि सब किलकि झुकि पुनि डरनि।

कबहुँ माता देति झुनझुनी लेति सब दुहुँ करनि ।।
कोइ भौंरा मणि जटित नचावति। घूमति मणिआँगनछबिपावति
देखि-देखि कुंअरी सब हरषै । सुर तरु सुमन देव बहु बरसै ।।
मधु चकई के खेल सुहावनि । कहुँ गोली खेलति मन भावनि ।।
कबहुँ सकल मिलि पलनन झूलैं। जननी निरखि-निरखि मन फूलैं
मधु मेवा जननी तब ल्याई । सकल कुँवरि एक भाँति खवाई ।।
कलधर विविध खेलौना राजैं । पवन प्रसंग नचै अरु नाचै ।।
सो सब खेल करावहिं दासी । आनन्द मगन सकल सुख रासी।।
दोहा—अजिर नभ लगि मनोहर आनन्द,खेलति अनेक विनोद।
चौथ चढ़यो तब कुँवरि सब, अधिक बढ़ावति मोद ।।
चन्द्रकला मन आनन्द भारी । सीता को मुख चन्द निहारी ।।
बोली सुनु मिथिलेश कुमारी । सब मिलि ठाढ़ होउ समधारी ।।
सब कोउ भौंरा देहु घुमाई । देखैं को बड़ि वेर नचाई ।।
चतुर्दिशा सब कुँअरि खड़ी है । मणि भूषण ते अंग जड़ी है ।।
लघु-लघु लहँगा लघु-लघु सारी । कोरिन लगिमणिमोतिनधारी
अरुण पीत हरि असित मनोहर। राजित जरतारिन मय सोहर।।
दोहा—सबको भौंरा घूम के, अस्थिर भो महिं माहिं ।
जस भौंरा सिय को नचो, तस काहू को नाहिं ।।
कवित्त-छोटे—छोटे शीश फूल बेनी में केवी झब्बा छोटी,
माँग टीका छोटी जामें मोती छोटी राजहीं ।
छोटी—छोटी कर्णफूल बन्दी जुगलरी छोटी,
नाक में बुलाकी छोटी अद्भुत बिराजहीं ।।

छोटी-छोटी बाजुबन्ध कंकन पछेली छोटी,
छोटे नवरत्न सों विमल कर छाजहीं।
उर मणिमाल ते भरे हैं कटि किंकिनी सों,
बाजत गंभीर नाद सातों स्वर लाजहीं॥

दोहा—महल के द्वितीय उच्चता, पर सब कुँअरी जात।
खेलति हैं तहँ खेल बहु, सो सुख हिय न समात॥
अमित मणिन रचना रचित, बरनि-बरनि छबि ऐन।
गुड़िया अमित प्रकार की, सो छबि कहत बनैन।
तिन्ह से खेलति मन दिहें, सब कुँअरी एक रीति॥
खेल परस्पर हास्य बहु, सब छल वरजित प्रीति॥

छप्पय-वरकहुँ गुड़ियन के रचित व्याह,सब बिधि अति नीके।
कोइ दुलहिनि दिशि होत कोई दिशि दुल्लहिं हीके॥
राजा-रानी मगन हैं जोइ सिय करु सोइ भावहीं।
अति उत्सव पुर में भये चहुँदिशि मंगल गावहीं॥

जब लगि बाल बरन द्युति प्यारी।चन्द्रकला तेहि तनअनुहारी॥
कन्दुक औ भौंरा यक डोरी। सारो मैना मोर चकोरी॥
तीतर और कपोत कै छौना। पालन करि निज दोउ औ मैना॥
दोउ महलन ते पक्षी ल्यावैं। अपने-अपने खेत देखावैं॥
मुनियाँ लाल पिंजरा ल्याई। दोऊ छोड़हिं हँसि देखि लड़ाई॥
जब जीती प्यारी की मुनियाँ।लहि उर हरषि बचन प्रियसुनियाँ

—: एक समय-श्याम-गौर चन्द्रकलाजु—विवाह :—

तबहीं सोज लही सिय प्यारी।प्रिय सी निहारीनसकी संभारी॥

करि कछु जतन हारि निज भाई।हर्षित मणिगन बहुलुटवाई।।
यद्यपि नात बहिन की पाईं । सो अभिमानहिं प्रीति छपाई ।।
दोहा—यहि विधि के बहु खेल करि, लीला ललित सवारि।
पौगनहूँ लखि कुअरि वर, सेवत स्वामिनी प्यारि ।।
तब सिय जू प्रिय रूप मूरति। श्यामवर्ण सोई सब कीरति ।।
देखी चन्द्रकला तब आई। लखि मूरति आभा दृग छाई ।।
गइ निज महल मातु सो कही। जननी देख दसा सो लही ।।
तब निज भवन रची एक मूरति।सिय जू की जैसीसब सूरति।।
चहुँदिशि विमलादिक सहचरी । चमर विजन सोहै करधरी।।
अपनी रूप रची सुकुमारी। सुन्दरि बीन लीयकर धारी ।।
अपनी कुंज रची एक न्यारी। युथेश्वरि सहचरि बहु प्यारी ।।
फरस लागि पलंगे सुठि सोहे। मुक्ता झालरी चँदवा सोहे ।।
दो०—बहुसामासजि मातु को, तुरत दिखाई आनि।
चकित व्यथित दोऊ भई, मम गृह आई जानि ।।
जाय कही तब रानि सो, आप लखी सो साज ।
भाय भरी लखि अबररी, भावी भाव बिचार ।।
नैमित्तिक मैं नित्य कि उद्दीपन उर धारि।
लीलाविग्रह तेकरलीला,दोऊकुँअरि कीव्रतशीला।।
दुहुदिशि वर दुलहिन रचहि, याहीसब बिधि रचिअतिनि के।
कोई दुलहिन दिसि होहीं। कोई वरदिशि दुलहि कोई।

—: विवाह लीला—विग्रह मूरती—दोनो बहिन रचना :—

चारु शीला विमलादि अनूपा। कमला मदन कला सुखरूपा।।

चन्द्रा चन्द्रवती सुखदानी। चम्पकली रति बरधिन मानी ॥
षष्ट सहस निमि वंशी कन्या। तुरिया तन सेवा रति धन्या ॥
मिथिला शहर महाजन बसहीं। वैश्य वरन सुन्दर तनलसहीं॥
तिनकी नारि उपासक प्यारी। जन्म लियो तहँ बहु सुकुमारी॥
सो सब सियजू की सहचरीं। लखी जाय तहँ चरणन परीं॥
लखि मूरति सूरति दृग पूरति।कहति किशोरी सोंनहिंजूरति॥
लखी जाय सियजू की मूरति।उपमा की कहुँ मिलयनसूरति॥
तब सब मिलि कहि चन्द्रकलाजू।तुम कीनी अतिभलीभलाजू॥
अब विवाह कीकरो तयारी।हमहूँ सब मिलि करब सँभारी॥
दो०—तब वशिष्ठ मुनि रूप धरि, विमला जू सरदार।
कमला ठकुरानी भई, शतानन्द छवि सार ॥
भई अवध वासी बहु सखी। जिन पिय की मूरति छविलखी॥
मिथिला वासिन बनी सदाई। निमि वंशिन के सुत समुदाई ॥
और महाजन सुत मन भाये। ते सरयाती बने बनाये ॥
और सखा जे रघुकुल केरे। सोइ सखीसखा बहु तेरे ॥
रथ गज बाजि विपुल तेहिमाहीं।कियो बरात घटीकछुनाहीं॥
सजि बरात बरनै को पारा।तेहि विधि कीन्हीं सकलपसारा॥
परिछन साजि अश्व असवारा। गज रथ सजेलहे को पारा॥
यहि विधि सरियाती तहँ आये। चतुरंगी लखि विसमित भये॥
कहत अवधबासी गुण गाथा। बड़े प्रबल मिथिलापुर नाथा॥
दो०--परिछन करि जनवासहिं, दिये बास सुखरास।
भोजन की सौजें सकल, पठै दिये नृप पास ॥

धेनु धूरि बेला जब आई । भये विवाह जेहिविधि श्रुति गाई।।
लीला विग्रह ते कर लीला । दोउ कुँवरि की रहिब्रत सीला।।
यह यस भयो जगत के माँहीं । ऐसी लीला भइ कहुँ नाहीं ।।
दोउ कुँवरि की करहिं बड़ाई । पर्‌यो सुशोर कहाँ ते आई ।।
आह्लादिनी कुँवरि किशोरी । जो कछु होय कहिय सोथोरी।।
तिनकी सखी खजाने वारी । माता जिनकी चन्द्र प्रभारी ।।
ऐश्वर्यहु में नाहिन घटी । माधुर्यहु में है दोउ पटी ।।
लखि लीला महे दोउ भ्राता।तेहिविधि तिन दोउनकीमाता।।
जो मूरति दोउ रची सयानी । सो पूजा रानी मन मानी ।।
चमर छत्र विजनादि बहोरी। भोग राग में प्रीति न थोरी ।।
पहिले याज्ञवल्क्य ते पाई । सो पूजा में भई सहाई ।। इति
जब होरी सावन दिन आवे । रानी चन्द्रकलहिं बुलावे ।।
गावहु बेटी वीण बजाई । निज मृदंगनी लेहु बोलाई ।।
छप्पय–एक समय सिय को शृंगार रनिवासिन्ह कीन्हीं ।
नख शिख अनुपम साजि बहुत विधि शोभा दीन्हीं ।।
मेवा भरि दई गोद में खेलन की आज्ञा दई ।
पुर की कन्या सकल सब तेहियहि समय आय गई ।।
गई कुशध्वज महल तहाँ बहुखेल कराहीं ।
श्रुति कीरति, माण्डवी संग सो वरणि न जाहीं ।।
कुशध्वज की रानि व सुदर्शना देखि लुभानी ।
कुँवरिन के ढिग आइ बढ़ावति प्रेम सयानी ।।
मेवा अमित प्रकार को सब कुँवरिन के कर दई ।

दुलरावा सब बिधि कर्यो परानन्द सुखमय भई ॥
छप्पय--बहुविधि करत दुलार खेल की युक्ति बतावति।
भौंरा चकई आदि खिलौना बहुविधि ल्यावति ॥
हँसति हँसावति बहु प्रकार के, बात चलावति ।
सो सुख रानी लेति जो, नहिं पावति मुनि ध्यावति ॥
अमित प्रकार बिहार करि पुनि निज मन्दिर आवहीं।
लखि छबि महरानी मुदित सादर गोद बुलावहीं ॥
सकल कुँवरि तहँ संग सिया पुनि गोद सुनैना ।
माथ सूँघि मुख चूमि कहति अति प्रेम सुवैना ॥
हे लाडिलि बड़िबार भई तुम कहां गई रहिं ।
माण्डवी महल बिहार बात सब उरमीला कहिं ॥
माता अति सुख पाइ कै बहुरि वातसल रस भरी ।
अति प्रिय बानी कहति है मन्द विहँसि आनँद करी ॥
हे लाडलि सम प्राण प्राण महराज दुलारी।
श्रुति कीरति की माय किहाँ कछु खायो प्यारी ॥
सब बहिनिन को अपने कर कछु दई कि नाहीं।
तुम सन को कस रखत नेह सो कहु मोहि पाहीं ॥
सुनि माता के बैन मृदु, वातल्य रसमूल हैं ।
पिक बैनी बोलति भई सब विधि सब अनुकूल हैं ॥
प्रात होतउठनित सखि गण आवै।सिय दर्शनकरि बहुसुखपावै
खेलति सीय सखिन के संगा। विविध भाँति क्रीडन रतिरंगा॥
खेलन योग अनूपम साजा । जोरि धरी प्रिय भ्रात सुराजा॥

कबहुँ भ्रात लै सिय कहँगोदी।विचरहिं गृह वाटिका सुमोदी।।
कबहुँक क्रीडन गेंद बतावै । कबहुँक भ्रमरा फेंकि दिखावै ।।
दोहा–मातु पिता की गोद कहुँ, कबहुँ भ्रात की गोंद ।
बैठि सिया सुख पावहिं, भोजन करै सुमोद ।।
संस्कार बालापन जेते । विधिवत् भये सिया के तेते ।।
जानि समय श्री तिरहुत राजा।गुरुहिं बोलायो विद्या काजा।।

—: श्री लली जी का विद्या पढ़ना :—

करि वर विनय पूजि गुरुदेवा । करि गणनायक गौरी सेवा ।।
विद्यारम्भ करावउ सीतहिं।उत्सव भयउ सुखद श्रुति गीतहिं।।
सन्यासिनि बनि सरस्वति आईं।करिबे शिक्षा मिस सेवकाई।।
शास्त्र वेद स्मृती पुराना । अल्पकाल जान्यो सब ज्ञाना ।।
जासु अंश सुनि विद्या माया । उपजै ज्ञान रूप श्रुति गाया ।।
सोइसिय पढ़ति करन प्रिय लीला।जानहिंयह परमारथशीला।।
दोहा–रूप शील शम-दम-दया, क्षमा-कृपा-गुण-ज्ञान ।
रस माधुर सिय हिय बसे, श्री विराग तप दान ।।
कहत परस्पर बचन मृदु, मन मँह परमानन्द ।
श्रुति कीरति अरु माण्डवी, आई सुख की कन्द।।
अपर सुता निमि वंश की, सब आईं तेहि काल ।
नखशिख छविअति मन हरण,उभ्ऽयोआनन्दमाल
सब बैठी अति प्रेम मन, सिय समीप हरषाय ।
महल बहुल छबि मानकी, अद्भुत छबि दरसाय।।
षष्ट, अष्ट, षोडश सकल, कुँअरिन केरे संग ।

मन की रुचि लै करत सब, सेवा अतिहिं उमंग ।
कोइ गौर कोइ श्याम हैं, सब हैं विविध सरूप ।
नख-सिख अंग सुदेश हैं, भूषण अमल अनूप ।।

—: शृङ्गार सब बहिनों का :—

कोउ के हरित छपाऊ सारी । दरदामिनि मुक्तामनि धारी ।।
कोउ के अरुण चुनरिया राजैं।छवि की खानि मनोहरभ्राजैं।।
कोउ के नील वसन छवि देहीं।मणि मोती कोरिन लगिजेहीं।।
कोउ के पीत मनोहर सारी।जेहिमहँ लगि चहुँओरकिनारी।।
एहिविधिसकलकुँअरितहँसोहै।निजनिजछबिरतिअमितविमोहै

—: लली जू के शृंगार :—

सब मिलिसियहिंशृङ्गारनलागीं।छबिअद्भुतलखिसबअनुरागी
शीशफूल उर्मिला पेन्हाई । वेणीमुक्ता अमित लगाई ।।
बन्दी कर्णफूल छवि खानी ।श्रुतिकीरति रचि सियमनमानी।।
टीका अमल मणिन मय राजैं।डोरी मोतिन गुहित विराजैं ।।
श्री माण्डवी पेन्हाईनिजकर।करि शृङ्गारमुख लखतसुधाकर।।
पाटी सीपज विविध गुहाई । बिन्दा की छबि बरणि न जाई।।
नख-शिख मंजु मनोहरताई। कहिन जाइ अंगन रुचिराई ।।
विहरत महल सकलमन भावति।कबहुँहँसीं-हँसितालबजावति।।

—: बाल लीला :—

कबहुँ परस्पर नाच नचावति।कबहुँमधुर स्वर मंगल गावति।।
कबहुँ परस्पर बचन उचारति।कबहुँ मुकुर लै बदन निहारति।।
लखि छबि मगन होइ पुनि जाहीं। मुकुर हाथसेत्यागतिनाहीं।।

प्रतिबिम्बहिं पूँछति तुम को है। इतैं कहाँ से आनि बसो है ।।
तुम केहिके कुल की सुकुमारी।नख-सिख मंजु महाछबिभारी।।
को तब तात कवन तब माता।मोसन कहहु सत्य सब बाता ।।
छकिछकिनिजप्रतिबिम्ब भुलानी।तेहि छन आइ सुनैनारानी।।
सिय चेतन भइ मातु निहारी। यह तो है प्रतिबिम्ब हमारी ।।
मैं भूली अपनी परछाईं । यह तो अपर सखी कोउ नाहीं ।।
दोहा—यहविधिअमित बिहार सुख,करति रहति दिनरैन।
जननी लखि प्रमुदितरहति,अतिछविअतिसुखऐन।।

—: बाग बिहार—समाज सहित :—

महली बाग सोहावन जैसी। बरनि न सकत शेष श्रुति तैसी।।
विवध फूल के वृक्ष सोहाई । संतत रहत बसन्त लोभाई ।।
मणिमय आल बालतेहिं राजै।कहुँ मण्डल मनि वेदि विराजै।।
चहुँदिशि फल वृक्षावलि सोहैं। अमित स्वादमय देखत मोहैं ।।
बहु मिलिन्द फूलन रस लै-लै।धावत फिरत कहत सिय जै-जै।।
कहुँ-कहुँ मोर नचति अति सोहै।कीर गान धुनिमुनि मनमोहै।।
सब प्रकार आराम सोहावन । सुखद कुंज सबके मनभावन ।।
गई सिया तँह सहितसमाजा।नखसिख अति छवि राजविराजा
उतकी सखि बहु माल लेआई। सब कुँअरिन कहँदै पहिराई ।।
अमित स्वाद की मेवा लाई । कुँअरिन सकल दिन्हमनभाई।।
खात—खवावतिहँसतिहँसावति। तहँकिसखिलखिबहुसुखपावति
बढ़ि-बढ़ि फूल तोड़ि सब लेहीं । फेंट बाँधि सब शोभा देहीं ।।
होन लगी फूलन की खेला । एक-एक पर हँसि-हँसि मेला ।।

कसकति फूल गेंद के लागे। पुनि हँसि-हँसि मारति अनुरागे॥
दौरि चलतिपगनूपुर बाजति।कहुँछम-छमकहुँ छन-छनछाजति
भिन्न-भिन्न कहुँ लोकति फूला। मुख की श्रीउमंग सुख मूला॥
बहु विधि फूल खेल सबखेलहिं।एक-एक पर झुकिहँसिमेलहिं॥
बहुरि सकल अति आपु समाहीं।चट-पट फूलमारिभगिजाहीं॥
पट-पट उठत लगत जेहिं अंगा। यहि विधि फूल खेलबहुरंगा॥
पुनि तहँ की मालिनी सयानी।भूषण फूल अमित छबि आनी॥
नख-शिख भूषण फूल पेन्हाई।कहि न जाइ शोभा अधिकाई॥
गुच्छा फूल दई सबके कर। मेवा मधुर दीन्ह खोइंछा भर॥
दोहा—चलि आईं माता निकट, सीता सहित समाज।
माता अति प्रमुदित भई, देखि मनोहर साज॥
कही गोद में का है तेरी। देखरावहु जीवनधन मेरी॥
दइ देखाइ मेवा अरु फूला। बोली सिया बचन सुख मूला॥
मैया खाहु मिष्ट यह मेवा। कही स्वाद गुण अरु सब भेवा॥

—: श्री चुरिहारिन लीला :—

पुनि आई चुरिहारिन नारी।देखि सिया सुधि सकल विसारी॥
पुनि धीरज धरि आज्ञा पाई। बैठीं आँगन माहि सोहाई॥
अमित रंग की चूरी लाई। सो सब रानिन कहँ देखलाई॥
हरित पीत शित लाल मनिनके।जरित सोहावनरत्नकनिनके॥
सब चूरी रानी मन भाई। कहि कुँआरिन कहँ देहु पेन्हाई॥
लगी पेन्हावन गावत गीता। मृदु कहि हँसति हँसावतिसीता॥
बहु विचित्र बानी सब बोलहिं।कहि न जाय उर आनँदजेतहिं॥

सब कुँअरी चूरी पहिराई । बोली बचन परम सुखदाई ।।
महाँराज दशरथ जहँ राजैं। तहँ मैं गइऊँ कछुक उपराजै ।।
राजद्वार पै जब मै गयऊं। भीतर खबरि जनावति भयऊँ ।।
कौशिल्या दशरथ की रानी । शोभा शील तेजगुन खानी ।।
तिन मोकहँ लइ तुरत बोलाई। अति आदर समीप बैठाई ।।
देख्यो जाइ कहौं किमि गाई । हे महरानी बुधिन समाई ।।
पूछी कुशल जनक ऋषिराई । रानी सहित कहौं समुझाई ।।
पुनिकुँअरिनि की कँहहुबखानी।अस कहि प्रेम मगनभइरानी।।
सबकी कुशल कहिऊ समुझाई। कुंअरिन की बहुकियेउंवड़ाई।।
तब रानी बोली मृदुबानी । अति सनेह अमृत मय सानी ।।
दोहा–जनकपुरी अरु अवधपुर जात आवत बहु लोग ।
उहां इहां वरणन करत कुँअरि कुँअर सम योग ।।
ताते मैं तोहिं पूछऊँ कहहु सकल व्योहार ।
रानीराय कबहुँ करत है इत सनबंध बिचार ।।
इतने में आये सकल रघुकुल के अवसंस ।
चार कुँअर चारो सुघर सब बिधि योग प्रशंस ।।
सकल कुँअर मन हरत हैं सब सुखमा के रूप ।
युगल गौर युग श्याम हैं परमानन्द स्वरूप ।।
वरणि न जाइ मनोहर ताई । अंग अंग बहु काम लजाई ।।
उनकी प्रीति परस्पर पावन।कहि न जाइ मनभाव सोहावन।।
जसइत कुँअरि मनोहर राजे। तस उत कुंअर महा छविछाजे।।
सब प्रकार सुंदर दुहुँ ओरा। अति प्रसन्न लखि मानसमोरा।।

तब मैं कहेउँ सुनहु महरानी। दोउ राजा सुकृती के खानी॥
दोउ रानी सुकृती के ऐना। असनहिं सुनेउँ न देखेउँ नयना॥
जो अभिलाख करहुँ मनमाहीं। शिव प्रसाद कछु दुर्लभनाहीं॥
जाइ कहेउँ सब इतकी बाता। करब सोई जेहि लागिहिनाता॥
सब रानिन कहँ चूरि पेन्हाई। अमित द्रव्यमणि भूषण पाई॥
चारि दिवस भइ इहँवो आये। सुनतहि रानी के मन भाये॥
अमित द्रब्य दै चूरि पिन्हाई। सो समाज सुख वरणिनजाई॥
दोहा–गई कुसध्वज के महल, वरणत सिया सनेह।
परमानंद मगन मन, पुलकपल्लवित देह॥

: पटविन लीला :

सकलकुँअरि माता ढिब सोहैं। वरणे छवि अस मतिकविकोहैं॥
ताहि समय शंकर मन आई। गयेबहुत दिन दरशन पाई॥
नारा चोटी बहुरि सवाँरी। जेहि महँ लगि मणि मोतिनधारी॥
गुच्छाबिबिध मणिन की लागी। जेहिं नयन बस सो बड़ भागी॥
ककही अमित प्रकार बनाई। मणि मुक्तामय विशद सोहाई॥
विविध मणिन मय भँवरा गोली। चकडोरी रचना अनमोली॥
डिबिया अमित प्रकार बनाई। सकल रंगमय मणिन जराई॥
सबसंभारी उमासँग लीन्हे। अपनोवेष नारि कर कीन्हे॥
दोहा–द्वारपाल ते बूझिकै, मंदिर कीन्ह प्रवेश।
महल बहुल छबि मानको, निरखत मगन महेश॥
बहुरि सुनयनहिं सीतहि देखेउ। अपनो बड़ो भाग तब लेखेउ॥
रानि सुनयना की रुख पाई। बैठी आंगन मन हरषाई॥

कुँअरिन सकल विलोकत नीके । पूरे सकल कामना जी के ।।
रानी निकट बोलाई आई । सब डिबिअन को खोलि देखाई ।।
सकल कुँवरि देखति चहुँओरी । निरखत प्रेम प्रमोदनथोरी ।।
पूछी रानि प्रेमयुत बानी । कहहु सुंदरी मोल बखानी ।।
बोली उमा मनहि हरषाई । जो कछु देहु सो तुमहिं बड़ाई ।।
शिव कहि राजन के गृह माहीं। कबहुँ मोल मैं कीन्हेउँनाहीं।।
रानी सकल होत बड़दानी । तुम तो अति उदार महरानी ।।
पुनि बड़ भागिनि कुँअरिन पाई।करिको सकै तव भागबड़ाई।।
तुम समान तुमहीं महरानी।अस कहि शिथिल भईशिवबानी।।
प्रेम नेम जब रानी पाई । कनक द्रव्य मणि अमित मँगाई ।।
ताहि देइ बहु आदर कीन्हा।अहो भाग कहि शिवसबलीन्हा।।
कछु मेवा सिय निजकर दयऊ। सादर हर्षि उमाशिव लयऊ ।।
मृदुल भाखि तब चलीं सयानी। प्रेम प्रमोद न जात बखानी ।।
बरनत पंथ सिया इतिहासा । उमा शंभु पहुँचे कैलासा ।।
दो०—माता सब कहँ बाटि दइ, कछु राखी निज हेतु ।
कछु निज सहचरि कहँ दई, राखन हेतु निकेतु ।।

(कमला जी मे बसंत उत्सव-नौका विहार)

सब गोतनिन मिलि श्री महरानी।गइ कमलातट शोभाखानी।।
कुँअरिन सकल संग सब लीन्हे।नखशिख मनिशृंगारवरकीन्हें
कमला पुलिन भई अति भीरा । राज दुन्दुभी बजत गँभीरा।।
अपर विविध बाजे सब बाजैं। कमलापुलिन महा छबि छाजैं।।
ध्वज पताक तोरन तहँ छाई। कहिन जाइ अद्भुत रुचिराई ।।

अमितनाव मणिजड़ित सोहावन। अतिपावन मुनिचित्तचोरावन
तेहि पर चढ़ि चढ़ि पारहिं जाहीं। दुहूँ कूल नरनारि सोहाहीं ॥
घाट दोऊ दिशि मनिमय नाना। अति विचित्र नहिंजाइबखाना
सब मन भावति करि अस्नाना। विप्रन कहँ दीन्हों वहुदाना ॥
पहिरे सकल बसंती चीरा । युगल कूल कमला अति भीरा ॥
नावन चढ़ि कमलाजल माहीं। फिरत सकलछवि वरनिनजाहीं
देवन सुमन बृष्टि झरिलाई । पुर के लोग अबीर उड़ाई ॥
कमला जल भयो अरुन सोहावन। फूल बहत तामें अतिपावन॥
अवरख झकझकात जल माहीं। अति शोभा भइ वरनि न जाहीं॥
दोहा-सब रानी अरु कुँअरि सब, एक नाव महँ सोह ।
निज स्वरूप छवि विमलता, कोटिन रतिहि विमोह ॥
महरानिन की नाव संग, पुर युवतिन की नाव ।
पीत चीर सबके लसें, भूषन मनिन जराव ॥
लसत अलौकिक सुन्दरताई। कहि न जाइ मनही मन भाई ॥
कुँअरिन की छवि कौन बखानै। रही संग तेई सब जानै ॥
पीत चीर मनि कोरन लागी। सब पहिरे नखशिख छविपागी॥
कमला जीव निकरि सब आये। मच्छ कच्छ जल जन्तु सोहाये ॥

(कमला जी में बसन्त उत्सव बहार)

तिनकी शोभा अमित अपारा। लाल पीत सित बहु आकारा ॥
ते सब कौतुक विविध कराहीं । कबहुँ प्रगट कबहुँ जल जाहीं॥
कबहुँ उछरि जल दौरत फिरहीं। कबहुँ एक एकन पर गिरहीं॥
कबहुँ भिन्न बहु खेल कराहीं। जलचर की छबि वरनि न जाहीं॥

तिन कहँ देखि कुँअरि सब हर्षहिं। क्षन क्षन देव सुमन बहु बर्षहिं।
मोदक अमित प्रकार मिठाई। जलचर कहँ सब देत खवाई ।।
सिय निजकर बहु मोदक देहीं। हर्षित लरहिं मोद मन लेहीं ।।
बहु मेवा मोदक जल डारी। प्रमुदित लूटि लेहिं जल चारी ।।
जल चर कहँ फूलन ते मारहिं। हँसहिं परस्पर बचन उचारहिं ।।
मैया लखिकै मोद मगन हैं। धन्य धरी सोइ धन्य लगन हैं ।।
उड़त अबीर परस्पर हरषत। स्त्रग सुगन्ध नभ ते सुर बरसत ।।
बीनादिक सब यन्त्र बजावहिं। मधुर मनोहर मंगल गावहिं।।
सब नावन पर नृत्य सोहाई। यन्त्रगान धुनि अति छबि छाई ।।
जौन नाव सनमुख जेहिं आवैं। मारि पीचका सकल हरावैं ।।
खेलहिं नावन नाव मिलाई। चलत पीचका अति सुघराई ।।
दोहा-करि श्रृंगार नख सिख बिमल, पीत वसन रचि अंग।
दान विविध विधि देइकै, सब चले अतिहि उमंग ।।
कमला कूल महल बहु सोहै। एक एक अतिशय मन मोहै ।।
सब रानी सब कुँअरि सहीता। कमला पुलिन महल गइसीता।।
रानि राय सब कुँअरि सहीता। निज महलन आये प्रमुदीता ।।
महल आइ बहु रंगन खेलहिं। एक एक पर हँसि हँसि मेलहिं ।।
सकल कुँअरि सखि संग बनाई। खेलत पिचका मनि अँगनाई ।।
चलत कुमकुमा रंग परस्पर। पीत बसन भइ अरुन मनोहर ।।
पुर कुँअरी सब तेहि क्षन आई। कहि न जाइ नखशिख मधुराई।।
सब कुँअरिन कर पिचका सोहै। पीत वसन सबके मन मोहै ।।
बड़ी भीर भइ जनक महल में। अमित किंकरी खड़ीं टहल में।।

कोइ पिचकारी भरि भरि देहीं। सिय सादर सखियन ते लेहीं॥
बढ़ी खेल बहु आपस माहीं। अति शोभा भइ वरनि न जाई॥
रानी राय खड़े सब देखैं। जीवन जन्म सुफल करि लेखैं॥
चलति कुंअरि पग नूपुर बाजहिं।सातो स्वर रागिनी लजावहिं॥
छन छन सुर बर्षावहिं फूला। भई महल मुद मंगल मूला॥
दोहा-अति उत्सव अति सुख भई, जनक महल के माहिं।
शारद शेष महेश विधि, वरनत ताहि लजाहिं॥

(अथ कौतुकागार लीला)

कौतुक भवन में देखहीं, अति कौतुक तहँ होय।
अति सुन्दर बाजे बजहिं, नृत्य करहिं सब कोय॥
कलधर बहु संदूक लखत तेहि मंदिर माहीं।
कल फेरे तें अमित खेल सुख के प्रगटाहीं॥
प्रथमें पेंच एक फिरी सप्त स्वर बाजन लागी।
श्रवनामृत सो भई सकल कुँअरी अनुरागी॥
दुतिय पेंच जब फिरि गई जंत्र अमित बाजन लगी।
अनहद शब्द सुनात हैं सबके मनमें सुख जगी॥
सिय मन भइ अभिलाष गान की कुँअरिन जानी।
नेहकली कछु गाय उठीं सुन्दर सुख दानी॥
सबके मन में नृत्य भाव आई सुखदाई।
लगी करन सब नृत्य मंडली बाँधि सोहाई॥
नृत्यगान बहु होत परस्पर कुंअरि कुंअरि के।
सकल रानि चलि आइ तहाँ देखे मनहर के॥

तब माता दृढ़ करि दई लगींनटन अति प्रीति सों।
दोउकल सहचरि फेरितबजंत्र बजावहिं रीतिसों ।।
फिरी तीसरी पेंच सकल संदूक समानी ।
तब भोजन हित विविध भाँति विनतीकरि रानी।।

(श्रीलली जू का गान विद्या सीखना)

दो०-चौथ मधुरता में कहब, सप्तम वर्ष बिहार ।
सीखी बहु विद्या ललित, अति सुख रस को सार।।
सकल गुनिन की नारिं को, पठइ बोलि महरानि ।
कुँअरिन कहँ सौंपति भई,कहि प्रिय मधुर सुबानि।।
गायक की नारी चतुर, आईं गान प्रवीन ।
प्रथम पहर स्वर ताल को,सिखवति है अतिलीन।।
बहुरि यंत्र वीनादि को, सिखवति कहि वर वैन ।
रागरागिनी भेद सब, कहति कुँअरि मन चैन ।।
नृत्य भेद सिखलावहीं, नूपुर मधुर बजाइ ।
प्रथम पहर श्री जनक के, महल बहुत छविछाइ।।
पुनि रानी सिखलावहीं, ताल को भेद अपार ।
पुर युवती सब आवहीं, सोउ सिखावन हार ।।
दो०-सब के मन अस रहतहैं, सिखहिं कुंअरि सब गान।
ताते शिघ्र अनुभव भई, लेत अनूठी तान ।।
एक दिवस महरानि मन, आई अस अभिलाष ।
मम कुँअरी जस गावहीं,तस कसकोइ सकैनभाष।।
परि परि चोइया की तबहि, आवहिं सब पुरनारि।

जिनके गान की थाप है, जिनके ताल विचारि ।।
तिन समाज में कुँवरि सब, गावहिं जंत्र बजाइ ।
अरु उन सबके समुझ में, अदभुत रस सरसाइ ।।
तबहिं हमारो बोध है, कुँअरिन सीखेउ गान ।
सोइ कीन्ही आईं सकल, जिन्ह के गान प्रमान ।।
दुतिय महल के ऊपर में, है एक महल विशाल ।
तँह समाज सबकी भई, उपज्यो आनँद माल ।।
सब कुँअरी यक ठौर भईं, यंत्र अनेक मिलाइ ।
लगीं गान करने सकल, अद्‌भुत तान जनाइ ।।
भई मोहनी गान सो, सब कोइ गईं बिकाइ ।
कुँअरिन की प्रिय गान को, कोइ गावैं नहिं पाइ ।।
सब समाज पुनि उठि गई, माता भईं अनंद ।
अमित निछावरि दीन्ह तब, गुनिन बोलि सानंद ।।
जोगायक की नारि सब, कुँअरि सिखाइनि गान ।
तिनकी अति सनमान भई, पाई कोटिन दान ।।

(श्री कमला स्नान सब बहिनों सहित)

माता तें अभिलाष निज, कही सुअवसर पाय ।
महरानी झूलन महल, दीन्हीं तुरित देखाय ।।
रानी आज्ञा पाइ कै, रची हिंडोल विचित्र ।
सो छवि वरनत नहिं बनत,सुख प्रति परमपवित्र।।
सतानन्द माता हंकराई । आये पत्रा लिये सोहाई ।।
सिय झूलन दिन पूछी रानी । सतानन्द तब कहेउ बखानी ।।

सुनिये महरानी असि बाता। झूलन रीति सवन विख्याता ।।
सावन मास अनूप कहावै । तामहँ नारि झूलि सुख पावै ।।
तिनमहँ युगल भेद अस आहीं। सुनहुँ रानि मैं वरनौं ताहीं ।।
नैहर में झूलैं सुकुमारी । तिन कहं तीज कृष्ण सुखकारी ।।
पति के भवन जो झूलन चाहैं। शुक्ल तीज को बेद कहा है ।।
काल्हि तीज सुंदर सुखदाई। प्रथमहिं पहर लगन भल याई ।।
सुमिर शंभु गिरिजा गनराई । कुँअरी चढ़हिं हिंडोल सोहाई।।
प्रथम वाम पग धरि अहलादा। झूलहिं कुँअरि न पायविषादा।।
दो०—माता निज कर तें सकल, कुँअरिन को श्रृंगार ।
कीन्ही अति शोभा भई, बहु बिधि करत दुलार ।।
भोजन कछुक कराइकै, पान अतर पुनि दीन्ह ।
नखशिखछविमनहरनअति, जेहिलखिरतिअतिकीन्ह
शुभ मुहूर्त्त आयो जबै, कुंअरि चढ़ाइ हिंडोल ।
रानि झुलावहिं मुदित मन, प्रेम प्रमोद न थोर ।।

(ललीजू का झूला उत्सव)

एक दिवस सीता अलदेली । बहिनिन संग अनेक सहेली ।।
सब मिलि कमला करि स्नाना। कीन्ह श्रृंसारनजाय बखाना।।
नख शिख मधुर मनोहर रूपा। मनि भूषन छबि अमलअनूपा।।
सब समाज माता ढिग आई । जननि चूमि मुख कंठ लगाई ।।
लखि छबि मातहिं मोद न थोरी।पुनिपुनि चितव सियाकीओरी
सब कुँअरिन कहँ बहुरि दुलारी । बारबार हर्षित महतारी।।
तेहि क्षन जनकराय तहँ आये। कुँअरी देखि अमित सुखपाये।।

(श्री ललीजू का श्रृंगार)

एक समय सब जनक दुलारी । करि श्रृंगार वैठीं सुकुमारी ।।
मनि भूषन नख शिख अतिसोहे। देखत रूप कोटिरति मोहे ।।
वीरी ते मुख भरी सोहावन।मुख की द्युति रवि शशीलजावन।।
नयन कमल महँ अंजन भ्राजै । भृकुटी कुटिल मनोहर राजै।।
अधर अरुन बेसरि छबि छाई।कहि न जाइ दसनन रुचिराई।।
सीस फूल मोतिन मय वेनी । कर्णफूल बंदी छबि श्रेनी ।।
मंदस्मित मुख वरनि न जाई । बोलति मधुर परस्पर भाई।।
षष्ट अष्ट सब राज दुलारी।छवि समुद्र सिय कीअति प्यारी।।
सब चारिउ दिसि सेवाकरहीं।लखि छवि सियाप्रेमउरभरहीं।।
अतसिपुष्प द्युतिकोइमनहारी।चन्द्रबदनिकोइअतिछविकारी।।
कनकवरनकोइछजत सोहावनि।कोइ तड़ितकीद्युतिहिलजावनि
कोइ तन गंध मालती ऐसो। कोइ गुलाब जस महँकति तैसो।।
दो०—कोइ कमल कोइ मल्लिका, गंधवती सुखरूप ।
कोइ पाटल चंपा अमल, सौरभ अतिहि अनूप ।।

(श्री ब्रह्मा जी का पिचकारी बेचन के बहाने आना)

सकल परस्पर आनंद करहीं। बोलनि हँसनि प्रेममन भरहीं ।।
ताहि समय ब्रह्मा मनमाहीं।भइ अभिलाष वरनि किमिजाहीं।।
सिय देखन हित कियो बिचारा । प्रेम मगन भे बारंबारा ।।
चलिय जनकपुर सीतहि देखन।लोचन सुफल करौं उमंगेमन।।
अमित पीच्चिका मनिन जराई । कलधर विविधप्रकार बनाई।।
जाहिंनिरखिमुनिचित्त लोभाहीं।मधुरअमितछबिबरनिनजाहीं

नारि रूप धरि पुरमहँ गयऊ। महल द्वार पर शोभितभयऊ।।
सब सन कहेउ कि पिचिकालायउँ।लेहु मोल मोहिंदेहुजोभायेउँ
द्वारपाल किंकरी बोलाई। तेहि सन भीतर खबरि पठाई।।
बैठीं रानि सुनयना जहवाँ। दासी बात जनाई तहवाँ।।
मन में समुझि सुनयना रानी। होरी समय आइ नियरानी।।
पंद्रह दिन तो माघ अब गयऊ। पँचये दिन बसंत पुनिभयेऊ।।
लेउ सकल कुंअरिन के हीता। दाम लगे सुदेहुँ मैं तेता।।
पूँछि कवन लाई पिचकारी। कहेउ खड़ी द्वारे बहु नारी।।
नारी जानि बोलाई रानी। आइ महल महँ सब सुख खानी।।
बैठी दौरा धरि अँगनाई। कहा कहौं छबि वरनि न जाई।।

दो०-देखि सुनैना पूछेऊ, तुम कहवाँ की नारि।
कहा तुम्हारो नाम है, बोलहु बचन बिचारि।।
नाम हमारो सिल्पिनीं, बसों अवध के राज।
अमित खेलौना रचति हौं, लेत जाहि के काज।।

देखनि सब रनिवास मँगाई। अति विचित्र शोभा अधिकाई।।
कुँअरिनिकँह पुनि लीन्ह बोलाई।अतिसनेहमय सकलदेखाई।।
भइ सब चकित देखि अतिशोभा।सबकेमन पिचकारिनलोभा
कोकिल कंठ मधुर वर वयनी। उर्मिला मुखचंद सुनयनी।।
बोली अति सनेह मृदुबानी। परम प्रेम की घन उमड़ानी।।
मैआ कीन देहु पिचकारी। मो कँह लगति बहुत यह प्यारी।।
सिय कहि जल भरि लेहु चलाई। का जाने पाछे न छुटाई।।
आँगन में यक हौज सोहावन।तेहि मग कमला जलशुचिआवन
दीन्हि फेरि कल जल भरिआई।अतिसुगंधमय विमलसोहाई।।

चतुर्दिशा सब कुंअरि खड़ीहैं। नख शिख मनि ते अंगजड़ी हैं॥
भरत पीचिका चलत परस्पर। को छवि कह सुषमा दूनाधर॥
लखिलखि ब्रह्मा सहित समाजा। भये विदेह प्रेम उर भ्राजा॥
भइ रनिवास मगन लखिशोभा।जनु चकोर पूरन शशिलोभा॥
यकयक पिचिका सब कुँअरिनकर।लसतजरावनिजरितमनोहर
दो०-अति अनंद कुँअरी सकल, देखि पीचिका होत।
माता देखति चन्द मुख, छन छन प्रेम नि सोत॥
तब रानी बोली मृदुबानी। सनहु सिल्पिनी सुमति सयानी॥
जितनी पिचकारी तुम लाई। सबकी दाम कहो समुझाई॥
सिल्पिनी बोली सुनु महरानी। कवन दाम मैं कहौं बखानी॥
कुँअरिनिसहित चरन तब देखेऊँ।मैंनिजजन्म सुफलकरिलेखेउँ
अबतोहिं भाव सो दे महरानी।असकहि सिथिल भईमनवानी॥
ताकर प्रेम देखि सिय माता। अति आनन्द समात न गाता॥
अमित द्रव्य मनि भूषन दीन्हा।अति सन्मान ताहिकरकीन्हा॥
मैं संतुष्ट भई तब भावन। देखेउँ चरन सरोज सोहावन॥
कुँअरिन दरस भली मैं पाई। कहि न जाय तब भाग बड़ाई॥
जैसी अवधपुरी अति सोहै। रचना देखि मुनिन मन मोहै॥
तैसी भ्राजति पुरी तुम्हारी। रचना बिविध मदन मन हारी॥
जस सुकृती कौशिल्या रानी। तस तुम भ्राजति हौ महरानी॥
दो०-उहाँ राम भ्रातन सहित, राजत परम अनूप।
इत सीता बहिनिन सहित, सुखमा की सब रूप॥
इक अभिलाष मोर मन आवै। जो विधि अस संयोग घटावै॥

इत दुलहिनि उत दुलहा नीके ।नखशिख सुभगभावतीजीके ।।
इतै गौर उत श्याम सोहावन । मेरे मन दोऊ मन भावन ।।
कहिहौं जाइ इतै की वाता । सुमिरत नेह समात न गाता ।।
सब रनिवास मगनभइ तेहिक्षन। सुनिसुनि बात होति प्रमुदित मन
चंद्रहार निज ग्रींव उतारी । सिल्पिनि ग्रींव दीन्ह तब डारी ।।
पाइ प्रसाद चली प्रनाम करि। कुँअरिन रूप मनोहर उर धरि।।
छनछन मगन चले मगमाहीं । अधिक सनेह बरनि किमि जाहीं।।

पिचकारो लीला

दोहा–पुनि आईं निमि वंस की, सुता सकल गुन ऐन ।
सिया संग ठाढ़ी भईं, बोलति मधुरी वैन ।।

तिन सब कहँ रनिवास बोलाई । वदन चूमि गोदन बैठाई ।।
माथ सूँघि बहु आदर कीन्ही । यक यक पिचिका सबकर दीन्ही।।
पाइ सकल कुँबरी सुख पाई । पल पल हर्ष न हृदय समाई ।।
गई हौज पर छोड़न लागी । छूटत देखि बहुत अनुरागी ।।
मैया सकल बोलाइ बहोरी । भोजन के हित बिबिध निहोरी।।
मेवा बिबिध प्रकार मँगाई । सादर कुंअरिन सकल खवाई ।।
अमित भाँति पुनि मातु दुलारति।राई लौन छनहिं छन वारति।।
कबहुँ सीय मुख चंदहि हेरति । कबहुँ बनज बदनी कहि टेरति।।
कबहुँ सुधारति बेसरि मोती । बढ़त छनहि छन प्रेम निसोती ।।
सबके अरुन चूँदरी राजैं । मुक्ता गुहित सुमांग विराजैं ।।
शीश फूल सबके सिर सोहे । चिबुकन नील बिंदु मन मोहे ।।

दो०–छल्ला मुँदरी अंगुरिन, अति शोभा को ऐन ।
कंकन वाजूवंद छवि, मोपै कहत वनैन ।।

॥ मुरली लीला लली जू की ॥

नख शिख मंजु मनोहरताई। कहि न जाइ रंगन रुचि राई॥
बिहरति महलसकलमन भावति। कबहूँ हँसिहँसिताल बजावति
कबहुँ परस्पर नाच नचावति। कबहुँ मधुर स्वर मंगल गावति।
शची इन्द्र की अति प्रिय नारी। सावित्री ब्रह्मा की प्यारी॥
पार्वती शंकर मन हरनी। इन सब की छबि जाइ न बरनी॥
अपर देव नारिन संग लीने। नख शिख मनि शृंगार सबकीन्ने।
अमित बाँसुरी मनिन जड़ाई। परम विमल छबि मान बनाई॥
जनक महल हर्षित सब आईं। करि उचार मैं मुरली लाई॥

दोहा—निरखि रानि प्रमुदित भईं, बैठन आज्ञा दीन्ह।
गइ समीप देखन लगीं, मुरली मन हर लीन्ह॥
सकल कुँअरि मिलि बैठही, मुरली छबि की ऐन।
माता सन बोली सिया, अति प्रिय मधुरे वैन॥

मइया मोकहँ देउ कि नाई। यह मुरली मेरे मन भाई॥
सब मुरली के दाम चुकाई। दीन्ह रानि मन हर्ष बढ़ाई॥
पाइ निछावर सब हरषानी। कुँअरिन की छवि लखि सुखमानी
सिय निज कर प्रसादकछु दीन्हा।सबसुरनारि हर्षिउठि लीन्हा।
निज निज धाम गईं सुरनारी। हृदय राखि सब जनकदुलारी॥
तब रानी सब कुँवरिन के कर। दीन्ही मुरली मधुर मनोहर॥
जब सब कुँअरी मुरलि बजाई। सातो स्वर मन्दिर भरछाई॥
अति आनन्द भई सब माता। परमानंद समातन गाता॥
सुदर्शना कुसध्वज रानी। कहति सुनयना सन मृदु वानी॥

मुरली परम मनोहर आई। श्रवन सुखद सब कुंअरि बजाई।।
श्रीपरमा माधुर्य विहारिनि। सब निमि वंश सुता मनहारिनि।
सब मिलि मैया के ढिग आई। देखि मातु आनन्द बढ़ाई ।।
सब कुँअरिन कर मुरलीराजैं। नख निख अद्‌भुत कांति विराजैं
मैया कहेउ बजावहु प्यारी। बैठहु मम ढिग सकल कुमारी ।।
आज्ञा पाय जाय हरषानी। बैठीं सब समीप सुख मानी ।।
अलबेलिन की प्रीति मनोहर। बचन अगोचर राजित सोहर।।
दोहा—सब मिलि मुरली अधर धरि, गावति मधुर रसाल।
महली सब प्रमुदित भईं उमड़यो आनंद माल ।।

श्रीलक्ष्मी निधि चारों भाइयों का विवाह

दोहा—दक्षिण दिशा विडालका, नाम पुरी विख्यात।
श्रीधर महराजा बसैं, अति बल नीति सुहात ।।
श्री सुकान्ति महरानि हैं, पतिब्रता गुन खानि।
कान्तीधर श्रीयशोधर, जुग सुत प्रिय मुद बानि ।।
चारि सुता तिनकी भईं, सिद्धी वानी नन्दा।
ऊषा ये चारो सुघर, अति शुशील सुख कंदा ।।
एक समय श्रीधर महराजा। जनक लली दर्शन के काजा ।।
श्री मिथिलापुर आय पधारे। भूमि सुता पद हिय में धारे ।।
हे सीते सीते हे सीते। मधुर मधुर बोलत अति प्रीते ।।
अति आदर कीन्हो महिपाला। कुशल छेम पूँछी तेहि काला।।
जो अभिलाष हिये मे राखी। सो सब पूर्ण भई कछु भाषी ।।
श्रीमिथिलेश जनक महराजा।सब स्वीकार कीन्ह भलश्राजा।।

श्रीधर आये निज रजधानी। समाचार सुनि मुद महरानी॥
तुरत बोलाये कुल उपरोहित।पूजन करि बहु विधि हियहरषित
दोहा–कहेउ भूप मिथिलेश के, देखेउँ राजकुमार।
पुत्रिन सन संबंध करि, अति सौभाग्य हमार॥
शुभ तिथि शोधनकरि महराजा।मिथिला जाहुहियेधरिकाजा॥
तिथि विवाह की शोधन करिकै। चले पत्रिका भूप सँ लइकै॥
श्रीसुत शीघ्र चले हरषाई। पहुँचे जनक पुरी में आई॥
दीन्ह पत्रिका भूपति लयऊ। सुनत सभासद हर्षित भयऊ॥
माधव मास सु शुक्ल पंचमी। चन्द्रवार दिन लगन उत्तमी॥
श्री लली जु के दर्शन पाई। तुरतहिं देह दशा विसराई॥
यहि बिधि जीवन लाभ सुपाई। आये निज पुर करत बड़ाई॥
श्रीमिथिलेश आदि महराजा। करन लगे विवाह कर साजा॥

श्री दुलहा शृंगार

दोहा--मातहिं दूलह बेष को, सजन लगीं अति प्यार।
कुँवर लक्ष्मी निधि आदिक सुघर, रूप गुनन आगार॥
कंचुक राहदार जरतारी। टकी सुरतनन रुचिर किनारी॥
स्वर्ण तंत मय रचन दुकूला। पहिने वस्त्र स्वर्णमय फूला॥
पनरथ कलित सीप भव वृंदन। लसे उपानह पदजगबंदन॥
सर्वा भरन रतन मय राजैं। लखत वनत नखशिखतिनकाजैं॥
अंजन आँजि नयन महँ दीन्हा। तिलक चारु मस्तकरचिकीन्हा॥
नख सिख दूलह वेष बनाई। बाँधि मौरि तिन अति सुखपाई॥
अनुपम दूलह बेष सुहायो। कोटि काम कमनीय लजायो॥

रतन जटित पालकि सजवाई । शुभ मुहूर्त तिन्ह पर बैठाई ॥

दोहा--देखि मातु प्रमुदित भईं, नयनन को फल लीन ।
करहिं आरती सकल मिलि, दान विविधि विधि दीन ॥

श्रीपिताजी का शृङ्गार

उतभूपतिहिं बसन पहिरायो । पीत रंग जरिदार सुहायो ॥
पोखराज उरहार पिन्हायो । सब भूषन मनि मय सजवायो ॥
मनियन तार क्रीट अति सुन्दर । जेहिलखि लज्जित होईपुरन्दर
राज शृंगार साजि सब राजा । सेवक हर्षित जय महराजा ॥
पीत पुष्प माला पहिराई । सुन्दर रसपुत बीरि पवाई ॥
मिथिलापति हरषित हिय आये । कहि न जाय वह समयसुहाये
साजि बरात बंधु युत राजा । चले मनाइ गनेशहिं भ्राजा ॥
बजी दुदुभी दिग धुनि छाई । सिमिरि चली सुन्दर कटकाई ॥
आगे बढे दुरद ध्वजधारी । ध्वज मृग हय गज अति छविकारी।
बीच बीच करि वास सुहाये । मिथिला पति पहुँचे हर्षाये ॥
अति स्वागत सबविधितिन्ह कीन्हा।ऋतुसुखप्रदजनवासादीन्हा।
तिथी पंचमी सब सुख खानी । माधव मास शुक्ल शुभ जानी॥
समाचार जनवासहिं पाये । अति आदर मंडप महँ आये ॥
लोक वेद विधि कुल गुरु करहीं । पूजि गनेश यशावलि कहहीं।
कन्या दान नृपतिवर करहीं ।लखि लखि परिजनसुखअनुभवहीं
श्रीधर बोले अति मृदुबानी । श्रीलक्ष्मी निधि प्रिय सुखमानी।।
सिद्धि सुता मैं करउँ प्रदाना । ग्रहन कीजिये हिय हुलसाना॥
वानी नाम सुता शुभ खानी । गुन आकर दीन्हो मुद मानी ॥

दोहा--श्रीनिधि को नन्दा दयउ, उषा निधानक जान ।
प्रीति सहित श्रीधर कियउ, सकल सु कन्यादान ।।
सकल भाँवरी फेरि के, सिंदुर की विधि कीन ।
दाइज भूरि समर्पि के, कियो विनय होइ दीन ।।

धरम धीर यसोधर आये, उत्तम धान सुण महँ लाये।
सो सिध्या लक्ष्मी निधी देकर,करन लागि भाँवर प्रमोदभर।।
थिर कराय आरतिन उतारी, चलि लिवाय मण्डपहिसारी ।।
नृप जुवतिन आरती कीनी, अमित निछावर मैं धन दीनी ।।
सकल भाँवरी फेरि के, सेंदुर की विधि कीन ।
दाइज भूरि समपि के, कियो विनय होइ दीन ।।

गान करत परिछनकहँ आवही।निरखिनयनभरि हृदयजुड़ावहि
दुल्लह दुलहिनी को कोहवर लबाई गईं,
नारी कल गान कारी जंत्र बहु बाजई ।
सुषमा सरूप बर दुलही अनूप देषि,
मदन अनेक औ अनेक रति लाजई ।।
कोहबर अनेक रीति रानी कराई तहाँ,
अद्भुत अनूप शोभा महल विराजई ।
चारो सुत पिता पास आये अनुराग भरे,
गोद मोद लीन्हे राजा महा छबि छाई ।।

जेवनार

पावन अनेक भाँति बैठे हैं बराती सब,
व्यंजन अमित नाम कहत न आई है ।

मधुर स्वरगान गारी देतीं सुजान सर्व
श्रवन दियो राजा सुनत अति भाई है ॥
धोये मुख पान पाय जनवासे राव आय
याचक लुटाई सो विरदावलि गाई है।
मनि गन अनेक चीर हय गजराज आदि
अति अहलाद नृप याचक दिवाई है ॥
बहु वर धेनु राजा जनक अलंकृत कै,
विप्रन बोलाई दान दीन्हो हरषाई के !
बेदन की ऋचा भाषि दीन्हो अशीष सकल,
हर्षे सर्व बिप्र छिप्र राजा भाव पाइ के ॥
लक्ष्मी निधि महल जा विदा भये मोद मन,
दुलही समेत चले सुख वरषाइ के।
रानि सब सुता को सनेह बश बार बार,
मिलें मिल गावें पुनि मिलें धाइ धाइ के ॥
पालकी चढ़ाई गौरी गनपति मनाई,
सो फिरी रनिवास करुन विरह अति छायो है।
वहु मनि भूषन बसन गज बाजि आदि,
दाइज अनेक भाँति राव ढिग आये हैं ॥
दीन्हों सब याचक बोलाइ मन हर्ष राजा,
सुयश अपार तहाँ छायो मन भाये हैं।
धौंसा बजाई घहराइ जिमि पावस सघन,
चले हैं बराती लोग शंकर मनाये हैं ॥

सवैया-नृप राज चले दल साजि सबे,पहुँचावनहेतुसबेपुरआये।
कछु दूर गये पुनि फेरेउ राय, बुझाये सवे परमानन्द पाये ॥
गाँव समीप जब आइ बरात, सुसोहत चहुँदिशि मंगल छाये।
रनिवास इतै पुरनारिन कों, परिछावन हेतु बोलाय पठाये ॥
इत सीता आदि सबै कुँवरी, अति हर्ष भरी सजिआरतिलाई।
कीन्हे श्रृंगार अनेक विधी, सब प्रेमनिधी सुषमा तत छाई ॥
दासी दास सब आवत जात, भई अति भीर महा सुखदाई।
नृप मंदिर में तेहि अवसर को,सुख जाइनहींकहिबुद्धिलजाई॥
जब द्वार समीप बरात भई,परिछावन की छबि सुन्दर राजें।
गान अपार भई सुखसार, अनेक प्रकार की बाजन बाजें ॥
रनिवास छबी निधि देखि बधू,कहँजाहिंविलोकिरतीसतलाजें।
परमानंद मिटी दुख द्वन्द, चली गति मन्द समेत समाजें ॥
दोहा-सुत सुत बधू निहारती, चलीं सुनयना आदि।
मनि मन्दिर कोहबर जहाँ, जाहिं निरखि सब बादि ॥
मनी सिंहासन युगल कहँ, पधराई अति नेह।
लोक रीति जननी करति, बरषत आनन्द मोह ॥
कुँवरि कुँवर सकुचात हैं, लौकिक करत सनेम।
पुनि जननी रुख पाइके, करत बढ़त अति प्रेम ॥
सीता आदिक कुँवरि सब, नेग आपनो पाइ।
मुदित भई को कहि सके, वह सुख वरनि न जाइ ॥
जनक राय सब कहँ बहुरि, आदर विनय जनाय।
बिदा कियो भूषन बसन, बिबिध भाँति पहिराय ॥

सबकी सब सनमान करि, जाचक लिये बोलाय ।
विरदावलि भाषत सकल, राय जनक ढिग आय ।।
अमित वसन मनि बाजि गज, दइ रुचि सबहिं निहारि।
सकल अशीषत घर गये, करि बहु भाँति जोहारि ।।

।। श्री नारद आगमन हस्त रेखा ।।

एकबार नारद मुनि आये । चरित पुनीत राम के गाये ।।
मातु सुनैना पूजन करिकै । सियहिं परायो चरनन परिकै ।।
दोहा--सीस नाय सिय मातु पुनि, विनय कीन्ह करजोरि ।
ललो हस्त फल रेख प्रभु, कहहु सुनन रुचि मोरि ।।
नारद सिय महिमा अनुमानी । कीन्ह प्रनाम मनहिं सुखसानी ।
सेवा जान हाथ लखि बोले । सकल सुलक्षण चिन्ह अमोले ।।
जसवर मिलै सियहि मन भावत । सुमहु सुनैना रेख बतावत।।
शासन करै सबहिं पर जोई । सद्‌गुन सदन स्वस्थ मन होई ।।
पूरन काम एक रसवीरा । समरजितै नहिं मिलि रनधीरा ।।
आत्म बसी धृतमान अनूपम । ललित लगत लावण्य विरूपम्।।
नीति प्रीति परमारथ वेता । बुद्धिमान मृदु बोल सुचेता ।।
अंग अंग शुभ उच्च सुखाकर । बाहु अजानु प्रताप दिवाकर
पीन सुवक्ष नयन अभिरामा । खंज कंज सम सोह ललामा ।।
अमित मार मद मर्दन हारा । शोभा धाम नित्य सुखकारा ।।
श्रीयश ज्ञान विरति भण्डारा । वीर्य तेज वल योग अपारा ।।
शशि सम सब कहँ नित प्रिय लागैं।देखत तापत्रिविधभयभागैं।।
दोहा-केश सुचिक्कन जानु पुनि, मांसल सुभग अनूप ।
आपने रूप उदारता, मोहइ सकल सरूप ।।

शाठा चन्द्र सुन्याय ते, तुमहिं जनावन हेत ।
उपलक्षण गुण मैं कहेउँ लेहि हिये निज चेत ॥
पूजित सब तिरलोक को, परहित निरत कुमार ।
निश्चय सीतहिं वर मिलै, वचनन मृषा हमार ॥

जो जो वर गुन कहा बखानी । दशरथ पुत्र माहिं सोरानी॥
रामहिं वर जो देय विधाता। सिया भाग बढ़ जाय सुभाता॥
औरहुँ एक कहहु मैं बाता । सुनहिं मातु जस मोहिं लखाता॥
गिरिजाबाग मध्य जेहिंदेखी। सिय मनरम करिप्रेमविशेषी॥
सो वर मिलै विगत सन्देहा।धरहु बचन मम हियशुचिगेहा॥
असकहिबिधिलोकहिं मुनिगयऊ। आगिलचरितसुनहुजसभयऊ

(श्री किशोरी जी का विरह)

दो०–सकुचिसिया मनही मनहिंसुमिरत निशिदिनराम।
कबहुँ लहै एकान्त जब, प्रगट विरह हिय धाम ॥

सात्विक भाव चिन्ह दर्शावैं । पिया विरह की बात रुवावैं ॥
लाजदवावति जियकर भावा।कोउ न जानजिय प्रेमप्रभावा॥
एक दिवस सिय बैठि विवित्का। राम प्रेममय रँगी सुरक्ता ॥
चन्द्रकला लै सखिन समाजा । गई तहाँ सिय दर्शन काजा ॥
सियहिं प्रनामि पुनि बैठि सकासा।दशादेखि सबभईंउदासा॥
बोलीं स्वामिनि छमब हमारी।अविनय यथा बाल महतारी॥
राउर दशा देखि हम बाला। सहजहिं होत कृशी तब पाला॥
येन केन विधि ढोवहिं देहा । केवल स्वामिनि सेव सनेहा ॥

दो०–कारन कवन दयालुनी, रहहु अशान्त अधीर ।

विरह चिन्ह सो लखि परै, हमहिं बतावैं वीर ॥
बोलीं सिये मन रहस छिपाई। मैं निरोग मन स्वस्थ सुहाई।।
सहज स्वभाव भयो अस मेरो। कारन मोहि परै नहिं हेरो ॥
चन्द्रकला सुनि बचन जानकी । गूढ़ रहस रस भरे खानकी ।।
सिया मनहिं लखि गई महीनी। परम चतुर बहुकलाप्रवीनी।।
प्रान समान सीय प्रिय आली।सिय मुख मलिन नदेखनवाली।।
मनहींमन अस कीन्ह बिचारा। सिय सुख लहैं सुधर्म हमारा।।
दो०—प्रगट लली नहिं कछु कहहिं, कारन होन अधीर।
तदपि ताड़ हिय बात मैं, करहुँ उपाय अपीर ।।
हौंहु जनावहुँनाहिं सोसीतहिं। क्रीड़ा मिस सुख देहुँअभीतहिं
करिनिश्चयबोलीकरजोरी।सुनहिं सिया मिथिलेशकिशोरी।।
वालहिं ते तब कृपा महारानी।मोपै रही सखिन सहसानी।।
खेलब खाब पढ़ब सँग भयऊ।दरसन प्यास सदाबसकियऊ।।
नृत्यगान कल कला नाटकी। योग सिद्धि सबगुन सुठाटकी।।
कृपा तुम्हारि सकल हम पाई। सेवाहित तब सो निपुनाई।।
सेवाकरहिं सखिन मिलि साथा। होहिं सबहिंतबसुखीसनाथा
(श्रीसरकार को प्रगट करने के लिये श्रीचन्द्रकलाजू की रास रचना)
कहहु हृदयअभिलाष भामिनी।सुनहिं कृपाकरमोरस्वामिनी।।
दो०-नृत्य गान रस रहस वर, नाट्य कला सुखरूप ।
तब निकुञ्ज एकान्त महँ, सहचरि करैं अनूप ।।
सुभग सिंहासन आप पधारैं । सेवा समय लखें सुख सारैं ।।
सुनि बोलीं मिथिलेश लड़ैती।करहु सखी शुभ आसवड़ैती।।

चेष्टा मोर सुनहिं सब सखियाँ।तुम्हरेहेतु आननहिंअखियाँ॥
सखिगन कहिजय जनककुमारी।परीपदहिंभलभाव सम्हारी॥
चन्द्रकला शुभ आयसुधरिकै।सखि सबसाज सजीमुदभरिकै॥
रत्न निकुञ्ज बैठि शुभ सीता।नखतबीच जनु चन्द्रपुनीता॥
सखिगन पूजि आरती कीन्हीं ।बीड़ा गंध माल पुनिदीन्हीं॥
पानि जोरि शशि कलाप्रवीनी। बोलीमधुर बचनरसभीनी॥
दो०-स्वामिनि हम सबहीं सुनी, कथा रमायन केरि ।
मातुपिता अरु संत मुख,ऋषि मुख कैयक बेरि ॥
परम धाम साकेतविहारी। दिव्य दिव्य कर चरित उदारी॥
सह परिकर जिमि दिव्य निकुंजे।रचहु सोअभिनयसुखपुँजे॥
पानिफेरि वर बुद्धि बखानी।स्वीकृति दीन्हसिया सुखदानी॥
चितवति चहुँदिशिसखियन ओरी।खोजतमनहुँरामरसबोरी
होन लगी लीला सुखदाई । नाट्य पात्र सब सखी सुहाई ॥
भाँतिभाँतिके चरित सुखाकर।ललितलसत जनुसत्यसत्यवर॥
रासकुञ्ज शुभसमय सुहावन। रास केलि होती मन भावन॥
नृत्यगान गतिप्रेम सुहाये । वीना वेनु सुखद रव छाये ॥
तदाकार बनि प्रेम समाधी । भई मगन सब मिटीं उपाधी॥
दो०-अन्त:करन विलीन भे, सखियाँ भईं विभोर ।
प्रेम दशा अति उच्चतम, सहित सिया रसबोर॥
भये प्रेम बस ब्रह्म विशाला । प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला ॥
अवित प्रकाश निकुँजहिं छावा।कोटि सूर्य जनु उये सुहावा॥
कोटि काम मद मर्दन वारे। सौख्य सिन्धु सौन्दर्य सम्हारे ॥

श्वाम सरोजसुभगसुखकारी। श्यामलबदनपरसि सखिसारी।।
दिव्य सिंहासन पुति पधराई।पूजि यथा विधि हिय हर्षाई।।
गन्धमाल दिवि बीड़ा दीनी । करि आरती प्रनाम सुकीनी।।
सियहिंनिरखि प्रभुप्रेम विभोरे।भये मगनछविसिन्धुहिलोरे।।
प्रभुहिंदेखि सिय भईसुखारी।निज निधि पाइमनहुतनधारी।।
बोले प्रभु शशिकलहिं सुहाती।पूर्वभई निज धाम जो बाती।।
हम अरु सीता नहि द्वैजानहु।छिनहु वियोग होयनहिंमानहु।।
लीला हेतु वियोग लखाई। सोउ मिटहि कछु वासर जाई।।
जोहमसो सत अवध मँझारा।विहरहिं तित्य संग परिवारा।।
दो०-कछु दिन बीते आइहैं, मिथिला गलिन मँझारि ।
परिणय लीला होयगी, संग सिया सुकुमारि ।।
जनक लड़ैती जानतीं, यद्यपि यह सब बात ।
तदपि उच्चतम प्रेम सों, विरह हृदय दुखदात ।।
जौन वेष हम मिथिला ऐहैं।लखहु प्रिया मोहि चीन्हे पैहैं ।।
सो स्वरूप द्रुत राम दुरावा । राजकुँअर नर रूप दिखावा ।।
कोटिमनोज लजावन हारा।धनुष बान निज करहिंसम्हारा।।
सिंहध्वनि गति कति सबसोही।निरखिद्रबहिंमन जायसमोही
अमित अलौकिक सुन्दरताई। कहिन जाय मनहींमन भाई।।
देखि रूप सब भई विभोरी।को हम कहाँ बिसरि सब गोरी।।
भो चित चेत कछुक छनमाहीं । देखें तहाँ नराम लखाहीं।।
मन अधीर विरहाकुल सीता। हृदय राखि प्रभु रूप पुनीता।।
लाज सकुच बसधरि उरधीरा।बोली सखि सन बचन गँभीरा।।

नृत्य गान रस क्रीड़ा काला। भूलि गईं सब तनमन वाला॥
दो०—स्वप्न लखीं हम सुनहु सखि,परम पुरुष नर रूप।
दरस देय कछु बात कहि, दुरिगो दृश्य अनूप ॥
आनँद धाम स्वप्न जो देखी। अबहुँ हृदय महँ हर्ष विशेषी॥
हमहुँनुमहि सब कही सुहावा। लखीस्वप्न सुखकरसुखछावा॥
करि विस्तार कहहिं अरु सुनहीं।सीय सहितमनआनँदसनहीं
बोली सिय असस्वप्न महाना।कहे सुने नशि जात दिखाना॥
काहू सन जनि कहियो ऐरी। गोप बात रखु नित्त हियेरी॥
सबहिंबुझाय मातु ढ़िगआईं।सखियाँ निजनिजसदनसिधाईं॥
माता सियहिं गोद बैठारीं। चूमि बदन बहु प्यार सम्हारी॥
भोजनमधुर स्वकरहिं करायो। रतनपलँग पुनिसियहिंसुवायो
दो०—यहिप्रकार सिय सुरतिशुभ,दिनदिनबढ़तिअथोर।
मिलिहैं कब रघुवंश मनि,सोचति हृदयविभोर॥
निमिष निमिष माधुर्य्यकी, बुद्धि राममय होत ।
जो देखत तिहि नयनमें, छिनछिन नव ऊद्योत ॥
छप्पय—जनक नन्दनी विकल रामगुनसुनि नारदमुख।
पुलक अंग जल नयनप्रेम में पायउ अति सुख॥
देखन को अभिलाष बहत मन में होइ आई ।
पर कुछ सिद्ध उपाय दरस को नाहिन पाई ॥
ताते भयेउ उदास मन, खानपान विसरी सकल।
देखि सियकीविकलता,सबकुँवषिन केमन विकल॥
चन्द्रकला एकान्त पाय सिय सों बतरानी ।

क्यों है तब चित उदास, मोहि कहहु सु वानी ।।
मनभायो तवकरब हर्ष, मन में जेहि आई ।
पर मो कहँ मन को, बिचार सबकहहु बुझाई ।।
पिक बैनी बोलत भई, अवध राजसुत प्रान मम ।
इन नयनन दरसाब्रहू, तव तोहि पर प्रसन्न हम ।।
उधरि प्रीति को धरु, दवाइ टुम धीरज आनो ।
अवसि मिलिहि कौशलकुमार, यह निश्चयजानो ।।

(सुको श्री अवध भेजना)

शुकी एक जेहि सिय पढ़ाइ अरु परम पियारी ।
ताहि अवधपुर जान हेतु शुभ मंत्र बिचारी ।।
लिखी पत्रिका प्रेमकी अभिप्राय रस में भरी ।
जोपढ़ते श्रीरघुलाल चित, इतआवन उत्सवकरी ।।

शुगी पत्र लेकर अयोध्याजी शीघ्र आना

घनाक्षरी :—

रतन मनि धाम जहाँ राम लोचनाभिराम,
राजत सखन संग अति छबि छाई है ।
सरयू पुलिन ओर बैठे रसि केन्द्र मनि,
मोहनि श्रृंगार किये अति हर्षाई है ।।
शुकी तहँ जाय के उचारे हैं मधुर बैन,
अर्थ आवरन कोई जान नहिं पाई है ।
उठे रघुलाल बानी सुनि के निहाल,
भये गये तमाल तरे मोद मन छाई है ।।

शुकी ने गिराई प्रेम पत्रिका सुपाई,

लाल बांचत नेह छाई रोग-रोम पुलकाई है।

फूल रसगारी तृण लेखनी बनाई प्यारे,

लिखी प्रेम पावन सु आवन जनाई है।।

उड़ी शुकी पत्र लेकै पहुँची जनक धाम,

सिया को सुनाई बैन बोल मधुराई है।

बैठीनृप लाड़िलीजी चन्द्रमणि कान्तधाम,

बानी अभिराम सोई सुनत उठिधाई है।।

दो०—पिय के पाती पाय के, मुदित भई सुकुमारि।

नयनन उर सब लावती, पाये हर्ष अपारि।।

जस उतमन अभिलाष है, तस इत मनअभिलाष।

प्रियालिखत बहुबनत नहीं, बात एक मेंह लाष।।

जस सनेह तुम्हरे हृदय, तस इत प्रेम अपार।

प्रेम लिखत नहिं बनत है, मिलन आनन्तअपार।।

उतमग निरखिरही शुगिपाती। चहै चातकीजिमिजल स्वाती।।

तेति क्षण शुगि कीन्ह परनामु। कहि जैजै सियपति पियराम।

खोलि पत्र सुखवरणि नजाई। लौट प्राणजिम पुनि तनुपाई।।

प्रिय पत्र कर लै सखि सोई। बाँचत दृग जल चीरभिगोई।

दो०—प्राण प्रिया हम हे, प्रिया परम प्रेम तुम माहि।

जेहिविधि तुम्हरीप्रीति है, तेहिविधि हमरीआहि।।

दिनदिन देह व्यथा बढ़ै, जनु लागि कछु विविधाई।

भेद सखा पूंछत सबै, भाषौ कछुक बनाई।।

प्रेमिन रूचिपुरवौं सदा, प्रेमि हृदय बसाऊँ।
प्रेमिन ते विलगौं नहीं, प्रेमिन करहिं बिक जाऊँ।।
आवत बिश्वामित्रसंग, सकल धरहु मन धीर।
धनुषशंभु तोरोंसपदि, हरहुँ विरह की पीर।।

दम्पत्ति का लली जू के विवाह हेतु चरचा चलाना)

एक दिवस प्रिय मातु सुनैना। बोली जनक पांय परि बैना।।
सुनहुनाथममविनयकृपाकरि। यथा होयेरुचिकरहिंसीउरधरि।।
अहैं विवाह योग सुकुमारी। सबविधिजानहिंकरहिं विचारी।।
पितृधर्म शास्त्रन मँह भनई। सुता विवाह समय सो करई।।
जनक कहेउभलकहीपियारी। सीतहिं लखिमोरेहु रुचिभारी।।
निशिदिनकरहिंसुसोचविचारा।केहिंविधिकरहिंसुव्याहसंभारा।।
दो०–सीतहिं लायक वर प्रिये, दशरथ नन्दन राम।
गुरुसुवात अति रहस की, प्रथम सुनायो भाम।।
नृप दशरथ अरूहम प्रिय दोई। एकहिं बंश प्रथम के होई।।
यद्यपि बीत गई बहु पीढ़ी। गोत्रहु बदल गयो निज सीढ़ी।।
तदपिप्रीतिनिजकुलहिंसमाना। खाबपियब व्यवहार सुहाना।।
तनिक भेद नहिंजाय लखाया। दोनहु बंश एक कर भाया।।
केहिबिधि वातचलावहुँतहवां। बनै न कहत सकुच है जहवा।।
चलत वतकही बीचहिं सीता। आईं सखि सह भाव विनीता।।

(धनुष पूजन लली जू का जाना बहिनि न सहित)

दो०–एक दिवस कोइ काज में, महरानी अरूज्ञानि।
सीतासन प्रमुदित कही, अतिप्रिय मधुरसुवानि।।

परिचर्य्या पिनाक की आजू । तुमहिं करहुसब साजहु साजू ॥
सियामुदित मन आयुसु पाई । नेह प्रेम लै चलि हर्षाई ॥
जहँ शिवधनुष तहाँसियगयऊ । निजकर फूल बुहारत भयऊ ॥
कछुक फूलधनु संधिहिंअटकी । रहितेहिलखि सीतामनभटकी॥
मन महँ करि विचार ठहराई । वाम हस्त ते धनुष उठाई ॥
चन्द्रकला सिय आज्ञा कीन्ही । चंदन सेत रक्त धसि दीन्ही ॥
मनिकोपर में धरि हर्षाई । अतिसुगंध अतिविमलसोहाई ॥
उरमीला माला कुसुमन की । गूंथिदई सो भइ सियमनकी ॥
कोपर संपुट मनि न जराई । सकल पारषदजल अन्हवाई ॥
जलझारी कमला जल धरेऊ । पूजा सौज सकल तहँ करेऊ ॥
सबकरि बहुरिमातु ढिग आई । सब कीन्ही सो दई जनाई ॥
पूजन हेतु जनक तहँ गयऊ । देखि धनुष मन चिंता भयऊ ॥
रानी कहँ पुनि लीन्ह बोलाई । पूँछी अति सनेह समुझाई ॥
आजु कवन परिचर्य्या कीन्हा । धनुषटेढ़ सन्मुख करि दीन्हा ॥
रानी बोली राज दुलारी । सियाकीन्ह ममरुचिहि विचारी ॥
सीता कहँ पुनि नृप हँकराई । मातु मधुर कहि लीन्ह बोलाई ॥
पूछी सब वृतान्त जनाई । राजा मनमहँ अति सुख पाई ॥
बहुरिबिचारकीन्ह मनमाहीं । सीता कुँअरि वली अति आहीं ॥
सियमहिमामन कीन्हबिचारी । रानि सुन यनहि कहे हँकारी ॥
सहजहिसियशिव चापउठावा । शक्ति अचिन्त्य यथामुनिगावा ॥
मुदितमनकहि सामुहे कीन्हीं । हर्षित भूप गोद तब लीन्हीं ॥
उरलगाइ अतिसहित हुलासा । महाराज अस बचन प्रकासा ॥

है सीते तुम लिन्ह उठायी कैसे । धनुगरुता मंदर चल जैसे ।।
कमल नाल ते अति सुकुमारी। मुरकि न कहूँ बाँहि तुम्हारी।।
चम्पकलिनसमचितइअँगुरिया। चूमतपितुसियसुधरगुदलिया।।
दै संतोष सुनैना पाहीं । बोल बचन अनुकूल सुहाहीं ।।
ललिहि योग वर मिलै अनूपा।करउँ विवाह सुखद अनुकूला।।
कवित–सोचत विदेह वैदेही के विवाह हेतु,
'नारायण' रच्यो मन चिंता चित ढोने में ।
ठनि गो पिनाक प्रण ऐसो कठिन जाको,
पूरण करैया ना दिखात काहू कोने में ।
सर्व शुभ लक्षण सम्पन्न सुकुमारी सिया,
शंकर सहाय होंय पूर्ण प्रण होने में ।
तुल्य कुल शील वयवृत बल वैभव मैं,
मिले जो जमाई तो सुगन्ध होय सोने में ।

श्रीशंकरजी–जनकजी ध्यान से सब बात कहना।

आजु नेम धरि शिव कहँ ध्याऊँ।शासन देहिंतथा चितलाऊँ ।।
अस कहि नृप शिव मंदिर जाई।ध्यानमगन तनसुधिविसराई।।

ध्यान में धनुष भंग के लिए प्रतिज्ञा।

जानि मनोरथ शिव वरदानी।ध्यानहिं मँह सब कहाबखानी।।
दो०-चाप मोर तब गृह धरो, पूजहु जेहि करि नेम ।
तासु भंग शुभ यज्ञ करि, पइहौ योग सछेम ।।
अस प्रण करहु सुनहु नरपाला।जो यह तोड़े धनुष विशाला ।।
सीता व्याहहताहि सन होई । कहुँरु त्रिसल्य ज्ञान सब कोई ।।

यहि विधि ब्रह्म राम परमारथ । दैहैं दर्शन कहौं यथारथ ॥
इष्ट देव नृपसों प्रभु मेरो । भंजि चाप सिय वरै सुबेरो ॥
सुख यस पइहौ विशद महाना।राम पाइ कहु रहै न पाना ॥
शासनकरि शिव रूप दुरायो।जनक जागि निज शीशचढ़ायो॥
गयउ भवन सब बात बतायउ।सुनत सुनैना सुठि सुखपायउ ॥

सभा में विवाह की चर्चा चलाना

एक दिवस नृप सभा मँझारा। बात कहीसिय ब्याह सम्हारा॥
शम्भु चाप जिमिसीय उठावा।प्रण कीन्हेउँ तिमिआपुबतावा॥
दो०-गुरु सन कहेउ सुपाँव परि, जस प्रभु आयसु होय ।
सोइ करहुँ नहिं आन कछु,कहहुँ मृषा नहिं होय ॥
सुनि नृप गिरा विनय रस सानी। साधु साधु बोले मुनिज्ञानी॥
कीन्हेउभल प्रण सुनहु भुआरा।पुजिहैं मन अभिलाषतुम्हारा॥
रंग भूमि सजवाय सुहावन । तामँह वेदि मध्य जगपावन ॥
तहाँ धराय समुद शिव चापा। सबहिं जनावहु जो प्रण थापा॥
दर्शक बास राज सत कारहि।यथा उचित बहु बेग सम्हारहिं॥
ऋषि थल बाहर नगर बनाई। स्वागत साज धरौ सजवाई ॥
दीपदीप सब नृपन सकाशा । तब प्रण हौवै तुरत प्रकाशा ॥
ऋषिन मुनिन कहँ न्यौत बुलावहुँ।विप्र साधु सस्मानिजिवावहु
दो०-चार बरण आश्रम चतुर, नारी लघुजन कोय ।
प्राणि मात्र सतकार करू, छिद्र तनिक नहिं होय ॥
मंगल हेतु लली बैदेही । दान मान प्रिय बचन सनेही ॥
पूजहिं सबहिं यथा श्रुति सारा।ईश जानि जग सकलभुआरा॥

मंगल द्रव्य मँगाय अथोरी । नगर सजावहु चारहु ओरी ।।
महा मोद मंगल पुर छावै । ताकी समता कतहुँ न आवै ।।
गुरू शासन लहि तिरहुत राऊ।चरन परेउ अति प्रेमहिछाऊ।।
आज्ञा सिर सबनाथ तुम्हारी । अस कहि भवहि गयोसिधारी ।।
आयसु दियो यथामुनि नाथा । तसतसकियो अधिकनृपमाथा ।।

(ऋषियों और राजावों को सूचना)

देशदेशनिज प्रणहिं जनायो । सकल ऋषिननृप बोलिपठायो ।।
दो०–विश्वामित्र मुनीशवर, आश्रम करत सुयज्ञ ।
मंत्रि पठायो विप्रयुत, तहँ नृप बर-बर बिज्ञ ।।
देश देश के भूपति आये । सिया बरन बहु बेष बनाये ।।
अति सत्यकार भूप सनपाये । असन सयन सब भाँति सुहाये ।।
चहूँ दिशि आईपरजनटोली । सबसबबिधि सुखलहा अमोली ।।
सबन्ह बाससव भाँतिसुहाये । रहहि सुखी निजनिजमन भाये ।।
दो०–प्राची दिशा पुर के लसै धनु यज्ञभूमि सोहावनी ।
कंचनमनिन मयधाम चहुँदिशि अति सोहावनिपावनी।।
द्वार चारहुँ के उपरि शुभ ध्वज पताक विराजहीं ।
जेहिराह आवतलोग सब दिशि अति सुहावनिभ्राजहीं।।
वेदि चहुँ दिशि मंच शोभित त्रियावरन छबि मोहहीं ।
लागीमहामनि जनु अनेकन ज्योंति शशि रवि लाजहीं।।

श्री शंकर जी विश्वामित्र को स्वप्न देना

करहिंजोग जप जहँ सुत गाधी।करत असुर तहँ विविधउपाधी।।
तब अकुलाइ ध्यान मुनि ठाना।भा अवतार राम का जाना ।।

गाधि तनयपहँ गे शशि भाला।स्वप्न दीन्ह तहँ दीनदयाला॥
ब्याज राम रघुबर कहँ लेई।मिथिला जाहु अमित सुख भेई॥
शक्ति बिना रसिकेश्वर आधे। पूरण होहिं योग युग साधे॥
करिहहिंचरित किशोरिकिशोरहिं।सब्र जहानकोआनंदबोरहिं॥
दो०-कौशिक मुनी प्रबुद्ध ह्वै, शिव अनुशासन मान।
शिष्यन कहेउ सनेह सों, सुनहु सकल मतिमान॥
मख राखन हित अवध हम, जावहिं नृपति समीप।
राम लषन इत लाइ युग, दइहैं निसचर लीप॥

श्री दशरथ जी सब पुरजन को बुला के विवाह की चर्चा चलाना

छन्द-यहविधि निरखि कुमारन को तहँ मन मोदितनरनाहू॥
तब तुरन्त बोल्वो सुमन्त को ल्यावो वशिष्ठ बोलाई।
सुहृद सचिव पुर प्रजा वृद्धजन दीजै सभा लगाई॥
कछु भाषन की अभिलाषा उर उपजी अवशि हमारे।
करिहौं गुरु शासन सिर धारे जो सम्मत हो तिहारे॥
सुनत सुमन्त तुरन्त चले तब ल्याये गुरुहिं लेवाई।
सचिव सुहृद परिजन पुरजन सब आये सुनत रजाई॥
वृद्धवृद्ध सिगरे रघुवंशिन सुजन पूज्य मतिमाना।
आये सभा मध्य सब बैठे करत बिचार बिधाना॥
बंधु पुरोहित सचिव परीजन प्रभु मुख रहे निहारी।
कहि न सकत पूछत बिन कोई भै ससाज तहँ भारी॥
सब कहँ देखि भूप मणि बोले सुनहु सकल मम बैना।
भये कुमार विवाहन लायक उचित भेल अब है ना॥

ईश कृपा भे कुँवर चारि मम तुम्हरे पुण्य प्रभाऊ।
अस बिचार अब करत मोर मन करहुँ विवाहउ राऊ।।
जो तुम्हार सबको सम्मत अस होइ हिये हुलसायो।
तो जेहि जहँ जस परे योग लखि बनतो अबहिं सुनायो।।
निज अभिलाष सुनत सिगर जन बोलि उठे इकबारा।
राम व्याह अब करहु भूप मणि दूसर कछु न विचारा।।
सबको सम्मत सबको यह सुख सबहीं अस अभिलाषी।
राम ब्याह अब लखब नयन इन सत्य कहैं शिव शाषी।।
बाँधे मौर चारि भ्रातन को कब देखन दिन होई।
अस आनँद महँ जेहि सम्मत नहिं ताते मंद न कोई।।
सुनहु भूमि भूषण हत दूषन कह वशिष्ठ मुसुकाई।
जो प्रभु दियो पुत्र तुमको सोइ दैहैं जोग लगाई।।

कबित्त

जोरि गुरु ज्ञाति मन्त्रिमण्डल विचारैंराउ,
भये चारों लाल वय तरुण किशोर हैं।
सुन्दर सुशील सर्व सद्गुण सम्पन्न,
हंस वंश अवतंश सुख धाम श्याम गौर हैं।
वधू अनुरूप चारों लाल लगि मिलै कहाँ,
उर अभिलाष अस उठत हिलोर हैं।
"नारायण" पूजे मन कामना हमारी यदि,
करैं गुरूदेव नैकु नैन कृपा कोर हैं।

श्री विश्वामित्र जी का आगमन

दो०-बहु बिधि करत मनोरथ, जात लागि नहिं वार।
कहि मज्जन सरजू जल, गये भूप दरबार॥
छन्द-इतने ही में द्वारपाल द्वै, आतुर आयो धाई।
करि बन्दन ते अजनन्दन को, दीन्हो बचन सुनाई॥
महाराज महिपती मुकुट मनि, जासु महामुनि ख्याती।
सोई विश्वामित्र इत आये, आये विनहिं जमाती॥
दशरथ सुनिकर सहितसमाजा।चरणशीशधरि ह्वैकृतकाजा॥
षोडस पूजि सुआसन आनी। सेवा कीन्ह सहित सुत नारी॥
रामहिं देखि नयन भरि बारी।प्रेममगन मुनि सुरतिबिसारी॥
कौशिक हिय नहि दूसर भावा। रामहिं जानेउ ब्रह्म सुहावा॥

श्री चक्रवर्ती जी बचन

—: सवैया :—

ऐसी कृपा नहि कीनी कभूँ, जस आयके पायँलखायके आजू।
सो कहिये "रसरंगमणी",अब आपको आगम भोकेहिकाजू॥
जाहिर है जहँ लगि धनधाम, सु और धरा सब राज समाजू।
लेहु सोई जो लगै तुमको, मन मानेसु मोद महामुनि राजू॥

श्री विश्वामित्र बचन

—: कवित्त :—

असुर समूह अति नितहिं सतावत हैं,
लषन समेत राम जू को मोहिं दीजियें।
धर्म को सुजस नृप लीजिये जहान बीच,

मोह मूढ़ता की बात रंचहुँ न कीजिये ।।
मंगल कुशल अति ह्वैहैं इन दोउन को,
साँचि ही कहत मोरी बात को पतीजिये।
निशिचर नाश ते सनाथ हम ह्वै नाथ,
हूजिये प्रसन्न अति भय में न भीजिये ।।

श्री दशरथ जी बचन

साठि सहस्र बर्स बीते लह्यो राम जी को,
जिन बिन छिनहूँ रहैं न मेरो प्रान है ।
अबहीं ये षोठस बरश से है कमती मुनि,
कहँ सुन्द उपसुन्द पुत्र महाबलवान हैं ।।
दोउ दुर्धष भट मन्त्री राज रावन के,
जिन्हैं देखि भागत फिरत देवता महान हैं ।
कैसे तिन्हैं मारिहैं ये सुन्दर किशोर मध्य,
कैसे पुत्र देऊँ मुनीश सिद्ध के निधान हैं ।।

—: सवैया :—

हे ऋषिराज सुजान न कान, सुनाइये राम वियोग के बैना ।
घोर कठोर सुरारिन संग, कहाँ लरिका सुकुमार लरैना ।।
मागहु धेनु धरा धन माथ सो हाथ पसारि के देउँ सचैना ।
हैं मम प्राण समान सबै सुत, पै 'रसरामहिं' देत बनैना ।।

श्री वशिष्ठ जी बचन

मागे बरदान आप ब्रह्म ब्रह्मानन्द जू सों,
होन हित पुत्र पुत्रवधू स्वरूप सों ।

अंशन सहित ब्रह्म भये हैं तिहारे पुत्र,
ब्रह्मानन्द शीरध्वज तनया के रूप सों ॥
पूरन होन चाहत ब्रह्म कौशिक की कृपा,
युगल सिंगार सुख पाइहौ अनूप सो।
सोई सुख हेतु मुनि मख रखवारी मिस,
आये हैं सलाह करि मिथिला के भूपसों॥

राजन जो हमहूँ तुमहूँ मिलिकै अबहीं जो बिचारि रहे जू।
सो सुभ ब्याह कुमारन को करवावन कौशिक चाह रहे जू॥
मागत हैं मष के मिस रामहिं, हर्षहिं देहु सु मंत्र कहे जू।
जाचक गाधि तनय 'रसरंग,मणी' मुख हाथ पसारि रहे जू॥

दोहा-अति सुख युत अइहैं भवन, इनके काज सँवारि।
हरष सहित दीजै तनय, कहा रहे मद मारि॥

-: कवित्त :-

दीजै हुलसाय संशय प्रमाद त्यागि,
कौशिक संग राम लक्ष्मण जा रहे हैं।
मेरे कला विद्या में पारांगत भये अब ते,
इनसे बला अतिबला विद्या पुनि पइ हैं॥
भूष नाहिं प्यास नाहिं कबहूँ उदास नहीं,
दिन दिन प्रकाश तन तेज अधिकाइ हैं।
'नारायण' युगल जाय अइहैं चतुर ह्वै कै,
चारो यदि जाइहैं तो आठ ह्वैके आइहैं॥

दो०-गुरु के बचन प्रतीति करि, प्रेम सहित नरनाँह ।
राम लषन सौंपे तुरत, मन उत्साह अथाह ।।
मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ। तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ।।

-: सवैया :-

लेइ शुभ आयसु जननि सों लषन राम,
मारिकै खलन को मुनि मष कीजिये ।
हाथ तुम दोउनके मीच निस चारिनकी,
याते यारजयसु पै हर्ष अति कीजिये ।।
कोही अति कौशिक निहालइन्हैंकीजैलाल,
आइ पितु मातु को बहुरि सुख दीजिये ।
होइ मग मंगल सुकीरति बिजै विभूति,
फलै मन कामना अशीष मम लीजिये ।।
दो०-विजय मन्त्र पढ़ि सहित विधि अभिमंत्रित करिअंग।
मंगल लागे पढ़न पुनि, गुरु वशिष्ठ दुःख भंग ।।

श्री माता जी से विदा मागना

दो०-मख राखन के हेतु हम, पितु आयसु ते जात ।
आयसु आशिष दीजिये, बेगहिं आउब मातु ।।
छन्द-द्विज कारज लगि छत्रिन को तनु,गाधि सुवन सेवकाई।
गुरु अनुमति पुनि पितु निदेश शिर,तामें मोर भलाई ।।
छत्री कुल महँ जन्म विप्र दुख कानन सुनि नहिं जाते ।
सो अति अधम तासु यह अपयस, जननी जग नसमाते।।
गुरु पितु अरु तुम पद प्रताप से,मोर सिद्ध सब काजा ।।

जो यह अनुचित जानत तो कस,जान देत महाराजा ।।
ताते अब नहिं कछु शंका करु, मंगल करु महतारी ।
रंचक नहिं निशंक कौशिक सँग,जात लखन सहकारी।।
सुनत पुत्र के बचन कौशिल्या, धरि धीरज उर भारी ।

श्री माता जी बचन

बोली बचन सूँघि सुत कौसिर, जैसी खुसी तिहारी ।।
अस कहि मंगल द्रव्य सजी सब, दधि दुर्वा धरि थारी ।
गौरि गनेश पुजाय पुत्र कर, मंगल बचन उचारी ।।
रक्षहि रंगनाथ सब थल महँ सहित विरंचि पुरारी ।
सकल देव दाहिने दशोंदिशि, रहैं शोक भय हारी ।।
रंगनाथ को हौं सुत सौंपति, इष्ट देव भगवाना ।
मों गरीबनी के दोउ बालक रक्षहु कृपा निधाना ।।

दो०—जाहु द्वौ सुन्दर कुँवर, बढ़हु सुवल अँग अंग ।
जय बिभूति मंगल कुशल,नितनव मग मुनि संग।।

छन्द-जननी पद प्रनाम करि हर्षित, चले संग दोउ भाई ।
महाराज को करि प्रनाम सब, सभा सहित सिर नाई ।।
गुरु बशिष्ठ को पद बन्दन करि,सब बृन्दन शिर नाई ।
कौशिक संग गवन कानन कंह, मष राखन दोउ भाई ।।

दो०—बैठै एक तरु तर मुनिबर, गोद लषन अरु रामै ।
बार बार सिर सूँघि सराहत,पूरन मो मन कामैं ।।
राम लखन लै मुनि चले, धन्य जन्म निम मानि ।
शीतल मंद समीर तहँ बहन लग्यो सुख खानि ।।

छन्द-विश्वामित्र चरण वन्दे पुनि, राम लखन दोउ भाई ।।
लिये उठाय अंक महँ मुनिवर, मनहुँ महानिधि पाई ।।
बैठे एक तरु तर मुनिवर लै गोद लखन अरु रामैं ।
बार बार शिर सूँघि सराहत, पूरन मो मन कामैं ।।
लहि मुनि मंजुल रस, सुख भूले सब ज्ञान ।
लिये लाय उर लालन लखि मुख कुम्हलान ।।
परसि कपोल सुबोलन कहिहै प्रान ।
लेहु लखन सह रघुबर विद्या ज्ञान ।।

सवैया-तातसुकेत सुता यह है,तुम नारीविचारिकदापिनछाड़ो
हाथी हजारन को बल धारति,माया पसारति ताहि बिगाड़ो।
याही हते मुनि होहि सुखी, रस राम मणी जग में जसमाड़ो।
श्रीरघुबीर महाँ रन धीर, तड़ाक दै ताडुकै तीर ते ताड़ो ।

दो०-सुनि रघुनन्दन नाय शिर, गुरू अज्ञा शिर धारि ।
मारि ताडुकहि तहँ बसे,करि सुर मुनि सिरधारि।।

कौशिक प्रीति प्रतीति प्रमाना।अस्त्र सुसस्त्र दिये मति बाना।।

दो०-इतने में सन्ध्या भई, अस्ता चल गे भान ।
राम लखन सों कहत भे कौशिक मुनि हर्षान ।।

सवैया-पायेमहाश्रम राजकिशोर इतै यह ताडुका केरणमाही।
ह्वैहै पिरात सुपंकज पानी प्रस्वेद के विन्दु शरीर सोहाही ।
श्री रघुराज सुनौ रघुराज बिचारि कह्यो नहिं बातवृथाही।
आज निवास करौ रजनी इत,कालिह चले मम आश्रमकाही।

आश्रम लाइ सुपूजा कीन्हा।फल फूल मुनि मुदित सोदीन्हा ।।

मुनि जी का यज्ञ प्रारम्भ

दो०-बोले मधुर उदार कर जोरि, बचन दोउ भाय ।
काज किंकर के करन हित, कहिये श्रीमुनिराय॥
जानन चाहे नाथ हम, रजनीचर जेहि काल ।
विघ्न करन हेतु आये, प्रेरित काल कराल ॥
रहैं सजग तौने समय नहि भ्रम होइ मुनीश ।
हमको समय बताय के, सुचित भजौ जगदीश ॥
समर उमंग भरे सुनत राम लखन के वैन ।
सिगरे मुनि बोलत भये तिनहि सराहि सुचैन ॥
सुंदर साँवर राजकिशोर भली बात कहिमनभाई।
हो समरथ सबै विधिते,दशरथ के लाड़िले आनंददाई॥
कौशिकदीक्षालई मख की,भये मौन वेदविधिजैहैनशाई।
आजुते अरु षट वासर लौं,रघुराज रक्षण कीजे बनाई॥
स०-हे मुनिनायक यज्ञ करो, जेहि कारन लैआये मोहि माँगी।
मैं रखवारो खड़ों मख को,करिये सुख से सवहि भयत्यागी॥
जो कोई आवै यज्ञ विनासन, मारौ ताहि बचै नहिं भागी।
श्रीरघुराज खड़े दोउ भ्रात, रखावहिं गे दिनरातहि जागी॥
दो०-सुनत मुनिन वाणी विमल,यशी अवधिपति लाल।
संयुग कसे कमर कठिन, करन समर तत्काल ॥
राम लषन षट निशिदिवस, नींद भूख अरु प्यास।
तके तमकि समर सजे, मख रक्षण के आस ॥
होम करन लागे मुनि ज्ञारी। आप रहे मख की रखवारी ॥

पंच दिवस जब बीतत भयऊ। पूर्णाहुति छठवाँ दिन भयऊ।।

दो०-श्रुवा कुशा अरु चरु युत कुसुमहु समिध समेत।

विश्वामित्रहिहृवन में प्रज्वलित धूमको केत ।।

ज्वालमाल लखि वेदिका मुनि सब अशुभविचार।

कौशिक ते बोलत भये गुनि आगम निशचार ।।

सुनि मारीच निसाचर कोही। लै सहाय धावा मुनि द्रोही ।।

सवैया-पूरन आहुति को समय भयो भे मुनि वृन्द त्रासी ।

श्री रघुराज कह्यो लषणै लाल दोउ विलोकि निवासी ।

जानिपरै हमहीं हठि आजु निशाचर सैनआवनिखासी।

कवित्त–बिनु फर वान मारि फैकौंशत जोजन पै,

देखतहि आजु नीच सुन्दर सुकुमार को।

जारि दैहौं तूल कै समान हे महान जान,

मारि अग्निबाण उपसुन्द के कुमार को।

अभय होइ यज्ञ अब कीजिये मुनीस मनि,

मारिहैं लखन खल वाहिनी अपार को ।

मैं हूँ आजु देखिहौ दुखद दुख चारिन को,

कैसे सठ करिहै दुखद दुराचार को ।।

यज्ञारम्भ कराय कृपाला। रक्षण हित सह लक्षिमन लाला।।

मारीचहि बिन फरशर मारी। दियो उड़ाय समुद्रहि पारी।।

दो०–बहुरि सुबाहुहि जारि दिये,अग्नि बाण रघुराय।

शेष हने लक्षमण शरहिं,निशिचरअधम निकाय।।

मारि असुर द्विज निर्भयकारी।अस्तुति करहिं देवमुनिझारी।।

दो०-राम वाहु पूजे मुनिन, स्तुत करत तहाँही।
यथा सुरासुर रण जितै सुर पूजे हरि काही ॥
सवैया-कौशिकको लखि श्रीरघुनन्दनधाये गिरेपदपंकजमाही।
जोरि कै पङ्कज पानि सुखी मुख मंजुलवाणी कहिमुनिपाही।
श्री रघुराज सुनों ऋषि राजन मोर हैं जोर निहोरहु नाहीं।
केवल रावरे की कृपा पायो जीत्यो क्षनमेंरनमें रिपु काहीं।
सहज स्वभाउ सहज दोउभाई। कौशिक लिये अंक बैठाई ॥
पीठ सूँघ फेरत ततु पानि पढ़त राम रक्षा मुनि राई।
कोशिक यज्ञ पूर्ण करि लखि दश दिशि निरवाध।
राम लखन को बोलि कै, बोले बुद्धि अगाघ ॥
सवैया-कीन्होयथारथ मोहि कृतारथ हैनअकारथ कर्मतिहारो
स्वारथ सत्य कियोपितु वैन तथा परमारथ पूरो हमारो।
सत्य भयो अब सिद्धि को आश्रमछाय रह्यो यशविश्वमेंसारो
श्री रघुराज सुनो रघुराज अहै तुम हाथ राज दुलारो।

(श्री मुनीजी से रामजी का वार्तालाप मिथिलाजी का)

अबजो अनुसासन करहुँ मुनीशा।सो करिहौंनिशंकधरिशीशा॥
शासन होइ अवधपुर जाऊँ। मातु पिता कहँ सुखी बनाऊँ॥
अथवा चलौं संग जहँ जाहीं। तुम संग सुपास मुनि पाही॥
सुनि विनीत मंजुल प्रभु बानी।कौशिकभन्योत्रिकालविज्ञानी॥
तहाँ कछुकाल रहे रघुनाथा। देखा पत्र गुरुवर के हाथा॥
सीता चित्र समेत सुहावाँ। पूछे प्रभु मुनि कहि समुझावा॥
स०-रामलला मिथिलामहँ श्रीमिथिला पति कैपनयज्ञरचाई।

भंग करै धनु ताहि बरै, तनया सुनि भूप जुरे समुदाई ।।
सो अवलोकन हेतु हमै रसरंग मणी, पठये बुलवाई ।
तातेचलो तुमहू मम संग,चरित्र विचित्रविलोकियजाई।।
सीता सोभन ब्याह उत्सव सभा सम्भार सम्भावना ।
तत कार्य समग्र ब्यग्र मिथिलावासी जन शोभना ।।
राज पुरोहितादि सुहृदा मंत्री महामंत्रदा ।
नाना देश समागता नृणगण पुंज परा सर्वदा ।।

दो०–दियो शम्भु को सोहहीं, सभा मध्य को दण्ड ।
मानो शेष अशेष धर, घरन हार वर वण्ड ।।
परमानंद की बात यह, कहौ विप्र करि नेह ।
कौन हेत मख भूमि में राख्यो धनुष विदेह ।।

सवैया-पाई है कुमारी एक भूमि ते जनक राय,
ताके ब्याह हेत नृप यह पन ठानो है ।
तोरिहैं जो शिव धनु अतिहि कठोर घोर,
पइहै कुँवरि सो पत्र पठायो है ।
सेना सजि सजि कै नरेश देश देशन के,
आये है जनकपुर मोहू को बुलायो है।
चलिये कृपाल पन पालिये विदेह जू को,
द्विज प्रतिविम्ब यह आपहि कोबुलायोहै।।

दो०-प्रण मिथिला धिपहै कियो, जो धुन देइ चढ़ाय ।
तौन जानकी नाम की सुता लेइ घर जाय ।।
राज तनै चलि कीजिये, जनक विथा सब दूरि ।

पूरि सुयश जग दीजिये, सुजन सजीवनि भूरि ॥
अनुगामी मै नाथ है। सुयश तिहारो हाथ ॥
कौन देर है दास को, वेगि चलो मुनि नाथ ॥
धनुष यज्ञ सुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिवर के साथा॥
आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जन्तु तहँ नाहीं॥

(अहिल्या उद्धार)

दो०—वेद पढ़ै न विप्रवर नहि होम धूप लखात।
रहित सुखमा देखियत नहिं कोइ आवत जात ॥
सबै तरु विन वेलि सूखे लखे खग नहि साथ ।
कौन बन भय दान कहिये, शिला कैसी नाथ ॥
यह तपो थल राम ! गौतम को सुनौ यह गाथ ।
तासु पतिनी भइ छल वस रमी सुरपति साथ ॥
शाप दीन्ह मुनीस यह भई पाथर नारी ।
चहती पद रज रावरी शिर परसि दीजै तारी ॥
छन्द—याहि शिला माहि है अहिल्या तिय गौतम की,
निसि अहर जोवै राह आपकी प्यारे जू।
राम पद रजते तरेगी मुनीस हाँक,
कीजै कृपा दीजै रज अवध दुलारे जू।
पैहै पति दैहैं तुमैं ब्राह्मणी अशीश तुमैं,
फुलिहै तुरतहि रसिक रिझवारे जू।
यामै कछु सोचिय विचारिये न रंच
आप कीजै मति देर श्रुति मत वारे जू।

छन्द–परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंजसही।
देखत रघुनायक जन सुख दायक सनमुख होइकर जोरि रही।
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुख नहिं आइब बचनकही।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगलनयन जल धारबही।।

आजु यह कुटीं भई परम पवित्र नाथ,
पद रज पाइ महा पातक तें छूटी मैं ।
फल यह परम दिव्य भये अब भोग,
भोगजोग प्रभुहि कृपा ते मुनीस पद जूटी मैं।।
जैसे सुख दीन्हों त्योंही पैहो मिथिला में जाई,
सुखद असीस मेरी विप्र कीव धूटी मैं ।
महाँश्रम पाइ शम्भु लूटी जौन सुषमा को,
सोइ सुखमा को आजु सहजहीं में लूटी मैं ।।
सगर के वंश भूप भागीरथ ल्याई गंग,
आई शंभु जटा सिर सर से निकलि के ।
आह्लादिनी पावनी और नलिनी से तीन धारा पूरब गयीहै।
सोतोयों सचेत्यो सिन्धु पश्चिम गई है चलि,
भगीरथ सात पीढ़ी बीते तारि पित्रन को ।
आपहूँ को होइहैं मनोरथ सुफल राम,
चलिये नहाइये कछु भारी पुण्य करिके ।।

चले राम लछिमन मुनि संगा। गये जहाँ जग पावनि गंगा।।
गाधि तनय सब कथा सुनाई।जेहि प्रकार सुरसरि महिआई।।
तब प्रभु ऋषिन समेत नहाये। विविध दान महि देवन्ह पाये।।

हरषि चले मुनि वृन्द सहाया। वेगि विदेह नगर निअराया॥
पुर रम्यता राम जब देखी। हरषे अनुज समेत विसेषी॥

(श्री जनकपुर प्रवेश)

देखत जनक नगर की शोभा, लोभा मन अविकारी।
भनत परस्पर बचन सकल, ऋषि नृपविदेह बहुबारी॥
कंचन कोट कंगूरे कलश गोपुर गुर्ज दुआरा।
अतिसुन्दर मन्दिर उतंगवर, कनक सुवनक के वारा॥

दो०-हाट वाट घर घाट के, सू छवि पर नव ठाट।
हाटक के फाटक लसत, मनहु तेज हवि वाट॥
राज तनै देखौ इतै, अति सुखमा सरसात।
जनक नगर धामन विपुल धवल ध्वजा फहरात॥
धाम धाम पै कलश ये लखि दृग अति सुखहोति।
जनु रवि धरि बहु रूप नित,नगर बढ़ावतिजोति॥

मुनिमंडली सहित रघुनंदन जनक नगरपंथ अभिलाषी।
विश्वामित्र महामुनि प्रमुदित चलत राम रुख राषी॥
आगे आगे चलत गाधि सुत पाछे राजकुमारा।
पहुचे जनक नगर उपवन में रहत बसंत बहारा॥
यज्ञ थल भूमि भलि जनकपुर राम लखन अस भाखो।
सुनहुँ महाँमुनि नाथ जनक नृप अतिसुन्दर करिराखा॥
बहु वासव विविध विभूति यह ऋद्धि सिद्ध समुदाई।
तापर पुनिमुनि होत स्वयंबर धनुष यज्ञ अद्‌भुतपरैलखाई

छ०-कहु धरणिपति सेना परी फहरात अनेक निशान है।

हय गय अनेकन बिबिध स्यंदन शिविर विशदवितानहैं।
नौवत झरत बहु नृपति डेरति दुन्दुभी धुनि ह्वै रही ।
कहुँ नाचत नट कहुँ बजत बाजत वारतिय गतिलैरही।।
जनक नगर महँ होत स्वयंबर धनुष यज्ञ संभारा ।
देखन को देशन देशन ते आये भूप हजारा ।।
महा भीर भूपति के पुर में लाखन विप्र जुहाने ।
चारिहुँ वरन अनेकन आये यज्ञ लखन ललचाने ।
चारिहुँ ओर जनकपुर के मुनि रहे जहाँ अमराई ।
उपवन वर वाटिका बजारन भरी जनन समुदाई ।
दो०-अभिलाषन लाखन मनुज, अवलोक निधनु यज्ञ ।
आये मिथिला नगर महँ अजहुँ तज्ञ कृतज्ञ ।।
यथा योग्य भूषन वसन, जनक कीन्ह सतकार ।
निमिकुल कमल पतंग को, छायो सुयश अपार ।।
यहि विधि भाषत मुनिन को कोउपुर वासीजाय।
जाहिर कियो विदेह को, गाधि सुवन इत आय ।।
पुर रम्यता राम जब देखी । हरषे अनुज समेत विसेषी ।।
वापीं कूप सरित सर नाना।सलिल सुधासम मनि सो पाना।।
गुंजत मंजुमत्त रस भृंगा । कूजत कल वहु वरन विहंगा ।।
वरन वरनीवकसे वन जाता।त्रिविध समीर सदा सुखदाता।।
दो०-सुमन वाटिका बागवन विपुल विहंग निवास ।
फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँपास ।।
वनइन वरनत नगर निकाई।जहाँ जाइ मन तहँहँ लोभाई ।।

चारु बजारु विचित्रअँवारी।मनिमय विधि जनु स्वकरसँवारी
धनिक वनिक बर धनद समाना। बैठे सकल वस्तु लै नाना ॥
चौहट सुंदर गलीं सुहाई । संतत रहीं सुगंध सिंचाई ॥
मंगलमय मंदिर सब केरे । चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें ॥
पुर नर नारि सुभग सुचि संता। धरमसील ग्यानी गुनवंता॥
अति अनूप जहँ जनक निवासू।विथकहि विविधविलोकिविलासू
होत चकितचित कोट विलोकी।सकलभुवन शोभाजनुरोकी॥
दो०–धवलधाम मनि पुरटपट सुघटित नाना भाँति ।
सिय निवास सुंदर सदन शोभा किमि कहि जाति ॥
सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा।भूप पीर नट मागध भाटा॥
बनी बिसाल बाजि गज साला।हय गय रथ संकुलसबकाला॥
सूर सचिव सेनप ब्रहुतेरेन। नृप गृह सरिस सदन सब केरे ॥
छन्द-ताते करहु निवास महामुनि जहाँ स्वच्छ थल होई ।
जलाशय होय विमल अति, सहसा जाय न कोई ॥
सुनि सुनि बचन पाय आनँद अति,चले पंथ तजि दूरी ।
देख यक थल सकल हर्ष भल, विमल जलाशय पूरी ॥
शीतल अमराई छवि छाई, मंजु विहंगन शोरा ।
अतिएकान्त जहँ होत शांतचित्त विगतमलिन सबठोरा॥
सुख उपजावनि मन भावनि अति, जनकपुरी छविछाई।
लखी आजु लों अस कवहुँ नहि, यथा विदेह बनाई ॥
सकल सुपास निवास योग बल,लखिमुनि लखन खरारी।
कीन्हे बास हुलास भरे सब, भयो नाश श्रम भारी ॥

(श्री मुनिजी को मिलने जनकजी जाते हैं)

दो०-विश्वामित्र मुनीश को सुनि आगम मिथिलेश ।।
शतानन्द को बोलि द्रुत, चले मिलन शुभवेष ।।
संग सचिव सुचि भुरि भट, भुसुर वर गुरु ग्यात ।
चलेमिलन मुनि नायकहि,मुदित राउ एहि भांत।।
सतानन्द आगे करि लिन्हों, द्विज मंडली सोहाई ।
पढ़तवेदवैदिक धरणीसुर,जय धुनि चहुँकितछाई।।
चलत पयादे मुनि दरसन हित,सबै सराहत लोगू ।
मिलनजातमनु ब्रह्मसतोगुण,करिविरागभवभोगू।।
आवत देखी भूप को कौशिक,द्वै मुनि तुरत पठाये।
तेनिमि कुल भूपति को करगहि,मुनिनायकढिगल्याये।।
विश्वामित्रहिं भूप विलोकत,कीन्हों दण्ड प्रणामा ।
कौशिकधाय उठाय लायउर,आशिषदियोललामा।।
दै आसन बैठाई भूप को अति सत्कारि मुनीशा ।
सादरकुशल प्रश्न पूछेउपुनि,मोदित अहहुमहीशा।।
तब करजोरि कह्यो मिथिलापति,कुशलकृपा तुमनाथा ।
कीन्हे पावन पुरी हमारी, अब मैं भयो सनाथा ।।
सैन सहोदर सचिव सहित प्रभु,सबबिधि कुशल हमारी।
सफलभयो मम धनुष यज्ञ अब, करी कृपा मुनि भारी।।
बोले विहँसि गाधिनंदन तब, रचना भली बनाई।
लखन स्वयंबर कसिकसिकम्मर,आयेनृपसमुदाई।।
महाभगवत हौ मिथिलापति,ज्ञानविज्ञान निधानू।

लखन स्वयंबर धनुषयज्ञ,युत हमहूँ कियो पयानू॥

दो०–गये हुते संध्या करन, पुरुष सिंह दोउ भाय।
आये सहज समाज मधि, जिमि उड़गन दिनराय॥

(पद खेमटा)

मिथिला पुर आये मुनिराई।
सुनि मिथिलापति सकुलजाइ तहँ, बारबार बन्दे सिरनाई॥
ताही समय लखन फुलवाई गये हते, स लखन रघुराई।
आय गये तन गौर श्याम तहँ,कौशिक मुनि समीप सुखदाई॥
लोचन सुखद विश्वचित चोरन,वय किशोर अति सुन्दरताई।
उठी समाज राजसुत देखत, मुनिनिज निकट लियो बैठाई॥

–: सवैया :–

सुन्दर श्यामल गौर शरीर, विलोकत धीर रहे कस काकै।
लोचन विश्व के चित्त केचोर,किशोर कुमार छयेसुखमाकै॥
अपने आनन इन्दु छटानते, हारक भे सबके मनसाके।
श्री रघुराज कह्यो मुनिराज, अनोखे ललान केनाम पिताके॥
हैंधौं उभय मुनि के कुल पालक, कैधौं महिपति बालक दोई।
देखत रूप अनूप सुनौ मुनि, मेरी दशा हठि कै अस होई॥
भूलो विराग विज्ञान स्वरूप, इन्है लखि और दिखातनकोई।
ब्रह्म को आनंद वाद भयो, उपज्यो उर आनँद जोइन जोई॥

–: कवित्त :–

साके सुखमा के सू प्रेम मधु छाके
महामौद के पता के कोटि मैन मदना के है।

इन्है नैन ताके ब्रह्मानंद को न ताके,

मन मोमति चकोरी काके सम चन्द्रमा केहैं।

गेह ममता के बाँधे नेह बंधु ताके,

ब्रह्म जीव समता के रस राम मनसा के हैं ।

सिंधु से सुधा के हैं सिंगार बसुधा के,

मुनिवर वाँके दोउ बेटा कहो काके हैं ।

दो०-कहत परस्पर पुर प्रजा, पेखत राज कुमार ।

इनहिं देखि आँखिन तरे, कोउ आवत सुकुमार।।

सुनि विदहे के बचन वर बोले मुनि मुसुकाय ।

जैसी कहि तुम सत्य सब, मृषा न नेक जनाय ।।

कहा पायो कौन को पठायो संग आये नाथ,

कैसे कै छोड़ाये भौन भले पित मात है।

कोमल कमलहूँ ते चरण बगायो वन कंकरकठिन,

काहे आप अब दाता हैं ।।

आपत सहत कुमर ए कुमार काहे,

अपनेही हाथ ते विरचे विधाता हैं ।

भनै रघुराज मुनिराज मोहि जान परै,

सुभग सहोदर कुमार दोउ भ्राता हैं ।।

कवित्त

साँची ही कही है तुम बचन अलीक नाहीं,

प्राणी है जहाँ लौं तिन सबके ये प्यारे है।

मेरे हित हेत चक्रवर्ति इन्हे दिये भेजि,

नाम राम लखन जगत उजियारे हैं।

ताड़ुका बिपिन माहि मारे दोउ ताड़ुका को,

अस्त्र शस्त्र रूप शींल गुण के अगारे येहैं।

फेंकि के मरीचहि सुबाहु को दियो है जारि,

जानै हैं जहान मेरे मख रखवारे है ॥

धनुष यज्ञ देखन के हेतू। मम सँग आये कृपा निकेतू ॥

गोतम तिय मग माहि उधारी। गैपति लोक अनंद अपारी॥

सुनत राम यश तिरहुत राऊ। पगे प्रेम चित चौगुन चाऊ॥

दो०-धन्य धन्य मुनिवर सुकृत शिष्य अनूपम पाई।

तीन लोक सुख सम्पदा, अंशहुँ नहीं लखाई ॥

कवित्त

उक्त प्रतिबिम्ब सम लाये वर धन्य आप हैं,

ऐसा नहिं अन्य जग देखे मुनिवर मैं।

सेवक अनन्य नाही संग में किशोरनि के,

भयेहै अपार श्रम आवत डगर मैं ॥

आपहुँ श्रमित अति भये हैं मुनीश राय,

गये कुमलाय प्रेम आतप कहर मैं।

सेइहैं सुसेवक हमारे सवै सर्व भाँति,

सेवा स्वीकार से कृतार्थ तब होऊँ मैं॥

दो०-जोरि पानि पंकज हरषि, कह्यो बहुरि मिथिलेश।

धन्य धन्य प्रभु गाधि सुत, सत्य धर्म तव वेश ॥

छन्द चौबोल

मोहि धन्य कीन्ह्यो धरनि, महँ धर्म धुरंधर नाथा ।
धनुष यज्ञ देखन मिस आये, सहित लखन रघुनाथा ।।
किये देश घर कुल मम, पावन कृपा कही नहि जाई ।
शतानन्द मुख सुनि सुनि रावरि, महिमा मुदित महाई।।
दो०-नाथ एक मोरी विनय, करन कृतारथ हेत ।
कृपा कोर लखिजनहिं प्रभु,चलिय पुरहिं सुखदेत।।
मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू। चलेउ लवाइ नगर अवनीसू ।।
सुन्दर सदन सुखद सब काला। तहाँ वासु लै दीन्ह भुआला।।
करि पूजा सब विधि सेवकाई। गयउ राउ गृह विदा कराई।।
ठाढ़ भये जोरि युग हाथा । बोले बचन सुखद नर नाथा ।।
आयसु होय भवन कहँ जाऊँ। रहै कृपा मागे यह पाऊँ ।।
दो०-रिषय संग रघुबंस मनि, करि भोजनु विश्रामु ।
बैठे प्रभु भ्राता सहित, दिवसु रहा भरि जामु ।।

—: सवैया :—

नाथ चहै लहु लाड़िले वंधु विलोकन कहँ नगर निमिराई ।
पै मम राउर सील संकोच भरो नहिं भाषत मोहिजनाई ।
दीजिये जो अनुसासन तौं रसरंग मणी, रुचि देउ पुराई ।
लाघव सो लखनै मिथिला, दिखराय लखैं पद पंकज आई ।
आनन्द कन्द लला रघुनन्दन, काह न राखहु नीति बड़ाई ।
जाहु सूसील मणी 'रसराम'सु वंधु सलोने को संग लेवाई ।
देखि पुरी नर नारिन नैन, निहाल करौ मुख चन्द्र देखाई ।

हालहिलाल मिलोमोहि आय रह्योनहि जाय तुम्हैंविलगाई।
दो०–सुनिमुनि बचन मुदित मन, पुरुष सिंह रघुबीर ।
धर्म धुरन्धर वंदि गुरु चले रुचिर रण धीर ।।
जाइ देखि आवहुँ नगर, सुख निधान दोउ भाइ ।
करहु सुफल सबके नयन, सुन्दर वदन देखाइ ।।
मुनिपद कमल बंदि दोउ भ्राता।चले लोक लोचन सुखदाता।।
बालक वृन्द देखि अति सोभा। लगे संग लोचन मन लोभा ।।
लखि दोउ बन्धु मनोहर जोरी।चतुर बाल बोले कर जोरी।।

—: सवैया :—

कौन महिप कौ हौ सुकुमार कहो केहि के संग आयेहो प्यारे।
कौन देश में नगर मनोहर नाम बतावहु क्या है तुम्हारे।
रावरे नाम अनूप लखे वसु नायक मो दृग होत सुखारे।
चाहो जो नाथ लखे मिथिलापुर तौ चलिय साथ हमारे।
दोहा-लखन राम हमारो नाम है, अवध हमारो ग्राम है।
जनक नगर देखन चहत, सुनु बालक सुख धाम ।।

–: सवैया :–

अवधपुरी सरयू तट ग्राम है लखन राम सुनाम कहाये।
श्री अवधेश के पुत्र दोउ मख हेतु पिता मुनि साथ पठाये ।।
काज मेरो मुनि से वसु नायक पाठ करौ विद्या चित चाये।
नेह बढ़यो मिथिलापुर पेखन सिया स्वयंबर देखन आये ।।
गुरु जी की आज्ञा मानि आये हम दोउ भाई।
मिथिला की गलियो लखाओ मिल कर चलो भाई ।।

चलो देखाओ गली गली की अनुपम छटा अपार।
रंग भूमि शोभा निरखन को चलो प्रियवर सुख सार ।।
विज्जू छटा घटा घन में, तिमि ऊँचि अटान चढ़ी पुर नारी ।
धाम को काम बिसारि सबै युग बन्धु बिलोकहिं होहिंसुखारी।
श्री रघुराज के आनन अंबुज, भे अली अंवक आसु निहारी ।।
पावै यथा सुर पादप को, एक वारहि भाग ते भूखे भिखारी ।
झाँके झुकी युवती ते झरोखन, झुण्डनि ते झरफै करतारी ।।
देखि मनोहर सुन्दर रूप अचंचल कीन्हे दृगंचल प्यारी ।
श्री रघुराज सखिन समाज में,लाज भो आज परै न निहारी।।
आपस में वरबैन भनै, सखि आजु लही फल आँखि हमारी ।
क्या सान चाल अजब अलबेले की गज लाजि रहे मस्ते मस्ते।
जिन देखे तिनके चित्त रतन अनमोल बिके सस्ते सस्ते ।।
रूप माधुरी बरसत है सखि जात चले रस्ते रस्ते ।
राम लला नृप नन्दन ने दिल छीन लिया हँसते–हँसते ।।
आये दोउ वीर गोरे सांवरे शरीर अली,
संग मुनि धीर विश्वामित्र निज लाये हैं ।
ताड़िका सुबाहु मारि मुनि मुख रक्षा कीनो,
मग मुनि तियातारि सुजस ले आये हैं ।।
सिव धनु तोरि सब नृपन को मोरि,
सिया जू को ब्याहे भला रेखा लिखवाये हैं।
पुनि हरषानी सब प्रीति अधिकानी उर,
अबही तै जात मान गीत लै बनाये हैं ।।

सांवरे कौशल्या सुन गोरे हैं सुमित्रा जू के,
कोशलेश के दुलारे मुनि संग आये हैं।
विप्र को बिघटन टारी निसाचर चमू मारि,
ताड़िका संघारी मुनि नारि सौ मिलाये हैं॥
चाप मख देखवै को आये अब बीर दोउ,
तिरहुति नाथ बड़े आदर सौ लाये हैं।
सुखमा निधान न समानता काउ तिहुँ लोक,
दीपन कै देशपति देखि कै लजाये हैं॥
जानकी के जोग हैली सांवरो कुमार हेरी,
इन्हैं छांड़ि सेष रहे पीछे पछितइवौ।
कैसे कहौं बीर सम्भु तीरासन बीच पर्यो,
धीर नृपन पछाड़ै प्रन वृथाई सुनाइवौ॥
संकर सहाईं करैं चाप गरुताईं हरैं,
ओर नरपाल तिन्हैं काल सौं दिखाइवौ।
सुकृत समटि सब ईंस अरपन करे,
तब तौ अमित सुख आंखनि लखाइवौ॥
मेरी गली आये आली नृपति किशोर दोउ,
कहि कोउ मोसौं धाई के सही सवारती।
केसही ककही कही सुनीना ही दासी हूँको,
सारी न संभारी रही औचक निहारती॥
झाँकत झरोखे देखि मोहनी ही मूरति कौ,
खोलि पट लाज रही तन धन बारती।

बिहसि चितई मोहि तब तन कंप भई,
अबलौं न छूटे मन भाँति बहु टारती ।।
जैसी तेरी सुता माई अंग–अंग छबि छाई,
यैसी तौ निकाई देव तिया मैं न देखिये ।
लोकन में ख्यात रमा उमा इन्द्रतिया तोउ,
याकी सुखमा की पा संग न लेखिये ।।
जौ पै कुल रूप गुण वैभव समान याकों,
मिले वर तब तौ सफल सब पेखिये ।
जो पै नृप त्यागे पन मन में विचार धरै,
बरै वहि सांवरे को समता विशेषिये ।।
जो पै समुझे समुझावो नरपालजू को,
समय सुपाई सब रीति दरसाइये ।
हेरे न सुता की ओर कीन्हे है कठोर पन,
हानि तौ दिखात कौन लाभ परसाइये ।।
अबही विचार करौ हाथ जोरि–जोरि कहौ,
देखि वर घर बड़े सुख सरसाइये ।
हठ कौन काज लाज कुल ब्यवहार ही की,
अजस न होय जो बिवेक बरसाइये ।।
पीछे–पीछे अंधियारी आगै हो छबि उजियारी,
रबि गति धारी पुर देखत फिरत है ।
जौ लौं अब लोकै तौलौं चेत न रहत लोग,
अन्तर परै तै नींद सी भरत है ।।

लोगन के लोचन सरोज बिगसत देखि,
ललना की लाज भाज चोर ज्यौं डरत है।
कुँवर सुजान कोसलेस महराज जू के,
जनक नगर बीच कौतुक करत है॥
देखे दीप सात के बसैया बसियाही पुर,
महिमा विदेह वंश लोकनि विकास है।
सुरासुर नाग मुनि आवत औ जात सबै,
हम तौ न देख्यौ ऐसौ रूप को निवास है॥
ताहु पै फिरै या लोक--लोक घर--घरहू के,
नारद सुजान जाकौ परदा न पास है।
ताहुँ ने कही मन मगन ह्वै के बार--बार,
आज लौं न देख्यो ऐसौ रूप को निवास है॥
माई री ये भाई दोउ रूप के है पारावार,
होत न सम्हार इन्हें देखि देह गेह की।
सील के समूह दोउ चातुरता भरे बैन,
कही कैसे जात ताके आपुस के नेह की॥
लोचन कौ पाये फल मिथिला के वासी सब,
उदयता भई कोउ सुकृत अछेह की।
एक अभिलाष होत जानकी कौं वरे याहि,
सांवरे कौ त्यागै पन मती जो विदेह की॥
जोइ गली पहुचै पुर देखन कुमार दोउ,
कौसल धनी के रूप रासि के निकेत से।

सुनत ही दौरी छोरे धाम काम लाज लोग,
परीख खरी मानो परम निधि लूटे से ॥
जाकी पद आंगुरीहुँ देख न पावै कोउ,
सोउ कुल तिया तजि लाज देखै हेत से ।
गोखन झरोखन के खोलि पट जाल दीने,
छाड़ि गुरजन संक लोचन छकेत से ॥
नीकै ही निरखु आली सांवरे के अंग सुठि,
निंदत मयंक मुख शोभा अधिकाई है ।
लोचन विशाल मानो कानन सौ मन्त्र करै
कान भुजा मेटै दोउ भुजा जान आई है ॥
कंबुसी सुढारग्रीव रूप सींव रेखा तीन,
बच्क्षतौ विशाल उच्च रूप की अथाई है ।
हेरनि हसन तैसी चलन में चातुरीहूँ,
मिथिला के लोग बस किये दोनौ भाई है ॥
सुपनै की बात तो सौं कहौं कै न कहै आजु,
घरी चार रात रही तब कछु देख्यौ है ।
लोग कहैं कहे तैं झुठी न बात सुपनै की,
मेरी सुनि मिटै कहूँ बिधि अब रेख्यौ है ॥
तोरि ईस चाप दाप दलि दुष्ट नृपन कौ,
साँवरो कुँवर जय पाइकै बिसोख्यौ है ।
आय माल मेलि कण्ठ सियाजू नै जाय ढिग,
इतनै ही खुली नींद आती सी परेख्यौ है ।

आजु लौं न कही दिन भये सुन माई,
आई है बरात मानौ रघुकुल राई की।
जैसे गोरे सांवरे सुहावने कुमार दोउ,
तैसे नृप संग जोरी देखी दोउ भाई की॥
चारौं भाई याहीपुर ब्याहे बड़ौ मोद भयो,
इतने ही खुली नींद टेर सुनि माई की।
साँचौ होत सुपन प्रभात कौ या सुनी हम,
ईस नीको करै जो पै टरै पूजा पाई की॥
मोरे रूप वारे दोउ कुंवर निहारे माई,
रंग कैसो चसमा चढ्यो है मेरे नैन मै।
घर गली घाट बाट बाटिका विलोकवै कौ,
जाँउ तहाँ देखो गौर स्याम रस चैन मैं॥
भूख प्यास भूली फिरौ फूली रूप रंग छाकी,
सखी कछु कहै सो सुनून वैन सैन मैं।
कभी नीकी बाते कहौ कभौ बोली बावरी सी,
करि उपचार कछु होउँ लाज बैन मै॥
कही तै लगेगी खोरै जो है मानौ माई,
खोर मैं लख्यौ सो खोर वारो नैन छायो है।
सांवरो सलोनौ अलबेलो अवधेश लाल,
काक पच्छ वारो मेरे हिय मै समायो है॥
दूसरों न होय अब वेई मेरे प्राण नाथ,
गहैं वेई हाथ बिधिहु मै सो लिखायो है।

चातक जो चखै वारि प्रिय मीन वारि छोड़ि,
टरै कैसे मेरो हठ और को पठाये है ।।
नवल किशोर दोउ गोरे श्याम अंग वारे,
सुषमा सुधा स्वे विधि वरन विशेष की ।
आय मन सबही के आँखिन मैं छाई रहै,
नैन ज्यौं चकोर चित चातक तो पेख की ।।
आपनी हौं कहौ तौ सो जब तैं निहारे नैन,
बावरे से बैन मुख भूख प्यास लेष की ।
ब्याहै जो विदेहपुर विधि के विधान भले,
नाहि तो सनेह बेलि पावस परेख की ।।
बैठी ही अटारी लै पिटारी नव भूषन की,
पूषन प्रकाशत हों होत न प्रवेश है ।
करलै मुकर वार भौर कौ सुधारो जौ लौ,
अनोखी सुगंध के समूह धाये वेस है ।
तब तौ वियारी इतनै ही छाई उजियारी,
भानु सो प्रकाश पै न आसपता लेस है ।।
मन न समाय तब झाँकी हौ झरोखे जाय,
देखे दोउ भाय दृग छाय भूली हेस है ।
दौरि-दौरि दामिनी सो भामिनी अटारी चढ़ै,
वे तौ आये देखवे कौ सोउ भये पेखने ।
राघव कुमार अंग सुषमा अपार बारे,
देखि-देखि भये सब प्रेम के परेखने ।।

पय पान वारे–वारे मातु न निहारे ताहि,
तिनही बिसारे आप धाये अवसेषने।
नगर बिदेह मैं विसेष ही विदेह भयौ,
जोगी मुनि सिद्धता के साधु केसे देखने॥
कुँवर सलौनै दोउ कोउ महिपाल जू के,
देखन पधारे पुर स्याम गोरे गात हैं।
घर गली चौहट में वगर बजारहु में,
बाल वृद्ध युवा मुख उनही की बात है॥
देखते तौ छाके छबि बावरे से डोलत हैं,
जानै नही देखे तेउ छके से लखात हैं।
मै हूँ देखि आई ताव चढ़ी है खुमारी यैसी,
तू तौ जिन देखिये जो चाहै निज बात है॥
देखन नगर जब नृपति कुमार आये,
धाये तजि धाम काम वाम तजि लाज को।
जैसे कि तैसे उठि दौरी नव नागरि सब,
छाड़ि चली सबै आष आपनै समाज को॥
कोउ तो सिंगारे कोउ विनही सिंगार की ह्वै,
कोउ पद पानि कटि कटि सिर साज को।
वसन कसन भूली नीवी कर गहै कोऊ,
छाई झरोखे अटा देखन रघुराज को॥
नरन मैं नरपाल सुकृत समूरे कोउ,
होत अंग रूरे सद गहै सुभाय कै।

नरपाल कोटि तै अमर सतगुन रूप,
अमर मैं इन्द्र रूपवंत सरसाय कै ।।
इन्द्रहू तै अधिक सुजानियै मदन हीं कौं,
मदन तै कोंटि गुन विष्णु अधिकाय कै ।
विष्णु हूतै कोटि गुन रूरे रघुराज सुत,
ताकी पटतर हेली को कहै बजाय कै ।।
रानी जू सुनैना कूख होती जो न बेटी यैसी,
रूप की सुकेतु हेतु वैभव विशेष की ।
कापै प्रन ठानते भूपाल मनि महराज,
ठानै बिना पन भीर कैसे देश-देश की ।।
जुटे बिना भीर कैसे आवते किशोर दोउ,
श्याम गोरे अंग-अंग सुषमा सुवेष की ।
आवते किशोर जो न लोचन फल पावते,
मिथिला के लोग सब भये हैं सुदेश की ।।
आली बन माली रूप साली रघुलाल जू को,
मुख चंद चन्द्रमा के समजिन लेखिये ।
इनको नगर नदी सरजू सुहावनी है,
बदन प्रछाले तहां सोई अंस पेखिये ।।
सरिधव अंस ताको बहत विशेष लह्यौ,
संचि राख्यौ सोई सुर मथ्यौ तब देखिये ।
मही घृत न्याय तब प्रगटो है इन्दु भोरी,
तातै मुखचंद सम कैसे अब रेखिये ।।

अंग ओपवारो नव अंबुद सो कारो माई,
प्राणहू तौ प्यारौ लगै सहज सुभाय तैं।
काक पच्छ सो है दृग खंजन विमोहै रेख,
अंजन की डोरे लाल जींवन जमाय तैं॥
सुषमा को सीवाँ अंग लाजत अनंग देखि,
हेरनि हसनि किधौं काम की कमायतैं।
मोह नीसी डारी बस कीनी पुर नारी सब,
कौशल कुमार हमैं जानत निहायतैं॥
अमृत असेष इन्दु मोर दोनौ ओर चोकी,
भुजग चोरताहू पै अरगई रहत है।
बिंबही पै बेठ्यो कवि फविजोत भारी है,
ऊपरतै ¦ सुबा एक गहन चहत है॥
इन्दु मध्य कंज दो हैं तापै अलि आली जुग
उदै बीच येक गुरू जोती को बहत है।
रूप रस रंग पगी मिथिला की बाला सब,
सांवरे को देखि-देखि बातें यो कहत है॥
दोउ हैं कमल तापै इम अभिराम दोउ,
इम पै दो कदली हैं कदली पै केहरी।
केहरी पै कंबु एक तापर मयंक पूर,
बीच हिमयंक विस्व सुधा वरसे हरी॥
तापर इक सोहि सुकताके मुख मोती है,
सुक के समीप दोउ कंज दर से हरी।

कंज ही पै चाँपसर दोय तमतोम आगै,

भानु कौ प्रकाश सखी राघौ सर सेहरी ।

बार-बार अंचल पसारि विधि जाच्यो तोही,

सिया कौ सुजान वर सोभलो मिलाइये ।।

चाप गरुताई नवा मति मिथिलेशजू की,

हरौपन छाड़ै सम जोरी चित चाइये ।

सबही कौ संमत जे मिथिला के निवासी है,

वाल वृद्ध जुवा नर नारी ललचाइये ।।

सिया सी न तिया जग पुरुष रघुलाल सौं,

विरचि जस लीनौ सो अवना नसाइये ।

लोकन की सुषमा विरंचि नै वटोरी सब,

सोधि सार काढि ताकै ओर तो बहाइ है ।।

तातै भयो पंच सर सार को सुधारयो फिर,

ताहु कौ सुसार निज चातुरी मिलाइ है ।

यही बिधि गौर श्याम मूरति रची है पचि,

लोगन कौ बुद्धि की विचित्रता दिखाइ है ।।

सिया की समानता विचारि विश्व पिता याते,

समे जानि मिथिला को अवस पठाई है ।।

विधु प्रतिमास-मास पूरन प्रकाश निज,

संपति कौ गौन समै छारत बिचारी है ।

निज सम सांवरे कौ वदन सुमित्र मानि,

धीर धरिजात योंह मनै निरधारी है ।।

सम गुन बारेन सौं प्रीति सब करै कोई,
रीत ऐसी लोकन में प्रगट प्रचारी है।
याते अलि कोशल कुमार मुख कला कोटि,
इंदु सम राजै नीकै नैनन निहारी है ॥
चन्द्रमनि चन्द्र देखि द्रवे भानु देखि भानु,
स्वाति ही के बुंद मुख चातक समाये हैं।
रवि ही को भानु मिलि कंज कोष खुलै जैसे,
चंद ही निहारि कै चकोर दृग छाये हैं ॥
आपनी ही मनि कौ विलोकि नागराज जियै,
ससिही को मान जैसे कुमुद उनाये हैं।
तैसे हीं जनकपुर वासी नर नारिन के,
नैन रघुलाल मुख चंद ही लुभाये है ॥
अति ही अनूप रूप भूप सुत मुनि संग,
देखिके विदेह मति रूप राग फँसी है।
विरति ज्ञान भये ज्यौं सूर के प्रकाश चंद,
भक्ति महारानी या चरित्र देखि हँसी है॥
ऐसी उर श्याम गोरे मूरति विशेष भाँति,
विस्मय विचारैं मिले एकहून दरसी है।
ज्ञानी मुनि ज्ञानी कही करौ चित चेत नृप,
मूरति मनोहर या शंभु उर बसी है ॥
जीजी जो कहै न कहूँ-कहूँ बात सुपनै की,
करैं ईस साँची जो असीस गुरुजन की।

कहै क्यों न वीर पीर मोदमन आपनै कौं,

हौं तो तेरो चाहौं सुख जाने इस मन की।

भवन भवानी कै हौं पूजिबे कौं गई तहाँ,

भूप सुत देख दोउ छटा छाई तन की।

इतने ही जागी मति पागी अति सांवरे सौ,

चिंता जिन करे वीर साची है सुपन की ।।

देखत नगर भूप भवन डगर आये,

कोसल कुमार सुकुमार दोउ भाइ हैं।

सुन दौरी देखवै कौं आतुर ह्वै रानी सब,

चातुरता खानी लखे सुखमा उदार हैं ।।

प्रीति उर छाई तैसी वरने कौ आई विधि,

नैननि को रसना को कियो न प्रचार है।

मन अभिलाखै सब प्रीति जुत भाखे लखि,

सियाजू की ओर सखी समता विचार है।।

बोली एक रानी प्रीति सानी मृदुवानी मुख,

सांवरो कुमार माइ सियाजू के जोग है।

रुप अधिकाये समतायो वय सीलहूँ मै,

मेरो मन भायौ सोई कहे सब लोग है ।।

कही तुम सांच ये पै चाप वडोई कठोर,

सांवरो कुमार सुकुमारता कौ योग है।

तिरहुत के नाथ पन छोड़ै न बनै ऐसी,

त्यौंही सुन सवै हीये भयौ अति सोग है।।

तब इक चतुरि बोली चिंता जिन करौजू,
सियाजू के भाग कहूँ भूप बेचि खायो है।
जोई विधि सिया कौ सुधारी श्रमभारी कर,
सोई विधि सांवरो कुँवर रचि लायौ है॥
देव गति काहू पै न जानी जात मेरी वीर,
कहाधौ दिखावै कहा करै मनभायो है।
कहा मुनि कुँभज जो सिंधु को अपार वारि,
गंडुकही धारि तेसै पेट में पचायो है॥
कोई कही मटकाई कै नैन, चढ़ाइकै भोह सुशीश डोलाई।
तू न सुनीरी प्रभाव कुमार को,भाषति हौं जोयै हौं सुनिआई॥
पेई अवै गये गौतम की, कुटि सो इन के पग की रजपाई।
'रघुराज' भयो बड़ काज अबै, अहिल्यहिं पाहनते प्रगटाई॥
सुनि रुचि वानी सनमानी महरानी सब,
सिय सकुचानी पद नख महि रेखती।
अरजम कौ अरजी कंज गरजी लिखत,
मरजी के हेतु ऐसी सोभा उनमेंख्रती॥
करुना उर छाई सब शंकर निहोरती,
वेर-वेर सिया मुख पंकज को देखती।
आगै-आगै जाई जस राघव सुजन दोउ,
दौर दौर दूसरे अटापै जाइ पेखती॥
चलै अति मंद गति पगे प्रेम प्रमदा के,
राघव सुजान नव छवि सौ छकाये है।

देव दिनकर का मनावै जिन अस्त होहुं,
रूप जाल सबहीके नैन उरझाये है ॥
नेक दूर होत मनों खैंचत से लेत दृग,
नैनन के वोट होत विरह धरधाये है ।
कहूँ तो चकोर चंद कहूँ दिन अस्त कंज,
कहूँ अरुन उदय ज्यौ कंज उनभाये है ॥
कोई कह्यो धरो धीरज धाम में,राम हमैं सुख वोरिहै बोरिहैं।
सोमिथिला धिप को प्रण वन्धन,वीर विशेषि के छोरिहै छोरिहैं।
'रघुराज' समाज के मध्य सबै, महीपन को मद मोरिहैं-मोरिहैं।
श्याम महाअभिराम विना श्रम,शम्भु सरासन तोरिहैं-तोरिहैं॥
मनि गत फनी जैसे नृपविन अनी जैसे,
पानी गये मोती को विवरन बखानिये ।
कुमुद गन रैन गये दिन गये कंज बन,
पावस के गये बन वेलि यौ प्रमानिये ॥
नेह बिन दीप जैसे मोती बीन सीप जैसे,
ज्योति गति तारा ज्यौं विभात होत आनिये ।
ऐसे रघुलाल अब नगर निहारि गये,
बाल वृद्ध जुवतिन की भई गत जानिये ॥
दो०–नहि संशय कछु कीजिये, हठि करिहै विधिनाह ।
मिथिलापुर वासिन हमै, होई अवशि उछाह ॥
सुनि सिगरी ताके बचन, बोली एकहिं वार ।
होइ ऐसही सत्य सब, यहि करही करतार ॥

मैंथिल सखा राजकुमको धनुमख शाल को ले चले।
पुरपुर व दिसि गे दोउ भाई, जहा धनुष मखभ्रमि नाई।
निभिवंस भूप के कुमार हैं अपार संग,
कोउ कहैं चलो रंगभूमि चलि देखिये।
शोभा सुविशाल नाना रंग मणिजाल,
रचि खचित विचित्र खंभ चित्र अब रेखिये ॥
कोशल कुमार कही चलिकै दिखाइये तौ,
कहि चलो चले मिलि मोद ही बिसेखिया।
छिनही मिलाप मानौ बड़ौ नेह नात हित,
विधि गति होनहार प्रथम परेखिये ॥
दो०—हियँ हरषहिं वरषहि सुमन, सुमुखि सुलोचनि वृन्द।
जाहिं जहाँ जहँ बन्धु दोऊ, तहँ तहँ परमानंद ॥
देखि रंगभूमि रंग छायो उर राघव के,
लाघव लिपटि नैन रचना विशेष की।
ज्योति पुंज खंभन मै रमा रचि कोरि-कोरि,
चहूँ ओर वैठीं मानो रमा उमा पेस की ॥
कंचन मैं भूमि भाँति रंग के विभाग चित्र,
मित्र कोटि दिपै द्युति चित्र के दिनेश की।
तनै हैं वितान जहाँ तहाँ तासवाद लेके,
झालर की झलाझल ज्योति है सुवेस की ॥
कृत्तिममणि कोर कोर वाटिका बनाये है,
विधि हू लखि भूले सुधि आपने शरीर की।

नकल नरेशन की बनी देश देशन की,
चेतनना लगी तामै सूत्र के समीर की ।।
जाही की है ताकी मति भूलै लखि वाबरी सी,
नगर नदी समेत रचना जो तीर की ।
तैसे गज घोरे रथ पालकी सवारी सब,
ठाड़ी चहूँ ओर भीर कृतम ही वीर की ।
रचो है समाज सुर सुँदरी को कृत्रम ही,
अंधर अकाश बीच कौतुक सो पेखिये ।
अपसरा नाचै करै गान मान तान तोरि,
मोरि अंग भाव रंग रास रसे लेखिये ।।
काली हूँ कपाली कोट सिंध चढ़ि देखत ही होये,
भय जौलौं कछु मरम विसेखिये ।
रचैना विशेष सब कुँवर सनेह भरे,
गहि-गहि हाथ कहै राघव या देखिये ।।
कहूँ कृत मोरनटैं टैं गति सांवले की,
कहूं करै केलि हंस हंसनी अपार हैं ।
वारिभास कुँडन में कंज वृन्द मोर जुत,
भूले लखिमौ,बिरंचि सोचेई विचार है ।।
कहूँ सुक बृन्द उड़ै नाना रंग अंगवारे,
कहूं चक चातक चकोर कौ निहार है ।
मेवन बनाय द्रुम तोरि के खवाय कहै,
चाखिये सुजान कौन स्वाद याको सार है ।।

धनुशाल की शोभा वर्णन

छप्पय–

या विधि रचना ललित बनी चहुँ केर निहारी।
मगन भये दोउ बन्धु अवध आनन्द विहारी॥
पुनि मंडप मधि भाग चले देखन अति प्रीती।
देखि सवन कौ होत हो न गति होत प्रतीती॥
देख्यो शंकर चाप अति कठिन गरु व गंभीर।
मंच बने चहुँ ओर वर बैठे जहँ मुनि धीर॥
महल बने चहुँ फेर ज्योति मनि मोति विराजे।
गोक झरोखे जाल विविध रँगनि छवि साजे॥
कलस कंगूरे कलित बने खग अवनि विभो हैं।
कनक दंड कर लियै द्वार प्रति हारक जो हैं॥
ठगे जात सुर असुर नर लखि कौतुक परकास।
देखि रघुलाल मन बिसमय विविध विलास॥
रंग–रंग के वसन भाँति चामी कलातारी।
देसन नकल नरेश सुरेश भवन करतारी॥
ताके बने वितान छत्र छवि छाजत नीकी।
विस्तर नर्म विशेष प्रांत रचना जुत नीकी।
तिरहुति पालक कुँबर सब रचना रंग दिखाई।
पुन इक मंदिर लै गये मग भूल दोउ भाई॥

दो० हँसै परस्पर नृप कुँवर, भवन भवन प्रति द्वार।
तुम्ह कहँ दरसत नहि चतुर कीधौं कौन विचार॥

चतुर लखन लखि लीन तकि, आये निकसि सुजान ।
चतुराई परखी सखन, उर सनेह अधिकान ।।
छप्पै– यहि विधि करतविनोद अस्तरविसमय निहारी ।
सभय सकुचि हिये चले बन्धु दोउ सर धनुधारी ।।
समुझाये बहु भाँति वचन मृदु प्रेम सुधारे ।
तउ पहुचावन ब्याज संग आये नृप वारे ।।
निपट प्रेम पागे सखा रघुवर जानि सुजान ।
करि विनती समुझाइ बहु फेरे प्रेम निधान ।।
दो०-सभै सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित द्वौभाय ।
गुरु पद पंकज शीश धरि, बैठे आयसु पाय ।।
मुनि सम्मीप आए दोऊ, सकुचि सु कीन्ह प्रणामा ।
मुदित अशीश दई मुनि, होउदोउ सु पूरन काम ।।
कवित्त– सीश सूधि पानी पोछि, पीठ ही असीस दै कै ।
पूछेउ मुनि कौशिक नगर हेरी आयो लाल ।।
कहाँ–कहाँ बागे कहाँ–कहाँ अनुरागे जाज्ञ ।
धूमि भूमि आगे कैसे सुख मा लखी विशाल ।।
रघुराज राज मिथिलाधिराज के महल देखे ।
लेखे कौन लोकन से सोहत जाको लोक पाल ।।
बीथिन बजारन अगारन हजारन में ।
पुर नर नारिन को आये लाल कै निहाल ।।
दोहा–साँझभई तुमहु अपने घर जाहू न तो सोच करै पितुभाई ।
छाड़हु नेहसु नात नहि रसराम मिलोनितहि तहँआई ।।

मित्रवर तुम परम आनंद आयकै, इत मोहि दीन्हा।
प्रेम वस करि लियो हमको अति क्रीतार्थ कीन्हा॥
सदा राखहु नेह फिरिकै आइयो मम और।
जाहु निज–निज धाम सिगरे फिर मिलवो भोर॥
सभय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित द्वौभाय।
गुरु पद पंकज शीश धरि, बैठे आयसु पाय॥
विश्वामित्र चरन वन्दे पुनि राम लखन दोउ भाई।
लियेउठाय अंकमँह मुनिवर मनहुँ महानिधिपाई॥
शीश सूँधि पानी पोछि पीठहि अशीश दै कै।
पुछेऊ मुनि कौशिक नगर हेरि आयो लाल॥
कहँ–कहँ वागे कहँ–कहँ अनुरागे अति जागे।
आगे कस सुखमा लखि विशाल॥
रघुराज मिथिलाधिराज के महल देखे।
लेखे कौन लोकन से सिहात जाको लोक पाल॥
वीथिन बजारन अगारन हजारन।
पुर नर नारि को आये लाल करिकै निहाल॥
जोरि पानि बोले रघुवीर रन धीर दोउ।
करत प्रवेश पुर भई अति जन भीर॥
देखे हैं हजारन अगारन वजारन में।
विभूति वे सुमारन धरी है पंथ तीर-तीर॥
रघुराज रंग भूमि देखे हैं स्वयंवर की।
नाहीं–गये राज भवन जहाँ मिथिलेश वीर॥

शिष्य रावरे के अवधेश जी के डावरे।
बोलाये बिन बावरे से कैसे जाय मति धीर ।।
निसि प्रवेशमुनि आयसु दीन्हा। सबहीं सन्ध्या वंदन कीन्हा।
कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिर रजनि जुग सिरानी ।।

लौट कर आना गुरु परनाम

विश्वामित्र चरन वन्दे पुनि राम लखण दोउ भाई।
लीथे उठाय अंक महँ मुनिवर मनहु महानिधि पाई ।।
सिस सुँधी पानी पोछी पीठही अशीश दै कै।
पुछेऊ मुनि कौशिक नगर हेरी अयो लाल ।।
कहँ–कहँ वागे कहँ–कहँ अनुरागे अति जाग भुमी।
आगे कस सुख मालखि विशाल ।।
रघुराज मिथिला धीराज के महल देखें।
लेखे कौन लोकन से सीहात को लोक पाल ।।
विथिन बजारन अगारन हजारन मे।
पुर नर नारी को आये लाल करि कै निहाल ।।

दोनो भाई शयन के आज्ञा जाने के

सानुज श्रीराम सुनो मिथिला लखते सुभयो श्रमभारो।
रैन गई वहुसैन करौ अब नैनन नींद ठई मनहारी।
लेऊ अशीश सु शीश नवाय मिलैं तुम्हें मिथिलेश दुलारी।
देखि सुदुलह वेष सुखी दृग लेहि लला हमहू वलिहारी ।।
तात गई अतिरात प्रभात भयो चहै वात सुनौ राजदुलारे।

भुलेहु देह को भान सनेह सो आवत नैनन नींद तुम्हारे ।।
सोवहगे सुकुमार नही तवहि हिय होइहि सोच हमारे ।
रस राम सुबन्धु सवै श्रम खोवहु सोवहु जाय अब प्यारे ।।

दोनो भाई को शयन के लिये जाना

सुनि रघुनन्दन के बचन मंद मंद मुसकाय ।
मुनिन वृन्द मधिगाधि सुत,कहै आनन्दपुर छाई ।।
दो०-उठे लषनु निसि विगत सुनि, अरुन सिखा धुनिकान ।
गुरु ते पहेलेहिं जगत पति, जागे राम सुजान ।।
चौ०-सकल सौच करि जाइ नहाए ।
नित्य निवाह मुनिहि सिर नाए ।।

फुलवारी प्रकरण

चौ० छंद-कियो जाइ गुरु वन्दन कर,रघुनन्दन शर धनुधारे ।
कोटिन दई अशीष गाधिसुत,शुभ हो प्राण पियारे।।
दो०-मुनि फूल लाने पठये दोऊ, वंधु महामुनि राज ।
प्रगट प्रेम प्यारी मिलन, एक पंथ दो काज ।।

फुलवारी परिकर्ण

जनक वाग में तात युगल वन्धु चलि जावो ।
अनुपम भव्य वाग देखो सोभा सुख पावो ।।
मम पूजन हित रूचिर सुमन दल तोरि ले आवो ।
होत पूजन के बेर बहुत मति देर लगावो ।।
बूझि मालिगन से भला लावो सुमन उतारि चल ।

वसु नायक रघुनाथजू मंगल होय तुम्हार भल ।।
यहि विधि करत बन्धु सनवातें गये वाटिका द्वार।
द्वारपाल चित चकित निहारे सुन्दर राजकुमार ।।
दो०-को माली यह वाग को, अधिकारी द्वितिवन्त ।
सो जो कहैं गुरू हित तो, लेहु फूल मतिवंत ।।
माली हू मिथिलेश पति की सौ करौ नित फूलनकी रखवारी।
राजकुमार कहाँ के लला पग चारी पवित्र कियो फुलवारी।।
हम कुमार अबधेश के आये मुनि के साथ ।
गुरू पूजन हित पुष्प दल तोरैं अपने हाथ ।।
फूलहु ते सुकुमार अति राउर कर कमल तोहार ।
किमि तो रोगे फूल दल मम चित करत खबार।।

कवित्त

कैसे गुरुदेव तुम्हारे सुकुमार प्यारे,
कोमल पद वाले को भेजे हैं सघन में ।
काँटे और कुस आदिक होत कुँजन मझार,
ताकर विचार कछु कियो नहिं मन में ।।
केहि विधि तोरोगे डारन ते पुष्प लाल,
कियो नहि ख्याल होत पाँखुरी सुमनमें ।
बैठो तरु छाँहीं मै कहत तोहि पाँही अवै,
लखत हौ उतारी सवै पुष्प एक छनमें ।।
दो०-फूलहु ते सुकुमार अति राउर कर कमल तोहार ।
किमि तोरोगे फूलदल मम चित करत खबार ।।

कबित्त

येहो महिपत्ति माली सुनो गुरू पूजन के हित फूल उतारन,
आये इतै हम वन्धु समेत उतारि प्रसून जो होइ न बारन।
कैसे कहे विन फूल चुने मिथिलेश की वाटिका के मनहारन,
वस्तु विरानी के पूछे विना रघुराज लेवन वेद उचारन॥
जैसे महिप महा मिथिलेशजू तैसेहि वेशवनि फुलवारी।
त्यौ तुम रक्षक दक्ष सबै कस नाहिं कहो असवैन विचारी॥
छोड़न जोग न पै इतनि रस रंगमणी गुरु सेवा हमारी।
फूल चुने श्रम लेस नहीं हमहिं निज हाथन लेव उतारी॥
छैल छवीले नुकीले दोऊ अंग अंग कोटिन काम है वारी।
तुलसीदल पुष्प उतार जितै जोई दीजै रजाई सो लावै उतारी

सुमन तोरिहैं आप क्यों हम सब तुम्हारे दास।
भरि लोने दोंने विविध ले आवें प्रभु पास॥
कहत ठीक सब चैन तुम हो माली होसियार।
काज गुरू के हेत निज लेहैं पुष्प उतार॥

कबित्त

एंहों सुकुमार सुचि सुमन सुगन्धित फूल,
मरजी हमारी बिन कैसे आप तोड़ोगे।
धीरताई वीरताई एक न चलेगी लाल,
चतुराई यहाँ पर अपनी सब खोवोगे॥
ताड़ुका सुबाहुं दल मारि राम अधीन,
मिथिलापुरी है यहाँ दीन होय निहोरोगे।

सुचि सुमन सुगन्धित फूल तौ लौ जौ लौ लेन न पाइगे,
जौ लौ श्री जनकलली की जय न बोलेगे ।।

दो०-हम रघुवंशी बीर वर सुजस जगत उजियार ।
जय नहिं बोलत तियन की अस मर्याद हमार ।।

कवित्त

भाई तुम मिथिला के माली रसिक बड़े,
बाते बनाय हमें वातन उलझाओ ना ।
आतुर प्रतिक्षा गुरूदेव मेरी करत होय,
पुष्प हेतु अधिक विलम्ब अव लावो ना ।।
कोमल हित कोमल कठोर हैं कठोरन को,
'नारायण' आप नेकु हिय में सकुचावो ना ।।
बड़े भाग पाई सुखदाई मन भाई यह,
सेवा यह हमारी गुरुदेव की छुड़ावो ना ।
बोल गये इतने पर इधर उधर की बात,
मतलब की बात किन्तु बोंलत सरमायोंगे ।।

कवित्त

रघुकुल मर्यादा का इतना है ध्यान तौ पै,
निमिकुल मर्यादा से बाहर क्यों जावोगे ।
आये नारायण प्रभु प्रेम नगरियाके माही,
प्रेम के अधीन होय हा हा यहाँ खावोगे ।।
जवलो नहिं जनकदुलारीजूकी बोलो जय,
तबलो इस वाग में प्रवेश नहिं पावोगे ।

दो०-मैं माली इस वाग को सुनिये राजकुमार।
सियजू की जय बोंलि के लेवों फूल उतार ।।
जय नहिं वोलैं तियन की, यह मरजाद हमार।
फूल लेन दों वाग में, होंत विलम्व अपार ।।
सियजू की जय बोंलिके, वाग मध्य में जाय।
लगे उतारन फूल दल, शोंभा कहि नहिं जाय ।।

कवित

जासु जय जनक नरेश हैं जय के पात्र,
अपने सुकर्म से आप ही अभय हों।
योग भोग उनके अधीन सब काल रहैं,
सुजस समूह छिती तल में स्थय हों।।
राम अधीन उनके प्रभाव प्यारी पुत्रिका की,
कीर्ती कदम्वकला निधि से उदय हों।
जाके गुणशील की प्रशंसा है विश्व माही,
प्राण प्यारी की जनकदुलारीजू की जय हों ।।

दो०-जय जय श्रीमिथिलेशजू शील गुनन आगार ।
तासु सुता श्रीजानकी सदा रहे जयकार ।।
सियजू की जय बोंलि के, वाग मध्य में जाय ।
लगे उतारन फूलदल, शोभा कहि नहि जाय ।।
लखन लखो यह वाग बड़, सब जगमें दुतिवंत ।
वास करत यामें सदा, मानहु सुभग वसंत ।।

सवैया

कहूँ लेत प्रसून प्रमोद भरे, ललिते लतिकान के झोरन में।
कहूँ कुँजन में विश्राम करें अवनी रूह छाँह के छोरन में ।।
वर वाटिका ठौरन ठौरन में 'रघुराज' लखैं चहुँ ओरन में।
चित चोरन राजकिशोरनको,मन लागिरह्यो सुमन तोरनमें।।
लखन लाल लखो यह वाग लगे तरू वेली वसंत शृंगार सो।
देखतहिं हरिलेत मनो सुठि सोहत है रतिमार विहार सो ।।
तैसो तड़ाग मणि 'रसरंग' विकसित पंकज चार प्रकार सो।
मानो आराम भयो अभिराम विदेह को ब्रह्म स्नेह विचारसो।
डोलत राम लिये लषनै चख वंतन के चित चोरि रहे हैं।
त्यौं, रस (राममणि) रितु राज मनोज छबि मद मोरि रहेहैं।।
देखन की सिय की सुखमा मन चाह उछाहन वोरि रहे हैं।
फूलि फली बगिया महाँ फैलि कै फूलि कै फूलन तोरिरहे हैं।।
जनकपाट महिषी छविखानी । नाम सुनैना परम सयानीं ।।
सतानन्द तेहि वचन उचारा । कालिह स्वयंवर होवन हारा ।।
ताते आजु जानकी जाई । करै गौरि पूजन चित चाई ।।
सुनत पुरोहित की वर वानी । बोली महाराज महारानी ।।
सखिन बोलि सबसाज सजाई । गिरिजा पूजन सियहिं पठाई।।
हेम विमल एक नवल नालकी ।बनी हाल की रतन जलकी ।।
कीन्ही सीता सुखित सवारी। लिये उठाइ वाह कह नारी ।।
पहिरे अंवर अंग सुरंगा। भूषन भूषित सुन्दर अंगा ।।
मची महा नूपुर झनकारी । सोहि रही सिय सजी सवारी ।।

चली गौरिपूजन मनभाई। सिय छबि इक मुख किमि कहिजाई
गावहिं मंगल गीत सयानी । सहित ताल सातहु स्वर सानी ।।
कनक थार भरि सुमन सुहावन । हरी दूब दधि तंदुल पावन।।
धरि धरि शीसन सखी सुहाई । लिये चारु चंदन चित चाई ।।
दो०-ल्याई सखी गिरजा भवन, सिय को पूजन साज ।
प्रेम सरस प्रीतम दरस, एक पंथ दो काज ।।
तेहि अवसर सीता तहँ आई । गिरिजा पूजन जननि पठाई।।
संग सखी सब सुभग सयानी । गावहिं गीत मनोहर बानी ।।
सर समीप गिरिजा गृह सोहा । वरनि न जाय देखिमन मोहा
दो०-सखी हजारन संग में, रतन जड़ित सखी पानी ।
जय विदेह नृप नन्दिनी बोलहिं वर वानी ।।
सखी सहस्र सजी शृंगारा । लीन्हें चमर छत्र छवि सारा ।।
पान दान लीन्हे कोऊ नारी । पीक दान कोउ प्रान पियारी।।
अतर दान कोउ गहे दुलारी । लिये गुलाव पास कोउ झारी ।।
लिये वाल उरमाल रसाला । क़ोउ विजन कोउ दरपन माला।।

कवित्त

कोउ पान दान लीन्हें कोउ पिक दान लीन्हे ।
कोई लीन्हे मुकुर अतर दान आवही ।।
कोई चारू चौंर लीन्हे कोई छत्र छाया की लीन्हे ।
कोई चन्द्रमुखी चन्द्रभानु मुखी लावहीं ।।
कोई गीत गावही रसाल 'रसराम मणि' ।
कोई स्वर्ण छरी लैन कीव सरसा वही ।।

जनकदुलारी गौरी पूजन पधारी।

संगसोह सखि प्यारी फुलवारी छवि छावहीं ॥

कवित्त

चन्द्रकला चारूशीला चमर चलावैं।

चारू विमला ब्यजन छत्र क्षेमा छविकारी हैं।

हेमा हेमथार गौरी पूजा साज लीन्हें।

शुभ शुभगा मदन कला सारी जल झारी लीन्हें।

कमलादि कैयक हजार 'रसरंग मणि'।

गावती अगारी औ पीछारी सौज धारी है।

वाटिका पधारी राज विभव तैयारी जुत।

जनक दुलारी संग सोहैं सखी प्यारी हैं।

दो०-सिया आवतहि वाग की, छवि भई औरहि भाँति।

कहत वनत मुखते नहीं अचरज सों दरसाति ॥

—: छन्द :—

करि सर जल विहार सखिन युत पहिर सुभग तन सारी।

गईं अनन्दी गौरि ऐन कों श्री मिथिलेश दुलारी ॥

पूजन विविध सुभाँति करावती सखी प्रवीन सुखारी।

भूरि प्रताप हेरि जग वन्दिनि वन्दौं पदाम्बुज प्यारी ॥

धूरि धरी तुम धर्महि को जय, जग जननी जीवन मूरी।

मूरि सजीवन दै मति सुन्दर कीजिये मातु मनोरथ पूरी ॥

दो०-हे गिरिजे जग जननी कृपामयी शंकर प्राण पियारी।

तुम सो कहा छिपी मनकी गति मनकी जानन हारी ॥

पासे हे गीरिराज नन्दिनी इतनी करुणा कीजै।
मम अनुरूप रूप गुण वारो, वरदायिनि वर दीजै॥
रूप रंगीली गुणगरवीली सुधर सलोनी वाला।
नवल नागरी अति उजागरी छाकी प्रेम पियाला॥
नखशिख भुषण अमल अहसन ज्यों शशी प्रसन सोहै।
नवल सुरंगा शोभित अंग निरखि राचि रति मोहै॥
पंकज नैनी है पिक वैनी गज गामिनी ललामा।
वैश किशोरी श्यामल गोरी मन हरनी सुखधामा॥
सोह रहि स्वामिनी सियाजू संग संहेली सवै अलबेली।
गौरी गीराकहिये जीन आगेग बैली लगै रति मानहु चेली
सारी सवै जरतारी कीनारीन की पहिरे तन रंग रंगेली।
पीरी हरी रसरंग मणी,कुसुमी सोत ऊदी औ नीली रमेली।
वैसे सखि चहुँ ओरे लसै सिय मध्य कृपा रस सागर बोरी।
दै सबको मुद पुँज विलोकही मंजुल कंज विलोचन कोरी॥
को वरनै छबि सुन्दर राजकिशोरी की जो तिहुलोक अंजोरी
जासु कटाक्ष विलास पिया चितको रसरंग मणी लीये चोरी।

सखी का फुलवारी में जाना

एक सखी सिय संग बिताई

एक सखी सिय के पूजन हित सुमन लेन हित आई।
तोरत फूल वाग में देख्यो श्याम वर गौर दोउ भाई॥
भूलि गयो फूलन को लेवो तकि छविहि निहारी।
को हम कौन कहाँ वसति है या तन सुधी विसारी॥

वाटिका में युग राजकुमार विहरत फूलन तोरत बागै ।
दोना लिये अति लोना उभैकर छोना मृगेश से जोवन लागै।।
देखा राजकुमार दोऊ सुन्दर अंग अंग छवि परम मनोहर ।
फूलन दौना करन सुहायो दृष्टि परतहि चित्त चोराई ।।
नीरखी विहाल भई सो वाला चतुरी भई भोरी ततकाला ।
इकटक रहि निमेषन लखै, चितवै चकित न अंग डुलावै ।।
सिरसो सरकी चुनर सारी लोक लाज गई भइ मत्तवारी ।
पैरन मग पगडगमग डोलै,आवत सिय ढीग मुख नहि बोले ।।
झुमत झुमत प्रेम मद छाकी, आई गीरत परत अति थाकी ।।

दो०-तासु दसा देखी सखिन,पुलक गात जल नैन ।
कहु कारन निज हर्षकर, पूछहि सब मृदु वैन।।

लखतेहि युगल रूप को देखी मन लजानी ।
सुन्दर सलोने के कर विन मोल बिकानी ।।
बानी को नही नयन नहि नैन को बानी ।
जो देखी आई मुझसे नहि जातव खानी ।।

हे सखी–तुम तजि संग गई सउमंग लखै अवहि फुलवारी ।
आई भई नई और दसा विवस जनुमैन नसाकी छाई ।।
आँखिन आनंद आशु भरे सिगरे अंग में पूलकावलि छाई ।
कारन सो रस रंग मणी सुख को अपने कीन देखि सुनाई ।।

दो०-तासु दसा देखी सखिन्ह, पुलक गात जल नैन ।
कहु कारन निज हरष कर,पूछहि सब मृदु वैन ।।

॥ सवैया ॥

हे सखि ! तुम तजि संग गई, स उमंग लखै अवहि फुलवाई।
आई भई नई और दशा बिबस जनु मैन नसा की छाई॥
आँखिन आनँद आँसु भरे, सिगरे अंग में पुलकावलि छाई।
कारन सो 'रस रंग मणी' सुख को अपने को न देखि सुनाई॥
मार से सुन्दर राजकुमार,उभौ गौ रसरंग मणी छवि खानी।
वाग विलोकन आये मानो अनुराग सिगार सवै सुख दानी॥
वयस किशोर सखी चित चोर लखे मतिमोर औ तोर भुलानी
श्यामल गौर वखानि कहौ किमि वैन के नैनन नैन के वानी॥

कवित्त

वानी नेह सानी सुख दानी मनमानी वहु,
प्रीति सरसानी सुनि रूप को निकाई को।
संग लै सहेली अलवेली जो नवेली सवै,
देखन चली हैं घनश्याम रघुराई को॥
जनक दुलारी सुकुमारी मोद भरी,
हिय रसिक विहारी सो निहारी चहुँ धाई को

कुँडलिया

बोली सिया सखिन सो हेरो राजकिशोर।
हेरौ छवि मुख चन्द को लोचन चारु चकोर।
लोचन चारु चकोर इकठक रुप निहारौ।
सरस माधुरी पियो भलि विधि पलकन टारौ।

अली आज सुख साज सवै निजनिज हिय खोली।
नीरखि लेहु भरी नैन वैन यो सियजू वोली ।।

कंकन किंकिनि

।। सवैया ।।

है वसी कार सुशव्द अनूप सुनो यह तात मनोहर ताये।
आज लों यो न सुनी 'वसुनायक' जो सुनि के मनमोर ठगाये।
युद्ध के हेतु मनोज दल साजि के लै रितुराज सहाये।
विश्व विजय हित राज मनोजहिं मानहुदुंदुभी आज वजाये।
और कियो तनको मनको यह मोपै चोप बढ़ि सासन लागी।
लै रितुराज समाज सवै संग कोकिल की रवगाजन लागी।
दूरि कै धीर समीर लगै 'ललिते' लतिका वर राजन लागी।
जीतने को जग साजन साज मनोज की दुन्दुभि वाजन लागी।
तात सु वात कहौ तुम सो जनु वीर मनोज यहाँ चलि आये।
एहि विदेह की वागहि में गौरि यहाँ वैठि के ध्यान लगाये।
पूजि प्रसन्न करो 'वसुनायक' सो गिरिजा सो अभय वर पाये।
विश्व विजय हित राज मनोजहि मानहुँ दुँदुभि आजु वजाये।
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा।
सिय मुख ससिभए नयन चकोरा ।।
भए विलोचन चारु अचंचल।
मनहुँ सकुचि निमि तजे द्रिगंचल ।।
देखि सीय सोभा सुख पावा।
हृदय सराहत वचन न आवा ।।

जनु विरंचि सब निज निपुनाई ।
बिरचि विश्व कहँ प्रगटि देखाई ॥
सुन्दरता कहुँ सुन्दर करई ।
छबिगृह दीप सिखा जनु बरई ॥
सब उपमा कबि रहे जुठारी ।
केहि पटतरौं विदेह कुमारी ॥

दो०-जानकी स्वरूप लखि नख सिख सुषमा गार ।
निज सौन्दर्य गुमान तजि रघुनंदन वलिहार ॥
करत प्रशंसा मनहि मन, बढ़ेउ परम उदगार ।
प्रगट रुप वरणन लगे, पावत मोद अपार ॥

॥ सवैया ॥

अनन्द इन्दु अनेकन की छवि छीनि लइ सुषमा वर जौरै ।
देवन की नर देवन की सिय को मुख देखि तियाँ तृण तौरे॥
दीठि सो मैल न होय कहँ सकुचाय वधु सिगरी दृगमोरै ।
'प्रेम सखी' चित चोर करै पलकै झुकि आनंद मानि निहारै॥

कवित्त

आये वर वाग में सलोनो बन्धु लाये संग,
तोरै 'रसरंगमणी' फूल तो न तोरे भे ।
ताहि समय जनक किशोरी गौरि पूजि तहाँ,
आई जेहि मोहित महीपति किशोर भे ॥
सारी घटा कारी जोर धुनि आभरन सो,
सुनि घनश्याम मानो मोरी मोरी भे ॥

सखी सिया वृन्द बीच सीता मुख चन्द्र चारु,
चितै रामचन्द्रजू के लोचन चकोर भे ॥

॥ सवैया ॥

कौन कहै सिय नेह की नीती,प्रतीती त्यौ प्रीती की पूरनताई
श्री रघुनायक आनन इन्दू में नैन लगाई चकोर लजाई ॥
श्रीरघुराज सू कोटिन वार निछावरि चातक नेह मिताई ।
मानौ लजाई पराइ गये निमि, त्यागि दृगंचल चंचलताई ॥
देखतहि सिय की सुखमा उपमा हरी हेरि कहुँ नहिं पाई ।
केती करि कविताई कविनन कौन अनूठ कहौ समताई ॥
'श्रीरघुराज' विचारि रहे मन आजु लौ ऐसी न आंखिन आई।
ज्यो छवि भौन में होन प्रकाश सूदीप सिखा विधिवारी वराई
जो कहौ विश्व की सुन्दरताई समेटि कै सिय की मुरतीराची
जो निज मोहानी रूप कहौ सम,तौंमति में रहै लाज ही माची
'श्रीरघुराज' गुणै मनमें न कविन्दन सो उपमा कछु वाची ।
है छवि की छवि शील भरी महा,माधुरीकी महामाधुरी साँची
कहत वनत नहिं सिय सुछवि पटतर परै न हेरी ।
रहै मौन अनिमिष दृगनि फिरे न फेरे फेरी ।
पुनि कछु उर ही लजाय, लता ओट निज रूप केरी ।
चितवत चकित तुराय,अनिमिष नयनन कहहेरी।
सिय मुख फंज लुभाय, चंचरीक रचि चारू चख ।
नहिं छन छनहिं अघाय,पीयत मधुर मकरंद छबि

दो०-सिय शोभा हिय बरनि प्रभु आपनी दसा बिचारि ।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ॥

॥ सवैया ॥

कारन जासु रची धनुजज्ञ सोई ये विदेह सुता सुखदाता ।
पूजन गौरि सखी युत आई करै फुलवाई प्रकासित गाता ॥
जाहि विलोकत मोमन छोभित भो सब हेतु सो जान विधाता
पै सुखदायक अंग सबै फरकै सुनिये 'रस राम' सुभ्राता ॥
भूलि कुपन्थन पांव धरै नहिं रघुवंसिन की अस रीति अनूठी ।
त्यौ 'रसराम' लरै वढ़िकै रन में रिपु नाहिन पावहि पीठी ॥
जाचक आयन नाहिं लहैं पर की पतिनी मन डीठी ।
है हमको जिय की प्रतीती लगै सपने पर नारिन मीठी ॥
दो०-करत वतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान ।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान ॥

कुंडलिया

सुभग जानकी बदन दुति उदित चन्द सिर मौर ।
लाल लालची चित चतुर चाहत लखनि चकोर ।
चाहत लखनि चकोर सुधा छवि पीवत प्यारे ।
ललकि लगे लगवार प्यार पग पलक बिसारे ।
अंग सूमोदक मोदवत विकसित रंग रस वोर ।
लाल लालची चितवन चतुर चाहत चखनि चकोर

कवित्त-चितवै तितैहि वरसत तिन वायराज भूमि मध्य,
मनिमय अनेक स्वेत कंज छवि छाई है।
दोउ श्याम पुतरी है हरत मलिन्द द्युति,
रस की झलकि सोई रंच अरुणाई है।।
दौरति फिरति जहाँ रसिक हमारी मति,
केतो समुझाई रंच धीरता न आई है।
लाजहुँ गवाई कुल कानिहु नसाई,
मर्यादा पुरुषोत्तम की सकल वहाई है।।

।। सबैया ।।

नयन हजारन एक ही वारन राजकुमार न के केतन लागे।
मानो अपार मलिंद मरंद सू पीवन अंबुज पै अनुरागे।।
कौन कहैं पलकै परिवो थिरता अति भैउ तन मन जागे।
'श्रीरघुराज' विलोकै सदा सजनिन के वृन्द बिरंचि सभागे।।
अरविन्द के आनन ते कढ़िकै जिमिहंस के सावक द्वै सरसो।
पुनि ज्यौं ही तुषार अपारहि तेयुग बासर नाथ प्रभावितसो।।
प्रगटे घनश्याम घटानिते ज्यो रजनी पति हियके हारसो।
तिमि कौशललाल दोउ 'रघुराज' लतागृह ते कढ़िकै दरसो।।

कवित्त

लाल लतिकान ओट लखि नहिं पायो,
लली एक पलक करोरी ज्यौं बितै रही।
बोली अवकास ते सहेलिन वतायो,
देखी स्यामधन तन मति मोरी ज्यौं हितै रही।।

देह भई भोरी सुखबोरी 'रस रंग मणी'
सरस सनेह डोरी जोरी ज्यौ थितै रही।
रामचन्द्र आनन सरद चन्द्र चारो ओरी,
जनक किशोरीजू चकोरी ज्यौचितै रही॥

॥ सवैया ॥

जानि लतान वितान के अंतर, मंजुअली करकंज उठाई।
बोली विदेह लली सो भली विधि नयन नचाय कछु मुसुकाई।
'श्रीरघुराज' विलोकि ये वीर सुवल्लीन विचिमहा छवि छाई
साँवरो राजकिशोर खरो चित चोर चितै तजो अकुलाई॥
दो०-परी लता पर दीठि जब, सीय उठी अकुलाय।
मनहु महाँ निधि नयन की दीन्ही तुरत गँवाय॥
देखा देखी होत ही लोयनि लह्यो हुलास।
सिय के उर रघुबर बस्यो, रघुबर उर सियबास॥
फूल लेत इत उत फिरे, चषन ओट पर सीय।
छिन दरशत छिन दुरत उर, लाज विरह सुखनीय
रूप लाग चित भय लगत, मगन प्रेम बारीस।
दृगवारी वर दुहुन के, खलत लाज न बीस॥
जनक सुता मुख चन्द के, रघुवर नैन चकोर।
लाज मरुत घन इमि मिलत, अंतर करत उजोर॥
कबहुँक दामिनि ज्यों दमकि, भरत नेह छबि आय।
अवधलाल उर कंपकरि, लेती लाज लुकाय॥

सखिन मध्य ठाढ़ी सिया, मन प्रीतम छबि लीन ।
चपल नैन खंजन रुके, लाज पींजरा पीन ।।

॥ कवित्त ॥

लता ओट जलद पटल मैं प्रकाशमान ।
चमकत चन्द्रमा से दोउ देव अंश हैं ।
धरति छवि है अपार वाग राजमाही चलत गयंद गति मानो
राजहंश है ।।
अति सुकुमार कहि लचकै निषंग भार,
धारे धनु निखङ्ग अरि करन विध्वंश है।
असुरन वंश को करत निरवंश एही,
परम प्रसंस हंस वंश अवतंश है ।।

कहुं मृग कहुँ द्रुम कहुँलता, अलिन बताइ बताइ ।
रूप चखत चख सीय के, खेलत दाव दुकाइ ।।
प्रीति नायिका उर भवन, वसी निरंतर आइ ।
मैन झरोखे झांकि तब, पल पट देति लगाइ ।।
लतनिओट अंतर दरस, सरस विरह थकि देह ।
नैन मूँदि छवि लाइ उर, सखि सिय लख्यौ सनेह ।।
लता सघन घन भेदि तब, प्रगटे जनु दु मयंक ।
सियहिं सुनाई कह्यो सखी, सखि सो लखु मृगअंक ।
लता सघन घन भेदि अलि, उये विमल जुगचंद ।
सियहिं सुनाई कह्यो कोउ, लहु चकोर आनन्द ।।

खुल्यौ नैन अलि वैन सुनि, दृग चकोर गति लीन।
सूखत सलिल तड़ागविच, फेरि लह्यो मनु मीन॥
निरख बाग जुग ललित अलि, खंजन चंचल चारु।
खेलत कहा अनूप गति, चतुर खिलारी मारु॥

॥ सवैया ॥

दोउन की रही प्रीति सनातन दोउ तहाँ पलकै दृग त्यागे।
ह्वै गोवियोग कछु दिन दोउन देवन कारजमें अनुरागे।
वे प्रगटे अवधेश के मन्दिर, वो मिथिलेश किय बड़ भागे।
दोउन के दृग दोउन में परी दोउन की छवि पीवन लागे॥
दो०-दोउन चख में परी, चपलासी सो चौधा।
उन्हें विसरि गौ जनकपुर, उन्हें विसरिगो औधा॥
कवित्त-दोउ जने दोउन को रूप निरखत फिरै,
पावत कहुँ ना छवि सागर को छोर है।
चिंतामणी केलि कला नीके कदम्बनी सों,
दोउ जने दोउन के चित्त के चोर हैं॥
दोउ जने दोउन पै रूप सुधा बरसत हैं,
दोउ जने छाके मोद मद दुहू ओर हैं।
सीताजी के नयन रामचन्द्र के चकोरी भये,
राम नयन सीता मुखचन्द के चकोर हैं॥
सुनिबानी सिय अलिन की, गूढ़ समास सु उक्ति।
प्रेम मरोरत लाज कौ, वनै न येकौ जुक्ति॥

प्रेम लाज दोऊ लख तुम, आलि करौ न बीच ।
प्रेम प्रबल सो नीति दे, लाज मरैगी मीच ।।
पनबिच खेलत मीन अलि, खंजन कंचन बेलि ।
चलौ अनत नत ख्यालया, लै हे लाज सकेलि ।।
लिपटी चहत तमाल सौ, चंपक लताजु देखु ।
घन दामिनी इक संग ही, चहिये अली विसेखु ।।
लोभी लोचन दुहुन के, विडइत नव निधि रूप ।
पलक परीकर संग तजि, लाज परी लखि कूप ।।
चंपक लता तमाल दोउ, जुरे जंग बरजोर ।
बरसत बिन गुन चापते, तीखेबान अठोर ।।
व्यंग अलिन के बैन, सुनै न प्रेम समाधितैं ।
सिय रघुवर रस ऐन, अलिन संक उर मातु की ।।
दो०-क्यौं करि अलि बिलगाइये, बँधे परस्पर नेह ।
इत संका उर मातु की, परी सरीत संदेह ।।
इक बोली नित आइ है, फूल लेन छवि धाम ।
गौरी पूजन सीयजू, फिरि मिलाय अभिराम ।।
सोरठा-बहत प्रेम नँद जान, खैंचे अलि गहि बच्चनकर।
उततै लखन सुजान, वर वस कहि उतै इतै ।।
दो०-निपट लाज हारी अली, अवला है वल थोर ।
प्रेम पुरुष सो प्रबल है, जीतौ दोहूँ ओर ।।
खुला खुली खगि खेलि छवि, पीये न नैन अघाई ।
प्यासे रह्यो दुहून के, फिरि फिरि दृग ललचाई ।।

जलते काढ्यो मीन ज्यौं,फिरि झँसत करि जोर।
त्यौं इत सिय उत श्याम के,लोचन गति समरोर।।
सियजू कही सखी सुनौ, नई चमेली फूल।
गिरिजा कौं पूजन समै, लये नही मन सूल ।।

दो०-लता भवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाई।
निकसे जनु जुग विमल विधु जलद पटल विलगाइ

कवित्त-शरीर नील पीत कल कंज वरके।
काक पक्ष नीके मन भावत सबही के ।।
गुच्छ कुसुमकली के बीच बिच में सुधार के।
तिलक विराजै भाल विन्दुश्रम छाजै ।।
कान भूषण सूभ्राजै सो मयंक मदहार के।
कच घूंघर वारे कंज नैन रतनारे ।।
'वसुनायक' निहारे ताहि लेत वस करके।
नाशिका कपोल चारू चिबुक अमोल,
हँसि लेत मनमोला, चित्त वरबस लोभावेरी।
मुख छवि काहि न बखाने मोही जाही,
वहु कामहुँ लाजहि कोउ समता न पावेरी ।।
कम्बुकलग्रीवा छवि भूषण अतीवाँ,
करि भुजवल सीवाँ देखि दृग ललचावेरी।
वाम कर दोना फूल भरै भरकोना,
'वसुनायक' सलोना श्याम अतिमन भावेरी ।।

दो०-केहरि कटि पटपीत धर सुषमा सील निधान ।
देखि भानु कुल भूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान ॥

देखतहि सिय की सुषमा उपमा हरि हेरी कहुँ नहि पाई ।
केती करि कविताई कविनन कौन अनूठो कहै समताई ॥
'श्रीरघुराज' विचारि रहे मन आजु लो ऐसी अखियन तरआई
ज्यौ छवि भौनमें होन प्रकाश सुदीप शिखा विधि वारी बनाई

दो०-जनकलली अनमिष चितै श्यामल राजकुमार ।
धरेउ ध्यान मिलित दृगनि ठाढ़ि गही तरु डार ॥

तोरहिं वियोग ते ये झाँवरे भये हैं प्रिये ।
शरण तिहारे इन्है अभय दान दीजिये ।
ऋषि को वचन याद कीजिये भयो है सिद्ध
परम उदार आप भय मे न भीजिये ॥
इच्छा चारिणि न कोऊ कवहुँ असत्य भाषि
आजु निमि वंशमें सुजस क्यों न लीजिये।
नैन खोल देखि क्यों न लीजिये किशोरजू को,
अम्बिकाको ध्यान फेरि नैन मूदि कीजिये

सो०-नेक निहोरौ तोहि लेचलु मातन खीजि हैं ।
मो मन संका होहि लख्यो हुतौ कछु सुपन मैं ॥

रामजी वचन लक्ष्मणजी से

लखन सुनौ मंजीर धुनि पुनि मो कानन बीच ।
अमी परै ज्यौं मृतकमुख भगै दूरि इमि मीच ॥

लखा लखी लोयन भई, बढ़ी बेलि आनन्द।
मनौ गयौ धन फिर मिलौ, लह्यो चकोरी चन्द।।
फूलन मिस रघुवर फिरैं, सिया चमेली चौप।
नैन पियासे रूप रस, पियैं दुहुन के तौप।।
बड़ी बेर भई ना मिली, लता चमेली केरि।
सिय कहि बांध्यो सूत हम, सखि हारी सव हेरि।।
इतने ही सियजू कही, लखी लता हम सोई।
पै अस मंजस है बड़ो, वही राज सुत दोइ।।
सखिन समेत निकट सिया, लखी लाल सरसाइ।
प्रेम पंक पागी मती, कौन निसारै आइ।।

दोउन के बाँके नैन दोउन के देखे थके,
दोउन के नहीं उपमा के सीमा के हैं।
कंजमीन नाके भरे प्रेम के सुधा के,
मन्द करन मृगा केन गिरा केनउ माके।
भनें 'रघुराज' अनुराग के मजा के मढ़े,
काके समता के एक एक छवि झाँके हैं।
मेरे मनसा के गुन कहि ना मृषा के बयन,
शील करूणा के कछु अधिक सियाके हैं।

दोउ दुहुँ मुखचन्द को देखि के आनंदित नयन चकोर करैं रहै।
सिन्धु सुगन्ध दोऊ दुहुँ के सुमानस मत्त मलिन्द अरे रहैं।
नयन सो नयन सुबयन त्यों अंश सो अंस सुप्रसंसि धरे रहै।
प्रीति प्रतीत पगे प्रिया पी करि 'वसुप्रेम' पयोधि परे रहै।

कौन कहै सिय नेह की नीती प्रतीती त्यौ प्रीती की पूरनताई।
श्री रघुनायक आनन इन्दु में नैन लगाई चकोर लजाई।
'श्रीरघुराज' सुकोटिन वार निछावरि चातक मेह मिताई।
मानौ लजाई पराई गये निमि, त्यागी दृगंचल चंचलताई।

॥ चलि राखी उरश्यामल मूरती ॥

फेरि दुहुन के मीन दृग, परे महाछबि वारि।
चलौ अली गिरिजा भवन,मदन बड़ौ खिलवारि॥
चमन चमेली चन्द्रमा, वेदी वकुल चकोर।
लगी टकटकी अघट की, होन चहत नहि भोर॥
अघट बात या हम लखी, वंदत इन्दु चकोर।
भई दुअंगी प्रीति अब, होय कौन विधि भोर॥
तमको तजै न जामिनी, भामिनि तजै न कंत।
मित्र मित्र को ना तजै, कहत रसिक बुधिवंत॥
गूढ़ अलिन के बैन, सुनि विहँसे रघुलाल त्यौं।
इत सकुचे सिय नैन, उर सनेह सरसी लता॥
दो०-विमल विधू मोहिस नभसि,उडगन सहित प्रकाश।
नेह सरद रितु है सखा, प्रेम प्रनय जुग मास॥
देखि राम शोभा सुख पावा हृदय सराहत बचन न आवा।

॥ नायक उक्ति ॥

वारी चय वारी मुख कोटि ससिवारी,
गुनवारी सुकुमारी जोतिवारी उजियारी है।

जोती सुरनारी जेती सुखमा सुधारी,
विधिहारी बखानत छवि सारदा विचारी है ॥
उपमा कि वारी सी किवारी मेरे नैन हूँकी,
और छवि उर मैन पैठत प्रचारी है ।
मूरति या धारी निहारी जब नैननि सों,
जनक दुलारी की समान कौन प्यारी है॥
वारी वयवारी सुकुमारता निहारी जासु,
कमल गुलाबहुँ निछावरी बिचारी है ।
जासु मुखचंद उजियारी लखिचंद कहा,
मंद होत दामद्युति देह की निहारी है ॥
सुर नर नाग नारी ऐसी कौन रूपवारी,
जदपि बिरंचि रचि पचि कै सुधारी है ।
जनकदुलारी की समानता न मिलै कहूँ,
बानी बुध शेष मति हेरि हेरि हारी है ॥
सुषमा की माला किधौं साला गुन बृन्द हीकी,
मैन सर ज्वाला उरऐन में समातसी ।
दामिनी की स्वामिनी सरद ही की जामिनी की,
साँझ है दिवाली कि कला की कलात सी ॥
रंग की रजनी कीधौं सजनी मुद मंगल की,
ओप की उपज कीधौं काम कला घात सी ।
जनक दुलारी फुलवारी उजियारी करैं,
मेरो मन हरैं ढरैं रंग रसवात सी ॥

सील सनेह भरे नैन, रस भरे बैन वर,
चैन उर करे मंद, हास चंद करसी ।
चलनि विलास गज, हंसनिकौ हरै मान,
तान गति धरे पाय सहज सरपरसी ।।
मालती चमेली कुंद, मोगरा गुलाब हूते,
अधिक सुगंध प्यारी अंग ही में परसी ।
मोतिन में मनीहूँ में, दीपकनि अनीहूँ में,
सियाजू के अंग ही की ओपछटा सरसी ।।
विष में बंधुकहू में, नवल प्रवाल हूँ में,
मूँगन की मालन में दाडिम के फूल में ।
मेंहदी मेजीहू में कुसुम औ जावक में,
और जग जेती वस्तु ताके समतूल में ।।
जेती है ललाई तेती, सियाजू के ओठनि की,
छीट छाट परी है विरंची कूल कूल में ।
लखनि में चखन में सोइ उजियारी करै,
कोटि कोटि चंद चाह झूलै मुख हूल में ।।
कुल वय रूप गुन सकल समान ताई,
छाई है परसपर प्रीति अधिकाई की ।।
वरन बिशेषताई आई भली अंगहू में,
नव घन दामिनी सी सदा संगताई की ।।
नगर विलोकिवे को आए दोउ भाई तब,
देखि ऐसी इच्छा भई सिया समताई की ।।

एपै शिवचाप कीन बीम्र विधन विचारियत,
पिता सो न कहत बनै बात लाजताई की ॥

॥ दोनों भाई के परस्प वार्त्ता ॥

प्यारी को सुनाय बात कहै लाल लखन सो,
चखन मग आई प्यारी हिय में समाई है।
मिथिला को आवतही मग मै सुघन भयो,
कह्यो सो न लाज बश अवसि भलाई है॥
शंकर हूँ पूजे निज संकर के हेतु नित,
सो तौ मम संकर की मूरति दिखाई है।
प्यारीजू के हेत तो पाताल लै कै स्वर्ग धरौं,
स्वर्ग फार डारौ केती चाप गरुआई है॥
भये जे दिनेश बंश ईस अंस संसनीय,
येका आत पत्र सत्रु जई जस छयो है।
कहै को नदान जाको उपमा न लहै कवि,
जाचक कौ आपने शरीर हू लौ दयो है॥
पंच वीरताई चलि आई कुल आज ही लौ,
काहू पै न अजस दोष लेस हूँ न लह्यो है।
भूपन के भय है स्वयंबर गये है तहाँ,
विन जयमाल गले कौन घर गयो है॥

॥ रामजू वचन सखी प्रीति वार्ता वर्णन ॥

कौसलेश कुँवर की वानी सुखदानी सुनि,
अलि सरसानी उर सिया मोद भारी है।

मन दृढ़ताई सब दूरि लै बहाई,

सब लाज अधिकाई मन तन दसा न्यारी है।।

अली रस रली वात कही कछु प्यारीजू सौं,

रहीं त्यो लजाइ याती नात रसकारी है।

येक सखी सुमन की माल सिय वाल कर,

हाल ही वनाइ दई कही उरधारी है ।।

राघव सुजान कौ सुनाइ अली रंग रली,

वात कही सखी सौं प्रबोध परचारी है ।।

भौंर ही के हेतु ज्यौं कमलनी रची है विधि,

चंद हीके हेतु जैसे जामिनी सुधारी है ।।

काम ही के हेतु जैसे रती वर नारी रची,

इन्द्र ही के हेतु जैसे सची सुखकारी है।

तैसे ही सांवरे सुजान नृप कुँवर काज,

सियाजू को रची रुचि रूप गुन भारी है।।

।। सखीन प्रीति बचन देखो ।।

सुनो मन कान दे कै राघव सुजान बात,

वन्धु सन बोले देखो समता समाज की ।

सुरगुर संकर अहीश सविधि सारदहूँ,

हेरैं हठि उपमा जो तिरहुति राज की ।।

हेरि हेरि हारि बैठे फेरि-फेरि लोकन में,

उपमा न मिलै कहूँ नृप सिरताज की ।

गुन गहवाई चतुराई अति देखियत,
छोटी छोटी कन्याहूँ में जनमी जे आज की ॥

॥ बहुरी गौरी ॥

देर भई शाखन को गहि ठाढ़ी होइहै पग पीरन जोवै।
ध्यान धरै गिरिजा वपु की मिथिलेश लली क्यों समयो खोवै।
पूजन कीजै बहोरि उतै चलि माँगिये जो मन में होवै।
देखिये साँवरो राजकुमार खरो 'रघुराज' महाँ मुद मोवै ॥
दो०-सखि बचन सुनि सकुचि सिय पुनि दृग पल उधारी।
सनमुख गढ़े कुँवर लखि, गई मनहि बलिहारी ॥
नखते सिख लो लखि राजकिशोर सिया चखमें न परै पलकै।
मिलि है मोहि नाथ विशेष दुते हठि होत विसवास हिय झलकै
'रघुराज' न लाज तजे वनतो नहि जात बनै शरणौ कलकै।
छबिको छलकै अलकै सलकै लखि कै हिय में हलकै ललकै ॥
पितुकै पन को सुधि कै पुनि सो पछितातो मनहिं नहि धीरधरै
हर को धनु है अतिहि कठिनै महि पालन को नहि टारो टरै।
'रघुराज' महाँ सुकुमार कुमार कहौ किमि तोरिहै मंजु करै।
विधि ऐसी करौ इनहि के गरे मम हाथन सो जय माल परै।
चाप महेश को होय हरू अवधेश को लाड़िलो पाणि सो तोरै।
वादिन देव दिखाउ हमै जायमाल धरौ इनके गल ठौरै।
'श्रीरघुराज' सदा निरखौ हरषौ यहि औसर जो चित चोरै।
साँवरे होय हमारो पिया अरु देवर होय लला लघु गौरै ॥

देखैं वहोरि वहोरी कुरँगन त्योंहि विहंगन मृगन सीता।
तामिस राजकुमार विलोकति होत अघाऊ नचित्त पुनीत ।।
लालच लागि विलोकन की इति त्यों उतहै जननि ते सभीता
खेलत चित्त से चंग चली ज्यों वाँधि 'रघुराज'के प्रेम पुनीता।

।। फीरहि बहोरी ।।

देखैं बहोरी कहोरी कुरगन त्यौहि विहंगन मृगन सीता।
तामिस राजकुमार विलोकति होत अघाऊ न चित्त पुनीता।
लालच लागि विलोकन की इत त्यौ उतहैं जननी ते सभीता।
खेलत चित्त से चंग चली ज्यौ वाधि 'रघुराज' के प्रेम पुनीता

दो०-देखन मिस मृग विहग तरू फिरइ बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुवीर छवि बाढ़इ प्रीति न थोरि।

जानि कठिन शिवचाप विसूरति चली राखि उर स्यामल मूरति
पूजन हेतु पुरारी प्रिया के अम्बा से आयसु लैवै।
वेगि चलिये अब देर करिये जनि माता बूझब का कहिवै।
भोर आये पुनि भवानी 'मधुर अली' हम वलि जैवै।
दूर सिधारत जानि के जानकी पाटी तहाँ अपनौ मन कीनी।
प्रेम तरंगन रंग अनेकन त्यो मति की लेखनी कर दीनी।
नेह की स्याही जलै अनुरागको 'श्रीरघुराज' प्रिया निज चीनी
'श्रीरघुवीर' कियो तसवीर वनाय सिया हिय में धरि लीनी।
दुरत दरस तिमि जानिकै रचि रचि रुचिर रघुवीर।
चित मिथिलेश कुमारि की रचि रुचिर तसवीर।
प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख सनेह सोभा गुन खानी।

परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही ।चारू चित्त भीतीं लिखि लीन्ही
गई भवानी भवन वहोरी । बंदि चरन बोली कर जोरी ॥
जय जय गिरिवर राजकिशोरी । जय महेश मुख चन्द चकोरी
जय गजवदन षडानन माता । जगत जननि दामिनि दुतिगाता
नहिं तव आदि मध्य अवसाना ।अमित प्रभाउ बेद नहिं जाना
भवभव विमवपराभवकारिनि।विश्वविमोहनि स्नवसविहारिनि
दो०-पति देवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तब रेख ।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष ।
सेवत तोहि सुलभ फलचारी । वर दायनी पुरारि पिआरी ॥
देवि पूज पद कमल तुम्हारे । सुर नर मुनि सब होहिं मुखारे ।
मोर मनोरथ जानहुँ नीके । बसहुँ सदा उर पुरसवही के ॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं । अस कहि चरन गहे वैदेही ॥
विनय प्रेम बस भई भवानी । खसी माल मूरति मुसुकानी ॥
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ।
सुनु सिय सत्य असीस हमारी । पूजिहि मन कामना तुम्हारी ।
नारद वचन सदा सुचिसाँचा। सो वर मिलिहि जाहिं मनराँचा
छं०-मन जाहिं राचेउ मिलिहि सो वरु सहज सुंदर साँवो ।
करूना निधान सुजान सील सनेह जानत रावरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

श्याम सलोनो शील निधि सो तुम्हरो पति होई ।
करूणा कृपा निधान जो सब विधि परम सुजाना ।
सोई हौ तुम प्राणधन यह हमरो वर दान ।
जावहुँ सुख सो भवन अवभ्रम सन्देह मिटाय ।
दो०-जामे तुम्हरो मन रमेउ, सोइ निज प्रीतम पाय ।
रहियो सदा प्रसन्न मनु, आनन्द सिन्धु समाय ।।

।। श्री गिरिजा के प्रन वरदान देना ।।

पूजि भवानी प्रेम जुत, करि विनती करजोर ।
मनही मन माँगत सिया, वर साँवरो किशोर ।।
उहै चमेली दाम, गिरिजा उर पहिराइ सिय ।
सोई करत प्रनाम, गिरिजा सिय को दइ हरखि ।।
पुनि प्रगटी निज रूप, सिय को वर भावत दियौ ।
फेरि भई वहि रूप, सिय पूजी मन कामना ।।
दो०-भली फली यह वाटिका, गिरिजा चतुर सुजान ।
सब वर पायो सीयजू, सुषमा शील निधान ।।
बरबस गइ सिय गेह, सखी संग निज बस नहीं ।
प्रीतम सों अति नेह, देह गई मन इत रह्यौ ।।
पुनि गवने रघुचन्द, लखन संग तन प्रेम बस ।
भई चरण गति मंद, मन दृग प्यारी संग लगे ।।
दो०-गिरजा पूजन जनकजा, फूल लेन मिस लाल ।
भयो मिलन यह दूसरे, मृदु हँसि बोली बाल ।।

निरखु चकोरी चन्द्रमा, उग्यो तिहारे भाग।
भँवर कमलनी रस भरी, बसि वाटिका तड़ाग ॥
फूल लेत करकंज दोउ, नयन पियत रस रूप।
अपर अंग वर दुहुन के, परे विरह रस कूप ॥
अहो डसी वह नागिन, बैठी कदली पात।
चन्द चाप लीन्हें करत, मेरे तन सरघात ॥
हंस निरखि भय होत जिय, सिंघ निरखि तन कंप।
मोहि सतावत है अहो, मूरति वंती संप ॥
बढ़्यौ नेह नद पूर, वह्यौ जात हौं हे सखे।
नौका है अति दूर, कहौ प्राण कैसे रहैं ॥
अरे चलत समसेर, चहूँ वोर तैं चमकती।
सखा नमो तन हेरि, टूक टूक तन के भये ॥
परयौं गंभीरे कूप, को काढे इत आन कै।
गिरि लखि गिरयौ अनूप, चूर चूर तन मन भयौ ॥
हृदय सराहत सिय लोनाई। गुरू समीप गवनेउ दोउ भाई ॥

दो०-सादर चरणन शीश धरि, रघुवर कियो प्रनाम।
पुनि प्रसून दोना दियो, मनमोहन सुखधाम ॥
हिय में सिय मूरति वसी, निरखि निरखि हुलसात।
प्रेम चिन्ह तन में प्रगट, लखि पूछत मुनि वात ॥
नाथ विदेह को वाग वनो, तरु बेलि रती लै मनोज मनलोभा।
ताहि लखै मिथिलेश लली, वरनी जग जासु अलौकिक शोभा

औचक दृष्टि परी हमरी, न फिरी छवि सोछकि मो मनछोभा
संग 'रसरंगमणी' सुलखै लखनौ, इनके चित नेकु न लोभा ।।
धन्यलला विमल तुम वानि,विहीन छलसेरहितसुनिकोनबिकाई
या मन की गति को फल हालहि,कालहि लेहु विजै अधिकाई
भानहि भानुमणी लखि चन्द्रहि चन्द्रमणी ज्यौं द्रवै न रूकाई ।
त्यौं रसराममनी मन छोभित, लोभितभो निज नेह निकाई ।।
रामसदा सुभ होय सुनो, अव सत्य अशीष हमारी ।
मंगल मोद बढ़े नित ही पुनि सिद्ध मनोरथ होय तुम्हारी ।।
दोउ चिरजीवी रहो 'वसुनायक' लायक है सबके हितकारी ।
पूरी है आस हमेस लला, मिलिहै तुमको मिथिलेश कुमारी ।।

दो०-तुमरे मन में जो वसी मूरति सुखमागार ।
शिव प्रसाद सोभा इहाँ आशिरवाद हमार ।।
छके लाड़ाली लाल धरी, भावत छवि दृग ही ।
चलि महल सिय वाल, गुरु समीप गवने कुर ।
राम रसिक रस पान, रहि लाड़िलि ध्यान पगी ।
सिया मोहनि हृदयधरी, राम घुमत चले लखी ।

बिगत दिवसु गुरु आयसु पाई, संध्या करन चले दोउ भाई ।
प्राची दिसिससि उयउ सुहावा,सिय मुखसरिस देखि सुखुपावा
बहुरि विचारु कीन्ह मन माहीं, सीय बदन सम हिमकर नाहीं

दो०-जनम सिंधु पुनि बंधु विष, दिन मलीन सकलंक ।
सिय मुख समता पाव किमि, चंद वापुरो रंक ।।

घटइ बढ़इ विरहिनि दुखदाई । ग्रसइ राहु निज संधिहि पाई।
कोक शोक प्रद पंकज द्रोही । अवगुन बहुत चन्द्रमा तोही ।।
वैदेही मुख पटतर दीन्हे । होइ दोष बहु अनुचित कीन्हे ।।
सियमुखछबि विधुव्याज वखानी।गुरु पहिचले निसाबड़गनानी

।। सवैया ।।

रे विधु कोकन शोक प्रदायक, तू जग जाहिर पंकज द्रोही ।
काम को मीतकरै अति शीत,कियो गुरु को अपकार है कोही।
भाषत श्रीरघुराज सुनै सिय, के मुख की सरि तोहि न सोई।
नीक न लागत मोहि मयंक, बड़ो विरही जनकी निरमोही।
करि मुनि चरन सरोज प्रनामा,आयसु पाइ किन्ही विश्रामा।
विगत निसा रघुनायक जागे, वंधु बिलोकि कहन अस लागे।
उवउ अरुन अवलोकउ ताता, पंकज कोक लोक सुखदाता।
बोले लखन जोरि जुग पानी, प्रगट प्रभा सुचक मृदु बानी ।
दो०-अरुनो दय सकुचे कुसुद उड़गन जोति मलीन ।
जिमि तुम्हार आगवन सुनि,भए नृपति बलहीन ।।
तेहि अवसर तहँ पहुँच विदेहू।मुनिहि प्रणाम कियो अतिनेहू।
यथा योग रामहिं मिलि राजा। हरषि प्रणामी मुनिन समाजा
मुनि संकेत बैठि शुभ आसन। समाचार सब कहेउ सुभाषण।
पानि जोरि बोले नृपराई । नाथ दरश सब शोक मिटाई ।।
दीप दीप के नृपति महाना । आये सब मम प्रण सुनि काना
धनुष यज्ञ पूर्णाहुति काला । जानहिं सब प्रभु हृदय विशाला
अति महि बसहिं नाथ बलतोरे। होय सुफल बिनवहु करजोरे

असकहि भूप अधिक अनुरागे । बारम्बार मुनिहिं पद लागे ।
पानि फेरि सिर मुनि हर्षाई । भूपहिं बोलेउ बचन सुहाई ।
सुकृत स्वरूप भूप बड़ भागी । परम भागवत ज्ञान विरागी ।
तब संकल्प व्यर्थ नहिं जाई । करिहैं शंकर सविधि भलाई ।।
होनी होवै कालि महीपा । देखिहौं विधिकर रचा महीपा ।।
दो०-शयन करहु गृह जाय अब, सब विधि चिन्ता त्यागि ।
ईस चहै सोई करैं, अन्य उपाय न लागि ।।
नृपघर आइभोजनतब करिकै।सयन कियो हरिहरउर धरिकै।
इतै उठे मिथलेश प्रभाता । कियो बिचार बुद्धि अवदाता ।
आजु सुखद शुभ योग सुहावन । शतानंद कहँ चहिय बुलावन
शतानंद कहँ पठयो धावन । लायो तुरत पुरोहित पावन ।
करिप्रणाम विधि पूजि नृपाला।कहेउ विनययुत वचनविशाला
नाथआज अंतिम दिन आवा । लवलगि सुता मन कामनपावा
नृपति सहस्त्रन आइ पधारे । बैठे मनहिं आस अति धारे ।
देखन हेतु यज्ञ फल भारी । आये रंगभूमि नर नारी ।।
दो०-देश बिदेसहिं ते प्रजा, आई आज विशेष ।
समय भयो अतिशय निकट,पूरण यज्ञ द्विजेश ।।
कौसिक मुनि युत राजकुमारा ।अब लगिनाथ नाहि पगुधारा
कृपा कोर मोहिं राउर देखी । जाय लिवावैं उन्हे विशेषी ।
शतानन्द मन महँ मुसुकाई । बोले लावैं अबहिं लिवाई ।
अस कहि चले चतुर मुनिराया । पहुँचे कौशिक पहँ अतुराया
मिले परस्पर युगल मुनीशा । एक एक कहँ नावहिं शीशा ।।

हिलि मिलि दोउपुनि आसन राजे। मनहुँ दिवाकरयुगतहँ भ्राजे
कीन्ह दण्डवत रघुवर श्यामा। सहित लषनभलभाव ललामा
आशिष दीन्ह मुनिहिं हरषाई। पेषि प्रभुहिं पुलकावलि छाई

दो०-जनक बुलाये सचिव सब, दियो निर्देश सुनाय।
यथा योग्य सब नृपन कहँ, बैठा बहु तुम्ह जाय॥

मंत्री सचिव सुसाहिव धाये। लागे सब बैठावन भाये।
रही मंच अवली जो आये। बैठाये राजन बड़ भाये॥
तिन्ह मन बड़पन के अनुसारा। भे आसीन भूमि भरतारा।
तिन्ह पाछे मंचावलि माहीं। बैठाये सब सज्जन काहीं।
तृतीय मंच अवली जो भाई। पुर जनपद दीये बैठाई।
अति उमंग मंदिर चहुँ ओरे। बैठि नारि नर बालक रौरे।
रंगभूमि महँ अति उत्कर्षा। भयो महा मानव संघर्षा।

श्री मिथिलेश जी को रंगभूमि में बुलाना

नाथ सभा महँ धारिअ पाऊँ। आये सकल भूपच्चित चाऊ।
रंगभूमि महँ जुरी समाजा। तव आगमन चहत सबकाजा।
सुनि विदेह भूषन वर धारे। रंगभूमि कहँ समय सिधारे।
सासन भेजि दियो रनिवासा। बैठ झरोखन लगे सुपासा।
मंत्रिन्हयुत मिथिलेशमहाराजा। आयोरंगमहिसहित समाजा।
कस मस परत कढ़त जनकाहीं। अंग अंग दीसै जानु जाहीं।
सिय प्रताप महिमा प्रगटानी। नहिं संकेत पर्यो कछु जानी।
पूरव पश्चिम दक्षिण ओरा। बैठे भूपति मनुज अथोरा।

राज प्रकृति उत्तर दिशि पाहीं । जनकासन ढ़िग बैठत जाहीं ।
फटिक मणी आसन तेहि पाछे । तहँ रनिवास विराजत काछे ।
दो०-कहि सब साज समाज युत, रंग भूमि चलु सीय ।
जाय झरोखा वैठहू, जहँ तुम हार्षित हीय ।।
करि सिंगार विचित्र अति, मोहिन रूप बनाइ ।
नख सिख नवल सिंगार महँ, नवतन अति छवि छाइ ।

।। चौबोला छंद ।।

सब आई पुनि मातु निकट, आहलाद् सहीता ।
जन तिन्ह मोद न थोर, देखि मुख पंकज सीता ।।

।। सवैया ।।

मंत्रि सुजान सुदामन जाहु, निवास जहाँ रनिवास लली को ।
साजि विभूषण अंग सवै, करिकै चहुँ ओर समाज अलीको।।
त्यों रस रंगमणी मुक्ता, वरसावत गावत गीत भली को ।
शंभु शिवापद शीश नवाय, ल्यावहु सीतहि रंग थली को ।।

।। श्री किशोरी जी का आगमन ।।

महाबिमल एक नवल लालकी । वनी हाल की रतन जालकी।
कीन्हीं सीता सुखित सवारी । लिये उठाइ वाहिनी नारी ।
पहिरे अम्बर अंग सुरंगा । भूषण भूसित सुन्दर अंगा ।
दो०-कोइ सखि छत्र लिये कर, कोइ कर चँबर चलाइ ।
कोइ गावति कोइ हाँसयुत, चलती भाव दिखाइ ।।
छरी हजारन संग में रतन, जडित सखि पानि ।
जय विदेह नृप नन्दिनी, बोलि राही वर बानि ।

॥ चौबोला छंद ॥

चली सीय के संग मधुर स्वर मंगल गावति ।
मन उमंग करि विविध भाँति ते साज बजावति ॥
सब साज समाज रंगभूमि के महल झरोखे पै गई ।
दिव्य बिछावन परै सबै मन प्रमुदित बैठति भई ॥

॥ श्री रानियों का आगमन ॥

पुनि आई रनिवास सकल गोतियन संग सोहैं ।
गावंति मंगल गीत श्रवण करि कोकिल मोहैं ॥

॥ श्री बिश्वामित्र श्री सतानन्द सम्बाद ॥

बोले गधि सुवन मति सेतू । कहहू आगमन करि मुनि हेतू ।
सतानंद तब बचन सुनायो । तुमहिं विदेह नरेश बुलायो ॥
कौशल नाथ कुमार समेता । रंगभूमि कहँ चलहु सचेता ।
मुनि समाज संयुत मुनिराई । चले स्वयंवर लखन लुसाई ॥
ईश कृपा को पाय सुजाना । होइहि सबविधि भाग्य प्रधाना ।
सुनत सभा सह लखन कुमारा । बोले बचन प्रभाव बिचारा ।
रावरि कृपा जाहि पर होई । कीर्ति विजय पाइय प्रभुसोई ।
दो०-कौसिक आवत कुँवर युत, कीन्ह चहिय सत्कार ।
सबके ऊपर अवनि महँ, अवध भूमि भरतार ॥
रामलखन सों कह मुसकाई । बैठहु इतै अबै दोउ भाई ॥
जबलगि नहि मिथिलेश कुमारा ।तुमहिं बुलावन कहुँ पगुधारा
उचितन तबिलगि जाब तुम्हारा । तुमसमान नहि राजकुमारा

प्रथम जात हम जहाँ विदेहूँ । जब बुलवैहै तब चलि देहूँ ।
असकहिमुनि समाज तहँराखी। चल्यो विदेह दरस अभिलाषी
पहुँच्यो रंगभूमि के द्वारा । प्रतीहार तब जाय पुकारा ।।
महाराज कौसिक मुनि आये । राजकुमारन सँग नहि लाये ।।
सुनि विदेह विस्मय उर आनी । चल्यो लेन मुनि को अगुवानी
कियो जाय नृप दंड प्रणामा । दिये मुनी तेहि आशिष धामा ।
रंग भूमि लै गयउ लिवाई । हर्षे लखि समाज मुनिराई ।।
सब मंचन ते मंच उतंगा । राज मंच जेहि शोभ अभंगा ।।
दो०-कौशिक को बैठाय तेहि, कियो विविध सत्कार ।
पूछ्यो कारन कौन नही, आये राजकुमार ।।
मुनि मुस्काइ कही तब बानी । अहो विदेह बड़े विज्ञानी ।।
सतानन्द मुनि गये बुलावन । आये हम तब सदन सुहावन ।
वे तो अवधअधीश लाड़िले । आवहिं किमि विन गये कुमारे ।
नहि समान भूपति के दुलेता । राज राजदशरथ दुलहैता ।।
लक्ष्मी निधि तिनजायँ बोलावन।आवहि राजकुँवर मनभावन
सुनि विदेह बोले हरषाई । भलो सिखावन प्रिय ऋषिराई ।
तुम नहि कहहुँ कौन असकहई । तुम सम नही ज्ञाता जगअहई।
पुनि बोल्यो लक्ष्मी निधि काहीं । आयो कुँवर तुरत तहाँहीं ।।
कह्यो विदेह जाहु तुम ताता । आनहु अवध कुँवर अवदाता
लक्ष्मीनिधि पुनि शासन पाई । चढ़यो तुरंग चल्यो अतुराई ।।
कौशिक एक शिष्य पठवायो । राजकुमारन कहि बुलवायो ।
जहाँ अवधेश कुमार उदारा । आयो लक्ष्मीनिधि सुकुमारा ।।

दो०-उतरि तुरग अति दूरते, पगनि चल्यो महि माँहि।
चलि आगे लेते भये, राम लखन तेहि काँहि ॥
मिल्यो परस्पर राजकुमारा । मानहु चंद रबि अगिन उदारा
पूछि परस्पर कही कुशलाई ।लक्ष्मीनिधि बोल्यो सिरनाई॥
रंगभूमि आयो सब राजा । भगिनी स्वयंबर होत दराजा ॥
आप पधारहुँ पिता बोलयो । हय गय रथवाहन पठवायो ॥
प्रभु कहँ जबते गुरू संग लागे । हय गय रथ वाहन सब त्यागे
चलिहौं पगन पुहुमीपर प्यारे । रंगभूमि जहँ पिता तुम्हारे।
कौशिक शिष्य कह्यो पुनि जाई । राजकुमार बोल्यो मुनिराई
गुरु शासनसुनि दोउ रघुराजा ।चले सहित सब मुनिनसमाजा
परम दिव्य रथ रसिक विराजे । अमित सूर्यतेहिलखतहिंलाजे
रथ चढ़ि चले सकल हर्षाया । जय जय शब्द तहाँ शुभछाया।
बरषि सुमन दुन्दुभी बजाई । हरषी सकल सुरन्ह समुदाई ॥
जात राम लक्ष्मीनिधि संगा । पंच शब्द धुनि होत अभंगा ॥
दो०-राम लखन दोउ बन्धु वर, रंग भूमि कहँ जात ।
सुनि सुनि पुरवासी सकल, चले लषन अतुरात ।
चमचम चमकत मेरु समाना । देखत लाजहिं देव विमाना।
बैठक उच्च सिंहासन सोहै । छत्र चमर हलरत मन मोहै॥
दो०-सुभग सुचंचल अष्ट हय, नख निख भूषण धारि ।
श्याम करन यानहिं नहे, सिन्धु अश्व लखिहार ॥
आवत देखि कुँवर नृप केरै। प्रतीहार दूरहिं ते टेरे ॥

महाराज भूपति सिरताजा । आवत अवध कुमार रघुराजा ।
सुनि विदेह आनँद न अमाई । रामहिं लेन चल्यो अगुआई ।
द्वार देश ते चलि कछुदूरी । देख्यो राम लखन छबि पूरी ।
निरखि राम मिथिलेश महीपा ।कियो प्रणाम सिधारिसमीपा
मुनि मंडली महीपति वन्दे । राम लषन लखि भये अनदे ।।
लक्ष्मीनिधि अरु लषन उदारा । किये विदेह प्रणति सुकुमारा ।
दो०-सबहिं प्रवेशेउ हरषि नृप, धनुष यज्ञ थल माहिं ।
राम लषन मधु माधुरी,को कबि वरणि सिराहिं।।
कमल नयन सुठि नाशिका, चिबुक चारु सुकपोल ।
अलक झलक कुण्डल मकर, अधर अरुण मनिलोल ।।
गज मणिहार हिये लसैं, बीच पदिक मणि भास ।
घन उडगन बिच दामिनी, ता मधि नवग्रह वास ।।
बाहु ललित वाजू जटिल, कंकन पहुँचि अनूप ।
कटि रसना मंजीर पद, ठवनि युवा मृग भूप ।।
मुनि पद वंदि चले सहज, हिये न हरष बिषाद ।
हरषे सज्जन भूप सब, मलिन भये मनुजाद ।।

॥ अपनी-अपनी भावना के अनुसार दर्शन ॥

देखि राम सब सभा सुखारी । पायो सर्वस मनहु मुद भारी ।।
जा विधि भाव जासु मन माहीं । ते तस देखेउ रघुपति काही ।
देखहिं महाबीर बलवाना । बज्र देह धरि अहइ महाना ।।
नृप वर वेष असुर जो आये । राम लखै काल के भाये ।।
रहे वीर जे वर नर भूपा । देखे रुद्र सराहन रूपा ।।

नारि बिलोकहिं निज मन जैसा । मूर्तिमान सिंगार उभय सा
पुर नर लखै राम रस रूपा । कोटि मदन मन माह अनूपा ।।
दो०-विदुष बिलोकहिं राम कहँ, विश्व विराट स्वरूप ।
मुख सिर कर पग अमित हैं, वरणि न जाय अनूप ।।
जोगिन लखै एक रस रामा । आतम परम सुख सतचित धामा
जे निमि वंशी नर अरु नारी । देखि स्वजन सम होहि सुखारी
दम्पति श्रीमहाराज विदेह । लखहि राम कन्या पति नेहू ।।
जनकलली सहसखिन बिलोकति।उरअनुराग लजाय सुरोकति
महाभाव रस रूप किशोरी । लखि रामहिं सुख सिन्धु हिलोरी
दो०-शारद शेष गणेश कबि, शिव विधि वेद पुरान ।
सिय हिय प्रेंम सुभाव सुख, कहि न सकत कछु गान ।।
चहुँ फेरि नैननि फेरि पुनि हँसि हेरि बोले राम ।
मिथिलाधिराज गुरुदेव हमारे बैठे कौने ठाम ।।
बोले बिहँसि मिथिलेश जो अति मंच तुँग विशाल ।
कमनीय निर्मित नाग नग तापर गुरुदेव तव लाल ।।
असकहि लषन रघुनाथ कहँ लै जाइ अति सुखछाय ।
मुनि पद कमल सिरनाय दिये दोनों भाई बैठाय ।।
राजत राज समाज महँ, कौशल राजकिशोर ।
सुन्दर श्यामल गौर तन, विश्व विलोचन चोर ।।
देख लोग सब भये सुखारे । एकटक लोचन चलत न टारे ।
हरषे जनक देखि दोउ भाई । मुनि पद कमल गहे तब जाई ।

करि विनति निज कथा सुनाई। रंग अवनि सब मुनिहि देखाई
निजनिज रुचि रामहिसबदेखा।कोउन जानु कछु मरमविशेषा
भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ। राजा मुदित महासुख लहेऊ
तहाँ देव सिय आगम बिचारी। बरषि प्रसून बरषहीं नारी ॥
छं०-अवसर बिचारि भूपति विदेह निज सचिव बोलि सनेह।
रनिवास जाय दीजै जनाय सिय माता सीतहिं पठाह ॥
सियधनुष पूजि जब करि फेरी। तब हम सुनाइहैं प्रनकरि टेरी
दो०-शिव धनुष पूजन हेतु सिय, आवैं इत अतुराइ।
सुमति सचिव शासन,सुनत दिये रनिवास जनाइ॥
पति अनुशासन सुनि तहाँ, हुलसि सुनैना रानि।
चतुरी सखी बुलाइ कै, बोली मंजुल बानि ॥

॥ धनु पूजा हेतु श्रीकिशोरीजी का आगमन ॥

धूरि जटी के धनुष को, पूजन साज लिवाय।
जाहु जानकी लै अवहि, शुभ श्रृंगार बनाय ॥

॥ चौबोला छन्द ॥

इत सखी साजि श्रृंगार सिया को मंडप महँ लाई।
पिक बैनी कर गान महा आनन्द समाई ॥
अद्भुत सिय छबि देखि थकित सब सभा विमोही।
सज्जन मन अनुराग दुष्ट मति सोच समोही ॥
वरमाला कर कंज सुठि सखिन मध्य सियराज।
सुखमा तनु धरि अमित मधि, परतम सुषमा भ्राज।

सुर पति गज विधिहंस निरखि गति लाज समाये।
तन दुति सिय की निरखि दामिनी अंग छिपाये ॥
सँग सोहि निज सखी प्यारि स्वयंवर छवि अति छावही
कोइ स्वर्ण छड़ी करन कोई सरस बैन उचारही ॥
कोऊलिये झारी कनक थारी, लिये मँजन कोय।
कोउ लिये माल विशाल कर उरमाल कोउ मुदमोय ॥
हेम की मणिमय जड़ी कोइ छड़ी लीन्हे पानि।
बोलत चली आगे अली शोधक लनी छवि खानी।
गहगहे बाजत गावत गीत मंगल किये मंडल मंजु।
कोउ बाल विरद बखानती गति ठानि गजगति गंजु
एहि भाँति प्रविसि रंगभूमि विदेह सुकन्या आय।
मनु नखत मंडल में अखंडल पूर्ण चन्द्र सुहाय ॥
उठि उठि सबै देखन लगे भाषत परस्पर बैन।
मिथिलाधिराज ललीभली आवति चली चितचैन।
कोउ कहहिं अवहिं रहहु दुहिता करहु कस बँकवाधि।
बैठे रहे मिथिलेश मंदिर ठानि अचल समाधि ॥
जे रसिक साधु सुजान भूपति सुनत बचन कठोर।
ते देत उतर उमगि अमरष घोर करि तहँ शोर ॥
हम सब लरब सिय हेतु हठि घर रहे बैठि विदेह।
सिय ओर ताकत मारि बाणन करब छाती बेह ॥
दो०-सिया कोलाहल सुनि डरी, खड़ी समाज मँझार।
चितवति है चिहुँकित चित, कहँ है राजकुमार ॥

॥ चौबोला छन्द ॥

चाप समीप गई बैदेही सखिन समाज समेता ।
राजन लषण ब्याज निरख्यो तहँ उभय भानुकुल केता ॥
लागी पूजा करन धनुष की मन रघुपति पद लागा ।
धूप दीप नैदेद आदि सब दीन्हो सहित विभागा ॥
जेहि दिशि भानुकूल नायक तिहि दिशिहूँ सिय ढ़ाठी ।
कर सों पूजति शंभु सरासन हिये राम रति बाढ़ी ॥
कर सों फेरति धनुष आरती मन सो प्रभुहिं उतारै ।
मानहुँ सबकी लगी दीठि गुणि आरती मंत्रनि झारै ॥
हेत प्रदक्षिण घूमि के जब प्रभु सन्मुख आवै ।
करत बात अलिन के ब्याजे तहाँ कछुक रूकि जावै ॥
यहि विधि चारि प्रदक्षिण देके कियो प्रणाम पुनीता ।
मनही मन विनवति महेश को समुझि पिताप्रण सीता ॥
कछुक मानि आनंद जानकी धनु पूजी तेहि काला ।
चली बहुरि जननी समीप कहँ लै सखि बृन्द विशाला ॥

दो०-अवसर जानि विदेह तहँ, बंदी जनक बुलाय ।
शतानंद अभिमत सहित, शासन दियो सुनाय ॥

समय जानि जब जनक बुलाये । बन्दी विरद कहत तहँ आये ।
कह विदेह मम प्रणहि सुनाई । आज अंत दिन कहहु बुझाई ।
सुनत बंदि तुरतहिं चलि दीन्ही । नृप समाज बोलन चितकीन्ही

॥ प्रण सुनाना ॥

सुनहु सकल नृप सभा मझारा । कहहिं नृपतिकर सतप्रणसारा

शंभु चाप बड़ गरूअ कठोरा । त्रिभुवन विदित महावरजोरा
राबण बाणबीर वहु आये । देखि चाप सब गवँहिं सिधाये ।
तोरहि धनुष आज जो राजा । सीय बरहिं सो बनि कृतकाजा
विजय माल सीता पहिरावइ।कीर्ति विजय सो सबबिधिपावइ
दो०-जानिय जिय अंतिम दिवस, मनहूँ भरि उत्साह ।
यतन करहु खंडन धनुष, सुनहु सकल नरनाह ।।
बीते अवधि आज सब सुनहू । विफल प्रयास सवन्हकर सुनहू।
सुभट सुरक्षित रतन अटारी । बैठी सिंघासन सिय सुकुमारी।
सखिन्ह मध्य जस सोह सुहाई । लखहु अमित चंदा छबिछाई।
पानि सरोज लिये जयमाला । बैठी करत प्रतीक्षा काला ।
अमित प्रभाव न कछु कहि जाई । तेज आपको विश्व जराई।
रूप राशि गुनशील अपारा । धर्म सुकृत सुख यशहिं पसारा।
कहहु काहि यह ईश्वर करहीं ।धनुष भंजि जो शुचिसियबरही
अस कहि वन्दी दुंदुभी दीन्हा ।मेघ शब्द सब कोउ सुनिलीन्हा
दो०-पुरवासिन्ह की हिय दशा, प्रीति रीति सरसात ।
काह कहैं कबि बुद्धि पर, मनहुँ वहाँ नहि जात ।।
श्यामल रघुबर गौर किशोरी । देखि सबहिं भै प्रीति अथोरी।
नैनन देखहिं युग छबि मोही । प्रीति मनहुँ बहुतन धर सोही ।
अति अभिलाष सवन्ह के एही । सोहन श्याम योग वैदेही ।
जनक लाड़िली लायक रामा । जानि न जाय काह परिणामा।
॥ कवित्त ॥
पच्छिम ही दिशा के नरेश महाबली दोउ ।

उठत विबाद भयो आपस में भारी है।
बीच मकरंद करि कह्यो बल भनौनिज।
ताको बल भारी सो प्रथम अधिकारी है।।
भके गज तीन बल कह्यो एक चारि सो मैं।
तुरत मँगाई आगे दिये दान धारी है।।
कही मकरंद द्वंद कीजै अजमाइ बल।
चाप ढिग जाइये निवेदन हमारी है।।
चल्यो चौगजी धाइ धरयो दोउ दशन कर।
कर में लपेति फेंक्यो भयो नभ चारी है।।
तमकि धायौ त्रिवली बली के समीप त्यौ है।
लपेटा सुडमुँड बदन पसारी है।।
भयो हाहाकार देखि-देखि डरै लोग सब।
पकड़ पीलवान लै गयौ बल भारी है।।
भक्त नृप बोले या चाप आप शंकर को।
दाप निज करौ याहि धरै जो खरारी है।।
बिहँसि मकरंद बन्दि बोल्यो विदेहजू सो।
भइहैं उचित चित धोखो जिन आनिये।।
चाप महादेव जू कौ बड़ो देव जानौ याहि।
प्रेरक प्रसिद्ध बलिदान लियौ जानिये।।
धारयो तो सोइ चाप आप शिव सेवै जाहि।
और को मनोरथ सो पाप जाप मानिये।।

तीन काल जानि आप सब रीति रुड़े,
पूड़े लेई सजे जो जो राउउर ठानिये ॥
इतने हि आयो है सुरारी असिधारि कर,
हेरि फेरि देखे निज रूप को छिपायो है।
गुँज तौं प्रचारि वल पुन्ज कहो कौन तुम,
नाम निज कहौ सुनि कोप उर धारो है ॥
कहि तब गुंज जश पुंज न छिपावैं नाम,
दोषी ते दुरावे रूप छलि छोट तायो है।
तब कहि मेरा इतने ही चित चेत आयो,
कहि एक बीर स्व जननी को जायो है ॥
बोल्यो गुंज अहो एक बीर दस कंध अहै,
और पास में कोउ श्रवण में न आयो है।
तब सो विचारि मन बन्दिवर बुद्धि अहो,
तर्क वेद पाठि कछु जाननी सो लायो है ॥
प्रगटानौ है रूप निज भूप भय मान उठे,
जोरि जोरि हाथ प्राण उठही में ठायो है।
कहि मन बन्दि भई बात अति मन्दी,
अब याको उपाव सहस बाहु अजमायो है।
गुँज मती पुंज रचि वाने एक युक्ति तब,
कहि अहो आये यो सहस बांहु बीर है।
वाको सात बीस की पच्चीस हूँ कि तीस हूँ की,
तीस खीस मै उठाई धरै योधा बड़ौ दीठ है ॥

बोल्यो दस भाल कोऊ असुर को साल आयो,
आरत सुनायो शब्द भई उरपीर है ।
इतने हि कहत परायो है गगन मगन,
यो लोग गयो ज्यो प्रलय को समीर है ।।

।। रोला छन्द ।।

गयो असुर तब उठे भूप भट सठ उर दापा ।
तमकि तमकि ताकि धरै टरै नहिं नेकहूँ चापा ।।
हारि मानि उर भूप नारि नीची चलि आयी ।
बैठे अपनी ठौर मौन निज भरम गमायी ।।

।। छन्द तोतक ।।

सुनिके मिथिलेश महाप्रण को,नृप मोद भरे धनु तोरन को ।
भुज दण्ड उमेखी उठे तुरंते,धनु त्रीन गुनो गारूता गिरिते ।।
कोउ मोछन पै नृप ताउ दये, कोउ मन्दहिं मन्द मिजाजभरे।
कोउ बाहु सकेलत धाये पड़े, कोउ भूप सरासन सौंह गये ।।
कोउ आपस में झगड़े करते, यक एक उठावहु क्यों डरते ।
मिल के सब चाप उठाबहुना, एकबार समीपहि आवहुना ।।
तिनिमें कोउ मल्ल महीप रहो,पुट जाय धनुषहिं पानिगयो ।
करिजोउ महाअतिशोर कियो,मनुखैंचि सरासनहिं ऐचिलियो
गिरिगों मुंह के भरभूमि तहाँ,चलि बैठे पराय लजाये महा ।
कोईदेखिमहीप धनुषउठायो नहीं,नजायसक्यो तेहि लाजकियो

।। सवैया ।।

ज्यों ज्यों करै नर नायक जोर हरै पुनि आसन बैठहि आई ।

स्वेत भरे मुख हारे हिये, वल पौरुष कीर्तिहिं गेह गमाई।
त्यौं-त्यौं सवै मिथिलापुर के जनक राजन को हँसि हेरिढिठाई
श्रीरघुराज मनावैं विरंचि दलैं शिव के धनु को रघुराई॥
दो०-कीर्त्ति बल विक्रम विगत, नृपन देखि करि हाँस।
कहहि लोग भूपन जिमी, विन विराग सन्यास॥
तमकि धरहि धनु मूढ़ नृप, उठइ न चलहिं लजाइ।
मनहु पाइ भट वाहुबल, अधिकु अधिकु गरूआइ॥
भूप सहस दसएकहि वारा। लगे उठावन टरइ न टारा॥
डगइ न शम्भु सरासनु कैसे। कामी वचन सती मनु जैसे॥
सब नृप भए जोगु उपहासी। जैसे विनु विराग सन्यासी॥
कीरति बिजय बीरता भारी। चले चाप कर बरबस हारी॥
श्रीहत भए हारि हियँ राजा। बैठे निज-निज जाइ समाजा॥
नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने। बोले बचन रोष जनु साने॥
दीपदीप के भूपति नाना। आए सुनि हम जो पनु ठाना॥
देव दनुज धरि मनुज सरीरा। बिपुल बीर आए रनधीरा॥

॥ बचन जनकजी ॥

दो०-कुअँरि मनोहर विजय बड़ि, कीरति अति कमनीय।
पाव निहार विरंचि जनु, रचेउ न धनु दमनीय॥

॥ कवित्त ॥

दिग्गजन कानन लो कीरति करन हार,
राजन समाजन में ना कोई वीर बाँचा है।

जाहु जाहु भूप सबै मौन सी चलैं,
मुदित मजे में मौज कीजै पौढ़ि माँचा है ।।
रघुराज आज वसुधा में कोई बीर हो तो,
पुरतो हमारो प्रण धर्म को न काँचा है ।
ताते अस लगै मोय धनुष तोरैया वीर,
कुँवरि वरैया न विरंचि विश्व राँचा है ।।
दो०-तजहुँ आस अब ब्याह की, जाहु भवन नरनाह ।
लिख्यो न प्रण पूरे बिना, वैदेही का व्याह ।।

।। लखनलाल जी बचन ।।

बैठ्यो सुजानु मनौ मृग नायक, श्रीरघुनायक के दृग देखैं ।
कंपत गात न आवत बात, अघात अमर्ष करै अति शेखै ।।
श्रीरघुनाथ कमान सी भौंहे, लखै तिरछोह विदेह विशेखै ।
रामकी भीति सो बोलि सकै नाहिं,राखिसकै नहीं रोष अलेखै
दो०-तहँ विदेह के बचन शर, भये लखन हिय पार ।
जोरि पाणि पंकज प्रभुहि, कीन्हो विनय उदार ।।
सुनहुँ दिवाकर कुल कमल,हौं तिहरो लघु भाय ।
जन्म पाय रघुवंश महँ, अस को सकै सहि जाय ।।

।। कवित्त ।।

कमल नाल के समान चाप को चढ़ाई कर,
छत्रक के दंड के समान तोरि डारो मैं ।
करतो निरुत्तर जनकजी को नीके यों पै,
इहि वल फल पाय अतिहीं बिचारो मैं ।।

प्रभु की सपथ पूर्वोक्ति जो करो ना तो पै,
फेरि धनु हाथ भाँय कहि में न धारो मैं ॥
कन्दुक समान ब्रह्माण्ड को उठावौं नाथ,
काँची मृदु घट के समान फोरि डारी मैं ।
सोरठा-मन्द मन्द मुस्काय, रघुनन्दन रनधीर मणि ।
नैनन सैन चलाय, किन्हो वारन बन्धु को ॥
दो०-प्रभु नयनन की सैन लखि, लखन वंदि पद कंज ।
भये मौन छवि भौन तहँ, करि महीप पद गंज ॥
॥ कवित्त ॥
अरुण नयन जब लषन बखाने वैन,
सिय हिय प्राची सुख सूर प्रगटाने हैं ।
लोक पाल माने मोद सुकबि बखाने यश,
मिथिला नगरवासी धीरवर जाने हैं ॥
रघुनाथ मंद मंद मुदमुसक्याने मन,
विश्वामित्र पाणि पीठि फेरे सुख माने हैं ।
मिथिलाधिराज सकुचाने त्यों डराने भूप,
बाहरी समाने जल खग से सकाने हैं ॥
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी । बोलत भे अवसर जिय जानी ॥
सुनहु विदेह भूप मति माना । जो अब तुम ये बचन बखाना ॥
सो अनुचित रघुकुल मणि आगे । इनको वचन वाण समलागे ॥
लखन कही सोऊ लरिकाई । वचन वदत कहुँ बीर कहाई ॥
जो अनुसासन होइ तुम्हारे । धनु समीप अब राम सिधारे ॥

करहिं जतन तोरन की येऊ। और न जाहिं भूप तहाँ केऊ ।।
मख कौतुक देखन चित चाये। मेरे संग कुँवर दोउ आते ।।
धनु दरशन परसन अभिलाषा। येऊ अपने चित करि राखा।
जो राउर अब होय रजाई। धनुष समीप जायँ रघुराई ।।
दो०-सुनि प्रिय विश्वामित्र के, बचन विदेह बिचारि।
बोल्यो पद वंदन करत, नयन बहावत वारि ।।
का कहिये मुनि नहि कहि जाई। कोमल कुँवर धनुष कठिनाई
प्रण परिहरे न होत प्रवोधा। हारि रहे जगती के योधा ।।
जो मम भाग्य विवस रघुराजू। तोरहु शंभु सरासन आजू ।।
तौ मुनि इनहिं छोड़ि मम बाला। काके गल में जयमाला ।।
तुम जानहुँ हमरी गति सिगरी। जानहुँ सोउ वात जो बिगरी।
समय सुहावव जानि पुनीता। बोले रामहिं परसि सुप्रीता ।।
उठउ लाल धनु निकट सिधावहु।भंजि ताहि नृप त्रासमिटाबहु
सुनत राम गुरू मुख वर वानी। कीन्ह प्रणाम न कछुहियआनी

।। मुनिजी आज्ञा रामजी का चलना ।।

गुरु पद पंकज पुनि प्रभु लागे। सहित मुनिन सन आयसु मागे
गुरु निदेश अघटित घटवाऊँ। होनहार हठि तुरत मिटाऊँ ।।
गाधि तनयशुभ आशिष दीन्हीं।विजय पत्र जनुकरलिखदीन्ही
पुनि-पुनि चरण वन्दि रघुवीरा। सहजहिं चले हरण जनपीरा
गज मदमत मन्द गति कारी। रसरस चलत मदन मन हारी।
दो०-कमल नैन सुठि नासिका, चिबुक चारु सुकपोल।
अलक झलक कुण्डल मकर अधर अरुण मनिलोल ।।

गज मणिहार हिये लसैं, वीच पदिक अति भास ।
घन उड़गन विच दामिनी, ता मधि नवग्रह वास ॥
बाहु ललित बाजू जटित, कंकद पहुँचि अनूप ।
कटि रसना मंजीर पद, ठवनि जुवा मृग भूप ॥
मुनि पद वँदि चले सहज, हिये नहरष विषाद ।
हरषे सज्जन भूप सब, मलिन भये मनुजाद ॥

॥ छन्द ॥

जनु सिंह सावक मंदरहि तिमि चलत रघुवर मंचते ।
मनु मत्त मोहत मंद गज कहँ चलत कोमल कंजते ॥
छवि मूर्ति राजित राजरस तम हरन जनु दिनकर चले ।
पुनि लाज लाजित व्याह के सुठि सकुच हरषन चखभले।

दो०-नयन लजीले अति भले, ताकत जाकी ओर ।
मुख प्रसन्न मृदु हाँस से, देत सबहिं रसवोर ॥

चलत राम सुर वरषहिं फूला । जय जय कहि मुद मंगल मूला
पुर नर नारि मगन अति होहीं ।चलत राम पुलकित अँगसोहीं
रामरुप सौंदर्य निधाना । सुठि सुकुमार न जाय बखाना ॥
माधुर सिन्धु सुखद सुठि श्यामा । कोटि काम लावन्य ललामा
लखि लालित्व वरनि नहि जाई । संकेतहि करि कछुक जनाई
पुनी सुमोहन रूप अकामा । सबहिं लोभायो ललित ललामा ।
सुठि सुकुमार देखि नरनारी । करहि हृदय भ्रम संयश भारी
पंचदेव विनवहिं अति प्रेमा । होहिं सदा रघुनायक क्षेमा ॥

सकल सुकृत फल सौंपि सुचाहैं । तोरहि राम धनुष सुखमाहैं।
कमल नाल इव धनु टुटि जाई । चाहीं सकल सोदेव सहाई ।।

।। पुरजन बचन ।।

जनकप्रणाम कीन्हमुनि राजहिं।विनय करतअति प्रेमसुलाजहिं
नाथ राम बहुत सुकुमारा । चाप कठोर कराल अपारा ।।
वार वार विनवहुँ कर जोरी । मंगल मंगल राम को होरी ।।
सियसों अधिक रामकर सोचा ।सत्य कहहुँ तजि सकलसंकोचा
दो०-मंगल देखहिं राम नित, मोर इहै अभिलाष ।
सब समर्थ मुनिवर्य है,सब विधि राम सुपास ।।

।। चौबोला छन्द ।।

भूमि व्योम के बीच जिते भट भूप अनूपा ।
किन्नर सुर गंधर्व असुर आये रचि रूपा ।।
भरे सभा के बीच हिये अभिलाष उघारी ।
इन्हैं निरखियों भये ऊड़गन उदय तमारी ।।
पुनि लखि लच्छन अंग के, हम कीन्हें विस्वास ।
विजय वंधु के जोग ये, और सबै उपहास ।।
एक छत्र नृपताइ आइ रेखा इनके कर ।
अजित सर्व जित रेख दीर्घ आयु सुभोगकर ।।
इनहीं के वरमाल लाभया लिख्यौ विरंची ।
यहि तोरैं हर चाप दाय सबहीं को वंची ।।
पुरुष प्रसिद्ध पुरान वदे हम, नीकौ लियौ विचारि ।
कछु न संशय कीजिये, तोरैं धनुष पुरारि ।।

॥ श्रीमाताजी बचन ॥

दो०-छोटो छविलो सावरो, कोशल राजकिशोर ।
मत्त मतंगज गवन करि, चलो जात धनुओर।
झाँकि झरोखन ते तहाँ, जनकराज पटरानि ।
सखी सयानि बुलाय ढ़िग, बोली विस्मित बानि ॥

॥ सवैया ॥

ये हो सखि अवधेश कुमार, वड़ों सुकुमार लगे शुचि लोना।
कौंशिला वारो तथैव हमारो,विलोकि कै कोई करै नहीटोना
चलिकै रघुलाल के मोल विशाल, में दै दै सुनील दिठौना ॥
काजकियो मुनि को रघुराज पै,मोहि तो लागै मरालसोछौना
युवा वयस मृदुगात अनोखो । कोशल पाल वाल चित चोखो॥
महाभीम भूपति बलवारे। राजकुँवर सम कौन निहारे ॥
बैठे शीश नवाय नरेशा । सके न उठाय धनुष महेशा ॥
लखुसखि छोटेकुमार छबीलो ।चलो जात जिमि गजगरवीलो

॥ छप्पय ॥

सखि नृप सुत सुकुमार अधिक शिव चाप कठोरा ।
लखि मन परम अधीर वात यह होत अजोरा ॥
परम विवेकी भूप मोर पन गह्यौ विसेषै ।
नेक न आयो क्षोभ यह मृदु मूरति देषै ॥
जग की जीवन मूरि जो कछु इनको होय ।
मन पछताइये जनम लौं भली कहैनाहिं कोय ॥

अबहिं कछु नहि भयो कहो कोउ नृपहिं बुझाई ।
नृप बालक सुकुमार किये हठ कछु न भलाई ।।
बड़े बड़े भट भूप हारि बैठे न बसाई ।
बेधि सकें नहि बज्र छिद्र तहँ सूत सलाई ।।
जो अति हठ निज बचन को तो धनुकर परसाई ।
वरै सियावर साँवरो जयमाला पहिराइ ।।
बड़ौ अचंभो होत चाप कह हस्यो विवेक ।
भोरी भई सब सभा बूझ नहिं हंश विवेकू ।।
नाहक जुरि सब भीर तिन्है अव बिदा कराई ।
सुन्दर वर सिय जोग सो वरौ अति सुखदाई ।।
भलि भाँति व्याहिये सुता ज्यौं जगमें सुजस छाय ।
हितू हमारो होय सौं तो अस कहै बुझाय ।।
पन जस करतो कहा सखी यतौ अधिकारिये ।
कंचन को गिरि देखि कहा छाती पर धारिये ।।
प्राण पियारी सुता शील सुषमा की रासी ।
ताके सुख संतोष करै चाहै जग हाँसी ।।
सव मन मानी सब कही सिय साँवर वर जोग ।
सो हौं सो कैसे करै कहिकै वात अजोग ।।
जोपै होवति संशय वाता । नाहीं पठवति मुनिवर ज्ञाता ।।
ये वाल बुद्धि तेज के भवना । जानि परय असमुनि धनुभँजना
अवशहि तोरिहैं धनुष विशाला ।सिय पहि रहैं राम उर माला

दो०-सुनि जानकी जननी वचन, बोली सखी सुजानि ।
देवि मोरी विनती सुनौ, मनकी तजहु गलानि ।।
महरानी जेनि सोच कुँवर नीकै धनु तोरैं ।
वत्सल तुम्हारौ भाव हरौ बालक वय भोरैं ।।
प्रबल प्रतापी अहैं सखी देखत के छोटे ।
इनके भुजबल सहस अनेकन भट भुवि लोटे ।।
गिरि सम मत्त गयंद बहु के हरि बालक देखि ।
भागत अति भय मानि कै त्यौं प्रताप गति लेखि ।।
थोरी हूतै थोर सूर ससि परित परेखौ ।
हरे विश्व तम तोम ब्योम वसि त्यौंउर देखौ ।।
मंत्र वरन द्वै तीन पंच षट वीज विसेषौ ।
ताके वस नरभूत विधि सुर हरि सेषौ ।।
अरि सासनि करि तेज बल राजत बाल नरेश ।
रानि न लेहि लघु मानिये नर सम नर न विशेश ।।

।। जानकी बचन ।।

चाँप समीपहिं जात, जनक नन्दनी प्रभुहिं लखि ।
अतिशय जिय अकुलात, प्रेम विवस भूली सुरति ।।
यहि विधि सोचत गौरी मनाई। मनही महिं शुचि शीश नवाई
देवि वचन तव बृथा न होवै । धनुष तोरि रघुपति मुख जोवै ।
सुनहु शिबाशिव विनय हमारी। होय हरूअ धनु राम निहारी।
मनक्रम वचन राम की दासी । कीन्ह हिये प्रण मैं गिरिजासी।

राम बिना नहिं राखहिं प्राणा । जानहु सब शिवशिवासुजाना
जानि सियहिं नव नेह बिहाला । रघुपति ताकेउ धनुषविशाला
मनहु बतायो धीरज धरहू । विन श्रम चाप खंड द्वै करहू ।।
सोरठा-यहि विधि करत विचार, धरत धीर नहिं जानकी ।
लखि अवधेश कुमार, कोटि कल्प बीतत पलहिं ।।

।। चौबोला छन्द ।।

सिया लखत रघुलाल सखिन मधि दीठ छुपायौ ।
बढ़यौ प्रनै नव नेह प्रेम प्रगटत हूँ दुरायौ ।।
मनहि मनावत सिवा सहज करूना गुन रासी ।
शंकर चाप कठोर सुरति करि अधिक उदासी ।।
कछु मिस करियै कांत लै चतुर सखी समुझाइ ।
धीर धरावत भीरु लखि लै लै गोद बिठाइ ।।
अली मानु विश्वास सपन मैं आजुहिं देख्यौं ।
ये नृप सुत गलमाल दई धनु खंडित पेख्यौं ।।
सुर दुंदुभी बजाइ कलप तरु सुमन वरेष्यौ ।
ह्वै है साँचहि साँच सखी दशा पाँच परेख्यौ ।।
इतने ही वाईं भुजा सिय की फरकन लाग ।
चाप निकट पहुँचे नवल निरखि कहौं अनुराग ।।
चाप निकट जब गये राम रवि अन्वय मंडन ।
निरखि लखन जिय संक चाप सहलोकन खंडन ।
चाँप अटनि महि चाँपि बीर बोले बरबानी ।
घन इव अति गंभीर दुष्टजन को भयदानी ।।

सुभट तिलक रघुवंश मनि, खंडत हरको दंड ।
मम दिनेश चित चेत करि शेष धरहु ब्रह्माण्ड ।
दो०-क्षनक्षन वीतत कल्प सम, धीर धरत नहिं प्रान ।
सीय दशा लालहिं लखैं, मन वाणी पर जान ॥

॥ चौबोला छन्द ॥

राम सिया मुख देखि धनुष पुनि केहि विधि देख्यौ ।
वैनतेय लघु व्याल सिंघ गोमाय समेख्यौ ॥
पुरजन परिजन सहित प्रिया अति व्याकुल जानी ।
लाघव लियौ उठाइ चाप विनु श्रम पुनि तानी ॥
तुरत कियौ धनु खंड तब शब्द रहयौ अति छाइ ।
महामोद मंगल भयौ सुर दुंदुभी बजाइ ॥
दो०-लेत चढ़ावत खैंचतहि, लखै न देखन हार ।
संप्रवेग रघुनाथ की, निमिष लगी नहि वार ।
धरयो राम कर कमल कठिन को दंड पुरारी ।
गगन गोल सम भयौ दमलि दामिनि इमि भारी ॥
होत खंड धुनि चंड प्रलय में धुनि अनुहारी ।
विकल भये सुर असुर चकितयौं रह्यौ विचारी ॥
दिग्गज किये चिक्कार अति, महिसागर डगडोल ।
कचक चाँपहिं अहि कमठ गहि गच गचायँ गोकोल ॥
भभरि भानु हय भगे सारथी सकल भुलानी ।
क्षीर साइ प्रभु जगे नींद भयमानि परानी ॥

॥ धनुष भंग ॥

रमा रमकि भय मान कंत गल त्यौं लिपटानी ।
विधि वानी के हंस क्षमुख वाहन गति ठानी ॥
भगे भरकि शिव नन्दिहूँ उड़े गरुण अकुलाय ।
गन मूषक खोदत मही अहिमुष निरखि डराय ।
पुनि जय जय धुनि सुनी भयोचित चेत सवनके ।
तोरयो रघुवर चाप संभु कौ कोमल तन के ॥
हरर्षाहि देव वरषहिं पुहुप दुन्दुभि हनहिं सुभाय ।
जय जय वोलत सुख छये,रामहि रमत अघाय ॥

धनु दुइ खंड राम कर दीन्हा । हरषे सकल पाइ जल मीना ॥
विनु श्रम सहजहिं विन सुख फूले। ठाढ़े राम सबहिं अनुकूले ॥
तुरतहिं आतुर श्रीनिधि लाये । रत्न सिंहासन मुनि मन भाये॥
रत्न जड़ी धनु वेदी बीचा । धरेउ भावभरि प्रेमहि सींचा ॥
बैठे राम कृतज्ञ कृपाला । प्रणत पाल प्रण आपन पाला ॥
सिय सुख वरणि सकै नहिं कोऊ । शेष सारदा गणपति सोऊ॥
आनंद सिंधु मगन नरनारी । पाय सुकृत फल भये सुखारी ॥
क्षनक्षन देव वजाय नगारा । गह गह गगन भरेउ रवसारा ॥
शिव चतुरानन सिद्ध ऋषीसा । स्तुत करत विमानन दासा ॥
जय जय कहि बहु वरषहि फूला । स्रग सुगन्ध रंगहु मनभूला ।
नाचहिं गावहिं सुर वर वामा। कहि जय जानकि जीवनश्यामा
गगन कोलाहल आनँद छायो । देव मगन मन मंगल गायो ॥

पुर महँ वाजे विपुल निशाना। झालर झाँझ शंख घड़ीनाना॥
ढोल मृदंग भेरि सुखदाई। दुन्दुभि सुखद सरस सहनाई॥
दो०-जनक सुनयना मन मुदित, आनन्द हिय न अमात।
दम्पति निमिवर लाल की, सुख समृद्धि अधिकात॥
कही सुनैना जौन सखि, राम तोरिहैं चाप।
सो उठि पुलकि प्रणाम किये,मिली रानी उठि आप।

॥ छन्द ॥

पहिरे रही जो वसन भूषण जड़ित रत्न अपार।
सो दियो ताहि उतारि रानी तनक तन न सम्भार॥
गुरूजनन को वंदित सुनैना कहति बारहिं वार।
पूरण मनोरथ भयो मेरो, पूर पुण्य तुम्हार॥
तहँ सूत मागध विरद बंदी बिरद करहिं बखान।
तोरयो महेश को दंड दशरथ कुँवर सींक समान।
नारि करहि मुद मंगल गाना। सुनि सुनि होवे मोद महाना॥
नटहिं नर्तकी भाव बताई। प्रेम विवश तन दशा भुलाई॥
बरषहि सुमन नगर नर नारी। बैठे रामहि लषन सुखारी॥
करहिं निछावरि मणि गन चीरा। सबहिं लुटावत प्रेमअधीरा
अमित दान दीन्हे सब काहु। आरति करहिं मुदितमन माहू॥
पुरवासिन सुधि भूलि तनकी। नृप समाज हिय आनँदभरकी।
आनंद सिंधु मगन त्रैलोका। सुर नर मुनि सब संत असोका॥
दो०-सतानन्द आनन्द भरे, गये तुरत रनिवास।
कह्यौ जानकी जननि सों, अब कीजै अस आस॥

साजि श्रृंगार गावत मधुर, सरस नवेली बाल ।
सियहिं पठावहु राम के, मेलै गल जयमाल ॥

चली जानकी लै जयमाला । पहिरावन को दशरथ लाला ॥
सोहहिं सुदरि संगहजारन । सुर दारा सम किये श्रृंगारन ॥
महा भीर सब राज समाजा । खर भर मचि रह्यो दराजा ॥
सुनत सखिन मन मोद अपारा । सीतहिं चली लिवाय सुदारा
परत पाँवड़े मखमल शोभित।कनक खचित कोमल मनलोभित
मंद मंद पग धरति लजाती । सीता चली मनहिं हरषाती ॥
कर सरोज शोभित जयमाला।लसत सखिन विच मूर्तिरसाला
नख शिख शुभग मनोहर ताई । कहि न जाय मनही मन भाई
शशि सतकोटि सुभगप्रिय आनन।अमित कोटि शतलक्ष्मीवारन

दो०-अमित अण्ड सौन्दर्य प्रिय, सिमिट होइ इक रास ।
सिय शोभा इक अंशकन, लाजत कोटि प्रकाश ॥

अंगअंग दिव्य भूषण सोहे । लषत त्रिदेवहुँ मन तहँ मोहे ॥
कनक सूत्रवर साड़ि सुहाई । सुभग अंग अतिशय छवि छाई ॥
कंकन किंकिनि नूपुर बाजत । रुनझुन रुनझुन सामहु लाजत॥
सखिन मध्य सिय सोहति कैसी।छबि गन मध्य महाछवि जैसी
मंगल गावहिं सखी सहेली । लाजहिं तिन लखि रही नवेली॥
मधुर मधुर धुनि बाजत बाजा । भाँति अनेक सरस सुखसाजा
इतै सखिन सामाज पुनीता । आई रंगभूमि महँ सीता ॥
आवति सिय लखि उठी समाजा । किये प्रणाम भले सब राजा

यहिबिधिलखिसबसभाजुड़ानी ।कीन्हप्रणाम सियहिं सुखमानी
सबहिं हृदय अति होय उछाहा ।माल पेन्हावन लखै समाहा ।।
दो०-छरी हजारन संग में, रतन जड़ित सखि पानि ।
जय बिदेह नृप नंदिनी, बोल रही वर बानि ।।
रस रस चलती सखिन सँग,पहुँची रघुपति पास ।
देखि राम छबि ठटुकि करि,चित्र लिखीसी भाष ।।
सिया निरखि छबि राम की,वाढ़यो अति अनुराग ।
जुगल रूप गुन सम निरखि, सखी सराहत भाग ।।
देखि देखि मनमोहनि मूरति । प्रेम विवस तन दशा विशूरति
बरमाला कर कंज सिय जस जस नियराई ।
तस तस रघुवर अंग मोद अनुभव सरसाई ।।
ज्यों ज्यों विद्या लहै ब्रह्म अनुभव अधिकाई ।
जिमि संपति अधिकाइ मनोरथ मन बिपुलाई ।।
ज्यों ज्यों राका निकट बस शशि द्युती लखाई।
त्यों त्यों तन में तरुणता सरसत द्युति सरसाई।।
दो०-सखी सलोनी सीय को लाई रघुवर पास ।
जनु कादम्बिनि घन निकट दामिनी सहित हुलास।
।। जयमाल पहिनेक सीताजी का जाना ।।
पहिरावहु जयमाल सिया सखी कहति मृदु बैना ।
उठै न कर तन प्रेम भर पिय छबि पागे नैना ।।
कर सरोज सिय के युगल सखि कर कंजनि धारी ।
जयमाला रघुलाल उर पहिराई मुद कारी ।।

पहिरावत जयमाल जब सिय पिय उपमा भास ।
माल नहीं सिय नेह की, अहै मनोहर पास ।।
दो०-माल नही ये जनकजा, सखि युत मों उरबास ।
कियो सोई दरसत अधिक, शोभा रंग विलास ।।
माल नहीं ये जनकजा, निज तन हारयो मोहि ।
अधिक नेह करि प्रान सम,हिय हारयो हम सोहि ।।
नहिं मुकुता रबि द्रुम नही, है काहे की माल ।
सुकृत द्रुम फल सार की, अंतर सार विसाल ।।
सोहत जनु जुग जलज सनाला । ससिहि सभीत देत जयमाला
गावहिं छबि अवलोकि सहेली । सिय जयमाल राम उर मेली
सो०-रघुबर उर जयमाल देखि देव बरसहिं सुमन ।
सकुचे सकल भुआल,जनु बिलोकि रबिकुमुदगन।।
पुर अरु ब्योम बाजने बाजे । खल भए मलिन साधु सब राजे
सुर किन्नर नर नाग मुनीसा । जय जय कहि देहिं असीसा ।।
सोहति सीय राम कै जोरी । छबि श्रृंगार मनहुँ एक ठोरी ।।
सखी कहहिं प्रभुपदगहु सीता। करति न चरन परसअतिभीता
दो०-गौतम तिय गति सुरति करि, नहि परसति पग पानी ।
मन विहँसे रघुबंस मनि, प्रीति अलौकिक जानि ।।
जय जयरव अति गुँजगो, परी निसानहिं चोट ।
विविध भाँति बाजे बजे, दुंदुभि बजत सघोट ।।
मंगल गान होन तब लागा ।उमगि उमगि उमगत अनुरागा ।।
गौरी गनपति शिवहिं मनाई। राम संग सियहीं बैठाई ।।

राम सिया लखि सुन्दर जोरी। रची शारदा प्रीति न अथोरी
उपमा खोजत कतहुँ न पाई। छवि समुद्र मन बुद्धि डुबाई॥
वरषहिं सुमन छनहि छनदेवा।जय जय कहत करहिंशुचिसेवा
नाचहिं गावहि पुर नर नारी। किन्नर देव वधू सुख सारी॥
करहि आरती परम सुप्रीता। सकल नगर नर नारि पुनीता॥
वित्त विसारि करहि न्यौछावर। मंगल पढ़ै सबहि परमादर॥
जोरी सुभग निहारि निहारी। शान्ति पढ़हि सबविप्रसुखारी॥
मागध सूत वान्दि भल भाटा।युगल विरद वरनहि वहुठाटा॥
देखि युगल छबि त्रिभुवनवासी। भये मगनमन आनँद रासी॥
दो०-राम सिया शोभा निरखि, मगन सकल नर नारि।
पुरजन परिजन लोग सब, मुदित करत न्यौछारि॥

॥ सवैया ॥

सोहि रहे नखते शिख लो, मृदु केसरि रंग की सुँदर सारी।
भाल विशाल में लाल सो विन्दु करै पगमें घुंघुरु झनकारी।
राम विलोकि रहीं रघुराज, विदेहलली तनहूँ मनवारी।
कै कुज अंक मयंक मनो,लसै सोन जुही के निकुँज मझारी।
सोच्च संकोच विमोच भयो, सुख दुहुन के सरसात समाने।
दुहुँन की जुरी दीठि निशंक, मयंक दिनेश मनोदर साने॥
श्रीरघुराज भये दृगलज, हिये दोउ प्रेम पयोधि नहाने।
दोउ विचित्र छके छवि में,लिखे चित्र से जानकी रामसुहाने॥
मिटो कोलाहल गे जब भूपा। माच्यो मंगल शोर अनूपा॥
नैनन सैनन सों रघुराई। दई जानकिहि जान रजाई॥

मनही मन पद वंदन करिकै । साँवलि मूरति हिय महँ धरिकै
सतानन्द शुभ आयसु पाई । सबी चली सब सियहि लिवाई ।।
मंगल करहि सकल सुखदाई । चिरजीवी सिय कहैं सुभाई ।।
जय जय जय जय जयति पुकारैं। वरषहि सुमन सकल सुखसारैं
यहि विधि सिय जहँ मातु सुनैना। गईकछुक सकुचति हियऐना
दो०-करत गान सखि लै चलीं, सिय को जहँ रनिवास ।
वरमाला उर धारि कै, गवन महामुनि पास ।।
अति गह गहे वाजने बाजै । सबहि मनोहर मंगल साजै ।।
यूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनयनी ।करहि गानकल कोकिलबयनी
सुख विदेह कर वरनि न जाई । मनहुँ दरिद्रन पारस पाई ।।
दो०-देवन्ह दीन्ही दुन्दुभी प्रभु पर वरषहि फूल ।
हरसै पुर नर नारी सब मिटी मोह मयसूल ।।
रामहिं चले मुदित मुनि पाही । जय जय सब कहहिं सुभाहीं।।
चलत लुभानि चाल रसाला । पहुचे गुरु समीप प्रण पाला ।।
कीन्ह प्रनाम हृदय हरषाई । लीन्हे मुनिन हिये छपकाई ।।
दीन आशषि हृदय हरषाया । पूर्ण काम नयन फल पाया ।।
पीठि पोछि शिर सूघी सुखारी । बोले बचन महातप धारी ।।
जीवहु युग युग सुन्दर जोरी । यहि विधि पुरवहु आशा मोरी।।
दो०-राम लखन दोउ वन्धुसह, कौशिक मुनि सुख पाय ।
हरषि चले निज वास गृह, जय जय शब्द सुछाय ।।
कौशिक उर सिंधु बढ़यो विच पुलकावली ।
निरखि राम इन्दु चन्द आनन्द भली ।।

सिया मातु अति होत दोउ वंधु बोलि निज पासा।
विविध भाँति आदर करति आरति अधिक हुलासा ।।
वात्सल्य उमड़ी हिये, सो वरनी किमि जाई।
सुता हूते अधिक प्रिय लागत दोउ भाई ।।
पुरजन परिजन लोग, मुदित करत न्यौचावर।
मिटयो महाउर शोक, निज इच्छित पायो परम ।।

।। जनकजी मुनिजी के पास जाना ।।

सबके हृदय अमित अभिलाषा। विधिवत लखै विवाह हुलाषा
समय पाइ पुनिते रहुत राया। कीन्ह प्रनाम कौशिकहिं जाया
पानि जोरि वर विनय सुनावा। नाथ कृपा शिवचाप नसावा
राम लखन मोहि किये कृतारथ। पायो आज प्रमोद जथारथ।।
उचित होइ अव कीजिय सोई। चहत सवहिं परिणय सुखजोई
गाधि तनय कहँ सुनुनृप ज्ञानी। भयो विवाह लेहु तुम जानी ।।
भयो विदित नृप तीनहुँ लोका।तदपि करहू श्रुति रीतिअशोका
करि कुल रीति यथावत राजा। करहु विवाह बुलाय समाजा

दो०-चक्रवर्ति दशरथ नृपति, ले समाज उत्साह।
आवहिं इत मिथिलापुरहिं, लखैं सप्रेम विवाह।
कौशिक सतानन्द कहँ, पूछिसि तिरहुत नाथ।
धावन पठये अवधपुर, दै सुपत्रिका हाथ ।।
भलेहिं नाथ कहि नाय शिर, चतुर दूत बुलवाइ।
मुनि कृत पत्र पवित्र दै, अगता दियो पठाइ ।।

मुख्य संदेश बहु विनय करि, वेग पधारो राय ।
विदित बड़ाई दीजिये, सकल भाँति अपनाय ।।

छ०-जिमि उचित राजन, विनय सौं अवधेश को बुलवाइये।
कोऊ प्रतिष्ठित निपुन धरके तिनहि वहुरि पठाइये ।।

करकै मनन विमल मनमाही । सतानन्द प्रति कहेउ तहाँही ।।
कुल उपरोहित तुम मतिवाना । वृत्ति प्रमान सनातन जाना ।।
भगवन कौशल नगर सिधावहु।पतनिन युत दशरथ कहँलावहु
मित्र मंत्री मुख्य सँग लेहू । भ्रत्य चतुर परिचर्या जेहू ।।
भूरि द्रब्य पूरितवर वाहिन । लेहुँ यथा रूचि सब शुभ जाहिन
तव सेवन सो मिटहिं अँदेशा । शंकाकरव नकरत निदेशा ।।
श्रम न होइ मग चलत वराता । सखहीं सुख ल्यावहु प्रभुज्ञाता

दो०-शुभ चिंतक रघुवंश के, मुनिइन विनय सबनीत ।
सतानन्द गौतम तनय, वोले भलहिं संप्रीत ।।

भौ संमत सबके चित चाहा । कौशिक मुनि ने बहुत सराहा ।।

॥ छप्पय ॥

येहि विधि इक छनमाहि सबहि नृप दै अनुशासन ।
चित्र मंत्रि परधान ताहि सन करत सभासन ।।
अवधपुरी तुम्ह जाहु वरातिन हित लैवाहन ।
अर्वरथ रजत कनक मनि रचित सुहावन ।।
अयुत अर्व सब कनकमय तथा जटित मनि रंग ।
अयुत सर्वरथ रचित वर केवल मनिमय अंग ।।

दो०-साँवकरन मूषित महा, जो जित कीजै वाजि ।
आयुत पद्म रथ ललित अँग,चिन्ता मनिमय साजि ।।
सुभग सिंगार नियोजिय, उच्चैश्रवा बहु वाजि ।
खर्व नील रथ रजतमय, कनक किंकिनी जाल ।।
कनक कलस उत्तम हयनि, भूषन रजत सुभाल ।
रथ संखिक भूधर सरिस, गजभूषित बहु भाँति ।।
अति उत्तम हय त्रिगुनिहिं, ललित वरन समपाँति
पंचगुणित पदचर सहित, चित्र चमूरचि भिन्न ।
नवल लाल की पालकी, कंचन मनिमय चिन्न ।।
जरित अँमारीं गंजनि पर, ललित विशाल विचित्र।
चंदनमय रथ पालकी, अमित संवारौ मित्र ।।
गजरथ रुचिर तिखंड के, पंच सात के साजि ।
आयुत अर्व लै लीजियै, संग सवारी वाजि ।।
भूषण मणि बहु रंग की, विस्तर असंख्यनि भार।
भरि भरि संगहि लीजिये, खच्चर खामि अपार।।
संचल वाग अनेक पुनि, संचल सदन अपार ।
बहुत विनय करि वस्तु सब,आसु अवधि दरबार ।।
अवधि नाथ अतिसुख सहित, मगकलेस जनिहोय ।
सो सब जतन विचारियौ,आवैं करत सुखद सोय ।।
नाना वरन ध्वजन कर भ्राजन ।बाजैं सुभग मधुर धुनिबाजन
नट नर्तक वहु कौतुक कारी। चले अखंड सुलाभ विचारी ।।
भाग वड़ौं मानत स उमाहू। देवी मंगल खबर अगाहू ।।

आयधु पाई भोर नृपराई । अति सवेग रथ दियो सजाई ।।
भेट अमित देवन के काजा । और रथन धारायो राजा ।।
कछु सेवक कछु ब्राह्मण साथा । हृदय सुमिरि सियवररघुनाथा
रथ चढ़ि चले अवध सुख पाई । गौतम सुवन हृदय हरषाई ।।
दो०-नृप वचननि ते चतुर गुन, सजि सामा सब आसु ।
चित्र मंत्रि पहुँचे अवध, तीन क्रिये मग वासु ।।

इहाँ जनक शुभ समय वोलाये । नगर महाजन धनपति आये।।
कार्य कुशल बहुगुनी विराजै । जिनहिं देखि विश्वकर्मा लाजैं ।।
गाधि तनय कह सबहिं सुनाई ।मम सँग राम लखन दोउ भाई
राम बिना कस अवध उछाहा । नेम चार कुल रीति निवाहा
करिहै मातु प्रेम सरसानी । यह संसय सव सुनहि सुजानी ।।
सम विधि रचना रचहु समाना । जाहि देखि सुरपुरी लजाना
होवै तुरत सवहिं सुन लेहूँ । अहै अवनिपति आयसु येहू ।।
वास करैं सुख सहसुख साजा ।भाईन भृत्यन सहित समाजा ।।
प्रथम लगन ते मातु उछाहा । जस जस प्रति दिन वढ़ै उछाहा
टीका नहछु परिछन प्रीती । जननि भवन जस करै सुरीती ।।
दूलह वेस बनाय सभ्राता । यथा लखहिं हिय हरषित माता ।।
दूलह सहित पयान वराती । देख मातु सुख सिंधु अमाती ।।
दो०-ताते मिथिला वाहिरहीं, शुचि सरि कमला तीर ।
अवधपुरी सम अवधपुर, रचना रचहिं गँभीर ।।
वनै अलौकिक मंडप व्याहा । देखि छकहिं विधि सह नर नाहा

रचहू नगर दिव्य चहुँ ओरी । वीथी हाट चौहटहिं अँजोरी ॥
गुनिन करन यावत निपुनाई । देखी सुनी पुरान महँ गाई ॥
सो सब निमि पुर होय प्रकासी । देखि छकै अवधपुरवासी ॥
कमला तटहीं नगर वनावा । देखि लजहिं सुरपति सुख पावा
नाम अयोध्या ताकर दीन्हा । पुरी अवधसम मनहर लीन्हा ॥
वारहिं इन्द्रपुरी शत तापै । सीय कृपा सब विधि सुख जापै ॥

दो०-हाट वाट सुन्दर सजेउ, राजसदन सुख ऐन ।
ध्वज पताक फहरन लगे, बजत चौंघट सुखदेन ॥
इतै चतुर सिल्पी अमित, लीन्हे तुरत बुलाय ।
पंचकोस मिथिला अवधि,छाड़ि रच्यौ मगजाय ॥
मिथिला कौशलपुर लगी, भो थल नगर समान ।
चाँदिर सम सुन्दर मंदिर,थल थल भोनिरमान ॥
वापी कूप तड़ाग वर, कनक विचित्रत घाट ।
कोमल अतिहीं फेनते, रुचिर सुधारौ बाट ॥
विविध रंगयुत वाटिका,अमीत सफल द्रुमिबेली ।
फूलनि द्रुम बहुरंग के, शोभा सुरभि सकेलि ॥
सदन सवारहु सकल अँग, चित्र रंग दरसाई ।
जोजन इक करि बीच लौं,अवधि नगर लौं जाई ।
इतै व्याह मंडप रचौ, कौतुक रंग अनूप ।
निरखि लहैं आनन्द जिमि, अवधि प्रजायुत भूप ।
गये विश्वकर्मा सकल, नृप अनुसान पाय ।
कोटि गुनी नृप वचन ते, रची सुरचना आय ॥

बोले महाजन सकल,लिय कहि नव रचना होय।
हाट बाट चौहट गली, लखि वरात सुख भोय ।।
पुनि बोले गुनकार सब, सामा सहस प्रकार।
जो विवाह के हेतु हैं, जोरिं भरौ आगार ।।
सदन वरातिन वास हितू, वनै अबधि लौ जाइ।
असन वसन सज्या सुरभि, तहँ तहँ देहु भराइ ।।
इतते अरु पुर अवधि लौ मणि दीपक द्रुम पाँति।
रोपवावहु रचना सहित, दीपायन बहु भाँति ।।
चारु चँदोवा कनक पट, मणि झालर बहु रंग।
तुरत तनावो अवधि लौं, नृत्य रंग तेहि संग ।।
हय गय स्वयंदन पालकी, सकल सवाँरि सवाँरि।
सूसेवक जन अमित युत, भूषन वसन सुधारि ।।
मग में इतते अवधि लौं, फिरै फौज दिन रैन।
सुख दै सकल वरात कौ, सकल भाँति मन चैन ।।
मग विच बहु विधि इतर के, कुँड भराइये जाइ।
चोवा चन्दन अरगजा, सरित अनेक बनाइ ।।
केशरि मृगमद के अमित, सैल मुभग रचावहु।
मग विच इतते अवध लौं, वारि गुलाब बहाहु ।।
गिलम गलीचे रेशमी, विविध रंग विछवाई ।।
तापर सुमन सुगंध के, रचना रुचिर पुराइ ।।
पय लगि महिषी धेनुबहु, सेवक जुत मग माँझ।
विन याचे जाहिर करे, गनै सबेर न साँझ ।।

दधि चिउरा भरि माटवहु, मगविच देहु धराई।
मेवा मगद मिठाइ बहु, करि करि बिनय पवाइ।
दाख छुहारादिक अमित मेवन के द्रुम पाँति।
ललित रचाई रचन कै, मग बिच सतर सुभाँति।
कौतुक ख्याल अनेक बिधि, यैना चित्र बिचित्र ॥
मग बिच इतते अवधि लौं, रचना रचौ सुमित्र ॥
घृत मधु मिश्री कंद के, मग विच कुण्ड अनेक।
भर वाइय इत अवधि लौं,तहँतहँ जन सबिवेक ॥
गज मुक्तामणि कनक के, बहु बिधि भूषण हार।
धरि धरि वैठे बनिकजन, अच्छनिपुँज अपार ॥
करि करि बिनय बराति कहँ,हठि हठि दे सुखछाइ।
मोल कहैं तौ कान में, अँगुरी दइ मुसुकाइ ॥
सूति रेशमी बसन बहु, बैठे मग बिच जाइ।
करि करि बिनय बराति कौ, पहिरावै सुखछाइ।

॥ छप्पय ॥

जनवासे के हेतु रचौ, नव दुर्ग बृहद रसाल।
बाजि शाल गजशाल पालकी, स्पंदन साल ॥
अष्ट आवरन रीति यथोचित बनै बिभागा।
आवहिं चारिउ बरन अवध पति के संग लागा ॥
अपनि अपनि मरजाद जुत रहे सुखी सब लोग।
तेहि बिधि रचना रचहु सबजुत बिलाश सबभोग।

चित्र विचित्र सुघाट वाटिका कूप तड़ागा।
अरू मेवन के वाग फूल वाटिका विभागा॥
हौद फूहारे कुण्ड नगन जटि रचना नाना।
खस खाने बहु रंग रचौ भीतर तखाना॥
छवो ऋतु प्रति रूपक बने छवो ऋतु के अनुकूल।
उत्तम मध्यम नीच लघु, सबहिं जथा सुख मूल॥

दो०-असन वसन सज्जा सुरभि, कंचन मनि बहु रंग।
भरवावौ सब सदन प्रति, सुखप्रद जनहित संग॥

चत्वर चौक अजिर बहु भाँती। खचित मनोवहु चित्रनि पाँती
कोर कोर मनि कुसुमनि पौधा।जाति जाति अतरनिमिलसौधा
रचहु पुरि अमरावति समाना। यथा योग्य सब वस्तु विधाना
बाँधहु थल थल तुरङ्ग निशाना। द्वार द्वार तोरन विधि नाना
राजमार्ग कीजै विस्तारा। सब थल रहै सुगंध प्रचारा॥
हेम कलश कलकोट कंगूरे। करों रचना मन्दिर समरूरे॥
द्वार बजार कोट गृह नाना। अमरावति समकरू निरमाना।
हाट वाट के ठाट ठटावो। वीथिन वीथिन बाग बनावो॥

दो०-मध्य महामणि सदन वर, तहँ कौशलपति वास।
अमित भाँति करि रचिये सो, निरखत होत हुलास।
मज्जन भोजन शैन पुनि नित्य एकांते सुगेह।
जथा विभाग बनाय सब, कंचन मणि अवलेह॥
कनक वनावट के सकल, अवर अंसुक जाल।
तोरन रचना झालरै, कलश कंगूरनि माल॥

दूर दरशिका मनि अमित, दीर्घ स्वरूपा भास।
जहँ तह वांधिय द्वार पट, बहु तक कौतुक हास॥
इक जोजनपुर प्रान्त में, रचहू एक प्रकार।
प्रथम वराति निवास हित, सकल विभाग सुघार।
आवतहीं भोजन करैं, हरै पंथ श्रम लोग।
इततै अगवानी सजै, मिलै बिचारि सु लोग॥

बाग तड़ाग सुहावन लागे। जल की नहर सकल दिशि भागे।
विबिध रंग के फूल लगाये। हौद फटिक के अतिछबि छाये॥
थल थल कंचन लागे फुहारा। कोट चहूँ किततुंग दुवारा॥
कलित हेम अति सुभट कपाटा। हाटक कलश कंगूरन घाटा।
विविध भाँतिके तने विताना।झालरी झूलि झलक विधिनाना
कनक दण्ड लगि तुङ्ग महाना। फहरहिं चंपक वरण निशाना
कमला तीर सघन अमराई। जहँ बसंत ऋतु रहत सदाई॥
कीन्ह तहाँ जनवास बिचारा। बिरचे थल थल विविध अगारा
रचन लगे रचना यहि भाँती। सकल शिलिपवर सुघर सुजाती
विश्वकर्मा सब सोधन करते। जहँजस उचित सुछवि तसधरते
विविध भाँतिनिमि नगर सजावा।मनहुँमदन निज हाथबनावा
रिद्धि सिद्धि युत पुरी सुहाई। शिव सुरेश विधिलोक लजाई।
आदि शक्ति जहाँ करै विहारा। भृकुटि विलास ज्ञासुजगसारा
तेहि की शोभा कौन बखानै। जेहि देखि अमरपुरी थकमानै।

दो०-मिथिला ते अरु अवध लगि, दीयो पंथ बनाय।
तिमि जनवास वास वर, सकल सुपास रचाय॥

॥ दूतों का अवधपुर पहुँचना ॥

पहुँच अवध उपवन विदेह के धावन सरजु नहाये ।
दै चन्दन करिकै रबि वन्दन पहिरे वसन सुहाये ॥
करि कै कुछ भोजन मनमौजन करि बाजिन श्रमदूरी ।
सजि सजि पुनि सब चढ़े तुरंगन चले मोद भरिमूरी ।
कनक दण्ड बहु रत्न खचित कर लघु लघु लगे पताके ।
नाम लिख्यो तिनमहँ विदेह कर सूचक धवन ताके ॥
राजमहल की डगर बतायो पूछत पथिकन पाहीं ।
निमि कुल नाथ निशान निहारत पथिक खड़े ह्वै जाहीं

दो०-जा दिन दूत विदेह के, कीन्ह नगर प्रवेश ।
दशरथ कौशल्या लखे, ता दिन सगुन अशेश ॥
सकल मातु प्रसन्न भयो मन, उर उपज्यो उत्साह।
जानि परतअस कहन चह,कोउ होत रामकर व्याह

छ०-कौशल्या कैकेयी सुमित्रा औरहु दशरथ रानी ।
वाम अंग फरकत निरखै समुझि मिटै मन ग्लानी ।
यहि यिधि पूछत जनक चार तहँ गये सभा दरवाजे
जनक नरेश निशान निहारत द्वारपाल छवि छाजे।
यहि विधि करत वसिष्ठ भूपके सभा सुखित संवादा
आये चारी चर मिथिला ते राजद्वार मर्यादा ।
दशरथ द्वारपाल देखे तिन छरी विदेह निशानी ।
सादर कुशल पूछि मिथिला की बैठारे सनमानी ।

तुरत जाय अवधेश सभा महँ ऐसे बचन सुनाये ।
धावन चारि पत्र लै आये उन्हे मिथिलेश पठाये ।

दूत बचन सुनि अवध भुआला । लग्यो पत्र बाचन तेहि काला
जब बाँच्यो मिथिलेश जुहारा । उभय पाणि पंकज शिर धारा
सकल पत्रिका जब नृप बाँची । जानी राम लषन सुधि साँची ।
हर्ष बिबश कछु बोलि न आयो ।तनु पुलकाबलि दृग जलछायो
षट मीठी चीठी महँ देखी । मान्यो ईश्वर कृपा विशेषी ॥
प्रथम भयो ताड़ुका संहारा । मुनि मख राखि निसाचर मारा
तीजे गौतम नारि उधारा । चौथे जनक नगर पगु धारा ॥
पँचयो शंभु चाप कर भंगा । सीता व्याह छठौ रसरंगा ॥
ये खत महँ षट लिखी मिठाई । बाँचि भूप रहिगे सुख छाई ।
करत बिचार बाल वय थोरी ।किहि बिधि किय ऐसीबरजोरी
केहि विधि लाल ताड़ुका मारे । डरे न ताके बदन बगारे॥
द्वादश बर्ष बाल पै सींचा । किमि मारे सुवाहु मारीचा ॥

दो०-जानि परै नहिं कौन विधि, तारी शिशु मुनि नारि ।
विश्वामित्र प्रभाव यह, और न परै बिचारि ॥

खेलत रहे तहाँ सुधि पाई । आए भरतु सहित हित भाई ॥
पूछत अति सनेह सकुचाई । तात कहाँ ते पाती आई ॥

दो०-कुसल प्रान प्रिय बंधु दोउ, अहहिं कहहु केहि देस ।
सुनि सनेह साने बचन, बाची बहुरि नरेस ॥

सुनि पाती पुलके दोउ भाता । अधिक सनेह समात न गाता

दो०-तिहि अवसर सानुज भरत, आये करन प्रनाम ।
पत्रीकर लिखि अकथ मुद, पूछत भे मति धाम ।।

प्रभु पत्री कहँ तै यह आई । का हमारे प्रिय बंधु पठाई ।।
शोभा कौन देश कह देही । धन्य नित्य जे दरसन लेही ।।
सुनत सुवानि नेह महँ रांची । क्रमतै बहुरि महिप मनिवांची
पुलके बिबभ्राता तिहि बारा । तन न समाय सनेह अपारा ।।
परखि पुनीत सु प्रीति अथाही । भाइवता वह सबन सराही ।।
दो०-कुशल प्रान प्रिय बंधु दोउ, अहहिं कहहु केहि देस ।
सुनि सनेह साने बचना, बाची बहुरि नरेस ।।
सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता । अधिक सनेह समात न गाता ।
प्रीति पुनित भरत कै देखी । सकल सभा सुख लेहेउ विशेषी ।

।। दूत बचन श्रीदशरथजी से ।।

कहाँ बसत रघुबर एहि काला । पुरण जज्ञ भयो मुनि पाला ।।
कहउ विदेह चीनै किहि भांता । बिहँसे दुत सुनै यह वाता ।।
कवहि आई इत दरशन देहै । पुर नर नारी सुभाग मनैहै ।।
भो भूपति सिरतन गुसांई । तुम सम धन्य जगत महिमाही ।
राम लखन जिनतनय अदुषन । अमित अतनसमदुत्ति जगभुषन
पुत्र कुमार कि दुरही महिपा । रघुकुल तिलक त्रिपुर के दीपा
जिन कौजश शशी लै अवदाता। रवि लैअधिकप्रताप विख्याता
तिनहि कहिये जाना किमि होई । रबिहि दीप लै देखन कोई ।
जातहि राम ताड़का मारी । तबहि सुरन्ह जय जयति पुकारी

दो०-अस्त्र शस्त्र सब अर्पि मुनि, विद्या रहस बताय।
सुखसह आश्रम पहुँच के, कीन्ह जज्ञ बनाय ॥

निशिचर दल लै राक्षस आये। राम लखन लै धनुशर धाये॥
बिनु फरशर रघुपति माँरिचा। दीन्ह उड़ाय सिन्धु के बिचा॥
अग्नि वाण प्रभुहते सुबाहु। लखन दले सदल प्राण उमाहु॥
पुनि बिदेह आमंत्रण पाई। कौशिक चले सहित दोउ भाई।
राम चरण रज पाई प्रसंगा। दिब्य रूप धरी गये पति संगा॥
मिथिला जाई जवहि नियराने। जनक आइवहु बिधि सनमाने
रामहि देखि बिदेह विदेहा। भये मगन मन सिन्धु सनेहा॥
सुन्दर सदन दीन्ह वरवासा। जनक सुवन तहँ सेव सुपासा॥
राम लखन दोउ बन्धु निहारी। भये सुखी मैथिल नर नारी॥

दो०-शंभु चाप जग विदित जो, महा कराल कठोर।
देखत रावन वाण बल, दरेउ द्रतहि मुख मोर॥

तीन लोक महँ जे वत वीरा। सकेउ उठाय न शिव धनु धीरा
तहाँ राम रघुवर सुख धामा। विनश्रम भंजेव चाप अकामा।
मुदित सिया रघुवरहिं सिधारी। पहिराई जयमाल सुखारी॥
सुनिरव सरिस पर सुधर आनी। कहि बताय विक्रम कटुवानी
अतुलित बल श्रीरामहि निहारे। निजधनु दै ह्वै दीन सिधारे
तेज निधान बधुवर दोउ। तिनहिल खैलखि परतन कोऊ॥
वसुधापति सब कंपहि ऐसे। हरिहि विलोकि करीगन जैसे॥
धन्य धन्य अवधेश भुआरा। राम लखन पायेव सुत सारा॥

यथा राम परप्रीति लखन की। तेजनी धान लखन प्रति ताकी
लखन अहहि सुलक्षण अयना । वरणि सकै नहि वाणी बयना
दो०-राम लखन सम सुनहु नृप राम लखन जिय जान ।
शोक निवारेव नृपति कर, श्याम गौर मतिमान ।।
भनित प्रताप बीर रस भोई । लागि प्रेम कलित प्रिय सोई ।।
देन लगे कुछ मौज सप्रीता । मुंदे श्रुति नहि करहि अनिता ।।
गुरु कहि बात भई अति नीकी । सुकृतन कै सुख संयुत हौ नीकी।।
जिमि तटिनी वारिधी कहँ धावै। धर्मवान यहँ तिमि सुखआवै
गौ द्वीज गुरु सेवी तुम ज्ञानी । तैसी कुशल कौसला रानी ।।
तुमसम पुन्यवान नहि जानौ । तीनकाल में दुरलभ मानौ ।।
अमित कामवपु राम सरिसे । कौन पुन्यवर कैं सुत दीसे ।।
नीति धर्म गुण सागर चारौ । भुषन करन वीर ब्रत भारौ ।।
रहौं अनामय जुत सब काला। बुद्धिहि पावन वंश बिशाला ।।
सम संबंध दैव निरमयऊ । हम सब कौ सब वांछित दयऊ ।।

।। सतानन्दजी बुलाने राज गये ।।

छ०-दिय खबर धावन तलग गौतम तनय प्रभु इत आवही ।
हुलसी सुमति नृप हृदय तिन कहँ अग्र हवै हमल्यावही ।।
वहु मुनि वशिष्ठ वरिष्ठ सुमंत आदि सकल लये ।
बहु बाहिनी जुत अवध तैं कढ़ि एक योजन लौ गये ।।
सो०-चतुरंगिनी स्मीमान नियरानि शुभ पंथ महँ ।
सिवका लगि दिखान सतानन्द जिहि मह यथित ।

दो०-मिले महिप रथ ते उतरी, करी प्रनति वहुबार।
धर्म धीर सुख पाल कौं, लयौ कंध परधार ॥
चीमत तिन सिबिका उतराई। आशिष दै भेटे उरलाई ॥
मिले वशिष्ठादिक रिषि बृन्दन। करी पर सपर पदअभिवंदन
सादर लवाइय चले ह्वै आगै। देखिपुरि मुनि मन अनुरागै ॥
सरयु पुलिन आम अमराई। बनै विविध कुंज अति सुखदाई ॥
तहँ निवास कराव प्रमान्नी। उतरे तितहु दुत बड़ ज्ञानी ॥
भवन आइ भुपाल सुजाना। पठये शुचि साहित्य सुनाना ॥
पत्र पुष्प फल रितु भव नीके। असन चार विधि तुल्य अमीके।
आसन सयन मनोहर वासा। सेवकाई हित बुध निज दासा।

दो०-समुझि परारध दिवस कौ, पठई सुमंत सनेह।
करि पठई विनती करहि, पावन अब ममगेह।

॥ सतानन्द राजसभा आना ॥

सतानन्द आये तिन साथा। उठे वरासन तैं नर नाथा ॥
उत्तम सिंहासन बैठारे। अपने हाथन पाँय पखारे ॥
पुजन करिलुति कीन अपारा। मानौ अपनौ भाग उदारा ॥
सकल संगियन कौसिहि भाँता। किय सतकार सुभग नृपज्ञाता
तब मुनि जनक सुवस्तु पठाई। समय समुझि सौ द्वष्टि कराई
कुँजर तुरंग रथादिक जाना। सहित उपस्कर विविध बिधाना
वस्त्र रतन सज्जित दुतिवंता। रोम पाट पट जाति अनंता ॥
हीरक जलज मणिन कर चीने। भूषण बड़ मोले बहु दीने ॥

दो०।देखन बस्तु सराहिं सब, विपुल बड़प्पन देत।
पूछी करयुत पंक्ति रथ, कहिये आगमन हेत ॥

॥ सतानन्दजी बचन ॥

सतानंद आनँद हिय पागे। राम पराक्रम वरनन लागे ॥
तब सुत राम जनक पनराखा। धनुष भंजि पूरेउ अभिलाषा
भूषित किय सिय लै जयमाला। होने रहेउ ब्याह इहि काला
राजा तुम प्रति विनय बखनी। कृपा करहिं मोपै अनजानी ॥
मंगल काज विलंब न लावै। निज कुमार बिवाहन आवै ॥
कौशिक मोहि तव निकट पठायो। लै बरात सुखसाजबुलायो
बांधव संबंधी व्यवहारी। देखहिं सब दरसन सुखकारी ॥
सैना सहित सकल रनिवासा।कछु दिन ममपुर करहिंनिवासा
गाधि सुवन सुभ सम्मति पाई। देयँ नृपति नव नगर बसाई ॥
रानिन सहित वास तहँ होऊ। यथा अवध सुख रहै समोऊ॥
इहि विवाह मैं नरतन लाहू। देवै जोग बहुत सब काहू ॥
परिछन नहछू मंगल कारा। करहिं मातु राम कर सारा ॥
दुलह वेष निरखि निज सूना। लहिहैं मातु सुआनंद दूना ॥
कौशिक आय सुसकल सुनाई। नृप कि प्रीति विनय पुनिगाई

॥ श्रीदसरथजी वशिष्ठजी ॥

दो०-गुरु तन चितये तिन कहेउ,उचित कहत मुनिनंद।
सम संबंध त्रिलोक में करत सदहुँ आनंद ॥
गुरु निदेश अब नृपति लहि,मिथिलहिं करे पयान।
राउर सह मुद जाइहैं, हमहुँ सुनै मतिमान ॥

बहुत भला भयऊ अवधेशा। मंगल मूल तुम्हार निदेशा॥
अहोभाग जोरेउ विधि नाना। चलहिं संग हम साजि बराता
जौं लगि इहाँ रहिय मुनिनाथा। करिय असन करिगेह सनाथा
तब वशिष्ठशुभआयसुदीन्हा। कौशिक बचन चाहियनृपकीन्हा
अन्तःपुर सह चलै बराता। धूमधाम कौतुक मग जाता॥
देखि सबहिं रघुवीर विवाहा। पाय नयन फल भरैं उछाहा॥
यह विवाह तब पुन्य प्रमाना। होये नृपति सुनहु दै काना॥
कौशिक मिस नृपबिनहिं प्रयासा। पुण्य बेलि फलफलीप्रकासा
सुनि मुनि बचन माथ महिलाई। रावरि कृपा कहेव नरराई।
अज्ञासिर पर रावरि नाथा। सब प्रकार मैं भयौं सनाथा॥
बहुरी नृपति मन भाव जनाई। पानि जोरि बोले सुखछाई॥
भवन पधारे गौतमी पूता। पावन करि सुख देहि बहूता॥
सतानंद मुनिवर रुख जानी। चलन कहे अतिशय सुखसानी।

श्रीसतानन्दजी को दशरथजी राजमहल में लाना

दो०-बार बार पद वन्दि नृप, कुल गुरु आयसु पाइ।
जनक पुरोधहिं लै चले, रथ चढ़ाय हरषाइ॥
अति उत्साह गयो लै भवना। षोड़स पूजै अतिसुख छवना॥
सब प्रकार सतकारहिं पाई। भवन वशिष्ठ गये द्विजराई॥
गुरु अस सतानन्द श्रुतिधीता। इक आसन बैठे अति नीता॥
वर दुलहिन कौचिर सुखकारी। चन्द्र शुद्ध शुभ लगनविचारी
दो०-मार्ग सिर्ष सित पक्ष की, पाँचै तिथि ससिबारा।
उत्तर फालगुनी नखत, सोमन जोग उदार॥

दुषन रहित सभुश्न जानी । निश्चय कियौ दुवै मुनि ज्ञानी ।
पत्र लेखकर सभहि सुनावा । उत्तम कहि सवही सुख पावा ।।
विविध आसियन कलितसुहृति। गौंतम तनय लिखी इकपाती ।
लिखौ लगन कौ निम्चय येहु। नेहिन कौ निवतेइमि देहु ।।
हम बरात लै आवहि साथा । दइसु निज दुतन के हाथा ।
ततपर ते संतत निज कामा । गये सपदि करिचरन प्रनामा ।।
वह गुरु लिखित पत्र नृप लीना । रंगे स्वरहि निवेदन कीना ।
विनय करि भोइत हमारो । हुब यह काज समारन वारो ।।
अंतः पुरहि जाय तब भुपा । कौशल्या महल बैठी महिपा ।
कोशल्यादि बोलि सबरानी । सकल रामकी कीर्ति बखानी ।।
सुनि संदेश सकल हरषानी । अपर कथा सब भूप बखानी ।
प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी । अति आनंद मगन महतारी ।।
लेहिं परस्पर अति प्रियपाती । हृदय लगाइ जुड़ावहिं छातीं ।
रामलखन कै कीरिति करनी । बारहिं बार भूपवर बरनी ।।
मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाए । रानिन्ह तब महिदेव बोलाये ।
दिए दान आनंद समेता समेता । चले विप्रवर आसिषदेता ।।

दो० जाच कलिए हँ कारि दीन्ह, निछावरि कोटि विधि
चिरंजीवहु सुत चारि, चकवर्ति दशरथ के

कहत चले पहिरे पट नाना । हरषि हने गहगहे निझाना ।
समाचार सब लोग न पाए । लागे घर घर होन व धाए ।।
भुवन चारि दसभरा उछाउ। जनक सुता रघुबीर विआहु ।

सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे। मगगृह गलि सँभार न लागे।
जद्यपि अवध सदैव सोहावनि, राम पुरी मंगल मय जावनि।
तदपि प्रीति कै रीति सुहाई, मंगल रचना रचि वनाई।
ध्वज पताक पट चामर चारु, छावा परम बिचित्र वलारु।
कनककलस तोरन मनि जाला, हरद दुब दधि अक्षत माला।
दो०-मगलमय निज निज भवन, लोगन रचेव नाइ।
बीथि सींची चतुर सम, चौके चारु पुराइ ॥
जहँतहँ जुथ मिलि भामिनि,सजिनव सप्तसकल दुतिदामिनि।
विधुबदनिमृग सावक लोचनि,निज सरूप रतिकाम विमोहनि
गावहि मंगल मंजुल बानी। सुनिकलर वकल कंठ लजानी।
जूयभवन किमि जइ बखाना।विस्व विमोहन रचेउ विताना।
मंगल द्रब्य मनोहर नाना। राजत बाजत विपुल निसाना।
कतहं बिरद बंदी उचारही। कतहु वेद धुनि भुसुर करही।
गावहि सुंदरि मंगल गीता। लै लै नाम राम अरु सीता।
बहुतउछाह भवन अति थोरा। मानहुं उमगि चला चहुओरा।
दो०-सोभा दसरथ भवन की, को कवि वरनै पार।
जहाँ सकल सुर सीस मनी, राम लीन्ह अवतार॥
लगेउहोन उत्सव बहुभांती।छनछन जननि हियहिं हरषाती॥
भली कीन विधि गुरु तिव कहईं।राम ब्याह मंगल बड़लहईं॥
कहतनृपतिपुनिपुनि सुधि भाषी।मुनि प्रसादयहसबसुरसाखी॥
चलहु जनकपुर राम बराता।साजहुसकल साज अव ताता॥
सहितशत्रुहन विविध प्रकारा।करहु चलन कर सबहिसंभारा॥
सुनि अरिदवन भरत दोउ भाई।कीन्हे सकल रजायसु पाई॥

(श्रीरामजी के विवाह का समाचार पुर वासी को सुनाना)

सो०-सीताराम सुब्याह, फैली चरचा घर घरन ।
छन छन महा उछाह, मगन अवधपुर नारिनर ॥
दो०-तोरन मुक्तावलिन के, चन्द्रावलित समान ।
फल रसाल पल्लव कलित, रतन कलश श्रीमान् ।
घरघर मंगल गावहिं नारी।निजनिजभवन विचित्र सम्हारी।।
तोरन ध्वज पताक फहराई । घर घर चौके मणिन पुराई ।।
नेवते सब संबंधिन जाही। बंधु सनेहिन भूलेहु नाहीं ।।
नीके गृह पुर डगर सभारी । होय विचित्र वितान तैयारी ।।
अरुनधती आई नृप धामा ।पग लागि रानिन कीन्ह प्रणाम।।
आशिष दीन कुशल विवहारा।फूलौ सुकृत लहवफल भारा।।
राजभवन किमि जायबखाना।सत सुरेश गृह लखत लजाना।
नगर नारि करिकरि शृंगारा।राजभवन गमनहिं सुख सारा ।
राममातु सुख सकहिं न गाई। छनछन नव आनँद अधिकाई।।
ब्याह गीत गावहिं दिनराती।होहिं सुखी पुलकित मनछाती।।
सीयराम शुभ ब्याह सुहावा।त्रिभुवन विदित सुमंगल गावा।।
दो०-लै लै जहँ तहँ नवल नागरी, सिय रघुनंदन नाम।
गावहिं मोद भरी मधुर, वनरा अति सुख धाम ।।

(पुर नारी आपस में बारता)

कहहिं परस्पर प्रेमहिं सानी । जाहिं बरात धन्यते प्रानी ।।
लखैं जनकपुर की सुख सोई ।जेहिविवाह की विधिसबहोई।।
एक कहैं हम यहि सुधिपाई । जैहैं नृप रनिवास लिवाई ।।

कौनो सुकृत जोग सँग जाही। वह सुख हम कहँ दुरलभ नाहीं
विनती कौशल्या प्रति कीवी। लवाइ चलहिं तौ बड़ सुखलीवी
नेबते बंधु आवे बर जेते। हठ करिकै देखव हम तेते॥
ऐसे मृग नैनी सुकुमारै। नित्य मनोरथ विपुल विचारै॥
दो०-सकल दिसन ते विप्र रिषि, बंधुक भूप समाज।
आवै आमंत्रण करै, राम ब्याह शुभ काज॥
करहिं शत्रुहन तिन सत्कारा। पठवहिं विविध वस्तु सँभारा॥
देखिये अस औसर बड़भागी। सबको सबहुँ मिलै बिन माँगीं।
सांता जुत नृप नेह बिचारी। रिष्य शृंग आये तप चारी॥
कश्यप गर्ग मरीच प्रधाना। सौनक सनकादिक मतिवाना॥
भरद्वाज जवालि पुनीता। चिमन अंगीरा जिन सुभगीता॥
बहु ब्रह्मर्षि राजरिषि ज्ञानी। आये राम विवाह भवानी॥
छ०-नृप लोम पाद मगाधि पति प्राचीन मित्र महीप कौ।
आये कुटुम्ब समेत देखन ब्याह रघुकुल दीप कौ॥
रानी कौशल्या के तात ख्यात जु भानुमंत सुखी हिये।
आये सुपुत्रन पुत्रि वधुवन सहित बहु परिजन लिये॥
सो०-मगध देश भुवपाल, विदित सुमित्रा के जनक।
वामदेव सु विशाल, आये ते इमि सुतन जुत॥
काश्मीर भूपाल, अश्वपती कैकइ पिता।
कुँवर युधाजित आदि, आये अतुल प्रताप बल॥
साढ़े तीन सतक प्रभु केरे। मात पक्ष के भूप बड़ेरे॥

सजि सजि निज चतुरंगिनि नाना । आये करन बरात सुजाना
विश्रुत वीर सिंह कौशारा । कम्बू देश अधीश उदारा ।।
नाम सुरतन सैन रनधीरा । आये सुभग सजे बड़ बीरा ।।
संबंधी रघुकुल के जेते । आये अवधपुरी कहँ तेते ।।
अगनित बंधु व राजकुमारा । नाम कहत हैं बड़ विस्तारा ।।
अपसरान्हि किन्नर गंधर्वा । मुझझक रुप बनाये सर्वा ।।
महिपालन के धरे सरीरा । आये सब दिगपाल अधीरा ।।
नरतन भूप बड़े सम साजा । सुरन समेत आव सुरराजा ।।
प्रीति जनावन समय बिचारी । ल्यावा अमर विभूति सुभारी
आव मंजु घोषादिक रंभा । नृत्य गान में निपुन सदंभा ।।
विश्वावसु जु विश्व महँ नामी । बहु गंधर्वन कौ बहु स्वामी ।
नारद लीन्हे कर वर वीना । पहुँचे राम गुनन मन लीना ।।

दो०-विद्याधर पुनि सिद्ध वर, चारन खग नग नाग ।
आये चलन वरात सँग, सकल सराहत भाग ।।

आव निषाद अधिप गुह नामा । लीने पंचायुध भटग्रामा ।।
राजन के नहिं ब्याह निहारे । देखन सो बड़ भाग हमारे ।।
बाल सखा सुवलादि सुपासी । सहज मनोहर रुप उपासी ।।
फुले फिरहिं कहा मनमाहीं । अब हम रामचन्द्र पहँ जाहीं ।।
लेवाइ गये जब ते रिषिराई । तब ते युगल नयन अकुलाई ।।
नित जेवनार राज गृह होई । बरनि सकहिं को रुचिर रसोई
तिन पंतगन बैठि जे जेवहीं । सुनि अमृत की उपमा देवहीं ।।

अगनित अन्नन के सुप्रकाशा । गुन करना संधान अपारा ॥

॥ श्रीवशिष्ठजी आना अन्तहपुर में ॥

सो०-अन्त:पुर महँ आय, नृप सौं कहेउ वशिष्ठ मुनि ।
करहु बरात पयान, पंथन दूर विदेह को ॥
दो०-जहँ वर दुलहिन करहिंगे, तेलादिक सब नेग ।
दश दिन में पहुँचव उहाँ, ताते चलिय सवेग ॥

दीजै चलन सकल रनिवासा । देखहिं राम विवाह बिलासा ।
भलेहि नाथ कहि नृप सज्ञाना । बजवाये गह गहे निसाना ॥
जिनको डीलन चलिय चलाये । तिनकौ सुबुध आप ह्वै आये
पठइ सचिव पुर में प्रति गेहा । सबको मान दयौ करि नेहा
अगिन्ति छबि सौं अगनित जाती ।जहँतहँ ते कढि चलेवराती
जुग जुग पदचर जुत असवारा । सबहिं चले सूराज दुवारा ॥
चतुरंगनि सजि के सब आई । हेरहिं कौशल राज अवाई ॥
भीर सम्हार कौन पै होई । वाटनीठ करि पावहिं कोई ॥

॥ बारात सजना मंत्री भरतजी शत्रुहनलालजी ॥

छ०-भरत शत्रु सूदन सुमंत को कह्यो बोलाय नरेशा ।
सेन चलावहु जौन भाँति हम प्रथमहिं दियो निदेशा ॥
करि अभिवंदन दिगस्यन्दन पद तीनहुँ गये तुरंता ।
रिपुहन हय गन भरत नागगण रथगण सजे सुमंता ॥
चली बरात अवधपुर ते तब करि दुन्दुभी धुकारे ।
नौबत झरत चली नागन महँ रवकर नाल अपारे ॥

सकल अवधपुर नारि मनोहर गावहिं मंगल गीता।
दूलह दशरथ लाल राम दुलहिन वैदेही सीता॥
छैल छबीले राजकुंवर सब शत्रु शाल के संगा।
छण छण छिति महँ नचत नचावहिं चंचल चारु तुरंगा
मुकुट कनक कुंडल हिय हारन पीत पोशाक सँवारे।
पटुका पाग छोर छहरे क्षिति झरै मुकुत जनु तारे॥
कहुँ धवावै कहूँ कुदावै बाजिन राज कुमारा।
झमकावै असि कला दिखावैं रिपुहन पाय इशारा॥
चमकावै नेजा अति नेजा मेजा कहूँ मिलामै।
रेजा रेजा किये करेजा जिन शत्रुन सग्रामै॥
बजै निशान बृन्द बृन्दन महँ फहरै वन्द निशाना।
राजकुँवर देवनसम सोहत रिपुहनजनु मधवाना॥
नवयौवन की असित अरुणिमा तिमि वीरी मुखलाली।
गोरे बदन सदन शोभाजनु उदित अमित उड़ माली॥
दो०-छरे छबीले छपल सब, क्षण क्षण सुछबि अछाम।
क्षिति नायक के छोहरिन, छूटति छूट ललाम॥

॥ बारात के चलने के क्रमशः चलना॥

छं०--बाजी मंडल के पीछे पुनि मंडल चल्यो गयंदा।
मनहुँ पवन पुरवाई पावन उदय श्यामघन बृन्दा।
तुंग वितुंड सुंड फटकारत सांकार लिये पुरटकी।
मनहुँ श्यामघन मंडल में छवि छण छण में छणकी।

जड़ित जवाहिर हौंद हम के लसै अमित अंवारी।
मनहुँ विंध्य मंदर शृंगारमें सुर मँदिर छबि कारी॥
रघुवंशी सोहत असि ध्वसी सिंधुर सजे सवारा।
औरहुँ भूरि भूमि के भूपति केते राजकुमारा॥

॥ बराती को सवारी पर चलना॥

मन्द मन्द सब चलत पंथ महँ हसँत बतात बराती।
एक एक सब लोकपाल समराजत राज सजाती॥
शत्रुजय गजेन्द्र गज मंडल मधि में भ्राजत भारी।
राजकुमार सवार भरत तिहि राजत जनमन हारी।
गज मंडल के पाछे सोहत रथ मंडल नहि दूरे॥
वर्ण वर्ण वाजिन की राजी सजी रही मगरुरे॥
सुभट सुर सारदा सभ्यजन सज्जन सुकवि सुजाना।
चढ़े सकल स्पंदन गवनत पंथ भूषण भूषित नाना॥
पुनि रनधीर भीर पैदल की सायुध चले अपारा।
चमकहिं तेग अनी कुन्तल की सिंधु तरंग अकारा॥
रथ मंडल पीछे पुनि सोहत परिकर भूपति केरो।
कनक दंडकर जड़ित हजारन रत्नन होत उजेरो॥
हाटक के घोटे सोटे कर पंचानन आनन के।
धरे कंध सोहत अति सुँदर अवध जनन ज्वानन के॥
सोहत वल्लम विविध प्रकारन छरी हजारन हाथा।
पीतवर्ण पहिरे पट भूषण चले जात प्रभु साथा॥

जो सेवक कौशल नरेश के गवने राम बराता ।
कड़े करन कठुला कंठन में कुँडल कान सुहाता ।।
युग स्पंदन सवार सोहत तहँ ढिग स्पंदन मुनिराई।
मनहुँ देवनायक संग सोहत वाचस्पति सुखछाई ।।
चारुँ चमर चहुँ ओर विराजै छत्र छपाकर छाजै।
अंशुमान इव आत्रपत्र युग विशदविजन बहु भ्राजै।
विविध किताके परम प्रभा के फहरै बिपुल पताके ।
जिन ताके छाके सुरमानस अरुझाते रविचाके ।
कौशल पति पीछे पुनि गवनत राजत राजनिबादा।
लीन्हे भीर निषाद भटन की हय चढ़ि बिगत विषादा ।
यहि विधि चली बरात जनकपुर अवधनगर ते भारी ।
कुशल कहहिं लखि राम लखन को पूजी आश हमारी ।
रथगज बाजि सुसाज अनेका । बेखत भूलत विरति विवेका ।।
अमित जान साजे सुखकारी । नर पालहुँ बहु भये तयारी ।।
शुभ मुहूंत कुल गुरु तब देखे । आय सुकिये मुदित मन लेखे ।।
राम बरात चलै अब भाई । सुनतहिं सुभग निसान बजाई ।।
वेदमंत्र मुनि वरन उचारे । पठहिं शांति सव होत सुखारे ।।
बंदि विरद भाट अरु सूता । कहहिं मोद भरि प्रेम प्रसूता ।।
मंगल गान दशहुँ दिशि धावा । जय जय गूँजेव शब्द सुहावा ।
राजद्वार भई भीर अपारा । गगन भरेउ खरज चहुँ द्वारा ।।
दो०-चढ़ि चढ़ि चले लोग सब, सरि सरयू शुचि पार ।
वन प्रमोद लागे जुरन, अगनित अश्व सवार ।।

अमित भार भरि साज समाना। बृषभ शकट खच्चर उरयाना
चले कहारहु को गनिपारा । भरि भरि कामर वस्तु अपारा ॥
सेनापति सह सेन सुजाना । चार भाँति धरि आयुध नाना ॥
चले वीर बर ब्रिरदहिं बांधे । सोहत चाप वाम कर कांधे ।
हयगय रथहिं चढ़ेबहु सोहैं। सुरपति सेन जिनहिं लखि मोहैं ॥
पीछे चले विप्रवर बृन्दा । सुभग जान सब चढ़े स्वछन्दा ॥
श्याम करण हयअगणित साजी ।मणिगण भूषित जीनविराजी
भरत सहित वहु राजकुमारा । तिन्ह चढ़ि चले धनुषकरधारा
तिन पीछे सजि राम सुमाता। ले रनिवास हृदय हरषाता ॥
रत्न पालाकी दिव्य मनोहर । हरषि चलीं सुमिरि गंगाधर ॥

दो०-रौसन सोंठाढ़े सुभग, भये हयन असवार ।
औरे ब्रिपुल मंतग की, रावरि भरि छविसार ॥

छं०-बाजन अनेकन बाजहीं दश दिशन छाय अवाज ।
तुंवरु ढोलहुँ ढक्क डिडिमि पणव परह दराज ॥
मंजीर सुरज उपंग वेणु मृदंग सलिल तरंग ।
बाजत विशालक हाल त्यों करताल तालन संग ॥
झल्लिरि सरासर झाँस साँस सुहावनी सनकार ।
रहि पूरि धुनि शंखन अंशख्यन सोंन वारापार ॥

सुंदर सोभन राज सिरीके । वह साहित्य विमोहन हीके ॥
चौसठ लक्ष घरु वर वाजी । सर्व स्वर्णमणि भूषण साजी ॥
शुभ लक्षण युत अगनित जाता ।निदरहिं खगपतिको मगजाता

चले बहुत कोतल तिन माहीं। पायँ पैजनी झमकत जाहीं ।।
कलँगी झुकहिं सूदि पतिवारी ।नचवत जाहिं सुखचि करियारी
ढोरहिं पुच्छ मरोरहिं अंगा । करहिं नृत्य गति चरण सुरंगा ।
जगमग होवहिं जीन जराऊ। गुंफित चरनन चौर लदाऊ ।।
चार चार सेवक इक पासा। तन मन सों सेवहिं सुहलासा ।।
दो०-बहुतन क्षत्री अतन से, राजकुमार प्रवीन ।
नाना मणि भूषण धरै, भये मुदित आसीन ।।
पहिरे कवच तून कटि बाँधे। धृत असि चर्म धरे द्युतु काँधे ।।
स्वर्न सरीसे दिपहिं सरीरा । लसै वीर विरदन रनधीरा ।।
जहँ कछु साव कास मग हेरहिं। दक्षिण वाम चक्रको फेरहिं।
करहिं प्रशंसा देखहिं जोईं। जाहिं चले पुर वाहिर सोईं ।।
तिमि दस लक्ष गंयद दतारे। सजे धारुड़ी लावत भारे ।।
गुंजत भ्रमर कपोलन पाहीं। बड़े सुरन घंटा ठहनाहीं ।।
झूलैं भुवि परसीह तिन केरी। सिरी विविध कुभन पर हेरी ।।
छ०-झेला सुरत्न के नितँवन, रत्नमय जाली डरी ।
एकन अमारिन वनक बहु एक सूसंभारी धरी ।।
वाजिन सुजीन नवीन वाजिन वज्र की वर पाँवरे ।
किये चित्र रंग अनेक फेरहिं सुंड दंडन साँकरे ।।
सो०-लक्षण रथ अभिराम, सहित उपस्कर सुभग आती ।
होते हय श्रुति श्याम, जोते तिन कहँ सारथिन ।।
दो०-झंझनदार व किंकिनी, होत पंथ मह जात ।
महारथीतिन में लसै, धनु विद्यामह ख्यात ।।

बहुसिविकादि सुखासन नाना । कहतन बनहि बनक अभिधाना
सुन्दर श्रीमूरति कहँ लीनै । विप्र मुनीश्वर आसन कीनै ।।
जनुश्रुति छंद आहिं तनुधारी । चले राम को ब्याह विचारी।।
कोटिन पदचरी चले छबिवंता । लीहै निज रुचि अस्त्र अनंता
पट भूषण पहिरे मन भाये । जात बृन्द के बृन्द सुहाये ।।
सकल राजसुत सहित ललामा । चलै अग्र कहि सकियन नामा
चले बहुत बाजार विसाला । सकल वस्तु पाइय सब काला
लिय अमित आखेट समाजा । गवने ग्रह भीलन को राजा ।।
राखन जोग भोगपुर माहीं । जेजे पटु पातनि अवगाहीं ।।
कुल की कुल जेठी कुलवारी । वर विवाह विधि जाननवारी ।
मुनि वशिष्ठ आये रथमाही । लीन्हे होम हुतासन जाही ।।
अरुणधती आदिक द्विज वामा । बैठी सिविकन मैं अभिरामा ।
चली विपुलकुलकी सहचारिन । दासी अमित उचितअसवारिन
कौसल्या को विरद अमंदा । बोलत चले वेत्रधर बृन्दा ।।
न्यौतारी राजन कटकाई । टोइ भर भस अग्र चलाई ।।
छोरि अवधपति संगे काजै । रहिगे बिसद छत सिरताजै ।।
इक रथ सुभंग दुतिया नहिं जातै । रुचिर जासु उच्च श्रवाते ।
सजि सुमंत ताकहँढिग ल्यावा। कहि जय जीव चरणसिरनाषा
हरि गुरु गौरी गनेश मनाई । चढ़त भये दशरथ हरषाई ।।
आनिजान भूपन सिर नाये । जथा उचित सिंधुरन चढ़ाये ।।
बोले वेतपानी बहु ठाढ़ी । छत्रा बलिनि महाछबि बाढ़ी ।।
चले ढुरत चामर दुहुँ ओरा । बजे अनेकन दुंदुभि घोरा ।।

॥ श्री चक्रवती जी को चलना ॥

डंका धौसन परे घनेरे । चले केत रथ हाथिन केरे ॥
बंशी शंख श्रृंग शहनाई । गोमुख टक्कन की छबि छाई ॥
डिमडिम धुधुरिका बहु बीना । मुरज मृदंगन रव रंगीना ॥
इनहिं आदि वाजन बहु बाजे । जिनके नाम न जानहिं बाजे ।
तजी लाज सबहूँ कुल नारिन । चढ़ी धाय प्रासाद अटारिन ॥
लावा सुमन वृन्द बरखाई । देखहिं इकटक भूप जनाई ॥
भरत, शत्रुधन को पहिचानी । आपुस मे भाषहि मृदुवानी ।
होते दूलह येजु कुमाँरा । अति नीके लगते यहिवारा ॥
इनके सव औसर इक साथा । कीने परम चतुर नरनाया ॥
एकहिं संग ह्वै जाति विवाहू । यातै और कौन बड़ लाहू ॥
विधि अनुकूल हमें इक भावै । होइ सकल जो चित अभिलावै ।
विचविचगायक वन्दि बजनियाँ । चलेकरतनिजकार्य निपुनियाँ
नट नर्तन अरु भाट विदूषक । चले करत शुभ स्वांग अदूषक
पृष्ट भाग रक्षक रहेते । कछुक साथ चल सेन समेते ॥
छ०-गावहिं विवाह वधावनी अति अग्र निज महँ भारती ।
करि वारि मणि भूषण बिविध अलिगन उतारहि आरती ।
कहि जात नहिं यहि मोद भर बारात के जो सँग गयौ ॥
तिहि समय निरवधि में लह्यो अनुभूत वह मंगल भयौ ।
दो०-चले हरषि दशरथ नृपति, लै वरात निमि धाम ।
जनु सुरेश सव सुरन लै, जात सोह सहकाम ॥

॥ श्रीसरजू तीर बराती निवास ॥

छ०-विविध के ताके परम प्रभा के फहरैं वितुल पतके।
जिन ताके छाके सुरमानस अरुझाते रवि चाके॥
जन काढ़ि कौशल नगर ते मैदान माहि बरात।
तब भयो देवन भोर मनु चहुँ सिंधु द्वितिय दिखात॥
मस्क गज चलत सुहाये, नख सिख भूषित भ्राजे।
टप्प टप्प हय चलत सुनाचत छन छन भूषण बाजे॥
घर घर शब्द करत रथ जाते श्याम करन हय जोते।
फहरत जात पताका शोभित मनहुँ भूपयश ब्रोते॥
कैयक राजा दशरथ पीछे चलहिं मोदमन छाई।
मनहुँ विष्णु के पीछे राजत सकल सुरन समुदाई॥
जय जय शब्द गगन मधि गूजे बजत दुन्दुभी भारी।
बरषहिं सुमन देव सब ऊपर नचै विमान नबहु नारी॥
मधि बरात बाजत बहु बाजै शंख भेरि सहनाई॥
ढोल मृदंग झाँझ घड़ियाला डफ वेणू सुरगाई॥
दै धुधकार बजत धुधकारी वाद्य अनेकन सोहैं।
शाँति पाठ भूसुर सब उचरत समरीति मन मोहैं॥

॥ श्रीसरयू पुलिन पर प्रथम निवास ॥

सो०-चलिकै कौशल राज, प्रथम दिवस सरयू पुलिन।
मेले सहित समाज, आरामन पट मंदिरन॥
यहि विधि चली बरात, रघुपति ब्याहन जनकपुर
सरजूतट नियरात, भूपति कह्यो सुमंत सो॥

छं०-अब आज अधिक म जात बनत मुकाम सरयूतीर ।
यह पहिल वास सुपास सब कहँ जाइ जुर सबभीर ।।
तुम जाहु सैना वास कर वावहु सुपास समेत ।
हम चलन पाछे गुरू सहित जहँ शिविर सरिस निकेत

श्रीचक्रवर्तीजी श्रीवशिष्ठजीको शुभ शकुन देखाना

देखहु शकुन सब होत सुंदर शुभ जनावत जात ।
दिसि बाम चारा नीलकंठ विहंग लेत दिखात ।।
दो०-भये सगुन सुन्दर सकल, अभिमत फलके मौन ।
जनु श्रीराम विवाह में, आये साँचे होन ।।
विविध बयारी वही सुखकारी । मिलि सुपुत्र सुहागिन नारी ।
धेनु वत्स को प्यावत छीरा । देवहिं चाक वामदिसि चीरा ।।
दाहिन तन मृगभाल दिखानी । धेम करी बोलहिं बरबानी ।।
सेत सुमन सर्षय दधि देखा । पूरन कुंभ मीन पल देखा ।।
द्विजद्वै पुस्तक धृत मग आये । खंजन कंजन में थितपाये ।।
भयौ नकुल दरसन अभिरामा । दृष्टि परी सुभ तरुपर श्यामा
उड़त दाहिनों नील निहारा । दाहिन काग सुखेत मझारा ।।
दो०-प्रगटे जिनके सगुन वपु, परम ब्रह्म श्रीराम ।
शिव श्रेयकारी सदा, तिनहिं सगुन सब ठाम ।।
डेरा सुमंत दिवाय सबको सहित सुथल सुपास ।
भोजन सकल पहुँचाय सबकहँ जाय जाय निवास ।
उज्ज़वालि लाखन दीपक निज नयन सब कहँ देखि
आये महीपति मणि निकट विनती करी सुख लेखि

दो०-महाराज सबको भयो, सरयूतीर सुपास ।
नाथ पधारो शिविर कहँ, कीजे रैन निवास ॥

॥ श्रीदशरथजी के निवास ॥

छ०-सुनि सचिव बचन अनंददायक सहित गुरु महिपाल ।
करिभ रथ भरतानुजहि आगे गयो शिविर विशाल ॥
सब सैन्य डेरा परे सरयूतीर तीरहिं भीर ।
युग योजन हिलौं संधि नहिं करि जाय मारीतीर ।
बाजे नृपति के दुन्दुभी द्रुत कूच सूचक भोर ।
लागे वदन बंदी विबिध विरुदाबली नृप सोर ॥
सब प्रात कृत्य निवाहि मज्जन कियो सज्जन संग ।
लहि काल संध्योपासनादिक गुनी सुमिरत रंग ॥
दै दान याचक गणन वित्त विशेषि सहित उमाह ।
उठि पहिरि भूषण वसन मन में चलन कीभै चाह ।

॥ वरात चलना ॥

आगे को सैन्या चलवाई । चलत यथा क्रम सों छवि छाई ॥
अपुन वशिष्ठ चले इक साथा । बैठे रथन कहत वर गाथा ॥
दोऊ तेज पुज श्री माना । लागे गुरु सुरपाल समाना ॥
फूले अमर विलोकत जाहीं । नमते सुमन बृन्द वरषाहीं ॥
हींषहि हयन बोलहिं गजरूरे । चहुँ दिसि घंटन के खपूरे ॥
कौतुक करत विदूषक जावैं । गाय स्वाँगवर सवन हँसावैं ॥
दिवके दुन्दुभि बजिस बिसाला । मंगल गान करहिं सुरबाल

।। श्रीजनकजी के मंत्री की प्रार्थना ।।

छ०-तिहि काल सचिव विदेह के, कीन्हो सुबंदन जाय।
कहि वचन रचन विशेषि विनती दियो नृपति सुनाय।
अवधेश हमहिं निदेश अस मिथिलेश दीन बुलाय ।।
जबते चलहिं कौशल नगरते कौशलेश लवाय ।।
तब ते सुभोजन पान सामग्री सवहिं दियौ तुम जाय।
जो लगे खर्च बरात को सो लिह्यो सकल उठाय ।।
लघु मनुजहुँ को संचकि यहँ विसंच रंचन होय।
अब होइ हमरे शीश शासन नाथ तुम सम दोय ।।
सुनि सचिव वचन विचारि नृप विदेह को व्यवहार।
मिथिलेश केर निदेश जसतस हमहुँ को स्वीकार ।।
अश कहि वशिष्ठ चढ़ाय स्यन्दन चढ़ो स्यन्दन आप।
बाजत भये तेहि समय बाजन विविध सुरन कलाप।
पूरव कियो जिहि भाँति वर्णन तौनि रीति बरात ।।
गवनिससु मिथिला पंथ गहि करि धूरि धुंध अघात।
सर नदी नारे परत जे गग रहे जल भरि पूरि ।।
आगे चलत ते लहत जल पाछे चलत ते धूरि ।।
पाषण परहिं जे पंथ महँ ते होत रेणु समान ।।
दोय कोश को विस्तार भरति बरात करत पयान ।।
दो०-जहँते चली बरात मग, जहँ पुनि रह्यो निवास।
तहँलौं हय गय रथ मनुज, भरे चलत सहुलास ।।

नंदिन सेतु रचना युत जोई । औघट घाट रहे नहिं कोई ॥
जहँ निवास लायक थल जाना । तहाँ भूमि समकीन सुजाना ।
धाम दोय जोजन लगि ठामे । परम बिचित्र जाहि नहिं गाये ।
गज हय स्यन्दन हित शुभशाला ।बसन सुखा सन गेह विशाला
नृप निवास हित अति श्रीमाना । विविध हर्म प्रसाद विताना
नाना विधि तरु श्रेनिन माही । समृद्ध वारिद सहस दिखाही ।
वंदन मालन सो द्युति जागे । दर्पण रतन रचित वहु लागे ॥
आयन मोद अमित्त तहँ सोहैं । दिब्य गंध लीपित मन मोहैं ॥
छत्र चमरब्यनादिक नीके । धरे उपकर्णहिं राज श्री के ॥
बर परयंक विछे जहँ ताहीं । दुग्ध केन सम सयन लखाहीं ।
तनै दंतधावन संभारु । दंत रंग ढँग करन प्रकारू ॥
बड़े बड़े हंडा अरु झारी । गंगालैं नादैं अति भारी ॥
चौकी रतनमय छबि नाना । लसैं हंसती सुचप्रति थाना ॥
दो०-तूल कलित सुचि तल्प पर, लघु दीरघ उपधान ।
धरे विविध भूषण बसन, कहुँ पादुका पदत्रान ॥
वस्तू देह निवाहक जेती । पहुँचे सुलभ होइ सन तेती ॥
अयन अंत करिये किमि लेखा। समय समय पर सुखद विशेषा
रक्षण सेवन में सुप्रवीने । बैठे सुरनर विग्रह कीने ॥
दूजे दिन जब भइ सभिलाना । सकल बरातिन संभ्रम माना ।
विस्मय युत दशरथ महिपाला । गुरु प्रति बूझत भे तिहिकाला
कहिय नाथ यहि पुर को नामा ।अति रमनीक लसत सबधामा
सब बस्तू सम्पन्न निहारी । कबहुँ न हम यह दीख अगारी ।

बास उचित इत भाँति भलेहीं । पुरवासी बड़ आदर देहीं ।।
छ०-बड़ देहिं आदर बाहिरे ह्वै अपनु भीतर राखहीं ।
चित शुद्ध सुँदर अमृती समवानी मनोहर भाबहीं ।।
करि इष्ट ध्यान वशिष्ठ मुनि करतब्य सव जानतभये
सब्र भाँति राजा जनक को सामर्थ भल मानत भये ।
दो०-सुनि गुरु वचन प्रसंसि उनहूँ विधि नृपसज्ञान ।
धन्य जनक भूपाल मणि, जोग इनके प्रगटान ।।
।। श्रीदशरथजी समाज सहित निवास ।।
स्वच्छ सुभग दासी अरु दासा । पहुँचे तहँ सबहीं के पासा ।
विनय करहिं कर जोरि सुजाना। हम हैं जनक अनुगयहिथाना
दियौ अधिक श्रम तुमहिं बुलाई । पठये अखिल करनसिवकाई
नित के सेविन सो कहि लेहीं । करन देहु सब टहल हमैंहीं ।।
रोजहु परिचर्जहिं अब गाहू । भाई आज इहाँ सुसताहू ।।
वाजि गयंद ऊँट पशुजाला। बाँधहिं उचित जिनहिं जससाला
सब सुखपाल सुखासन भाये । नीके लैकरि यतन धराये ।।
जुत प्रमान आसन बैठारे । तप्त उदक सो पाँय पखारे ।।
दो०-उज्जवल छत्र लगावहीं, चामर ढोरहिं कोइ ।
रुचि रुचि बीरा सिद्धकर, देत अदब सौं सोइ ।।
नाना ब्यंजन थार सजाई । ले आवहिं भोजन कहँ कोई ।।
बड़ेआदरनसहित जिमावहिं ।मिष्ट सुधा सम सलिलपिवावहिं
साजत सेजन एक सुजाना । बृहद बिछावव रचत समाना ।।
इक साहित्य जथा श्रमधारी । सभा सदन की करत तैयारी ।।

नृत्य करै कहुँ अग्र धृताँची। रिझवत करतब करि विस्वाची।
निपुन नाग दंत धरि वीना। राग निकासत अति रंगीना॥
दो०-औरों उत्तम उरवसी, निज गुण प्रगटहि आन।
किन्नर अप्सरा गन्धर्व, बजत नचत कर गान॥
देखि अद्‌भुत कौतूहल साजा। मोद लहे सब राज समाजा।
ऐसे रनिवासहि गण रासी। करहि प्रसन्न टहल करि दासी।
राम बरात करन जे आये। गृहते अधिक अधिक सुख पाये।
अपर जात बहु बिधि सनमाने। जे सुख निज सपनै नहिं जाने।
अगनित वार वधू तन गोरी। सुंदर छबि की नित्य किशोरी।
दुर्लभ परजंकन पौढ़ाई। पाय पलोटहिं नेह बढ़ाई॥
दो०-नाना द्रव्य सुगन्ध की चर्चित करहिं शरीर।
रुचि रुचि सों सेवा करै, हरै अतन की पीर॥
रहौ नाहिं तिहिठां अस कोई। मन वांछित सुख जाहि न होई।
जात बरातहिं तिरहुत देसा। किय निवास जहँ जहँ अवधेशा।
तहँ तहँ इमि नव ह्वै सतकारा। बरनत ताहि होत विस्तारा
असन सयन वर बसन सुहाये। पावहिं सब निज निजमनभाये
नित नूतन सुखलखि अनुकूले। सकल बरातीन्ह मंदिर भूले
छ०-सब करहि जनक बखान पंथ महान लखि सनमान को।
सवको भयो असमान कीन पयान निजहिं मकान को॥
संध्या उपासन कियो साँझहि गंडकी तट जायके।
बैटै बहुरि अवधेश आलै सभा सुखद लगायके॥
आये अनेकन राज राजकुकार नृप दरबार में।

सबकहत कोउन विदेहसम नृप भयो यहिसंसारमें।।
वर ज्ञान मान विरागमान सुजान वृंद प्रधान है ।
पायौ नरेन्द्र समान समधी सत्य यह अनुमान है ।।
पुनिकह्यो सचिव सुमंत काल्हि कहँआराममुकामहैं।
नृपकह्यौ जतँजतँ जनक सेवक कहतिहँ विश्रामहैं।।

(दूतों का समाचार कहना)

उतै दूत जे गये अवधपुर लै विदेह की पाती ।
जोरि पाणि कीन्हे पदवंदन आय तीसरी राती ।
दूतःविलोकि विपेह विनोदित कहे कुशल सबआये।
कहहुकुशल कौशलभुआल की कब ऐहैंसुखध्याये।।
दूतन कही खबरि तहँ कीसब नृपरनिवास उताऊ।
प्रीतिरीति पुनि लै बरातको वरण्योचलनित्वराऊ।।
पुहुमीपति यहि पुरहिंपहुँचि हैं दसयें सहितबराता।
कही प्रणाम आपको वहु विधि दशरथ विश्वविख्याता।।

(दशरथजी-बराती-नगर को चलना)

इतै बरात चली रघुकुल की राम दरस अभिलाषी ।
लषणराम को लखन लान्हि हम चले परस्पर भाषी।।
धांम-धाय देशन के बासी देखत आय बराता ।
पूछत प्रथमहिं रामलखन को पिता कौन विख्याता ।।
जाके पूत-सपूत वाँकुरे तासु दरश सुखकारी ।
तृनसो जिन त्रिपुरारि धनुषदलिव्याहत जनकदुलारी।।
मिथिला देशप्रदेश कियो नृप संग बरात लै भारी ।

तबते हँसिहँसि हुलसि हुलासि जन देत माधुरी गारी॥
अतिहिं त्वरा गति से बरातत्तब गरजब सुरसरितीरा।
तहँते जनक नगर त्रय योजनजामब सचिवतहँ धीरा॥
जोरिपानि बोल्यो सुमंत सो इत सब भाँति सुपासा।
अब मिथिलापुर है त्रय योजन करै बरात निवासा॥
सो०-लेत मोद मन मान, येही विधि दसये दिवस।
दशरथ गौतम थान, पहुँचे सुरसरि के पुलिन॥
दो०-प्रात मंजन करि अवधपति बिये पूजन स विधान।
उचित यथा विधि प्रीति सों,दियो द्विजनकहँदान॥
छ०-सकल बरात निवास कियो तहँ सबकी भई समाई।
असनवसन पवनादिक की तहँ प्रगटी पूरणताई॥
मिथिलाधिपके परिकर सिगरे अस कीन्ह्योब्यहारा।
मोदितमहां अयोध्याबासी अवध विलास विसारा॥
छ०-सबै बराती सुखी सकल विधि रंच विसंच न पाये।
धावन आये धरनि पती को विस्तर वचन सुनाये॥

(मंत्री से बारात)

कौशल पाल तुरंत सुमंतहि बोलि कही अस वानी।
सजवावहुँ वरात आजहिंले कालिह होत अगवानी॥
सचिवकालिह मिथिलाधिराजको मिलिमुनिराजसमेत।
सानुज कौशल्या नन्दन लखि मिटी विरह दुख जेता॥

(श्री मिथिला जी बारात आने के सुनना)

दो०-मिथिलापुर हल्ला पर्यो, ऐहैं आजु बरात।

अगवानी हित जनक नृप, साजि सैन विख्यात ।।

भई खबर मिथिलापुर माहीं । आइ बरात देव सरि पाही ।।
आतुर मंत्रि खबर अस पाई । सजे अपुन सैना सजवाई ।।
जनक तनय लक्ष्मीनिधि नामा। सज्जित भये रूप अभिरामा।।

॥ अगवानी सजके चलना ॥

धर्मधीर पुनि भयो तयारा । जो विश्रुत 'कुशकेतु' कुमारा ।।
दश सहस्त्र सँग भये भुवाला।कहिन जाय छविपरम विसाला।।
सिय सेवा हित जिन सुकुमार । अर्पण करी रूप महँ भारी ।।
जनक भाव समाधि महँ जैसे ।कीने अखिल अवनिपति तैसे।।
सिमिट चली अगनित कटकाई। मंगल बाजन की धुनि छाई।।
सतानंद नृप इक रथ माहीं । अवधि उछाह सुभाषतजाहीं ।।
किये दुंदभिन कीं धुनि आगे । धुनैं समस्त देवि सम लागे ।।
दो०-दोउ समाज में अमर मिले, मनुज वपुन छवि आन।
एकैं प्रमुदित ह्वै लखैं, बैठे विमल विमान ।।

॥ मिथिला—अगवानी सजावट ॥

छ०-गजमत्त गरट्टन वाजिन ठट्टन सकल सुभट्टन साजि रहे।
भटझट्टन-पट्टन लैकर पट्टनहट्टन ह्वै चलि गाजि रहे।।
बहु साजि अमारी हौदा भारी वर जरतारी की झूलैं।
नद्दत बहुनागे जिनके आगे गिरिश विभागे नहितूलैं।।
मिथिलेसमत्तंगा सजिसब अङ्गा परम उतंगा चलतभये।
निमि कुल सरदारा करिश्रृङ्गाराभये सवारामोदभयें।।
अति चंचल वाजी वनि राजी तुरकी ताजी सो हिंरहे।

राजस अतिसादी उरअहलादी धृति मरजादी ताग गहे॥
पैदरन कतारा सुभग शृङ्गारा देव अकारा छवि छाये।
तनु बसन सुरंगा भरे ऊमंगा जुरि इकसंगा तहँआये॥
चामी कर स्यन्दन वृन्दन–वृन्दन चढ़े अनन्दनभटभारे।
धरिढालविशाला करकरवाला उन्नत मालाअनियारे॥
निमि वंशिन वारे राजकुमारे सजे शृङ्गारे पगु धारे।
नृपजनक हँकारेलहिं सतकारे अमितहजारे सुकुमारे॥
मिथिलापुरवासी आनंद रासी–सजि खासी सिरपागैं।
कंचुक तनु काँधे कम्मर बाँधे उर सुख धाँधे अनुरागैं॥
इक एकन भाषैं उर अभिलाषैं अव इन आँखेसफलकरैं।
लखि राम विवाहा परम उछाहा को महि मांहा सुखन भरैं॥
कौशल महराजा सहित समाजा आवत आजहिं सुखसानी।
इतने सजि साजा निमि कुल राजा गमनत काजा अगवानी॥
कहि कहि सँग घोरा पश्चिम ओरा सवमन हर्षित गमनकिये।
भई भीरहिं भारी सहित तैयारी पुर नर नारी हर्षि हिये॥
बहु चाली पाल की रत्न जाल की नवललाल की कनकमई॥
मुनि वृंद सँवारे वेद अकारे ऋचा उचारे पुण्य चई॥
फहरात निशाना नदत निशाना गायक गाना करत चले।
सज्जन मति मानांहिय हुलसाना किये पयाना भाउ भले॥
रथ रत्न सवाँरो अति विस्तारो वाजिन चारो चारु महा।
राका कशि छत्रा परम विचित्रा आतप पत्रा राचि रहा॥
तापर मिथिलेशा चढ़्यो सुवेशा मनहुँ सुरेशा सोहिरह्यो।

लक्ष्मी निधि प्यारो राजकुमारो तुरंग सँवारो गैल गह्यो ।।
सतानंद मुनि चढ़ि स्पंदन पुनि चल्यो संग गुनिगाढ़ सुखै ।
मुनि याज्ञवल्क्य वर धर्म धुरंधर औरहु तपधर मुदित मुखै ।
पुरते छबि भारी कढ़ी सवारी भै घहरारी चरकन की ।।
बहु बजे सुहावन बाजन पावन निज धुनि छावन नाकनकी ।
दोउ नृपन मिलापा मोद कलापा देव अलापा करत सबै ।
देखन के आसी नाक निवासी गुणि सुखराशी ठानि जबै ।।
सुर चढ़े विमानन वहु विधि आनन दशहु दिशानन नभआये
बरषैं बहु फूला गत सबसूला मंगल मुलायश गाये ।।
छ०–उतते अवधेशा इत मिथिलेशा नहिं कमवेशा महराजा ।
दुहुँ पुण्यहुँ जागी जग बड़भागी सम अनुरागी छबि छाजा ।।
दश सुतर सँवारे जनक हँकारे वचन उचारे तुम आवो ।
मम अरज सुनावो नृप द्रुत आवो विमल विहावो सुखछावो ।
द्रुत धावन धाये नृप दल आये बचन सुनाये दशरथ को ।
कह जनक प्रणामा दरशनकामार्चलियहि यामा गहि पथको ।।
ठाढ़े सुखमानी हिय अगवानी आँखि लुभानी दशरन को ।।
लै विशद बराता आवहु ताता अवक्षण आता हरषन को ।
सुनि मैथिल वैना भरिउर चैना सजल सुनैना अवध धनी ।
कह वचन तुतंता सुनहुँ सुमंता नहिं विलवंता चलै अनी ।।

श्रीचक्रवर्तीजी बरात को क्रम सोमील के चलना

दो०-करहु सैन्य को शीघ्र ही, दुतिया चन्द्र अकार ।
हम अरु गुरु मद्धि में रहत, अरु युग राजकुमार ।।

आगे पैदर सुतन युत, पुनि वाजी रथ फेर।
पुनि मतंग मंडल चलै करहु व्यूह बिन देर ।।
शासन पाय सुमंत तहँ, तैसहिं सैन्य बनाय।
मिथिला ओरहिं शीघ्र गति, दियो बरात चलाय ।।

बरात को परस्पर देखा देखी मिलना युगल राजन को

॥ चौबोला छन्द ॥

योजन अर्ध गई जब सैना द्वितीया चन्द्र अकारा।
देखा देखि उभय सैन्य की होत भई तिहि वारा ।।
जैसा व्यूह बनाय अवधपति चले मिलन के काजा।
तैसो व्यूह बनाय चल्यो उतते मिथिला महराजा ।।
इतते महा महोदधि आवत उत रत्नाकर आयो।
मानहुँ मिलत उमड़ि सिंधुयुग कोलाहल क्षितिछायो
फहरनि नवल निशानन की छवि तंग तरंग समाना
राजी गजवाजिन की राजी महाँ मंजविधि नाना ।।
मिलत युगल चतुरंग उमंगन विलसैं मनहुँ अकाशा
घनमंडल भलयुगल अखंडल मिलत आयदहुँ आशा
मानहुँ लै भारी तारा दल तारापति हुलसायो।
लेन हेत अगवानी आशुहिं अंशुमान को आयो ।।
ईत दिनकर सम दशरथ सोहत ग्रहसम सबरघुवंशी
उत महीप मैथिल मयंकसम उडगन सम निमिबंशी
जब ते भई सैन्य की देखा देखी दूरहिं तेरे।
तब ते भये मन्द गति दोउ दल इक एकन को हेरे।

द्वितीय चन्द्र सरिस दोऊ दल ताते प्रथम सिधारी ।
मिले कोन सो कोन चारिहूँ तब मंडल भो भारी ॥
भूमंडल समसजी सैन्य मिलि निमि कुल रघुकुल वारी ।
दूत कौशलपति मिथिलापति को को बड़ छोट उचारी ।
छैल छबीले राजकुँवर कोउ तरल तुरंग धवाई ।
जनकहि करहि प्रणाम हर्ष बशवाजी वेश नचाई ॥
तैसेहि कोउ निमिवंश रँगीले हरबर अर्ब उड़ाई ॥
अभिनंदन करि अजनंदनको मिलहि सैन्य निजजाई
पीलवान गज मुखन उठावत हय झमकावत सादी ।
मंद मंद दुहुँ दिशि ते आवत दोउ दल के अहलादी
वेला छोड़ि मनहुँ सागर युग बोरन चह संसारा ॥
तिमि दोऊ चतुरंग विराजत सूझि न परत किनारा
मिले तुरंगहि सो तुरंग वर मिले मतङ्ग मतंगा ।
मिले पैदरन सों पैदर तहँ मिले सतांग सतंगा ॥
किये परस्पर अभिनंदन सब यथा योग्य व्यवहारा।
मुदित वराती यथा घराती पूँछि कुशल बहुबारा ॥
पगे प्रेम महवीर परस्पर हाथन हाथ मिलावैं ।
हुलसि हुलसि हँसिहँसि रस के वश हाँसीवचन सुनावैं॥
प्रतीहार कहि फरक फरक तहँ किये कछुक मैदाना।
इतते कौशलपाल गयो तहँ उत मिथिलेश महाना॥
गुरु वशिष्ठ अरु सतानंद मुनि, भरत सत्रुहन दोऊ ।
चढ़े तुरंग कुँवर लक्ष्मीनिधि आय गयो तहँ सोऊ॥

दशरथ जनक नयनजुरिगेजबदोउ अभिवंदनकीन्हों।
दोऊ पंकज पाणि पसारी मिले लूटि सुख लीन्हों ।।
कियोप्रणाम विदेह वशिष्ठहिं पूछ्यो कुशलसुखारी।
सतानंद को वंदे दशरथ द्वै पग पाणि पसारी ।।
भरत कुँवर रिपुसूदन संयुत जनकहिं कियोप्रणामा।
लक्ष्मीनिधि कोशलपति वंदे लै अपनो मुख नामा।।
सुनतहि दशरथ हिये लगाई । कीन्ह प्यार निज गोद बिठाई
पुनि वशिष्ठ के गह्यो चरण चलि गौतम सुवन सुजाना ।
रघुकुल गुरु दीन्हयो अशीष तेहि पायो मोद महाना ।।
शतानन्द के चरण गहे पुनि भरत शत्रुघ्न दोऊ ।
आशिष दीन्हयो गौतम को सुत भये मगन मुदओऊ ।।
दो०-पुनि लक्ष्मीनिधि मुदित मन, कियो वशिष्ठ प्रणाम ।
आशिष दीन्हयो ब्रह्म सुत, होय पूर मन काम ।।
पूछि परस्पर सब कुशलाई । उभय भूप मुद लेई महाई ।।
कह्यो विदेह बहुरि करजोरे । तुम्हरी कुशल कुशल अब मोरे
तुम सम भूप न होवन हारे । राम लखन अस जासु कुमारे ।।
सब विधिमोहिंधन्यकरिदीन्हयों। मिथिलानगरआगमनकीन्हयो
टूटी फूटी मोर मड़ैया । तिरहुत के सब लोग लोगैया ।।
तिन्हैं जानबी अवध वसैया । सत्य कहौं करि धर्म दुहैया ।।
सुन मिथिला पति वचन सुखारे । कह दशरथ दृग बहत पनारे
जनकराज तुम हो सब लायक। कसन कहौ अस वचन सुहायक
ज्ञानवान विज्ञान स्वरूपा । विश्व विरागी भक्ति अनूपा ।।

दानि शिरोमणिनिमि कुलभानू ।कहँ लगि करियआप गुणगानू
मोपर कृपा कीन मिथलेश । सकल भाँति हरिलीन कलेशू ।।

श्रीयुगल राजकुमार के कुशल पुछना दोनों नृपति के

दो०-आये कौशिक संग में, मेरे युगल कुमार ।
लहे सुयश जग जो कछुक तौन प्रताप तुम्हार ।

कहँ मिथिलेश वसे दोउ भाई । कौंन हेत ल्याये न लिवाई ।।
सुनत विदेह कह्यो कर जोरी । दोउ मर्यादा राखी मोरी ।।
जग पालक बालक नृप तेरे । रिपु घालक मालक हैं मेरे ।।
पूत सुपूतन की बड़वारी । सके नशेष गणेशे उचारी ।।
राउर सुवन सहज निज जाने । त्रिभुवन महँ तिन होत बखाने
राज राजमणि बेगि पधारो।निज नंदन निजनयन निहारो ।।
अस कहि दोउ नृप स्यन्दन केरे । वैरख फिरे दोउ दल केरे ।
चली चारु जनवास बराता । सो सुख इक मुख नहि कहिजाता
दशरथ लक्ष्मी निधिहिं धुलाई। लियो आपने यान चढ़ाई ।।
जनक बुलाय भरत रिपुशाले । निज रथ लियो चढ़ाय उताले
उभय महीपन के युग जाना। मिले वरोवर कीन पयाना ।।
गुरु वशिष्ठ अरु गौतम नंदन । उभय और चढ़ि राजत स्यन्दन

दो०-चली सेन दोउ संग इक, मिलि जनवासे ओर ।
मनहुँ पसारे सिंधु युग, करि बेला को बोर ।

नगर निकट ह्वै चली बराता ।लखन हेतु पुरवासिन जाता ।।
यूथ यूथ मारग महँ ठाढ़े। नर नारी आनँद रस बाढ़े ।।

जनक नगर महँ फैली वाता। जनवासे कहँ जात बराता।।
अग्रवेत्र धर अदव जनावहिं। बंदी जन वर विरद सुनावहिं।।
बाजत बाजन विविध विधाना। वार मुखी नाचत करिगाना।
परत पावड़े वसन अमोलें। चली बरात प्रेम रस फूलें।।
सकल नगर अति आनँद छायो। देखि बरात सबहिं सुखपायो
चढ़ी नागरीक अटनं निहारैं। फूल भरी वर वदन उघारैं।।
युवती नृपपुर को मुदि पागी। देखहिं विविध झरोषन लागी।
डगर डगर घर घरन उछाहा। रस प्रवाह सव बहे अथाहा।।
गये निवासहिं लखन नहाई। प्रभु को दीन्हीं खबर जनाई।।
पिता अवधपुर ते चलि आये। आपसु महँ पुर जन बतराये।।
कह्यो राम अतिशय सुखमानी। लषण परत हमहूँ कहँजानी।
इत सुनात सत्रुंजय नादा। मम मतंग मंदर मर्यादा।।
बजत बिजय कर मोर नगारा। इत सुनि परत महाघहरारा।
तोपै चलहिं जनक पुरमाहीं। देत सलामी मम पितु काहीं।
चलहु कहहिं गुरु पहँ अतुराई। पिता दरशहित चलहिं लेवाई
अस कहिगे मुनि पहँ दोउभाई। कहे वचन मृदु विनय सुनाई।
सुनियत नाथ पिता पगु धारे। दर्शन लोभी नयन हमारे।।
दो०-दर्शन करि आवहिं तुरत, जो आयशु गुरु होहु।
उचित होइ तौ आपहू, सहित कृपा चलि देहु।।
कहे बचन कौशिक विहँसि, चलिहैं हमहुँ विशेषि।
आज न कोउ तव पितु सरिस,लियो लोक त्रयलेषि।
मंद-मंद उत भूपति दोऊ। दोऊ सैन्य वीर सबकोऊ।।

निरखतनभर जातजनवासा।करतविविधविधि हासविलसा।
भरत-शत्रुहन दोनों भाई। कह लरिकाईं बश चतुराई ।।
हमहिं बतावहु कहँ दोउ भाई।केहि थल बसत लषन रघुराई।।
राजकुँवर के बचन सुहाने। सुनत विदेह हर्षि मुसुक्याने ।।
चूमि वदन बोले सुनताता ।यहि पुर वसत युगल तब भ्राता।।
लखिहौआज अवशि निज भाई।कौशिक सहित लषणरघुराई।।
सुनि पुलके दोउ बंधु अपारा।कह्यो जनक सो अवध भुवारा।।
सुंदर भयो पुरी निरमाना ।बसे सहित जँह ज्ञान-विज्ञाना ।।
है वैकुण्ठ सरिसपुर सोई। आवहिं सदा संत सब कोई ।।
यहि विधि करत परस्पर बाता ।जात चली जनवास बराता।।
दो०-धांय धाय देखैं सबै, मिथिलापुर नर नारी।
बारहिं बार बखनहीं, दशरथ भाग्य उचारि ।।
धन्य धन्य कौशल्या रानी। धन्य धन्य दशरथ गुणखानी ।।
जाके राम सरिस सुत भयऊ। अब का भव वैभव रहि गयेऊ।
अस सबकहहिंविविधविधिवानी। दशरथ भाग्यन जायबखानी
जनक सुकृत मूरति बैदेही । जासु प्रभाउ विदित नहिं केही ।।
हम सब धन्य जनक पुरवासी । लखे भूप दोऊ पुण्य प्रकासी ।।
कोउ तिय कहैं सुनौ सखि बानी। सुन्दर जोरी जस मुनिआनी
तैसे युगल कुँवर अति लोने। दशरथ सँग आये सुठि लोने ।।
और हजारन राजकुमारे। तिनके सरिस न परै निहारे ।।
यहि विधि करहिंपरस्पर बाता। सुखन समात बिलोकिबराता
वर्षहिं सुमनस सुमन अपारा। चढ़े विमानन देहि नगारा ।।

दो०-जय मिथिला पधि अवधपति, मच्यो गगन महि शोर।
उपर अमर अधजन नगर, रह्यो विवरन बाकी ठौर ॥

॥ जनवासा आना ॥

करत बराती हास विलासा। आये सकल सुखद जनवासा ॥
निरखे सब अनूप जनवासा। सत्य सत्य जनु स्वर्ग विलासा ॥
अवध जनकपुर ते अधिकाना। निरखि देवगन चित लोभाना
वन्यो राजमंदिर अति भारीं। शक्र शदन समजासु तयारी ॥
महा मेरु मंदर सम तुंगा। चमकहिं मनहुँ हिमालय शृंगा ॥
सभा सदन अति वन्यो विशाला। सैन्य सदन सुँदर शशिसाला
मज्जन भोजन भवन विभागा। चहुँकित चारु तड़ाग सुबागा
कल कंचन की कलित कियारी। झरहिं फुहारन सुरभितवारी
परशि भूमि लतिका लहराहीं। फूलि फूलि परिमल पसराहीं
लता भवन बरलता विताना। फूल सकल ऋतुके फल नाना।
कुँजन कुँजन गुंज्जहिं भँवरा।कलरव करहिं विहँग चहुँओरा।
तन्यो चौक महँ वसन विताना।कनक रत्नरंजित विधि नाना
दो०-चारिहुँ भाइन के भवन, राजभवन विस्तार।
भिन्न राजकारज भवन, विस्तर कोशागार ॥
गजशाला बहु बाजिन शाला। सचिव सदन भटसदन विशाला
चौहट हाट बनी हाटक की। मर्यादा आमन फाटक की ॥
कनक कपाटन कलित दुबारा। परिजन भवन परम विस्तारा
कमला तीर मनोहर वासा। योजन युगल वन्यो जनवासा ॥
शीरी सघन सुखद अमराई। शाखा क्षिति छवैछवै छबि छाई

अति उतंग चहुँ ओर दिवाला । पुरइन गोपुर बन्यो बिशाला
जानी सिये बरात पुर आई । कछु निज महिमा प्रगट जनाई ।
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई । भुप पहुनइ करन पठाई ।।
दो०-सिधि सब सिय आय सुअकनि गई जहाँ जनवास ।
लिये संपदा सकल सुख सुरपुर भोग विलास ।।
तब श्रीप्रभु लीलादिक प्रवीनि । शक्ती निज अवाहन कीनी ।।
सिद्धै रिद्धै पुनि ध्याई । सकल विभुति लिये ढ़िग आई ।।
तिमहि कृपा युत बचन सुनाये । इहा भानुकुल भूषण आये ।।
सेवन उचित सुवेष बनाई । तुम कछु जाय करहु पहुनाई ।।
परम शक्ति वच सिरपर मानी । जनवासे गवनी मुदसानी ।।
सुन्दर जुवतिन केतन धरै । मृगनैनी शसिमुख सुकुमारै ।।
कौशल्याआदिजहाँनृप वामा।निकट जायजथविधिकीन्हप्रनामा
दो०-पुछै विनय करै निपुन, रहिती हम रनिवास ।
रानी सुनैना स्वामिनि, तिन पठई दीन्ह तीनपास ।
निज दासीगन कै महरानी । सेवा करावहु मनमानी ।।
मंजन हित एके मतिवाना । लिये तप्त जल सौरभ साना ।।
एकै मुकुट मसि संपुट धारै । मृग मद कुमकुम चन्दन गारै ।।
लिये पान संपुट वर वाला । एकै सुमन रचि सुचि माला ।।
एकैजु कौविद पाक बिधाना । रचै सुउत्तम व्यंजन नाना ।।
पुनि ठकुरानिन लौ रुख पाई । करै प्रमोद करन सेवकाई ।।
यौही के चित वत वनि दासा ।ठाढ़ि रहै मुदित नृप पासा ।।
जानि जनक सेवक निज पाही । सेवन करत निवारत नाही ।।

कार्य कबाचिक जोहित होई । मन सौ करहि निरन्तर सोई ।
पावै सम सतकार बराती । कौनहु विधि नहि लखहि दुभाँती
जो सुख देवन मै विबुध सुनावै । ते सब कौमहि प्रगट दिखावै।
दो०-जानी सिय महिमा कहै । राम रघुकुल केतु ।
प्रेमासिन्धु मन मगनहुव, समुझि हिय को हेतु ॥

॥ सिय महिमा रघुनाथ ही जानै ॥

सचिव सभासद भट सरदारा । सबके पृथकहि पृथक आगारा
गमनी जब बरात जनवासा । लखे यथा सुरलोक विलासा ।
कहे जनक कोशलपति पाहीं । यदपि रावरे लायक नाहीं ॥
तदपि निवास करहु नृपराई । गुनि निज सदन सहित सँकराई
जो कछु बन्यो सुदिय बनवाई । नाथ दिखावत लाजहिं आई ।
कह्यो अवधपति हँसि सुख मोई। याते अधिक बिकुँठहि होई ।
दो०-भल रचना कीन्हीं नृपति, दिय सुरलोक बनाय ।
बसब इते हम सब सुखी, आप बसो गृह जाय ॥
जनक वेगि अब गणक बुलाई । तनक चित दै लग्न सुधाई ॥
गुरुवशिष्ठ गौतममुनि काहीं।ज्योतिष के आचारण बोलाईआहीं
शतानन्द आदिक मुनिराई । रचहु समाज आजउत जाई ॥
करि सिद्धान्त लग्न महिपाला । फेरि करहु व्यवहार बिशाला
याचक बहु याचन विधि कीना । दान होत दाता आधीना ॥
तुम दाता विदेह महिपाला । हम सउर याचक एहिकाला ॥
आये अमित नरेश कुमारा । अब सबको नृप आप अधारा ॥
दानि शिरोमणि भूप बिदेहू । मिटिहैं अवसि सकल सन्देहू ॥

सुनत सयुक्ति अवधपति बानी । भूप विदेह महामुद मानी ।।
बोल्यो मंद मंद मुसुकाई । काक्षति जहँ बशिष्ट मुनिराई ।।
असकहिमाँगिबिदा मिथिलेशा । वंदन करि पुनिचल्यो निवेशा
जाय निवास बिदेह उदारा । पठयो विविध भाँति सत्कारा ।
दो०-सुमति सचिव गौतम सुवन, ल्याये सब सत्कार ।
दियो बरातिन वास वर, यथा योग्य आगार ।।
सुखी बरात बसी जनवासा । लहे सकल जनु स्वर्ग विलासा ।
कनक कलश कोपर बड़ धारी । कुंड कुँभ मंजूषा झारी ।।
भरि भरि भोजन पान प्रकारा । सुधा सरिस पकवान अपारा
सत्कार के लिये नाना प्रकार के वस्तु और भोजन लाते हैं।
पुहुप विभूषण रत्न समेतू । विविध भाँति फल सुधा निकेतू ।
विविध भाँति की बनी मिठाई । वस्तु अमित घृत वस्तु सुहाई।
विविध भाँति के रुचिर अचारा । लेह्य चोष्य वर पेय प्रकारा
भोजन योग्य वस्तु बहु औरा । जे नर लोक माँह शिरमौरा
जौन बस्तु प्रिय देवन काहीं । दुर्लभ जे महि लोकहिं माहीं ।।
सकल बरातिन बसन अपारा ।रह्यो जौन जस लघु बड़वारा ।
कनक रजत रंजित जरतारी । तन चारक पट मुकुत किनारी
जे लखि भूपति देव सिहाही । खान पान धारण मन माहीं ।।
यथा योग्य जस जौन बराती । अतिउत्तम नृप कहँ सब जाती।
दो०-मंडप कुसुमन के विविध, पुहुपि फरस बिस्तार ।
और पदारथ मोद प्रद, कहँ लगि करिय उचार ।।

भरि भरि काँवरि सुघरकहारा। तिमिभरि शकटन ऊँटअपारा
शतानन्द अरु सचिव लिवाई। कोशल पालहिं नजर कराई॥
दीन्हें पूरि बरातिन काही। रही कछुक अभिलाषा नाहीं॥
भूपति हेतु पदारथ जेते। सादर लै बांटे नृप तेते॥
विश्व उदार शिरोमशि राऊ। लघु बड़ जान्यो एकहिं भाऊ।
शतानन्द अरु मंत्रि सुहावन। आये अवधनाथ ढ़िग पावन॥
तिन आगे चिउरा दधि राखे। बोले बचन जनक जस भाखे॥
जोरि पाणि युग नावत शीशा। नृपति कह्योसुनु अवधअधीशा
दधि चिउरा उपहार हमारा। लेहु कृपा करि अवध भुवारा।
अवध विभव बासव नहिं तूलै। किमि सत्कार करौं सुख मूलै।
जो कछु विभव नरेश हमारा। सो सब अहै विशेष तुम्हारा॥
सुनत विदेह नृप बचन नृपराई। दधि चिउरा लै शीश चढ़ाई।
दो-०सादर बोल्यो अवधपति, कहि प्रणाम मुनि मोर।
पुनि विदेह सो अस कह्यो, सकल अनुग्रह तोर॥
शतानन्द अरु सचिव को,कहि सादर एहि भाँति।
विदा कियो दशरथ नृपति,करि प्रणाम मुदमाति॥

॥ श्रीविम्वामित्रजी दोनों भाई सहित आना॥

दो०-भोजन काल विचारि कै, उठन चह्यो महिपाल।
हल्ला परयों बरात में, एक वार तिहिकाल॥
राम लखन लै संग में, दशरथ दर्शन हेतु।
आवत विश्वामित्र अब, तुरत गाधि कुल केतु॥

मध्य दिवस वह शुभ समय, जानि गाधि कुल चन्द।
चल्यो अवधपति मिलन हित, सहित लखन रघुनन्द।

।। कवित्त ।।

भोजन करत रह्यो भोजन विसारि दियो,
पान को करत जोई पान विसरायो हैं।
सोवत रह्यो जो वैसहिं सो उठि धायो,
आशु मज्जन करत धायो नीके न नहायो है ।।
करत होतो जो काम जौन-जौन जोई जन,
परत अवाज कान तौनहीं भुलायो है।
सकल बरात माहिं चारों ओर शोर छायो,
रघुराज आज आयो रघुराज आयो है ।।

दो०-प्रेम लपेटे अटपटे, सुनी सखन कै वैन।
मुनि संकोच बस नहिं भनता बिहँसत राजिव नैन ।।
कीन्ह्यो शैयन प्रबेश जब, राम लखन मुनि संग।
जुरे अवधवासी सकल, मच्यो महासुख रंग ।।
परहिं चरण कोउअवध निवासी।देहि प्रदक्षिण कोऊसुखरासी

।। श्रीमुनिजी जनवास आना ।।

दो०-लेन चले आगे कछुक, कौशिक की अगुवानि।
मनो महाँ सुख सिंधु में, हिले जन्मधनि जानि ।।
उततै आये गाधि कुमारे। सहित युगल दशरत्थ दुलारे ।।
इतते करि बशिष्ठ मुनि आगे। राज समाज गई अनुरागे ।।
विश्वामित्र बसिष्ठहिं देखी। कियो प्रणाम महामुद लेखी ।।

तिहि अवसर आये दोऊ भ्राता । गहे दौरि पद जल जाता ॥
आशिष दै बसिष्ठ मुनिराई । लिये दुहुँन कहँ अंक उठाई ॥
चूमि वदन सूंघ्यो मुनि शीशा । चिरजीवहु अस दीन अशीशा ।
निरखि गाधि सुत कौशल राऊ।गिरि गहि रह्यो गाढ़ युगपाऊ
दै अशीष मुनि चहत उठाईं । उठत न भूप प्रेम अधिकाईं ॥
जसतसकै मुनि नृपहि उठायो।पुनि-पुनि मिलतनयन जलछायो
पूछत कुशल पुलकि मुनि नाहा । वहतभूप दृग अम्बु प्रवाहा ॥
नाथ कृपा फल मुहि दरशायो । राम लखन मैं आजुहिं पायो ॥
राम लखन पुनि दोउ सुखसाने । पिताचरण पंकज लपटाने ॥
लिय उरलाय लगाय भुवाला । तुले न ब्रह्म मोद तिहिकाला ।

श्री दोनों भाई को चक्रवर्ती जी का दुलार

दो०-ताहि गोद लै अवधपति, नयनन नीर बहाय ।
कहत गाधिसुत की कृपा, गयो पूत में पाय ॥

❀ चारों भाई का परस्पर मिलन ❀

चूमत मुख सूंघत पुनि शीशा । गदगद गर नहि वदत महीशा ।
भरत शत्रुहन पुनि दोउ भाई । परे चरण रघुपति के जाई ॥
राम दुहुँन उर लियो लगाई । बार-बार दृग बारि बहाई ॥
भरत चरण किये लखन प्रणामा । सो दियो आशिषपूजैं कामा
रिपुहन लखन चरण शिर नाये । परम प्रमोद बंधु दोउ पाये ।
रिपुहन भरत दौरि पुनि जाई । कौशिक चरण गहे हरषाई ॥
गाधि सुवन दिये आशिरवादा । सुखि रहौ ध्रुव भुष मर्यादा ।

दो०-यहि बिधि सबसे मिलि तहाँ, पितु मुनि बंधु समेत ।
जाय वितान तरे मुदित, बैठे कृपा निकेत ।।

कनक सिंहासन युगल मँगाये । गुरु बसिष्ठ कौशिक बैठाये ।।
जस तस कै धरि धीरज राजा । बोल्यो कौशिक सों तजिलाजा
गृहते मोहि बुलाय पठायो । प्रभु शासन शिर धरि इत आयो ।
चारिहुँ कुवर रावरे केरे । मैंनहिं जानहुँ हे मुनि मेरे ।।
उचित होय सो सासन दीजै । मुहिं अपनो सेवक गुनि लीजै ।।
पालै पासै जो जेहि काही । सो ताको पितु संशय नाहीं ।।
अह कहि राम लखन गहि हाथा ।सौंप्योनृपहिंमुदितमुनिनाथा
दशरथ कह्यो न मैं अवलैहों । दान वस्तु नहिं घर लै जैहों ।।
मुनि मुसुक्याय कही तन बानी । राउर सुत सबके सुखदानी ।।
अब यह शासन मम सुनि लीजै । चारहुँ कुँवर संग महँ कीजै ।
हम वशिष्ठ पुनि आउब काली । करव विवाह उछाह उताली

श्रीमाताजी के पास जाना दोनों भाईयों की

दो०-मातु आगवन श्रवण सुनि, रघुकुल भूषण राम ।
पितु निदेष लहि मिलन हित, भे परि पूरणकाम ।

आवत राम मातु हरषाई । करत आरती द्वारहिं आई ।।
राम लषण प्रिय पायन लागी । मातु उठाय प्रेम रस पागी ।।
चूमि बदन जल लोचन ढारी । अधिक सनेह मगन महतारी ।।
सबन्ह मातु बन्दे रघुराई । प्रीति प्यार शुभ आशिष पाई ।।
मातु कौशिला लीन्हैं गोदी । देखि राम हीवति अति मोदी ।।
लालन योग लाल तोहि लाये । भई सुखी लालन फल पाये ।।

गये कठिन दिन तुम बिन देखे । मानहुँ बृथा तौन दुख देखे ॥
सुठि सुकुमार लाल गभुआरे । बहु निशिचरी निशाचर मारे ।
सकल अमानुष लागति वाता । भई कृपा कौशिक तब त्राता ।
मधुर सुभाव नेह भरि माई । भूली रघुपति पर प्रभुताई ॥
अरुण धती आदिक मुनि वाला । वन्दत भये सभक्ति कृपाला ।
शान्ता भगिनी के पग लागे । मिले यथा क्रम अति अनुरागे ॥
दो०-प्रेम भरे मृदु बच्चन सुनि, कौशिक कृपा बताय ।
मधुर मंजु प्रिय वैन प्रभु, दिये मातु समुझाय ॥
अरी मातु मम भोरी भारी । घात टरो कह बारम्बारी ॥
खेल समान वाण इक फेंका । नसे निसाचर बचे न एका ॥
विन श्रमविन संग्राम सुअम्बा । दहे दैत्य गुरु कृपा कदम्बा ॥
तोरन धनुहिं प्रथम री मइया । किय गुरु चरण सरोज वलैया
जाय समीप छुवत धनुमाई । आप टूट शिव मनहुँ पढ़ाई ॥
चाप छुयो नहिं रावन वाना । कहि कठोर बहु करसि बखाना
गुरुप्रणाम आपसु बिनु माता । सबहिं चले अभिमान जनाता
बिन गुरु कृपा महाभव चापा । तोरि सकै नहिं ब्रह्महु आपा ॥
दो०-गाधि सुवन सहमातु सुनु, दिन दिन बढ़त अनंद ।
अबलौं दुख जान्यो नहीं, पग पग परमानंद ॥

श्रीमाताजी का समाचार पूछना श्रीरामजी से

सुनत मातु रघुवर मुखवानी । सोचहिं तजी हिये हरषानी ॥
प्रीति रीति मिथिलाधिप केरी । स्वागत सेवा कही निबेरी ॥
लक्ष्मीनिधि प्रिय प्रीतिहुँ रामा ।वरण्यो यथा गये तिनधामा ।

सुखद सुनयना नेह सुनायो । सुनत अम्ब अतिशय सुखपायो ।
नाना विध सनमान अनूपा । जिनहिं बिलोकि सराहहिंभूपा।
खंडन बहु मेवन के नीके । मोहन भोग तुष्ठ कर ठींके ॥
राजन भोग असन अभिरामा । चार प्रकार कहौं किमिनाना।

श्रीचारों भाई सहित दशरथजी के भोजन कराना

दो०-उठयों भूप भोजन करन, संयुत चारि कुमार ।
चले राजवंशी सकल, संग करन ज्यवनार ॥

छन्द चौबोला

भोजन करन लग्यो भुवाल मणि भोजन शाला माही ।
आगे पुटन पटन बैठायो, चारिहुँ भाइन काहीं ॥
सिगरे राजकुमार और तहँ बैठे आसन जोरे ।
बैठे चक्रवर्ति चामीकर चौकी महँ मधि ठोरे ॥
कनक थार कंचन भाजन भल भरि भरि व्यंजन नाना ।
प्याले पुरट विशाले जल भरि लाये समुद सुजाना ॥
कंठन कठुले कड़े करन में हीरन जड़े अपारे ।
सूपकार शुचि पहिरि लसत युग पीताम्बर पखारे ॥
भोजन करत जात भूपति मणि लखत लषण अरुरामैं ।
पूछत कौन भांति मखराखे करि निशिचर संग्रामैं ॥
कौन भांति ताड़िका संहारी लगी न डर लखि घोरा ।
सुनियत गौतम नारि प्रगट भई परशि पाउँ पुनि तोरा।
कौन उपाय पुरारि पिनाकहिं भंज्यो मध्य समाजा ।
कहँ पायो इतनो बल लालन कहाँ बली सब राजा ॥

प्रभु मुसक्याय कह्यो पितु मैं नहिं जानहुँ कारन कोई।
आप प्रताप कृपा कौशिक की मोर जोर यतनोई ॥
कौन कलेऊ देत रह्यो तोहि किमि सोये तृण सेजू।
चले चरण कोमल कठोर महिं मुनि कसक्यो न करेजू ॥
वन वन आतप वात सहत बहु ब्यथा भई तनु माहीं।
कौ सोपति सब भाँति कियो तब घर के कोउ संग नाहीं।
प्रथम लषण लरिकाई के वश कहे वैन अतुराई।
पिता अवधते कढ़त महामुनि विद्या युगल पढ़ाई ॥
का कहिये विद्या प्रभाव पितु भूख प्यास नहिं लागी।
थाक नीद आलस्य अभीलग हमरे तनु ते भागीं ॥
राम कह्यो सोपति सब जैसी कौशिक करी हमारी।
तस नहिं कीन्हीं अवध महल में त्रिशत साठि महतारी ॥
जानि परो नहिं विपिन दुसहु दुख घरते सुख अधिकाना।
जिमी राखती पलक नयन तिमि, राख्यो मुनि भगवाना ॥
सुनि भूपति करनी कौशिक की महामोद मन माक्यो।
बारहिं बार सराहि पुलकि तनु, समाधान उर आन्यो ॥
यहि विधि भोजन करत सुतन युत वदत बचन सुखसाने।
करी आचमन उठे अवनिपति आनँद माहि अघाने ॥
धोय चरण कर पहिरि वसन कछु शयनसदन नृप गयऊ।
इतै राम लघु बंधु सखा सब बैठे प्रमुदित भयऊ ॥
पूछन लागे प्रभू चरित सब भरत लाल करि आगे।
कहन लगे प्रभु चरित कियो जस, सहज लाज रसपागे।

हँसि बोल्यो कोउ राम विवाहहु काहे जनककुमारी ।
जहँ चाहहु तहँ तुम पषान ते लेहु प्रगट करि नारी ।।
सुनत हाँस रस हँसे सखासब प्रभु नेसुक मुसक्याने ।
लषण कही तुम प्रगटत पेखे सब थल नारि पषाने ।।

श्रीलक्ष्मीनिधिजी कौशल्या अम्बा के पास मिलना

यहि विधि राम मातु पितु पासा ।कबहुँसखनसहकरत सुवासा
सुनत सुनावत मैथिल प्रेमा । मनन करत भूतल भल नेमा ।।
समयसमय लक्ष्मीनिधिआवहिं । करन प्रबंध सुभाव समावहि।
कुअँरहिं पाइ राम रघुनन्दन । बोलेउ बचन सुखद उर चन्दन
राउर देखन मातु हमारी । लखन हमहिं कहीं सुखकारी ।।
सुनतहिं आपनु भाग सराहीं । चले कुअँर रघुवर सँगमाही ।।
जाइ तुरत पहुँचे रनिवासा । मातु कौशिला जहाँ अवासा ।।
कीन्ह प्रनाम माथ महिलाई । पदरज लीन्हेव शीश चढ़ाई ।।
मातु परसि सिरसूँघी सुभाया । कीन्हेव अमित प्यारसुखछाया
श्याल भाम दोउ सुतन निहारी । भई मगन मन नरपतिनारी
दो०-करि प्रणाम मातन अवर, सब सन पाइ अशीश ।
प्रेम पगे राजत कुवँर, सहित राम जगदीश ।।
मातन सुखद भेटि बहु दीन्ही ।परि परिपग मृदु विनयसुकीन्ही
कीन्ह कौशिलहुँ प्यार अघाई ।बीड़ा गंधमाल पहिराई ।।
कही बहुरि सुनु जनक कुमारा । मातहिं कहब प्रणाम हमारा
करहिं प्रतीक्षा शुभ मूहूर्त की । मिलनि परस्पर सखिसुपूतकी
समधिनिसमधिनि समधीसमधी । प्रथम भेट की होवतिअवधी

देशकाल अरुकुल अनुसारा । मिलन समय गुरुजन निरधारा ।
सोइ समय मम आनँद दाता । मातहिं कहेव सुनहु तुम ताता ।
आयसु पाइ स्वशीश नवाई । गयउ कुवँर हिय धरि रघुराई ।।
दो०-आय भवन मातहिं सुखद, दीन्ही बात सुनाय ।
सुनत सुनैनहिं हर्ष अति, आपन भाग मनाय ।।
मुदित बराती अहनिश रहहीं ।छन छन नवनव आनंद लहहीं।
आई लगनहिं प्रथम बराता । पुर प्रमोद नहिं बरणि सिराता।
बैठे दशरथ सहित समाजा । ढिगहिं सुभग सुत चारहु भ्राजा
श्यामगौर सुँदर जुग जोरी । देखत सकल नारि नर भोरी ।।
बैठे राम भरत दोउ सोहै । सहसा लखि न परै मन मोहैं ।।
पुर प्रमोद जानिय येहि भाँती । चातक लहेउ बृन्द जनुस्वाती।
कहहिं परस्पर लोग लोगाई । अनुपम मय सुँदर सब भाई ।।
राम सिया सौंदर्य निधाना । इन समयइ नहिं आन दिखाना।
दशरथ जनक अहैं तप रुपा । लहे राम सिय सकल अनूपा ।।
राम सिया शुभ व्याह उछाहा ।देखि देखि सब भरब उमाहा ।
मिथिला रँगी राम के रंगा । रामहुँ रमै अवशि तेहि संगा ।।
दो०-निज निज शुचि संबंध गुनि,पुलकत हृदय अपार ।
दरश परश बतियाब सब, करिहैं मन अनुहार ।।
अस अभिलाषा करहिं शुभ, बहु विधि मैथिल लोग ।
छन-छन होवहिं सुख मगन, लखिहहिं ब्याह सुजोग ।।
सिया स्वयंवर रहे भुजारा । ते सब देखन ब्याह सम्हारा ।।
बसे सकल गृह काज बिसारी । देखि राम नित रहैं सुखारी ।

नृप समीप सोहही सुतचारी । जनुधन धरमदिक तनुधारी ।।
सुतन समेत दसरथहि देखी । सहित नगर नरनारि विसेषी ।
जनक सुकृत मुरति बैदेही । दशरथ सुकृत राम धरे देही ।।
इन्ह सम काहुँन सिव अवराधे । काहुँन इन्ह समान फल लाधे ।
हमसब सकल सुकृत कै रासी । भय जग जनमि जनकपुरवासी
जिन्ह जानकी राम छवी देखी । को सुकृत हम सरस बिसेखी ।
पुनी देखब रघुबीर बिहाहु । लेब भली बिधि लोच्चन लोहू ।।
कहहि परस्पर कोकिल बयानी। एहिं बिआहुँ बड़लाहु सुनयनी
बड़े भाग बिधि बात बनाई । नयन अतिथि होइहहि दोउभाई
सखि जस राम लखन करजोटा । तैसई भुप संग दुई ढ़ोटा ।।
श्याम गौर सब अंग सुहाए । ते सब कहहि देखी जे आए ।।
कहा एक मैं आजु निहारे । जनु बिरंचि निज हाथ संवारे ।।
भरतु रामही की अनुहारी । सहसा लखि न सकही नरनारी।
लखन सत्रुसूदनु एक रूपा । नख सिख ते सब अँग अनुपा ।।
मनभावहीमुख बरनि न जाही ।उपमा कहुँ त्रिभुवनकोऊनाही

।। छन्द ।।

उपमा न कोऊ कह दास तुलसी कतहु कबि कोबिद कहैं ।
बल बिनय विद्या सील सोभा सिंधु इन्ह सेएइ अहैं ।।
पुर नारि सकल पसारी अंचल बिबिध बचन सुना दही ।
ब्याहिअहुँ चारिउ भाई एहिं पुर हम सुमंगल गावही ।।
सो०-कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तन ।
सखि सब करब पुरारी पुन्य पयोनिधि भुप दोऊ ।।

दो०-राम सिया शोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज ।
जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारी समाज ।

॥ छन्द चौबोला ॥

परिचर बोलि कह्यो कोशल पति रामहि ल्याउ लिबाई ।
आवत सभा हेतु मिथिला पति आवैं चारिउ भाई ॥
मंत्री सचिव सुभट सरदारन राजकुमारन काही ।
कुल के सकल बृद्ध रघुवंशी ल्याउ लिवाय इहाँहीं ॥
डेरन डेरन दौरी द्रुत सो सासन दियो सुनाई ।
सजि-सजि साज सबै रघुवंशी आये सभा सुहाई ॥
युगल सिंहासन मनिन जटित तहँ सभामध्य धरवाये ।
तैसेहिं युगल सिंहासन सनमुख धरवायी छवि छाये ॥
तिनते लघु पुनि पंचसिंहासन सनमुख सुभग सुहाये ।
निमि बंशी रघुवंशिन आसन यथा योग्य लगवाये ॥
राजकुमार सब रघुकुल के जस-जस आवत जाहीं ।
यथा योग्य अपने-अपने थल बैठत जात सुहाहीं ॥
सादर लै सुमंत बैठावत यथा राज मरजादा ।
सचिव मुसाहिब नृप सरदारन वदत भूप घनिवादा ॥
जुरे समाजित सब रघुकुल के दशरथ के दरबारा ।
राज विभूति विराजहिं सब वर राज समाज अपारा ।
तिहि अवसर आये रघुनन्दन सँग सुन्दर त्रय भाई ॥
माथे मुकुटमणिन के नाथे माथे कन्ध सुहाई ॥

जगमागात जामा जरकस को कसि कम्मर रतमाली ।
डारे ढालन में कर बालन ढालन पीढि विशाली ।।
चरण बसन मणि जड़ित उपानहु वामपाणि धृतचापा ।
दाक्षिन कर सुन्दर शर सोहत प्रगटत परम प्रतापा ।।
कानन कुडल मंडन मंडित आनन शशि मदगारी ।
केशर रेख विशाल भाल में श्याम अलक मनहारी ।।
पंच मणिन की अति विशाल उरलसत माल छबिजाला ।
भुज अंङ्गद कर कटक विराजत कटि-२ बंध विशाला ।।
मणि मंजीर हीर के मंड़ित पद पंकज न सुहाहीं ।
मनु शृंगार रस धारि चारि वपु आवत वत्सलपाहीं ।।
चारि-चारि चारहु के चामर चलत जाहिं चहुँओरा ।
उदयभान मनु युग रवि युग शशि भ्राजत भूप किशोरा ।
आये सभा मध्य रघुनायक ठाढ़ी भई समाजा ।
किये प्रणाम पिता के पद गहि आशिष दिन्ह्यौ राजा ।
बैठे कनकासन महँ सनमुख सभा प्रभा महँ पूरी ।
धावन धाय आय तिहि अवसर कह्यो जनक नहिं दूरी ।
पठयो वेगि सुमंतहि दसरथ ल्यावहु आशु लिवाई ।।
जाई सुमंत विदेह भूप सो कह्यो बचन शिरनाई ।।
महाराज मिथिलेश कुँवर युत आशुहिं धारिय पाऊँ ।
तुम्हरे दरश आस करि बैठे सभासु कौशल राऊ ।।
सुनत विदेह वचन मंत्रिन के सपदि सैन्य चलवायो ।
मैं आवत हों आशु उतै अब अस कहि सचिव पठायो ।

गै अरगन वाजिन की राजी रथ यूथन तजि द्वारे।
चलो सुखासन चढ़मिथिलापति चहुँ कृतनिमि कुलवारे
सुनि नकीव को शोर जोर तहँ अवधनाथ सुखमानी।
करि चारिउ कुवँरन को आगे चल्यो लेन अगवानी॥
उत लक्ष्मीनिधि को आगेकरि निमिकुल सहितसमाजा
मिलन हेत दसरथ के आयो वर विदेह महाराजा॥
सभा द्वार लौं जयति अवधपति निमिकुल कुमुद मयंका
करि प्रणाम सुखधाम प्रेमवस लियो भुजन भरि अंका।

श्री जनक जी महाराज का सभा में आना

सो०-कियो विदेह प्रणाम, महाराज अवधेश को।
पूछि कुशल तिहि ठाम, मोद मग्न दोऊ भये।

॥ छन्द चौबोला ॥

जनक नन्दन को पुनि किय वंदन नंदन जनक ललामा।
पंच कुमार चले आगे कछु पाछे भूपति दोऊ॥
सो छवि देखि मगन आनँद महँ दोउ कुलके सब कोऊ।
मनहुँ ज्ञान अरु प्रेम रुप धरि संग पंच रस लीन्हे॥
मिलन परस्पर अति प्रमोद भरि निज अधिकारहिं चीन्हे।
उभय उच्च सिंहासन में दोउ बैठे भूप समाना॥
लघु सिंहासन पंच विराजै पाँचों कुवँर सुजाना।
अपने दहिने दिशि बैठाये दशरथ निमि कुलराजै।
आप विदेह वामदिश बैठे गुणि मर्यादा काजै॥

बैठे विदेह ओर कुलके सब यथा योग्य सरदारा ।
दसरथ ओर बैठ रघुकुल के जिहि जस रह अधिकारा ।
अतर दान अरु पान दान बहु रत्न सुमन के हारा ।।
ल्याय सुमंत ठाढ़ भयो आगे धरि पन्ना के थारा ।।
कौशलपति निज पाणि पान दिये सहित सनेह विदेहैं ।
पुनि निज हाथन अतर लगायो मिथिलापति के देहैं ।।
पितुरुख लखि उठिके रघुनन्दन जनकहिं अतर लगायो
निज करलै विदेह को सादर प्रभु ताबूल खबायो ।।
पुनि उठि भरत पाणि अपने सोसुमन माल पहिरायो ।
लक्ष्मीनिधि के राम आप पुनि रत्न माल गलनायो ।।
अतर लगायो भरत अंग महँ वीरा लषण खवाई ।
शत्रुशाल सिगरे निमिवंशिन किये सतकार बनाई ।।
प्रतिहार आयो तिहिं अवसर मुखजय जीव सुनाई ।
विश्वामित्र वशिष्ठ मुनिन की दियो सुनाय अवाई ।।
मुनि आगमन सुनत दोउ भूपति चले लेन अगवाई ।
करि आगे पांचों कुमार कहँ द्वार देश लौ जाई ।।
विश्वामित्र वशिष्ठ चरण महँ पंच कुमारन डारी ।
किये दंडवत दोउ नरनायक कहे नाथ पगुधारी ।।
लै दोउ मुनि नायक नर नायक सिंहासन बैठारे ।
सविधि दुहुन को पुनी परशपद कह धनि भाग्य हमारे
लहि सासन निजनिज सिंहासन आसन किये भुवाला ।
मनहुँ विवेक धर्म ढिग आये ज्ञान विज्ञान विशाला ।।

पाचहुँ कुंवर बैठे कनकासन मुनि नृपके मधि माही।
युगल छत्र क्षिति नाथन माथे चमर चलत चहुँघाहीं
निमिकुल रघुकुल की समाज लखि दोउ मुनि वैन उचारे
धनि धनि कौशलपति धनि मिथिलापति को नृपसरिस तुम्हारे
कोटिन वर्ष वयतीत लहे तनु कवहु न अस मुद लेखे।
यथा दराज समाज आज हम सम समधी दृग देखे॥
कबहु विवाह उछाह लखब कब अब सब भव अभिलाषी।
दोउ नृप जब कहँ लग्न साधिये तब ह्वै शिवसाषी॥
का पूछहु हमसे दोउ मुनि वर यह सब हाथ तुम्हारे।
निमि कुल रघुकुल तुम अधीन अब नहिं शिर भार हमारे॥
कह्यो वशिष्ठ काल्हि कौशलपति जनक निवास सिधैं हैं।
कहँ हम कौशिक शतानन्द मिलि लग्न विचारि वतै हैं॥
यही कियो सिद्धांत उभय नृप सुखी भये सब लोसू।
माँगि विदेह विदा दशरथ सों चल्यो भवन विनशोगू॥
द्वार देश पहुँचाय अवधपति संध्या करन सिधारे।
निज-निज भवन कीन्हयो प्रवेश पुनि चारिहु वान्धु सुखारे

जनकजी वशिष्ठजी विश्वामित्र को बोलना

॥ छन्द चौबोला॥

मंडित भयो सभा मंदिर महँ कौन तासु समदूजा।
गौतम जाज्ञवल्क्य आन्यो तहँ भाई मुनिन समाजा।
सतानन्द अरु सचिव सुदामन धावन पैठे बुलायो।
पुनि वशिष्ठ अरु विश्वामित्रहिं बुलवन दूतपठायो।

मिथिलाधिप दोउ बंधु चले द्रुत सतानन्द करि आगे
कौशिक पद पंकज गहि प्रणमे कर पंकज अनुरागे ।
सतानन्द पुनि गाधि नन्दन कहँ वंदे बृद्ध विचारी ।
तिहि औसर बशिष्ठ ब्रह्मसुत लाये सभा मंझारी ।
कनकासन आसीन कियो नृप युगल महातप धारी ।
तैसे सतानन्द बैठाये हेमासन महराजा ।
कीन्ह्यो अति सतकार बंधु दोउ भये मुदित मुनि राजा ।
चरण पखारि सीचि सिगरे घर युग वसु विधि करि पूजा
युग बंधु तहँ युगल मुनिन सो क्यौ न हम सम दूजा ॥

विवाह की लगन सोधना परिकर्ण है

दो०-बोलि पठावहुँ अवधपति, लग्न शुधावहु आज ।
ब्याह करावहु सीय को, धावहुँ सुयश दराज ॥
इतै विदेह सनेह सहित पुनि बोल्यो बैन सुनावन ।
कहेहु विनय कहि कै प्रणाम मम हम तुवदर सनआसी ।
सुनि मिथिलेश निदेश सुहावन रथ चढ़ि चल्यो हुलासी ।
आयो सचिव सुदावन द्वारे द्वारहिं खबरि जनायो ।
जानि विदेह मुख्यमंत्री नृप आशुहिं पास बुलायो ॥
अभिवादन करि कै आमात्य वर कह्यो बचन करजोरी
नाथ विदेह बिनय कीन्ह्यो अश दरसन की रुचि मोरी
कौशलनाथ हुलसि हँसि बोल्यो देखन निमिकुल राजै ।
हमरेहु अलि बाढ़ी अभिलाषा काज अवशि उतआजै ।

कह्यो सुमंतहिं देहु दुन्दुभी हम विदेह पहिं जैहैं।
चारिहु कुँवर रहहिं जनवासे नहि मम संग सिधैहैं॥
सुनत नरेश सुमंतहु तुरतहिं दियो दिवाय नगारा।
सजि आई चतुरंग चमू तहँ सुभट शूर सरदारा॥
चढ़ि स्पंदन गमन्यो दशस्यन्दन अजनन्दन महाराजा।
बाजे बाजन विविध सुहावन लस्यो निशान दराजा।
जाय सुदावन कह्यो जनकसों आवत रघुकुल नाहा।
देखन को धायो पुरवासी भरि उमाह मन माहा॥
देखि देखि दशरथ को दृग भरि वदनहिं करतसराहैं।
जासु पूत सुपुत्र रघुपति सो तेहि समको जगमाहैं॥
दीनन सँपति अमित लुटावत आवत मंदहि मंदा।
गयो विदेह महल के द्वारे करि पुरजन सानंदा॥
सुनत विदेह अवधपति आगम उठयो समाज समेतू।
विश्वामित्र वसिष्ठ आदि लै गमन्यो निमिकुल केतू॥
द्वार देश ते लियो भूप कहँ कियो प्रणाम विदेहू।
कर गहि चल्यो लिवाय सभागृह सादर सन्यो सनेहू॥
दै आसन दहिने सिंहासन पूछि कुशल कुशलाई।
बैठयो लहि निदेश निज आसन मिथिलापति मुदपाई।
अतर पान मँगवाय सचिव कर वीरी खोल खवायो।
लै सुगंध सब अंग लगायो किय सत्कार सुहाये॥
तिहि अवसर लक्ष्मीनिधि आयो शिरनायो नृपकाहीं।
लियो भूप बैठाय प्रीति भरि अपने अंकहि माहीं॥

श्रीकुशध्वजी सबको बराती को सतकार करना

जनक अनुज सतकार कियो पुनि सब रघुवंशिन काहीं ।
विश्वामित्र वशिष्ठहिं कीन्ह्यो कौशल नाथ प्रणामा ।।
दियो हुलसि ब्रह्मर्षि भूप को आशिष पूजै कामा ।
बैठि सहानुज सिंहासन महँ कह विदेह वर वानी ।।
निमि कुल कियो पवित्र राजमणि करिकै कृपा महानी ।
दो०-असकहि मणि माला विमल, गलमेल्यो मिथिलेश ।
कह्यो जोरि कर सो करै जो अब होय निदेश ।।
उठयो फेरि कुशकेतु तहँ, लक्ष्मीनिधि हरषाय ।
रत्न माल रघुकुल जनन सवन दियो पहिराय ।।

वशिष्ठजी के वचन

तातें एक बात अवभाखहु जो जानहु मत मोरा ।
पैहो परम अनंद भूपवर जगै शुयश जग तोरा ।।
विरजहिं शुक्ला सीता कन्या राम ब्याह सो होई।
ब्याहो लखनहिं सुता दूसरी लहै हर्ष सब कोई ।।
समकुल समविभूति समकीरति समरति धर्म समाना ।
रघुकुल निमिकुल सरिस आदि जग कहौ कौनकुल आना
यहि विधि सुनि वशिष्ठ की वाणी सकल सभासद हरषे।
देव दुन्दुभी दियो मगन महँ सुमन विविध विधि वरषे ।।
सुनि मिथिलेश वशिष्ठ वचन पर पुलकित दृग जल छायो
जोरि पानि पंकज वशिष्ठ के पद पंकज शिर नायो ।।

धन्य भयो सुनि तब मुखते यह निमि रघुबंश बखाना।
रघुकुल समकुल कौन दूसरो जान अजानहुँ जाना॥
श्रीविश्वामित्रजी बचन चारो भाईके विवाहकी चरचा करना
अवसर जानि कह्यो कौशिक तब बचन हिये हरषाई।
निमिकुल रघुकुल दोउ अति पावन महिमा कही न जाई।
नहि समान दोउ कुल सम दूसर परै प्रत्यक्ष दिखाई॥
दो०-धन्य धन्य निमिकुल अहै, जहँ दायक उपदेश।
विश्वामित्र बशिष्ठ हैं, तहै नहि लेश कलेश॥

छं०-यह समान सम्बन्ध धर्म युत दोउ कुल दोउ अनुरुपा।
निमिकुल ते अब अधिक और कुल अवधनाथ कहँ पैहैं।
तैसेहिं अब मिथिलेश महीपति रघुकुल तजि कहँ जैहैं॥
ताते मोर विचार होत अस कुशध्वज युगल कुमारी।
होय विवाह भरत रिपुहन को अनुमति यही हमारी॥
तुव अनुरूप अनूप विश्वमहँ दशरथ भूप कुमारा।
निरखत जिनको लोकपाल सब मानत हियसें हारा॥
ताते अनुजन ब्यहि देहु नृप दोउ कुशकेतु कुमारी।
करहू चारिहु राजकुमारन सम्बन्धी शुभ कारी॥
दूलह चारि-चारि दुलहिन नृप निरखि जनक पुरवासी
रघुकुल निमिकुल धन्य होइगो हमहु लहत सुखरासी।
ऐसो अहै बिचार हमारो पुनि जस तुव मन माहीं॥
तुम सम सुमति कबहूँ नहिं जगमें समयचूकि पछिताहीं

सुनि कौशिक के बचन सभासद मुनिजन अति हरषाने ।
साधु-साधु सब कहैं गाधि सुत मुनिवर उचित बखाने ।।
सुनत जनक पुलकित तनु हर्षित भरि आनँद जलनयना ।
नाय चरण शिर जोरि कंजकहुँ कौशिक सो कह बयना ।।
तुम सम हैना लख्योन नयना मति अपना सुख दैना ।
अब मोहि भयना चित्तमय चैना का मम सुकृत उदैना ।।
मिथिलापति के कहत बचन अस सभामध्य इकबारा ।
परिजन पुरजन गुरुजन सज्जन कीन्हो जय जयकारा ।।
पुनि विदेह सो कह बशिष्ठ है तहँ नहि लेश कलेश ।।

दो०-धन्य धन्य मोरी भई, मुनिवर चारि कुमारी ।
पायो वर त्रैयलोकवर, निज निज वपु अनुहारि ।।

छ०-फैलि गई यह बात सकल पुर परसो राम विवाहू ।
जहँ तहँ यूथ यूथ जुरि जुरि नर नारि करै सब काहू ।
यह सम्बध महासुखदायक जनक सुकृति वैदेही ।
दशरथ सुकृत रूप रघुनन्दन अपर कौन समदेही ।।
पूरब हमहुँ पुण्य बहु कीन्हो भये जनक पुरवासी ।
देखे नयनन सो राम ब्याह अब देखब आनँद रासी ।।
बारहि बार बिलोकन रामहि लेव विलोचन लाहू ।
घर-घर राम निमन्त्रण होई अनुपम सुख सब काहू ।।
कोउ कह मैं अबहीं सुन्यो, भूपति मंदिर माह ।
होयहै चारहुँ कुँवरि को, चारहुँ कुवर बिवाह ।।

श्रीमिथिलेशजी युगल मुनि से वार्ता

बैठहुँ युगल राज सिंहासन युगल मुनीश कृपाला।
मिथिला अवधराज तुम्हरी दोउ तुमहीं अहै भुवाला।
जैसो दशरथ को मिथिलापुर तस कौशलपुर मोरा।
कुछ नहिं भेदहिं जानिय मुनिवर तहिं कुछ करो निहोरा।
नहि संदेह प्रभुत्व मोहि कछु तब पद शीश हमारे।
मन भावै सो करहु नाथ दोउ जस अभिलाष तिहारे।
यहि विधि तिहि समाज महँ आनंद छाय रह्यो मिति नाहीं
हुलसि अवधपति जोरि कंजकर कह्यो जनक नृप काहीं॥
गुण सागर नागर यश आगर मिथिलेश्वर दोउ भाईं।
कियो महासत्कार मुनिन अस कौन करे नृप राईं॥

राज समाज रावरे करते लहे परम सत्कारा।
देहु रजाय जाहिं जनवासे वर्णत सुयश तुम्हारा॥
विश्वामित्र बशिष्ठ कह्यो तब तुम अस करहु विदेहू।
हम सबको अपने वश कीन्हयो पाश पसारि सनेहू॥
कौशल नाथ संग जनवासे हमहूँ करब पयाना।
करवेहों चारिहुँ कुमारन विविध सविधि गोदाना॥
अभ्युदायिक करवाय श्राद्ध विधि सब विवाह के चारा
कृति तेल गायन करवहैं ब्याह विधान अपारा॥

सुनि वर बचन रचन दशरथ के सुनि मिथिलेश सुजाना।
जस अभिलाषित होय कीजे तस कारज अवशि बिचारे॥

भयो प्रेम बस कह्यो कौन विधि इतते राउर नाना ।
उठयो अवधपति लै समाज सब उभय मुनिश सिधारे ।
करि कौशिक वशिष्ठ कहँ आगे चल्यो राम जनवासे ।
सकल राजवंशि मंत्री भट मगन हिय हुलासे ।
फहरात चले निशान बहुबाजन विविध विधान ।
देखतपुर जन भनत यश यहि समकिमि मघवान ।
जनवासे आये कौशलपति बैठे मन्दिर माही ।
विश्वामित्र बशिष्ठ बोलि तहँ विनै करिति न पाही ।
अभ्युदायिक प्रभु श्राद्ध करावहु अब न लगा बहु देरी ।
जो कछु कारज होय बतावहु सेवकगु निगति मेरी ।
गुरु वशिष्ठ अरु गाधि तनय तब विधिवत श्राद्ध कराये ।
अवधपति अरु मिथिलापति मान्यो मोद धनेरो ।
निमिकुल रघुकुल सकल सभासद परिजन पुरजन जेते ।
रामलखन उछाह लग्न सुनि भये प्रमुदित सुनि तेते ।
कियो विदेह विनय दशरथ सो पितर श्राद्ध करि लिजै ।
पुनि गौ दान कराय कुमारन ब्याह विधान करिजै ।
प्रथम व्याह की कृत्य जो लौकिक वैदिक होय ।
सो सब शुभ दिन शुभ धरी नृपहि सुनायो सोय ।
जीवन लाहु इहै तिन्ह जाना । भजैं आस तजि कृपा निधाना
यहि बिधि विते दिवश अनुकूला । आयो अनहन मंगल मूला ।
लगन सोध ब्रह्मा शुभ कीन्हा । नारद करहिं पठाय सो दीन्हा ।
यहाँ जोतिषी जनक भुवारा । शुभ ग्रह शोध लगन निरधारा

युगल शोध सब भाँति सुहाये । एकहिं मिले न कछु अलगाये ।
विधि सम ज्ञान ज्योतिषन केरा । कहहिं लोग नहिं थोरेहुँफेरा
होय विवाह उत्तरा फाल गुनि, यह संमत सब केरी ।
दो०-प्रथम व्याह की कृत्य जो, लौकिक वैदिक होय ।
सो सब शुभ दिन शुभघरी, नृपहिं सुनाये सोय ॥

❀ विवाह प्रकरण प्रारम्भ ❀

॥ छन्द ॥

गुरु वशिष्ठ गौदान करन को, सविधि अरंभ कराये ।
सुवरण शृंगन सहित बच्छरा कनक दोहिनी नारे ।
परे दुशाले पीठन में जिन रजत खुरी छबि बारे ॥
पयस्रवनी निरखत मनहरनी बहुबरनी शुभशीला ।
ऐसी चार लाख सुरभीं तहँ मँगवायोइव लीला ॥
लक्ष लक्ष मुद्रा हेमहिं पुनि तिन दक्षिणा दिवायो ।
लाख लाख सुरभी इक इक सुत करते दान करायो ।
याचक भये अयाचक जग के किये बिप्र जयकारा ।
धर्म ध्वजा फहरात भूप को बिदित सकल संसारा ॥
अमित असंख्य बराती साथा । नृपसम सबै तिरहुत नाथा ॥
नित प्रति सकल बरातिन डेरा । जाइ हेतु अति साँझ सबेरा ॥
निजगुण सब कहँबश करिलीने । सहित अवधपति भये अधीने

॥ फलदान पठाना ॥

जनक प्रथम फलदान पठावा । भूषण बसन मनीवहु लावा ॥
रत्न गथित वर बसन सुरंगा । कोटि मुकुट अंगद वहुरंगा ॥

सब प्रकार धन लिये कुमारा। सतानन्द सह हर्ष अपारा ॥

॥ फलदान तिलक चढ़ावन ॥

जाइ दीन्ह दशरथ नृप काहीं। महामोद कीन्हों मन माहीं ॥
भो फलदान रामकर टीका। भयेउ महाउत्सव अतिनीका ॥
तिलक समय बरसहिं सुर फूला। बजत दुंदुभी आनन्द मूला।
गावहिं गान अवध पुरनारी। प्रेम मगन सिगरी महतारी ॥
विविध बाद्य धुनि चहुँ दिशि गूजै। जय जय शोर आससबपुजै
वेदमंत्र मुनिवर बहु पढ़हीं। गुरु वशिष्ट मने मनहिं उभगहीं।
दो०-विविध दान दशरथ दिये, भये प्रसन्न सुविप्र।
सकल अशीषहिं प्रेम भरि, जय जय कहि बहुविप्र।

॥ कलश स्थापन ॥

दशरथ विविध कीन्ह पहुनाई। सुभ घटिका महँ कलश धराई
जुरे सभा महँ महिप अपारा। सजे महाछवि राजकुमारा ॥
फूलि जननिन अंग समाई। चौकन चौके चार पुराई ॥
गणपति देव पितर गुरु पूजे। कहैं प्रसन्न अधिक अब हूजे ॥
किये कुलनेग चलौ जिमिआवा। लगन पत्र सिसुकरन धरावा
इन रघुनन्दन धनुष चढ़ाये। ये सुगीत युवती मिलि गाये ॥
दियै चहिय सौं सब कहँ दीना। दिये असंख्य करन कीना ॥
सुवासिन कहँ वांछित दयऊ। नृत्य गीत बड़ मंगल भयऊ।।
दो०-विप्र सुजाती सुहृद जन, सतानन्द मुनि साथ।
असन अमिय सम सबन कौ, करवाये नर नाथ ॥

॥ तेल चढ़ावन ॥

दो०-निसि में कौशिल्या जननि, सकल सुभागिनि जुक्त।
रघुनन्दन को गान करि, तेल चढ़ावन सुयुक्त॥

तिमि सब उमा रमा ब्रह्मानी। प्रेम छके केहुँ नाहि पिछानी॥
सहज सचिक्कन सहज सनेही। सहज मनोहर सब महँ देही॥
तेल चढ़ै शोभा बहुऔरे। देखति बाला लालन कौरे॥
प्रसूजतन करि दीठि बरावैं। चारहु पुत्रन की वलि जावैं॥
पूजन गौरी गणेश करायो। ते निज रूप प्रत्यक्ष दिखायो॥
पूजन लेन ब्याज सब देवा। आवहिं करन राम की सेवा॥
करि वाचन पुण्याह सुखारी। लियो बोलि द्विज पंचकुमारी।
निकट पुरट घट चटपटधरिकै। सदल सदीप अमल जलभरिकै
नवल पीत पट भूषण नाना। विप्रकुमारी करि परिधाना॥
लै हरदी दुर्वा तेहि बेला। नृपसुत लगी चढ़ावन तेला॥
बैठे बरोबर चारो भ्राता। निरखत जननी सुखन समाता॥
जस जस ब्याह कृत्य तहँ होती। तसतस तिनतन लाज उदोती

दो०-तेल चढ़ावहिं कौशिल्या, रघुनन्दनहिं निहारि।
तकि तकि छवि छकि छकि रहैं,जकी मातु बलिहारि।

दुव नृप गृहन ब्याह के चारा। होइ इतै उत एकहिं बारा॥
देखन के लालस मन भीने। द्वै द्वै रूप देव तिय कीने॥

श्री किशोरी जी आदि का

जनक सविधी नेग सब साधे। देव पितर कुल इष्ट अराधे॥
कान्ति मती जुत रानि सुनैना। करै वंश व्यवहार सुचैना॥

कुल गुरु तियन पूछि विधि लेही । उचित कराये बड़प्पन देहीं
फूली फिरहिं सुवासिनि बामा । लखहिं कुतूहल तजिगृहकामा
दो०-सीतादिक सुकुमारिन, थित करि श्रीपति धाम ।
तेल चढ़ाव सुभगिनिन, करि करि गान ललाम ।।
यहि विधि जनक सुनैना रानी सीतहिं भगिनि समेतू ।
तेल चढ़ाय पाय आनँद अति, पुनि बैठाय निकेतू ।।

।। गौदान ।।

चार लक्ष सुरभी सालंकृत, चारि कुँवरि कर तेरे ।
दीन्ह्यो दान दिवाय द्विजन को शतानन्द के प्रेरे ।।
पुनि वशिष्ठ कौशिक विदेह ढिग कही मनोहर बानी ।
सकल चार ह्वै गयउ उभय दिशि,रह्यो ब्याह सुखखानी

।। मण्डप रचना वर्णन ।।

शुक्ल तीज को मंडप छायो । सरल खंभ दीपक थल भायो ।।
पंच सुपल्लव लसत विशाला । बाँधी चहुँदिशि वन्दन माला ।।
अजिर विस्तार राउर माहीं । रचना कहत बनै जिमि नाहीं ।
शिल्प कर्म अति निपुन पुमाना ।तिनने रची रुचिर सोविताना
ता महँ मंजुल मंडप रोपा । कनक कदलि तंत्र सरोपा ।।
नाना रत्न सरोज बनाये । पर्ण वल्ली बनक लगाये ।।
हरित मणिनदलनाल विशाला । फलमणि हरित पीतबहुलाला
लाल पीत सित नील मणी के । सुमन बने सुभ सोभधनी के ।।
दो०-पीत पनन पंनान के, रचे बने जुत पर्न ।
चिक्कन सरल सुहावने, मोहन अन्तह कर्न ।।

नागलता फल दलन उछिनी । सब विधि सम सुबरनमय कीनी
झूलै तिन बंधन बहु श्रेणी । माला मुक्तन की छवि देनी ॥
बहुरतननमय कमल सुलसही । पुंडरीक हीरकमय करही ॥
इन्दीवर नीलकमल महँ हेरे । बनै कोकनद मानिक केरे ॥
पुष्पराज के बने सरोजा । पत्र सुपंनन कलित पिरोजा ॥
इन्द्र नील के असित बिहारै । लागे करन मधुर गुँजारै ॥
मरकत रचित रसाल दली के । लगे सुतोरन भाँति भली के ॥
कंचन कोरन नीलम सोहैं । सूक्ष्म ग्रंथि सुरेशम पोहै ॥
कंचन कलश धरी प्रतिद्वारे । धरि उत सब विधि सब उपहारे

दो०-प्रतिमा इन्द्रादि देवकी, बनी सुखंभन माहँ ।
लिये सुमंगल बस्तु को, लेहु चहिय जो जाहँ ॥

धरे रत्न दीपक प्रति ठामा । रहैं एक द्युति दिवश त्रियामा ।
चार प्रधान खंभ छबि राशी । तामहँ रचे राखि अवकाशी ॥
गणपति हरि रविहर गवरी के । थित किय पंच मूरतै नीके ॥
सुकसारो पिकमोर रसाला । लसै चित्रप्रति पुतरिन वाला ॥
वेदी विविध द्विजन बनवाई । जे जेहि दिसन वेद महँ गाई ॥
मंगल कलश धरे सविधाना । पुरे रुचिर स्वस्तिक तहँ नाना ।
जेहि दुलहिन सीता शुभरूपा । तिहिछबिकिमिकहिजाय अनूपा
दूलह राम विवाहन आहीं । विदित सुमंडप तिहुँपुर माहीं ।
छ०—त्रिभुवन विदित मंडप सुतंत्र सुपीठि थित्तकर जानकी ।
भगिनीनि रयौं रमनीन्नि रजनी अर्पिविधि किय मानकी ।

तन तप्त स्वर्ण समान तिन महँ वोय हरदी कहँ बढ़ी ।
श्रीसाक्षात् परन्तु ब्याह विशेष श्री औंरे चढ़ी ।।
सो०-थापे देव गणेश, जे विवाह हित कलश महँ ।
मेटन सकल कलेश गणेश, पुजवाये सविधान तहँ ।
दो०-परिक्रमा सो विनायक की, सिय को चहैं कराव ।
उदवर्तन करि कुल तियन, शुभ शृंगार बनाव ।।

।। श्रीकमला पूजन ।।

गुहि सुमना सुमनन की श्रेनी । रची सरतन सुचिक्कन बेनी ।।
भरि सीमंत सिन्दूर ललामा । चूड़ा रतन गहौ अभिरामा ।।
भाल लाल मुक्ता बहुसाजे । नाना करना भरन विराजे ।।
नाना भूषण में दुति होती । लगे अमोल सजल ससि गोती ।।
विविध कंठ भूपेन छवि जाला । उज्ज्वल चन्द्रहार मणिमाला
भुज अंगद केयूर अनूपा । पहुचिन में कंकन बहु रूपा ।।
कर अँगुरिन मुदरी दुतिकारी । कटि में कल किंकिन झनकारी
पैंजेव नूपुरादि विधि ऐही । पादप कटक हंसक छबि देही ।।
दो०-हेमततु गुफित बिपुल, नाना भाँति अमोल ।
सुन्दर सभय प्रमाण के, पहिराये सुनिचोल ।।
दशद्वै अति आभूषण नीके । शोभित होत भये तन सीके ।।
रूचिर चार चौडोल सुहाये । नाना मनि मंडित छबि छाये ।
उर्मिलादिकन जुत समसाजी । जनकनन्दिनी तिनहिं विराजी
विविध सुखासन चढ़ि सब रानी । भई संगसब सखिय सयानी
सुवासिनी पुरकी वर नारी । गावत मंगल गीत सिधारी ।।

सुपन मनि मानिक उजियारे। चले कपूर सलाकन वारे ॥
बाजे बजेन पाइया पारा। देखत बनी सुछवि तिहिबारा ॥
दई सुदक्षिण दुर्गहिं फेरी। आइ बरातिन हूँ तहँ हेरी ॥
दो०-जाइ निकट सिर नाय सबै, भाव सहित गोहराइ।
कमला झट प्रगटत भई, आशिष दइ जय छाइ ॥
चारों कुंअरि विधि पूजेऊ, मन भावत वरपाई।
अति आनन्द सप्रेम सों, सखिन सहित घर आइ ॥

॥ श्री रामलला नहछू ॥

आदि शारदा गनपति गौरि मनाइय हो।
रामलला कर नहछू गाइ सुनाइय हो ॥
जेहिं गाये सिधि होय परमनिधि पाइय हो।
कोटि जनमकर पातक दूर सो जाइय हो ॥
कोटिन बाजन बाजहिं आज जनकपुर हो।
देवकोक सब देखहिं आनन्द हिय अति हो ॥
नगर सोहावन लागत बरनि न जातै हो।
कौसल्या के हरष न हृदय समातै हो ॥
आलहिं बाँस के माँडव मनिगन पूरन हो।
मोतिन झालर लागि चहूँ दिसि झूलन हो ॥
गंगा कमला जलकर कलस तौ तुरित मँगाइय हो।
जुवतिन्ह मंगल गाइ राम अन्हवाइय हो ॥
गजमुकुता हीरा मनि चौक पुराइय हो।
देइ सुअरध राम कहँ लेइ बैठाइय हो ॥

कनक खंभ चहुँ ओर मध्य सिंहासन हो।
मानिक दीप बराय बैठि तेहिं आसन हो ॥
बनि बनि आवति नारि जानि गृह भायन हो।
विहँसत आउ लोहारिन हाथ बरायन हो ॥
अहिरिन हाथ दहेड़ी सगुन लेइ आवइ हो।
उनरत जोवनु देखि नृपति मन भावइ हो ॥
रूप सलोनि तँबोलिन वीरा हाथहिं हो।
जाकी ओर बिलोकहि मनतेहिं साथहिं हो ॥
दरजिनि गोरेगात लिहे कर जोरा हो।
केसनि परम लगाइ सुगंधन बोरा हो ॥
मोचिनि वदन संकोचिनि हीरा माँगन हो।
पनहिं लिये कर सोभित सुन्दर आँगन हो ॥
बतिया सुघर मलिनिया सुन्दर गातहिं हो।
कनक रतनमय मौर लिये मुसुकातहिं हो ॥
कटि कै छीन बरिनियाँ छाता पानिहिं हो।
चन्द्रवदनि मृगलोचनि सब रसखानिहिं हो ॥
नैन विशाल नउनियाँ भौं चमकावइ हो।
देइ गारि रनिवासहिं प्रमुदित गावहिं हो ॥
कौशिल्या कइ जेठि दीन्ह अनुसासन हो।
नहछू जाइ करावहु बैठि सिंहासन हो ॥
गोद लिहे कौशिल्या बैठी रामहिं वर हो।
सोभित दूलह राम सीस पर आँचर हो ॥

नाउनि अति गुन खानि तौ बेगि बोलाई हो ।
करि सिंगार अति लोनि तौ विहँसति आई हो ॥
कनक चुनिन सो लसित नहरनी लिये कर हो ।
आनँद हियन समाइ देखि रामहिं वर हो ॥
कानन कनक तरीवन वेसरि सोहाइ हो ।
गज मुकुता करहार कंठ मन मोहइ हो ॥
कर कंकन कति किंकिन नूपुर बाजइ हो ।
रानि कै दीन्ही सारी अधिक विराजइ हो ॥
काहे राम जिउ साँवर, लछिमन गोर हो ।
कीदुहुँ रानि कौसिलहिं परिगा भोर हो ॥
राम अहहिं दशरथ कै लछिमन आन कहो ।
भरत शत्रुहन भाइ तौ श्रीरघुनाथ कहो ॥
आजु जनकपुर आनँद नहछू रामक हो ।
चलहु नयन भरि देखिय सोभाधाम कहो ॥
अति बड़भाग नउनियाँ छुए नख हाथ सो हो ।
नैनन्हि करति गुमान तौ श्रीरघुनाथ सो हो ॥
जो पगु नाउनि धोवइ राम धोवावइ हो ।
सो पगधूरि सिद्ध मुनि दरसन पावइ हो ॥
अतिसय पुहुपक माल राम उर सोहइ हो ।
तिरछी चितवन आनँद मुनि मुख जोहइ हो ॥
नख काटत मुसुकाहिं वरनि नहिं जातहि हो ।
पदुम राग मनि मानहुँ कोमल गातहिं हो ॥

प्रभु कर चरण पछालि तौ अति सुकुमारी हो।
जावक रचति अँगुरियन्ह मृदुल सुढारी हो ॥
भई निछावार बहुविधि सो जस लायक हो।
तुलसिदास बलि जाउँ देखि रघुनायक हो ॥
राजन्ह दीन्हें हाथी रानिन्ह हार हो।
भरिगे रतन पदारथ सूप हजार हो ॥
भरि गाड़ी निछावरि नाऊ लावइ हो।
परिजन करहिं निहाल असीसत आवइ हो ॥
तापर करहिं सुमौज बहुत दुख खोवहिं हो।
होइ सुखी सब लोग अधिक सुख सोवहिं हो ॥
गावहिं सब रनिवास देहिं प्रभु गारी हो।
रामलला सकुचाहिं देखि महतारी हो ॥
हिलिमिलि करत सवाँग सभा रसकेली हो।
नाउनि मन हरषइ सुगंध मेलि हो ॥
दूलह के महतारि देखि मन हरषाइ हो।
कोटिन्ह दीन्हेउ दान मेघजनु बरखइ हो ॥
रामलला कर नहछू अतिसुख गाइय हो।
जेहिं गाये सिधि होय परम निधि पाइय हो ॥
दशरथ राउ सिंहासन बैठि बिराजहिँ हो।
तुलसिदास बलि जाहिं देखि रघुराजहिं हो ॥
जे यह नहछू गावइ गाइ सुनावइँ हो।
रिद्धि सिद्धि कल्यान मुकुति नर पावइँ हो ॥

सजि सिंगारहिं नापित वारी । मनहु मनोज वधू छविवारी ॥
सज्जन वचन सुनत तिहिकाला । मज्जनकीन चारि रघुलाला
युगल पीत पट अम्बर धारे । बैठे कनक पिठन छविवारे ॥
युग श्यामल युगगौर कुमारा । हँसीकरन लखि कियो बिचारा
तिनमहँ चतुर एक छवि छाई । करि कटाक्ष बोले मुसुकाई ॥
दूलह जेठ कौन सिय केरे । पहिचानन चाहत चित मेरे ॥

॥ नहछू श्रीकिशोरीजी का ॥

अब गवनहु जहँ राजकुमारी । करिहौं चढ़न चढ़ाव तैयारी ॥
असकहिंसीता निकट सिधारयो । रानि सुनैना बचन उचारयो
चारिहु भगिनिन केर सुखदानी । चढ़ै चढ़ाउआशु महरानी ॥
रानी सुनैना सुनि सुख पाई । भगिनि सहित सीतहिं नहवाई।
रत्न ग्रंथित अंबर पहिराई । चितै चौंध चख गई समाई ॥
कनक पीठ सीतहिं बैठाई । मनिन जटित भूषण पहिराई ॥
नख छोरन नखमाहिं छुआई । नाउनि तहँ कोपर लै आई ॥
जे पद लाल प्रवालहु तेरे । शिव अज उर पुर करत बसेरे ॥
ते पद महँ नाउनि बड़ भागिनि । जावक लगी देन अनुरागिनि
दो०-अमर जतन करि जन्म बहु, लहै न जिन पद रेनु ।
ते पद नाउनि कर लसत, निजजन के सुरधेनु ॥
चितवत चारु चरण अरुनाई । नाउनि जावक देन भुलाई ॥
जगमहँ जिनका जोवति योगी । किये महा उरनख संभोगी ॥
जावक सहित लसत नख कैसे । उदित अमित अंगारक जैसे ।

इन्द्र नीलमणि नूपुर भाये । मनो कमल बहुषट पद आये ।।
लघु अँगुरिन मुंदरी सुहाहीं । कंज कोश मनु रवि परछाही ।।
तेइ पुनिनखननिकटछवि देहीं। धरयो परिधि जनुशशिनभनेही
सिय अँगुरिन लखि कोमलताई। नवरसाल दल रहत लजाई ।
सिय पदसम सरि करन सरोजू । सहि आतप तप ठानत रोजू।
जब न भयों सिय चरण समाना । तब झारत केशर दल नाना
चह्यो नखत पति नख समताई । ताते विधि कालिमा लगाई ।
गुल्फसुल्फ छविकविजन कहहीं।नहिं गुलाब कलिकासमलहहीं
धोये चरण जलज जेहि थारा । भो जोहत जावक अनुरागा ।।
दो०-जिन पद लेस कृपा करत, पावत देव विभूति ।
ते धोवत अपने करनि, धनि नाउनि करतूति ।।
नहछू चारु मातु करवाई । भूषण वसन विमल पहिराई ।।
पुरट पीठ पुनि भगिनि समेतू । बैठाई सिय सजनि निकेतू ।।

श्री सतानन्द जी का विवाह मुहूर्त सुनाने

।। छन्द चौबोला ।।

ताही समय जनक पठवायो सतानन्द मुनि तब आयो ।
उठि आसन दीन्ह्यो सुअवधपति चरण कमल शिरनायो ।
विश्वामित्र वशिष्ठ आदि मुनि मण्डल भूप बुलायो ।
यथा योग्य आसन बैठायो दे सबको बारबार शिरनायो ।
गौतम तनय कह्यो भूपति सो विनती क्रियो विदेहू ।
बीते चारि दंड दामिनि के ब्याह लग्न मुनि लेहू ।

गो धूली वेला महँ ह्वै हैं, कालिह द्वार को चारा।
महाराज लै चार कुमारन करै पवित्र अगारा।

॥ विवाह के लिये बस्तु संचय करना ॥

दोउ ब्रह्म रिषी बशिष्ठ गाधिसुत सहित जनक पहँ जाहू।
वेद विधान साज सब साजहु जस भाखै मुनि नाहू॥
सुनिके सतानन्द सानन्दित लै रघुकुल गुरु संगा।
विश्वामित्र समेत चल्यो तहँ रग्यो प्रीति के रंगा॥
मुनिवर जाय जनक मन्दिर महँ पाय परम सत्कारा।
साजे सकल ब्याह सामग्री जस विधि वेद उचारा॥
कंचन कलस धरे प्रतिद्वारा। धरि उत सबविधि सब उपहारा
ब्रह्मदास मणि हेम जगाये। सरल खंभ दीपक थैल भाये॥
प्रति देवन के पूजन काजे। वेदी बनी स्वर्णमय राजे॥
तिन मंडपहिं कुमारन ल्याई। तियन मंगलिक रुचिर चढ़ाई।
सो०-नृप राउर तिय बृन्द, गावहिं क्रीड़हि अभिलाषत।
छन छन प्रति आनन्द, उमगत दसदिशि ये तहाँ॥

❋ बराती सूचना ❁

सुनत सुमन्त तुरन्त हजारन परिचारन बुलबायो।
डेरन डेरन रघुबंशिन्ह के शासन संवाद पठायो॥
आवै आज पहर दिन बाकी सजी समाजहिं सारा।
सजैं मत्त मत्तंग तुरंगहु पैदर सुख पै अपारा॥
धावन धाय पुकारन लागे जस सुमन्त कहि दीने।
आवन लगे बराती सजिसजि सक्र सरिस सुख भीने॥

एक ओर बाजिन की राजी एक ओर गज बृन्द ।
एक ओर रथ के गथ पथमहँ पैदर खड़े सानन्दा ।।
नौंवत झरन लगी चारोदिशि बाजे विविध नगारे ।
हिनहिनात हयवर छहराते घण्टा शंख अपारे ।।
दो०-औरहुँ बाजन बाजतभे मच्यो सुहान शोर ।
चढ़े विमानन देखहीं बरषै सुमन चहुँ ओर ।।

।। दूलह श्रृंगार ।।

श्रीरंगहि पोशाक छुवाई । ल्याये सचिव निदेशहिं पाई ।।
प्रथम पूज्य वर्गन पहिरावा । दयौं अपन नेगिन मनभावा ।।
रिषय श्रृंग अपनौ हित साधी । शुभ उसनीव रामसिर बाँधी।
पीत सुरंग दियो पहिराय चमाचम चारु मनोहर वागो ।
मंडित मोतिन जाल विशाल बिचै बिच हीरन को शुभलागो ।
कटि में पटुका छविछाय रह्यो क्षिती छवि छोरन की छहरै ।
नव नूपुर ते पद पंकज में रघुराज भजे भवशोक हरै ।।
हीरक कटनकर में चटक हीरन छटा छूटै घनी ।
नवरत्न अंगद बाहुमूल अतूल बिचबिच बहुमानी ।
मानिक सुपन्ना पदिक मोतिन जाल सोहत सेहरा ।
मनमीन फाँसन हेतु मनुमनसिज रच्यो कलसेहरा ।
कंचुक राह दार जरतारी । टकी सूरत्नन रुचिर किनारी ।।
स्वर्ण तन्तुमय रचन दुकूला । कटिकर वस्त्र स्वर्णमय फूला ।।
पनरथ कलित सीपनव बृन्दन । लसे उपानह पदजग बन्दन ।।
सर्वाभरन रतनमय राजै । लखत वनत नख सिख तिनकाजै ।

जेहि भाति वरणउ वषण भुषन राम विवाह श्रृंगार को।
मात कौशल्या रुचिर कजल दृगन देती भई।
निज पाणि राई लोन बारन उतारी पावक में दई।
वरन रोचन तिलक रूचिर सुवासिनिन रूचिसौं करो।
प्रतिकलित रत्न सुवर्णमय असमौर माथे पर धरौ॥
अति धन्य रबिकुल नाउनि जिन पंकजपग जावक दियौ।
श्रीशरण कहि इहि भाँति समश्रृंगार सब भाइन कियौ।
जेहिं भांति साज्यो वसन भूषन रामविवाह श्रृंगार को।
तेहि भाँति तीनहुँ बन्धु भूषेण साजी श्रृगार सुभाइ को।
केकि कंठ द्रति स्यामल अंग। तड़ित विनिंदक वसन सुरंग।
ब्याह विभुषव विविध बनाए। मंगल सब सब भाँति सुहाए॥
सरद विमल विधु वदन सुहावन। नयननवल राजीव लजावन
सकल अलौकिक सुन्दरताई। कहि न जाइ मनही मन भाई॥
नख शिख दुलह वेश बनाई। मौर बाँधि स्वासिन सुख पाई॥
अनुपम दुलह वेश सुहायो। कोटिकाम कमनीय लजायो॥

दो०-देखि मातु प्रमुदित भई, नयनन फल गुनि लीन।
दूलह रतनन पालकी, पधरायो सुख भीन॥
कौशिल्या गुरु पतनि युत, दियो दिठौना चारु।
आरति करहीं सलक मिलि, राई लोन उतारु॥
आये सज़ि बाजी भलो, को छबि बरनि सिराइ।
चढ़े तिनहिं रघुवंश मणि, गुरु चरनन सिरनाइ॥

कौशल्या महारानी गुरुपतनि मुख्य कहँ दीन्हो दीठोन ।
सवगोत निन युत आनी नीराजन किये मुदित मन ।

राजा दशरथ जी के सिगार

उत भूप पहिरयो पीतपट दीन्यो मुकुट पोखराज को ।
पोखराज केउर हरजामा जरकशी सुखताज को ॥
कटि कसो पटुका पीत माला पहिरि पीत प्रसून को ।
मिथिलेश को समधी सज्यो सुख दून देखत सुवन को ॥
पंच धुनि अब होवन लगी । परिक्षन मातु करहिं अनुरागी ॥
आरति कीन्ह करी विधिलोका । चूमि वदन पढ़ि मंगलओका
लहि अशीस रघुवर नर जाना । आये जहाँ बराती नाना ॥
पेखन दूलह वेष वराती । प्रेम पगे हुलसत मन माती ॥
चढ़े तिनहि रघुवंश मणि । गुरु चरनन सिरनाय ॥
धरि धीरज नृप अयेसु दीन्हा । चढ़ि चेले रघुवंशमणि तिन्हा
दुलह रघुवर अश्योहि पधारे । देखि देखि सब भये सुखारे ॥
परम दिब्य हयरसिकविराजे । अमित सुर्यजेहि लखतहि लाजे
चमचम चमकत मेरु समाना । देखत लाजहि देव विमाना ॥
बैठक उच्च हयन पर सोहै । छत्र चमर हलरत मन मोहै ॥
शुभग सुचंचल अनुप हय । नख शिख भुषन धारय ॥
सो०-श्याम करन पर अस वारतेही, सिन्धुर अश्व लखिहारी ।
दशरथ राजै वर गजहि, ऐरावत जन ईन्द्र ।
सुचिकर सोहै सुरुचिर रथहि, कुल गुरु सहित मुनिन्द्रा ।

॥ बरात चलना ॥

बजी दुंदुभी दिग धुनि छाई। सिमिट चली सुन्दर कटकाई ॥
भरत शत्रुहन लछिमनलाला। चढ़े अश्व मनमोहन वाला ॥
सकल बराती रुचि अनुसारी। चढ़ि चढ़ि जानहिं चलेसुखारी॥
पदचर अमित संग मह सोहैं। वनी बरात मदन मन मोहैं ॥
गुरु अनुशासन पाइ महीपा। शंख बजाइ चले कुलदीपा ॥
विविध वाद्यवत देहिं सुनाई। वरषहि सुमन देव समुदाई ॥
आगे बढ़े दुरद ध्वजधारी। ध्वजमत्त हय बहुते छवि भारी॥
बढ़ चढ़ बीर सजे तिन पाछे। चले तुरंग नचावत आछे॥
परे सवारिनि के पुनि नाना। कढ़े चढ़े तिन सूर सुजाना॥
जावहिं कृत्रिम वाग अनन्ता। चित्र विटप वाजिन छविवंता।
चंमन जोति समूहन केरे। चले प्रकाशित होत घनेरे॥
केचित मनुजमुरितिपुनि याही।बने बिचित्र कहिजात सोनाहीं।
नाना कौतुक साथ बराता। जात चले रस रस हरषाता॥
दो०-अग्नि विषय कौतुक रुचिर,मारग उचित अपार।
होत जाहिं होवहिं खुशी, देखत राजकुमार॥
बहुतक जनरन कंकन धारी। राजत तिन राजी तहँ न्यारी॥
बाजेअमित कहहिं किमिनामा। मंगलमय सब बिधिअभिरामा
देवन लखे राउ मनमाही। जात चले व्याहन सुत काँही॥
ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिदेवा। आये शक्तिन सहसुख सेवा॥
शेष सुरेश गणेश खड़ानन। आये देव सबै शुभ ध्यानन॥
रघुवंशी कौमार समाजा। चलेउ जात प्रमुदित अतिभ्राजा।

अगनित वेस्त धार तिनमाहीं । देखिय प्रनति सुवोलत जाहीं ।
दो०-विमानन गगन बिच, जहँ जहँ दशरथ जात ।
देवहुँ तकि तहँ तहँ चलत, लखि लखि हिय हरषात ।।
ऊँचे सुर जय जय करहिं, भई समय अनुकूल ।
अंजुलि भरि भरि बरन पर, वरषत आवहिं फूल ।
सचिव समुज्ज्वल छत्र लगाये । अर्चिभृती बहु दाहिन बाये ।।
मंद मंद गति बाँधि कतारे । झूमत चले गयन्द दतारे ।।
तिनके पृष्ठ अवधि नरनाथा । लियै असंख्य अवनिपति साथा
उन्नत तिन छत्रन की राजी । हंशमाल समसुभग विराजी ।।
पाछे सविधि क्रमेलक आली । इमि बरात पुरवीथिन चाली ।
बैरख फिरयो जनकपुर के दिशि तुंग ब्योम फहरात ।
बाजन बाजत बिविध भाँति के चली सुचाय बरात ।।
फहरि रहे गजवर निशान बहु मुख्य निशान समाना ।
सुतर सवार चले चमकत पट चटपट सोहत नाना ।।
राम बन्धु युत बीच विराजित चहुँदिशि सखा सुहाये ।
तिन पाछे शत्रुँजय गजपर अवधनाथ अति भाये ।।
चढ़े मतंग महीप उभय दिशि गुरु अरू कौशिक राजै ।
जनु ऐरावत चढ़यो पुरन्दर शुक्र बृहस्पति भ्राजैं ।।
देखि देखि दशरथ को सुर मुनि कहहिं कौन असभागी ।
त्रिभुवन पति को चल्यो विवाहन पुत्र प्रेम रसपागी ।।
समाचार सब लोगन पाए । लागे घर घर होन बधाए ।।
सुनि सब कथा लोग अनुरागे । मंग गृह गली सँबारम लागे ।।

भुवन चार दस भराउछाहु । जनक सुता रघुवीर विआहु ।।
ध्वज पताक पट चामर चारु । छावा परम विचिव बजारु ।।
कनक कलस तोरन मनिजाला । हरद दुव दधि अच्छत माला
जहँतहँ जुथजुथ मिलिभामिनि । सजिननसप्तसकल दुतिदामिनि
विधु वदनी मृग सावक लोचनि । निजसरुप रतिमान विमोचनि
भुप भवन किमिजाइ बखना । विस्व विमोहन रचेउ विताना।
गावहि सुन्दरि मंगल गीता । लै लै नाम राम अरु सीता ।।
दो०-सोभा दशरथ भवन कइ, को कवि वरनै पार ।
जहाँ सकल सुर सीसमनि, राम लीन्ह अवतार ।।
मंगलमय निज निज भवन, लोगन्ह रचेवनाइ ।
बीथी सींची चतुर सम, चौके चारू पुराइ ।।

।। अगवानी लेन चले भैया जी ।।

खबर राजमन्दिर में पहुची आवति चली बराता ।
कह्यो विदेह बोलि लक्ष्मीनिधि जाहु लेन तुमताता ।
जनककुमार सुनत चढ़ि बाजी चल्यो लेन अगवानी ।
धरे पुरट घट गावत मंगल गीत सुहावन भामिनी ।।
दो०-लक्ष्मीनिधि के संग में, सोहत राजकुमार ।
छटे छबीले छविभरे, गवने पंच हजार ।।
अगवानी आई निकट, रूकिगै सकल बरात ।
लक्ष्मीनिधि बन्दन कियो, नृप पूछी कुशलात ।
सुत विदेह को नेहवश, अवधनाथ हरषाय ।
पाणि पकरि निज नागमें लीन्ह्यो चटक चढ़ाय ।।

इत उतके पुरिजन अखिल, देखत जात भलठाम ।
छोड़हिं लाजा सुमन मृदु, चढ़ी अटन पर बाम ।।

छं०—सूर्य्यास्त समय बरात प्रविशी जनकनगर सुहावनो ।
देखत बराती नगर शोभा इन्द्रनगर लजावनो ।।
फहरै पताके तुंग चहुँकित विविध रंग अनंग सों ।
तोरन कनक तड़ित जड़ित घट पुरट द्वार पतंगसों ।।
वर रंभ खंभ खड़े अनेकन द्वार द्वार विराजहीं ।
अतिशय उतंग अवास हिमगिर श्रृंग शोभ पराजही ।
सींची गली सुरभित सलिल विस्तार बृहद बजार को ।
द्रवनाधिपति सम बनिक बैठे करहिं बस्तु प्रचार को ।
शारद छटा ऊँची अटा छन छटासी युवती चढ़ी ।
अति हर्ष वर्षि प्रसून लाजावर लखन चोपहिं मढ़ी ।
आई बरात बजार महँ नर नारि दूलह देखहीं ।
दशरथ जनक अरु भाग्य अपना अधिक उरहिं उरेखहीं ।
घरघर बजत बाजन बिविध मिथिलापुरी ध्वनिमयभई
देते बरातिन नारि नर करि युक्ति गारिहि रस मई ।

यहिविधि भाँति देखतनगर हाँस विलास बहुविधि करतई
मिथिला मनहर पुरिहिं सिधाई । च्चित चोराय दिय धूममचाई
वनरा सुभग जात पथ माही । निजवश कियो काहिधौं नाहीं ।
बड़रे छली अहेरी नयना । करत चोट हिय हुलसत पैना ।।
मुख मुसुकनि मनुफूल बिखेरी । बितरि सुवासहिं मनमतिफेरी
दुलहा स्वबशकियो चितचोरी । प्रगटि प्रभापुर खोरिन खोरी

वनरा मुख देखत सुधि भूली । प्रेम विवश भइ चित्रलिखेली।
सोइवनि बनरा रसमयसामा । मिथिला वीथिन विहरललामा
वशी करनि चितवनि सखिडारी । मधुमुसुकनिरसरूप कियारी
बनहिंविलोकत तनितेहि औरा । करतकसक हिय होवतबौरा
सिहरा लट लठकनि लखि आली । देखलेत मनकरत विहाली
नख शिख ब्याह विभूषण धारी । चोरत चित्त चतुर नर नारी
सुभग सुशोभितजरकसिजामा ।त्रिभुवन सुन्दर उपरनाललामा
पहिरे पियर वियहुती धोती । नीको लगत बना छवि सोती ॥

दो०-मनहर बनरा जन जनहिं, अनुपम आनन्द दीन ।

जनकलली सौभाग्य सुठि, अस प्रीत मरस भीन ॥

जनक लड़ैती सुन्दर श्यामा । पायो दूलहि मन अभिरामा ॥
तौलिये दूनहुँ धारिसुपालरी। श्याम अधिक श्यामासखि भलरी
एक कहै सखि दूलहु एका । तरकि न जावहिं किहे विवेका ॥
यहि प्रकार मिथिलापुर नारी । गगन मध्य सब सुरतियप्यारी
लखि लखि बनरा बेष सुरंगा ।कहहिं सुनहिं सब प्रीति अभंगा
सुभग बरात बनी अनुरूपा । यथा लसत दूलह सुख भूपा ॥
निमीनगर नवनारि नवेली । चढ़ी अटारिन सहित सहेली ॥
वरषहिं सुमन नवल अनुरागी । मनहर श्याम सुभग रसपागी
सुखकर श्यामहि सकल समाजा । लखत सुप्रेम विभोर विराजा
दूनहुँ ओर अधिक रस छायो । बाजत बाद्य बहुत सरसायो ॥
लूटत सुख रस सबहि लुटावत । जात बरात सोह सुठिभावत ।

दो०-आवत जानी बरात गृह, आनन्द मच्यो महान ।
सकल बराती रस छके, हिये अमित पुलकान ॥
निकट कढ़त बनी लाजन करहीं। कोटिकाम समछबि उरधरहीं
बृद्ध जनन की लाज निवारी । नीके थिर दृग लेहिं निहारी ॥
बपु माधुर्य नयन भरि लेहीं । करि वारनै बिपुल धनदेहीं ॥
अमित प्रकाश वाना मुख हेरे । उदय किये जनुचंद घनेरे ॥
लखत इकै बह सुख महसानी । गावहिं गीत सुगद गदवानी ॥
कहैं कियो विधि नै मनभावा । चिर आयुष को फल हम पावा
रूप भूप कन्यन महँ जैसे । ये सब कुँवर मनोहर तैसे ॥
समविधि समजोरी सुभकीनी । वढ़हिं परस्पर प्रीति अछीनी ।
दो०-भागवान सम्बन्ध भल, काहिन यह प्रिय लाग ।
माँगै अचंल ओड़िके, पावहिं चिर सौभाग ॥
सम रचना प्रतिभवनसुहाती । होइ चकित चित अखिलबराती
सबपुर मध्य समान उछाहू । जनु सबहीं घर होत बिबाहू ॥
जेहिंजेहिं गलिन दुलहवर कढ़ही । तहँतहँ अकथनी प्रमुदबढ़ही
सुनत खबर आये इहि ठौरे । गृह गृह की जुवती उठि दौरे ॥
करहिं काम सो देहिं बिहाई । एकै चढ़हिं प्रसादन जाई ॥
वातायन महँ वदन लगाई । लखहिं इकै उत्तम मधुराई ॥
जिन जिनकौं अगता सुधि होई । करि राखै मंगल विधि सोई
राजत सुवरन तुल्य शरीरा । धरै बिविध रंगन बर चीरा ॥
दो०-किये सिंगार जुरा प्रनव, कोविद सकल फसान ।
बाजहिं नूपुर किंकिनी, मनसिज मुखन समान ॥

❀ पुरनारियों का परिछन ❀

दो०-भाग्य विभव अवधेश कर देखि देव ब्रह्मादि ।
लगे सराहन सहसमुख,जानि जन्म निजवादी।
शिव ब्रह्मादिक बिबुध वरुथा। चढ़े विमानहि नाना जुथा ॥
प्रेम पुलकतन हृदय उछाउ। चले विलोकन राम विआहु ॥
देखि जनकपुर सुर अनुरागे। निज निज लोक सबहिं लघुलागे
चितवहि चकितबिचित्र बिताना ।रचना सकलअलौकिकनाना
नगर नारि नर रुप निधाना। सुधर सुधरम सुसील सुजाना ॥
तिनहि देखि सब सुर सुरनारी। भए नखत अनुविधु उजिअरी
विधिहि भयउ आचरजबिसेखी। निज करनिकछु कतहुँनदेखी
दो०-सिव समुझाय देव सब, जनि आचरज भुलाहु।
हृदय बिचारहु धरि धरि, सिय रघुबीर बिआहु ॥
सकल सराहहि विभुती पेखी। सहित तिरदेव शेषनहि लेखी।
जनकपुरि नव निरखत भागा। लजि त्रीदेवहुस्वपुर विरागा ॥
अति आचरज मय सृष्टि बनायो। सहित त्रीदेवन देखीं लजाये
शंकर देखे देव भुलाये। कहि प्रिय बचन सबहि समुझाये ॥
द्वयौ तत्व समुझि पुनि लेहु। जे श्रीपति ते राघव येहु ॥
अहहि अनंत अण्डकर नायक। सत चित आन्द सब सुख दायक
शक्ति अनंत अण्डकी कारणी। करुणामय नितस्वबस बिहरिणी
श्रीसीता तीनकर विवाहा। यह वैभव चाहव अवगाहा ॥
इनको नाम सुअंमग लहारी। दायक सहज पदारथ चारी ॥
देखिलेहु किन मोद विशाला। बड़ भागन पाइय असकाला ॥

सुनि सबके मनके भ्रमगयऊ। पुनि कौतुक देखन चित दयऊ ॥
दो०-नाथ चतुर दशभुवन के, सकल विश्व करतार।
दसरथ भुपति के सुवन, सबके प्राण अधार ॥
महत प्रेम के भार भरीसी। चलहिं मंद गति काम सरीसी ॥
गानकरत परिछन कहूँ आवहिं। निरखि नयनभरिहृदयजुड़ावहिं
थिर कराय आरती उतारै। थारन मै मोतिन भरि वारै ॥
निपुन तिलक मिस परसहिं गाता। बलिबलिजाहिं फेरिदुवहाता
वात्सल्य के भावहिं पागी। रहैं गये पर द्वारन लागीं ॥
दृष्टि लगावहिं जलग दिखाहीं। बरबस जाहिं तृप्ति लहिनाही
नरन नरन महँ सुरस हुलासा। देखत फिरहिं विचित्र तमासा
कोऊ तिनहिं पिछानहिं नाहीं। प्रेम मगन मन तन सुधि नाही
नृपहिं सराहिं सराहिं सुजाना। वरसहिं फूल अंजलि भरिनाना
राम रूप मोहन छवि रासी। लखहिं सुथिर शंकर अविनासी।
पन्द्रह नयन लगे अति प्यारे। हते असम प्रति वदन विचारे ॥
पल प्यालिन भरि भरि सुखपाई। पियहिं अनुपम रूप लुनाई ॥
रहो शैलजा थिर ह्वै हेरै। लिखि दीनी जनु चित्रचितेरै ॥
उभय द्रगन आपुहि गनि हीनी। लखत रूप अनिमेष प्रवीनी।
राम स्वरूप बिलोकि विधाता। बाढ़हिं हरष समायन गाता।
आठ नयन की जब सुधि आवै। तब तब मनहीं मन पछतावै।
दो०-द्वादश दृगन सोषट वदन, देखहिं श्रीरघुबीर।
विधि ते तौ बड़भाग हम, अधिक न होय अधीर।
जब परंतु सुरपति तन देखहिं। तब न भाग वरदूसर लेखहिं।

कहइ परस्पर देव समाजा। आजु धन्य सब महँ सुर राजा।।
किहि कौ अस हम सुकृति बिचारैं। सहस नयनसो राम निहारैं
प्रभुतन चितय इन्द्र मनमाना। गौतम शाप भइस वरदाना।।
भूपति भाग्य विभूती पेखी। सहित त्रिदेव शेष नहिं लेखी।।
सकल सराहहिं धनि धनि भूपा। अण्ड बीच इक अहैं अनूपा।।
जनकपुरी नव निरखत भागा। लखि त्रिदेवहूँ स्वपुर विरागा।
निमिपुर नर नारिअवलोकी। सहित नारि सब छकैं सुरोकी।
प्राण चन्द्र लखि लखत मलीना। देवपुरी तिमि सुर सब दीना
छ०—इत्यादि चित्र बनाउ अगनित अल्प भइ बर्णन करैं।
श्रीराम दुति सनमुख बिलोकत चित्त जुवतिन केहरैं।
इमि राजद्वार प्रवेश लौंकित गजन क्रम-२ सौं बढ़े।
पुनि उतरि बंधुन सहित गुरुवश सुभग घोरिन पै चढ़े।

।। दूलह का रूप वर्णन ।।

सो०-हेरि राम कौ रूप, नख शिख ते सुन्दर अधिक।
मोहे सुर मुनि भूप, पुलके तन लोचन सजल।।
दो०-श्यामल केकी कंठ सम, तड़ित विनिन्दक बास।
भूषन विविध विवाह के, पहिरे मंगल रास।।
रघुवर वदन सदन सुषमा कौ। शारद ससिन उचित उपमाकौ
दृग विशाल नवकंज समाना। सब माधुर्य अलौकिक जाना।।
भावत मनहिं बनत नहिं भाषा। पूरन करत दृष्टि अभिलाषा
विरद सुनावहिं वंश प्रसंसी। संग अनन्त कुँवर रघुवंशी।।
चपल तुरंग नचावत जबहीं। आगे आन सुचाल दिखवहीं।।

चढ़ेभानकुल मनिजेहि वाजा।तिहिगति देखि लजहिं खगराजा
सकल अंग शोभन सौं छयऊ। किधौं अनंग तुरंगम भयऊ ।।
वयगुन गतिन रूपकर मानौ। मोहन त्रिपुर मनोरथ ठानौ ।।
दो०-रतन विविध भूषनन में, लागैं जोंति अमंद ।
भावत जात लगाय को, ठगत अमर मुनि बृन्द ।।
आवत जानि वरात गृह, आनन्द मच्यो महान ।
सकल बराती रस छके, हिय अमित पुलकान ।।
सो०-जब मिथिलापति द्वार, आई अवध बरात वर ।
तिहिछन को सुखभान,बरणि पार किमि जायकवि ।
दो०-मिथिलाजन तिमि अवधजन, तिमि सुर सबै अपार ।
तिमि महि के वासी मनुज, प्रगटयो पारावार ।।
छं०-रानी सुनैना सहचरि, तंदुल दधि भरि थार ।
रामभाल टुकली दई, सुकुमार कौशलेश कुमार ।।
महामणिन के छत्र पुनि, राका ईन्दु आकार ।
पठवायो मिथिलेश के, चारि दुलह हित चार ।।
कौशल छत्र उतारि कै, मिथिला छत्र लगाय ।
मिथिला के परिकर चले, दुलह संग सुहाय ।।
कहहि परस्पर मुनिन समाजु। सम समधि देखे हम आजु ।।
दोउ नृप कीन्हे मुनिन प्रणामा। कहे कृपा तब पुरयो कामा ।।
मुनि अशीष दै वचन उचारे। भयो मनोरथ पूर्ण हमारे ।।
मिल्यो बहुरि दुलह मिथिलेस। जन्म जन्म कर मिटयो कलेस
भरत लखन रिपुशुदन काही। मिल्यो विदेह विदेह तहाँही ।।

दशरथ चरण परयो कुशकेतु। मिल्यो अंक भरि रघुकुलकेतु।
मिल्यो बहुरि पुनि चारउ भाइन। सोसुख एकमुख कहिजाइन
उभैय सस्वुर वन्दे जामाता। अम्बक प्रेम अंबु उम गाता ॥
ताह वसिष्ठ दुलह एक ओरे। वैठाए आसन इक ठोरे ॥
गौतम सतानन्द आदिक मुनि। बैठेजनक ओरदोउ विधि गुनि
विश्वामित्र वसींष्ठ उदारा। बैठे दुलह ढ़ीग गुनि अधिकारा।
लगी झरोखन में सुखसानी। दुलह देखि सुनैना रानी ॥
सिद्धि नाम लक्ष्मीनिधि रमनी। जनक पुतहु छमा छबि छवनी
औरउ बृद्ध जनक कुल नारी। लखि दुलह तनमनधन वारी।
जो सुख भयो सुनैना काही। असको भाषिक कोविद नाही ॥
मंजुल वाजन बाज अपारा। गाये इहि सुर नर मुनि दारा ॥
दो०-जनक महल के द्वार को, चौक महा बिस्तार।
भरत भीर जस जस मनो, तस तन बढ़त अपार।

बाह्य द्वार पर समधी से मिलना

जनक अवधपति आबत जाने। सानुज बढ़ि आगै सनमाने ॥
गजते कर आलंव उतारे। मिले मनौ प्राननते प्यारे ॥
दो०-वस्त्रन मणि भूषण सौं, राजा जनक उदार।
अविरल राज समाज सों समविधि किय सतकार।

॥ द्वार पूजा ॥

देखे राम बनै जब दूला। रोम हर्ष हुव मनअति फूला ॥
इक कर सौं हय वाग समारे। इककर स्वर्ण मौर पर धारे ॥
सतानन्द वय परम प्रवीना। प्रथम तिलक तुरंग परकीना ॥

सानुज उतरि द्वार ढ़िग आये। गीत अनर्गल जुवतिन गाये ।।
सबके पिता जिन्हहिं श्रुति गावैं। तिनके पिता अनेक बनावैं ।।
समय विलोकि देखि सरलाई। मृदु मुस्क्याय चितय रघुराई।
ब्रह्म दारुमय पीठन पाहीं। बैठारे सुचि चौंकन माहीं ।।
सतानन्द आचमन करावा। पढ़े संकल्प जिमि श्रुति गावा ।।

दो०-प्रमुदित राम नरेश ने, पूजे कलश गणेश।
हस्तारघाकर मौर सौं, जल छवायो मिथिलेश।

बस्तु विविध थारन मँह लीने। ठाढ़े सचिव उक्ति मनदीने ।।
पूजन जोग चाहियत जोई। देत विलंब करैं नहिं कोई ।।
त्रिभुवन तिलक रामके भाला। दीना निजकर तिलक भुवाला
हय गय वस्त्र विभूषण नाना। परम अमोलक रतन प्रधाना ।।
अस अगनित साहित्य ललामा। संकलपे बैठे तिहिं ठामा ।।
कनक खचित वर वसन बनाये। चित्रविचित्र रंग तिनभाये ।।
परिचर तहँ विदेह के ल्याये। डारि पाँवरे अतिसुख छाये ।।
गोपुर ते अन्तहपुर द्वारा। परी पौढ़ विस्तार अपारा ।।
जनकराज महिषी छविखानी। सजी सुवासिनि अति हरषानी
रचि आरती कनकमणि थारा। पठई जहाँ द्वार के चारा ।।
द्वार द्वार थल रचो बनाई। मोतिन माणिक चौक पुराई ।।
कनक कुँभ करि वदन स्वरुपा। आवाहन करि मंत्र अनूपा ।।
थापित करत माहँ तिहिं काला। भो प्रत्यक्ष गणनाथ विशाला
गौरि अवाहन किय सन्मानी। मुर्तिमंत भइ प्रगट भवानी ।।

दुलह दरस लालस मनमाहीं। समय समय सुर प्रगटतजाहीं ।।
उभय और आसन अति पावन।धरे पुरोहित शुचि छविछावन
दो०-राजत भई मुनि मंडली, दुलह दरस अभिलाष।
द्वार चार करवावने, बैठे युत श्रुति साष ।।
गौतम शतानन्द बड़ ज्ञानी । याज्ञवल्क्य आदिक मतिखानी।
उज्ज्वालित आरती अपारा । लीन्हें पाणि पुरट के थारा ।।
खड़ी सुवासिनि किये कतारा। कनक कुम्भ शिर सजे अपारा।
भई भूमि थिर मनहुँ दामिनी । गावहिं मंगल गीत भामिनी ।।
सचिव सुदामन जनक पठायो । लक्ष्मीनिधि कहँ वचन सुनायो
महाराज अस दियो निदेशा । ल्यावहिं सुतन सहित अवधेशा
रहै चौक महँ खड़ी वराता । आवहिं रघुकुल बृद्ध विज्ञाता।।
राम सखा सब संग सिधारे । देखैं दुलह द्वारन विधि चारे ।।
सचिव सकल मिथिलेशनिदेशा । राजकुंमरन सो कह्यो अशेशा
जनककुंवर दशरथ पद बन्दी ।पितु रजाय सब कह्यो अनन्दी ।
सुनि कौशलपति अति सुख पायो । तुरंगन ते कुवरन उतरायो
चारि सुखासन वरन चढ़ायो । सखा और कुल बृद्ध बुलायो।।
भये पालकिन राउ सवारा । शोभा निरखि धनद हियहारा।
दो०-सब तुरंग मातंग रथ, ओरहुँ सकल बरात ।
खड़ी करायो चौक महँ, बाजत बाजन ब्रात ।।
परत पावड़े वसन अनूपा । करि आगे दूलह सुख रुपा ।।
राम भरत लक्ष्मन रिपुशाला । तिन पाछे दशरथ महिपाला।
चल्यो द्वार को चार करावन । जनु विधि लोकपाल युतपावन

चढ़ी अटा अंतहपुर नारी । लखि दूलह छवि तन मनवारी ।।
उतै जनक इत दशरथ राऊ। रतन लुटायन लहत अघाऊ ।।
जे लूटहिं जन तेउ लुटावैं । हर्ष विवश नहि धनमन लावैं ।।
दशरथ तुरत सुमन्त बुलाये । सादर सुखद निदेश सुनाये ।।
रघुकुल गुरु कौशिक मुनिराई । दोउ आनहु पालकी चढ़ाई ।।
यहि विधि अंतहपुर के द्वारे । लै दूलह नरनाथ पधारे ।।
सतानन्द तहँ अवसर जानी । बुलवायो जनकहिं मुदमानी ।।
तहँ आरती उतारन काजा । सजि सुवासिनी सजी समाजा ।।
तिनमधि तियनको रूप वनायो। शची गिरागिरिजा सुखछायो
तेउ आरती उतारन आईं। और देवदारा मन भाई ।।
लै दूलह जब अवध महीपा । द्वारचार की चौक समीपा ।।
आयो मुनिमंडल लै भारी । तब वशिष्ठ अस गिरा उचारी।
धरहु सुखासन वरन उतारी। अवधनाथ आपहूँ पधारी ।।
असकहि पढ़न लग्यो स्वस्तियाना। उतरि भूप युत कुँवरसचैना
चौक समीप कुँवर करि आगे। ठाढ़े भये भूप अनुरागे ।।
तहाँसुवासिनि परमहुलासिनी।सजी सकलमिथिलापुरबासिनी
तोरहिं तृण लखि दूलह अनूपा । भाग्य सराहत दशरथ भूपा ।
दो०-ते उतारती आरती, सलिल डारती भूमि ।
नयननि पलक निवारती,लेती मनु मुख चूमि ।
उत आयो मिथिला को राजा। इत सुत युत कौशल महाराजा
मिले बरोबर भूपति दोऊ। जय जयकार किये सब कोऊ ।।
कहहिं परस्पर मुनिन समाजू । सम समधी देखे हम आजू ।।

दोउ नृप कीन्हें मुनिन प्रणामा । कह्यो कृपा तब पूरयोकामा ।
मुनि आशिष दै बचन उचारे । भये मनोरथ पूर्ण हमारे ।।
मिल्यो बहुरि दूलह मिथिलेशा । जन्मजन्मकर मिटयो कलेशा
भरत लषण रिपुसून काहीं । मिल्यो विदेह विदेह तहाँही ।।
दशरथ चरण परयो कुशकेतू । मिल्यो अंक भरि रघुकुल केतू
मिल्यो बहुरि पुनि चारिउ भाइन। सो सुख इकमुख कहीजाइन
उभै श्वसुर बन्दे जमाता । अम्बक प्रेम अंबु उमगाता ।।
तहँ वशिष्ठ दुलह एक ओरे । बैठाये आसन इक ठोरे ।।
दो०-शीर ध्वज निमिकुल कमल, कुशध्वज ताको भ्रात ।
भवन और बैठत भये, इक आसन अवदात ।।
गौतम शतानन्द आदिकमुनि । बैठे जनक ओर दोउविधि गुनि
विश्वामित्र बशिष्ठ उदारा । बैठे दुलह ढिग गुणि अधिकारा
लगी झरोखन में सुवासीन । दूलह देखि सुनैना रानी ।।
सिद्धि नाम लक्ष्मीनिधि रमनी । पुतहु छमा छमि छमनी ।।
औरहुँ बृद्ध जनककुल नारी । लखि दूलह तन मनधन वारी ।
जो सुख भयो सुनैना काहीं । सकै भाषि कविकोविद नाहीं ।।
मंजुल बाजन बजत अपारा । गाय रहीं सुर नर मुनि दारा ।।
लाग्यो होन द्वार कर चारा । कियो वेद विधि मुनिनउचारा
पुजन भयो जौन तिहि देशू । लिये प्रत्यक्ष ह्वै गौरि गणेशू ।।
करवायो मुनि वेद विधाना । माने आपन भाग्य महाना ।।
वेनु थम्भ पूजयो भगवाना । जनु निमिकुल यशध्वज फहराना
तेहि अवसर लक्ष्मीनिधि आयो । सारा जोरी चार करायो ।

दशरथ जनक समेत समाजू। को वरनैं जस मोदिक आजू ॥
शतानन्द तब बचन उचारा। सुनु वशिष्ठ गुरु गाधि कुमारा
आयो अब लगनहुँ कर काला। मण्डप तर वर चलहिं उताला

॥ मण्डप में चारों भाई समाज चलना ॥

रंगनाथ पद पंकज ध्याई। उठयो अनन्दित कोशल राई ॥
शतानन्द गुरु गाधि कुमारा। करि आगे मुनि और उदारा।
पुनि आगे करि दूलह चारी। अन्तपुर कहँ चल्यो सुखारी।
परत पाँवड़े वसन नवीना। पढ़हिं वेद मुनि बृन्द प्रवीना ॥
राम ब्याह गावहिं सब नारी। देहिं सुवासिनि आर्ध्य सुखारी
कक्ष तीनि बीभूति अपारा। निरखत हरषत अवध भुवारा।
गये खाश रनिवास दुवारा। जहँ ते नहिं पुनि पुरुष प्रचारा
दो०-धवल धाम ध्रुव धामइव, चामीकर के चारु।
हिमगिरि मन्दर मेरू जिन, जोहत मानत हारु ॥
चौक चन्द्र शाला छविमाला। रजत कनक की बनी दिवाला।
चित्रविचित्र और सवशाला। लखि ललचत अमरावति पाला
राम निरखि स्वसुर विभूति। मनमहँ गुनी सीय करतूती ॥
निरखि बिदेह विभव अवधेशा। मनमहँ करत अमित अँदेशा
धौं सुरपुर इव शक्र बसायो। ब्रह्म सदन धौं इत चलि आयो।
किधौं विदेह भक्ति जियजानी। हरिहर पुरी आय निरमानी।
निज तप बल यह विभव अपारा। लख्यो विदेह दीन करतार।
यहि विधि देखत सुख अवगाहत। दशरथ बारहिं बार सराहत
गये डयोढ़ी अंतहपुर केरी। सजि नारी तहँ खड़ी घनेरी ॥

तहँ निवास पौर अधिकारी । जोरि पाणिजय जीव उचारी।

दो०-लीन्ह परिकरन करनते, चमर छत्र बहु नारि ।
चली चलावती चाय भरि, करि दूलह बलिहारि ।

श्री सुनैना जी चारों भाई की परिछन आरती

छ०-सिय मातु घोलति प्रेमरस,अतिचाव सरसत मनभली।
लिये बोलि गोतनिन साज सजि प्रिय हेतु परिछन मंगली।
बहु गान मंगल हर्षि हियपुर नारि गावहिं स्वर रसे।
सुनि ध्यान त्यागत योगरत मुनि हर्षि देखि दूलह फँसे ।।

दो०-मंगल साज सम्हारि शुभ, आरति सहस सजाय ।
चली मातु परिछन करन, राम वरहिं हरषाय ।।

गावत मंगल मंगल हेता । सोह रानि सब सखिन समेता ।।
पहिरे अनुपम भूषण चीरा । मोहहिं रतिहिं सुसोह शरीरा ।।
कंकन किंकिन नूपुर बाजै । मनहुँ सामगति सरस सुभ्राजै ।।
दुलहा भाव भरी वर नारी । जात चली परिछन हित सारी।
औरहिं सुरतिय छदम सुवेषी । बनी नारि सब सुभग विशेषी।
जाइ मिली रनिबासहिं सोही । बिन पहिचान सुनैना मोहीं ।।
देखत मगन भई सब नारी । पाइ नयन फल देह विसारी ।।
अनुपम दुलह मनोहर देखी । गति चकोर भई चंदहिं देखी ।।
नखशिख निरखि बनाकी शोभा ।मनमतिनयन सवनकरलोभा

दो०-मातु सुनैनहिं सुख भयो, मन बानी से पार ।
दुलह मनोहर भेष लखि, भरी हिये रसधार ।

मुदित मातु हरषहिं मनहिं, प्रेम न हृदय समाय।
परिछन कर लखि लखि वरहिं, भाव उमंगहिं गाय।
परिछन समय नगर अरु व्योमा। बाजत बाद्य महासुख भोगा
मंगल गान होय चहुँ ओरा। सुख उमड़त आनन्द चहूँ ओरा
शान्ति पाठ बोलहिं द्विजराई। चलत मंद मनहर सुख छाई।।
छहरत छटा चुअत जनुभूमी। भरि प्रकाश मंडप रसझूमी।।
यहि प्रकार रघुवर रस पागे। आये मंडप लखहिं सुभोगे।।
सुभग सुआसन बनेउ विवाहा। बरहिं बैठायो देय उमाहा।।
बरषहि सुमन करत जयवानी। हरषि पुलक मनमोद महानी।
ल्याइ गई भीतर गहिहाथा। चारों कुँवर लये तिन साथा।।
मंडप महँ करि आदर भारे। उचित आसनन पर बैठारे।।
दो०-आरति करि रघुलाल की, अमित निछावर कीन्ह।
नाऊ बारी भाट नट, महा मुदित मन लीन्ह।।

।। समधी समधी मिलन अंतह पुर में ।।

समय समुझि शुभनिरहुतभूपा। मिले दशरथहिं प्रेमअनूपा।।
शारद शेष गणेश विचारैं। खोजत उपमा कतहुँ न पारैं।।
इन सम सरस न तीनहुँ काला। पुनिपुनि कहैं सुबुद्धि बिशाला
सह त्रिदेव सुर कहहिं परस्पर। ब्याह बिलोक लखे बहु घरघर
सुर नर असुर नाग मुनि केरा। देखे नहिं अस मिलन सुवेला
सबहिं भाँति सम दूनहुँ भूपा। सुतवित नारी गुण अनुरूपा।।
दो०-आजहिं सम समधी लखे, भयो न आगे होन।
रंचक घट इक एक नहिं, सब प्रकार सुख भौन।।

नृप प्रशंसि सुर वरपहिं फूला । समधी देखि मगन मन भूला ।
प्रीति प्रशंसा सह सुरनी । दुहुँ समाज सुनि मोद महानी ।।
गुरु वशिष्ठ कौशिक पद माथा । नाये नृपति द्विजन द्रग पाथा
वस्त्र अनुपम पाँवड़ डारी । भूप मुनिहिं लै चलेव सुखारी ।।
मंडप देखि भूप अनुरागे । अकथ अलौकिक रसमहँ पागे ।।
जनक सप्रेम सुआसन दीन्हा । तेज पुँज पेखत मन लीन्हा ।।
सोह भूप सब रिषिन समेते । द्विज समाज नृप मंत्रिन जेते ।।
राम सखा सब लहि सतकारा । सोहैं आसन हर्ष अपारा ।।

दो०-वामदेव आदिक रिषय, पुजे मुदित महिस ।
दिए दिव्य आसन सबहि, सब सन लहि असीस

पुजे भुपति सकल बराती । समधी समसादर सन भांती ।।
आसन उचित दिय सब काहु । कहिकाह सुख एक उछाहु ।।
सकल बरात जनक सनमानी । दान मान विनती बरवानी ।।
विधि हरिहर दिसि पति दिनराऊ। जे जानहि रघुवीर प्रभाऊ
कपट विप्र वर बेष बनाए । कौतुक देखहि अति सचु पाए ।।
पूजे जनक देव समजाने । दिए सुआसन विनु पहिचाने ।।
दो०-रामचन्द मुखचन्द्र छबि, लोचन चारु चकोर ।
करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोद न थोर ।।

।। श्रीजनकजी दुलहा के पुजन करना ।।

दो०-पदेउ स्वस्तिक बचन द्विजन गणेश पुजाई ।
बुलवाये दुलह तहाँ क्रम सो अरध दिवाई ।।

जनक राम कर गहिमुद माही । बैठारे सिंघासन पाही ।।
तिष्ट तिष्ट बोले मधु भीनी । कुश पेंग पहिरन हित दीनी ।।
कुश के सुचि जुग बिष्टर टोरी । दक्षिन पदतट धरिस बहोरी
प्रभुसन कहेव जोरि जुगपाना । यह विस्टर लीने भगवाना ।।
अक्षत हरद रत्न कुश धारे । धरे चारमनि भाजन भारे ।।
नाना सुमन सुगंधन सानी । तिन मह भरेउ देव सरिपानी ।
बैठे श्रीरघुनन्दन प्यारे । इक सौ तिनके पाई पखारे ।।
आदि विष्णु भो भो श्रीनाथा । करहु ग्रहण पादारघ पाथा ।
दो०-कुश विस्टर पद वाम को, कीना पुनि निमिनाथ ।
पात्र एक रत्नन जटित, धरो राम के हाथ ।।
अरध भजनन कोजो नीरा । तामह छोड़त भो नृप धीरा ।।
अर्ध-अर्घ यह अर्ध विशाला । लीजै सो मम दत्त कृपाला ।।
आचारज बच्च जनक सुजाना । चार समुद्रन को किये ध्याना
आवाहन कीने मुद छाये । तेजवान मुनि ह्वै तह आये ।।
अपनो जल कुँभन मह कीने । ते नृप अग्र मुदित धरि दीने ।।
तंदुल हरद दर्भ तिन माही । भरे रतन जिन मोल महाही ।
तिन कुँभन के जलसन रावा । तीन वार आचमन करावा ।।
अहो अनन्त सगर कुल दीपा । लेहु आचमन कहेउ महीपा ।।
दो०-बक हृदय श्रुति दगन सों, दर्भ सरल दिवाई ।
कियो श्रोत वंधन बहुरि विधि सौ तिरहुतराई ।।
पुनि मधु पर्क हेत मलिवाना । उत्तम घीउ एक पल आना ।।
दधि पल तीन सहत पल एका । स्वर्ण पात्र में लियस विवेका ।

वेद मन्त्र पढ़ राम प्रवीना । कुश सौ ताहि विमिश्रित कीना
नृप अंगुष्ठ तर्जनी लाई । विनय सहित किंचितसु उठाई ॥
दयो राम के दक्षिण हाथा । हृदय प्रीति कहेउ लेहु ममनाथा
परखि प्रेम राघव सुख पायो । ताहि सप्रीति सुधा सम पायौ ।
इहि क्रम तीन वारवह लीना । सागर सलिल आचमन कीना
पुनि पुनि रथ लैके रघुराई । अपने दोऊ दृगन छिवाई ॥
दो०-कुश गोरी थापन कियो, बहुरि राम रघुनाथ ।
सब उपचारन सौ कलित, पूजो अपने हाथ ॥

कुश इक जनक लियो निजपाना । ताहु गहेउ राम भगवाना ।
निजनिजतनको खैचि निपाला।ताहूविनसोकलुषकहाइहिभाला
प्रायश्चित हेत श्रीमाना । गो सहस्त्र को दीनेउ दाना ॥
पय वंतिनि नव वत्सन वारी । वसन विभूषण सो श्रृंगारी ॥
राम करत गन नायक पुजा । लिन्ह प्रगट मनोरथ पुजा ॥
प्रगट गौंरी सो पुजन लेहि । राम बंधु युत कर धरि देही ॥
गुरु वसिष्ठ तहँ वेद विधाना । अनल थापया वेदि मतिमाना
प्रगटयो परम प्रकाश हुतासा । ज्वाला बढ़ी दाहिनि आसा ॥
जनक सबंधु बसीष्ठ बुलाये । तासु पानि मधुपर्क दिवाये ॥
गनपति पुजन आदि चारा । करवायो गुरु गाधि कुमारा ॥
सतानन्द सो दोंउ मुनि गाये । वनत आशु अवसियहि बुलाये
मिथिला पति शुभ वसन मगाये । जे वरहेत प्रथम बनवाये ।
गुंफित नाना रतन सुरंगा । भूसित करे राम के अंगा ॥

सतानन्द नरपति रुख जानी । आयसु दीन्ह जाय महारानी ।।
दो०-सतानन्द आनन्द भरि, कह्यो सुनैनहि जाय ।
जाहि जानकी वहिनिन संग, भई घरी अब आय ।।
गुरु निदेश सुनि सुमुखि सुनैना । हरषित भई अमित सुखऐना
गुरु पतनिहि वर बृद्ध कुलीनी । कुल समानि जे नारि प्रवीनी
सबहि बुलाय कही सुनि लेहीं । देविलली कहँ आशिष देहीं ।।
सुनि देहि अशीष सिय कहँ जय जय सदा जय जय लली ।
अहिवात पूरन हो अचल जगसुर सरी जब तक थली ।।
प्रिय होहु पति कहँ प्राण सम गिरिजा महेशहिं जस प्रिया ।
लक्ष्मी यथा प्रिय विष्णु तस पतिदेव राखहिं नित हिया ।।
जनक पाट महिषी जगजानी । कही सखिन सों मुदित बखानी
दो०-उमा रमा शारद सबहिं, कपट नारि शुभ रूप ।
सियहिं सँवारन सब लगीं, करि श्रृंगार अनूप ।।
नखशिख सीताहिं सुभग सिंगारी । चली लिवाय मनोहरनारी
कोमल कलित पाँवड़े परहीं । अरघदीन्ह द्विज शान्तिहिपढ़हीं
मण्डप तर अब चलहिं कुमारी । संग सखिन सब साजु सवाँरी
सुनत सखी लै सिय तहँ गमनी । मंगलगीत गाय गजगवनी ।
चलै चारुचामर चहुँ ओरा । छजत छत्र छवि छैक्षिति छोरा
बोलहिं सखी नकीव सुखारी । जय जय जय मिथिलेशकुमारी
पानदान आदिक सब साजा । संयुत सोहत सखी समाजा ।।
सहितभगिनिसखिमण्डलमाहीं। शोहत सियछवि कहिनहिजाही
मन्द मन्द पग धरति जानकी । छवि सिंगार रसरूप खानकी ।

मनहुँ मशालन मण्डल भासी। दीपहिं चारि महताव प्रकासी।
भूषित भूपण अंग सुदेशा। चमचमात साड़ी वर वेषा।।
खौरी सुभग शीशमहँ राजै। स्वर्णतन्तु मणि खचित सुभ्राजै
मौरिजटितमोतिनतिनकेगुच्छा।झमककुण्डलढिंगहिनथ गुच्छा
सिय शोभा को कहै बखानी। अमित त्रिदेवी अंश समानी।।
वनितन बीचि सोह अस सीता। नखत वींच जनु चन्द्र पुनीता
मैथिल नारि सहित सुर देवी। करहिं गान मंगल सिय सेवी।।
दो०-सोहति बनिता बृन्द महँ, सहज सुहावन सिय।
छवि ललना गनमध्य जनु सुखमा अति कमनिय।।
आवत दीखि वरातिन्ह सीता। रूप रासि सब भाँति पुनीता।
सबहिं मनहिं मन किए प्रनामा। देखि राम भये पूरन कामा।
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता। कहि न जाइ उर आनँद जेता।
मुनि त्रिदेव सबसुर दिगपाला। सहित समाज छके सुखजाला
जय जय धुनि सब करहिं सुहाई। जहँ तहँ नारिन्ह मंगल गाई।
आंगन गगन वहिर पुरमाही। होत कोलाहल सब थल पाही।
पंच शब्द धुनि जहँ तहँ छाई। कहि न जाय सुनतहि मनभाई।
पुनि कुल गुरु शुभआयसुमानी।सियहिंसुआसन दियसुखसानी
कुवरिन पीछे बैठ बिदेहू। सहित अनुज कुशकेतु सनेहू।।
दो०-निजकुल केरि रीति सब, कहत सूर्य सुखमान।
सुनि कुल गुरु दोऊ करहिं, ब्याह सुवेद विधान।।

।। देव पूजन ।।

विधि कराये पढ़ि मन्त्र अचारा। गिरिजा गनपपुजावहिंवारा

सब सुर लेहि प्रगटि प्रियपूजा । आपन भाग गिनै नहि दूजा ।
सनमुख रामहिं जनक सकासी । शोभित सिय बैठीं सुखरासी।
अधोनेत्र निरखनि सियरामा । प्रेम पागि इकराम अकामा ॥
तरकिन जाय सुखद रसरीती । मन बुधि वानी पार अतीती ।
बेद रूप धरि कहबिधि ब्याहा । उपरोहित तस करै उछाहा ।
लगेउ होम होवन हरषाई । आहुति लेहि अगिनि प्रगटाई ॥

॥ श्रीसुनैना अम्बाजी को आना ॥

कन्या दान समय शुभ जानी । आवन कहेउ मुनिन पटरानीं ।
जनकपाट महिषी सिय माता । जेहि समान नहि रचाबिधाता
सिय मातु सोभित एक जग, सुख सुजस सुन्दरता सती ।
गुण रूप शीलहु धामधनि, पाहुन मिलीजस जगमनी ।
सिय अंक खोलि अम्बकहिं, लखि लाभ ललचहिं सुरतिया ।
मुनिराज आयेसु कहि कुँअर, मंडप चलन हर्षण हिया ॥
मनमोद मोदित अम्ब सुनि मंडपहि सुआसिन सहचली ।
शुभ शब्द नूपुर गान प्रिय श्रुति शान्ति धुनि होवति भली ।
नृप बाम दिसि राजी निरखि,वर मन मुदित नहि जा कही
लखि मातु भागहिं पुष्प झरि सब सुरन बोले जय सही ॥

जनक सुनैना सोह हिमगिरि मैना सोह जस ।
वर दुलहिन लखि मोद, बढ़यो महावात्सल्य रस ।

दो०-पुनि वशिष्ठ आयसु भई, राम दहिन दिशि सीय ।
बैठहिं आसन सुभग सुची,सुनतहिं तससखि कीय ।

दुलह दहिनिदिश राजतिसीया ।छबि शृंगार सुखमा कमनीया
देखत राम जानकी जोरी । नयनवंत सुख सिन्धु हिलोरी ।।
जनक तवहि मुनि आयसु पाई । कनक थार अतिशुभ्र मगाई।
सुचि सुगन्ध मिश्रित जलपूरा । स्वर्णकलश जड़ित रतननपूरा
धरे राम के सनमुख लाये । भूप मुदित मन सुख न समाये ।।
आनंद सिन्धु मगन निमिराऊ । लगे पखारन पायँ प्रभाऊ ।।
परस करत पद कमल राम के । साने सुख श्यामल सुधामके ।
रामसिया पदकंज पखारत। जिन्हिं शम्भु हृदि कमलसम्हारत
दो०-पद धोवत सुर जय जयति, बोलत झरन प्रसून ।
मुदित निशान बजावत, छनछन नवसुख दून ।।

दम्पति जनक पखारि सुपादा। पायो हृदय अमित अहलादा।
सुख मग्न देव समाज सब, लखि लखि हृदय पुलकावहीं ।
धनि नृप पखारत पाद पंकज भाव भावित भावहीं ।।
शिव ध्यान ध्यावत जाहि निशि दिन रमतयोगी मन जहाँ।
रज धारि पावन मुनितिया, मन मुदित गवनी पति पहाँ ।।
जेहि चरण सुरसरि वारि सुचि, करपूत त्रिभुवन प्रतिघरी।
प्रक्षालिते पद भूप निमिवर गति लही पावन करी ।।
जय जय जयति जय जय जनक सब बोलि कहहीं बलि बली
धनि राम जाकर पाहुने हैं मिलयो सिय पुत्री भली ।।
सो०-मुदित पखारत पाद, रघुकुल मणिवर वेष को ।
जनक हृदय अहलाद, देखत युगल किशोर कहँ ।

दम्पति जनक पखारि सुपादा। पायो हृदय अमित अहलादा।
बहुरि लोक कुल रीतिहिं घारी। पाद पखारत निमि नरनारी
जनक कह्यो मम सब परिवारा। चरण पखारि लेय सुखसारा
तब भाँवरी आदि विधि होई। ये दुर्लभ पै है पद कहँ कोई ।।
जनक वचन सुनि सब हरषाने। चरण पखारन को उमगाने।
धोये चरण मुदित कुशकेतू। चरन पखारत निमि सुख लेतू।
जनक भ्रात सह नारि ललामा। धोये पद सनिसुखसियरामा।
जनक सुवन लक्ष्मीनिधि आये। सिद्धि कुंअरि सहअतिहिंसुहाये
दम्पति बैठि हरष हिय छाई। भगिनि भाम पद धोवेंसुहाई।
लक्ष्मीनिधि ने पाय पखारे। लहे मोद जब युगल निहारे ।।
दो०-निमिकुल के सब बृद्धजन, आये सहनिज नारी।
भये परमपद योग्य सब, रघुवर चरण पखारि ।।
जे सुरमुनि को रूप धरि, बैठे रहे समाज।
चरण पखारे ते सवन, निमि वंशिन के व्याज ।।
फिर सब जनक कुटुम्बिन आये। प्रक्षाले श्रीपद सुख पाये ।।
भूमि सुवन मंगल मतिवाना। चरण पखारि महामुद माना।
कुल गुरु दोउ समय शुभ जानी। शाखोच्चार कीन्ह सुखदानी
वर दुलहिन करतल करजोरी। कीन्ह क्रियाकुल गुरुन्हबिभोरी

।। शाखोच्चार: वर पक्षे ।।

गुरु पद पदुमा पराग बंदि, गणनाथ मनावौं।
शेष शारदा बंदि, शंभु पद शीश नवावौं ।।

दिव्य सच्चिदानन्द राम जेहि कुल महँ प्रगटेउ ।
नव दूलह वर वेष धारि एहि मंडप हुलसेउ ।।
वंश बखान सुजान बृन्द, सन आज सुनावौं ।
सिय दुलह की कृपाकोर मति निर्मल पावौं ।।
प्रथम विष्णु के नाभि कंज प्रगटेउ चतुरानन ।
तिनते भये मरीचि ताहि सुत कश्यप तप धन ।।
विवश्वान महराज ताहि सुत मनु भये सुन्दर ।
श्रीइक्ष्वाकु प्रसिद्ध ताहि सुत भये तदन्तर ।।
श्री विकुक्षि ते वाण ताहि अनरण्य महावल ।
श्रीपृथु पुत्र त्रिशंकु ताहि सुत धुन्धमार बल ।।
युवनाश्वात्मज मान्धाता सुत सन्धि विमलयश ।
श्रीध्रुव सन्धि भरतसुत असित सगर असमंजस ।।
अंशुमान सुत श्रीदिलीप सुत भए भगीरथ ।
श्री ककुत्स्थ सुत श्रीरघुसुत कलमाष पादवर ।।
श्रीशंखन के भये सुदर्शन अग्निवर्ण तेहि ।
शीघ्रग केमरू भये प्रभुश्रुक अम्बरीष जेहि ।।
श्रीमत नहुष ययाति नाभाग समुज्वल ।
श्रीअजके भये महाभाग दशरथ कुल कुण्डल ।।

।। कवित्त ।।

तिनके सुखधाम अभिराम लोक लोचन के,
शंभु हिय मानस मराल गुनखान हैं ।

सच्चिदानन्द घन शील निधि कोमल चित,
प्रेमवश प्यारे उदार असमान हैं।
ब्याह साज साजे मध्य मण्डप बिराजे,
काम देखि लाजे साजे भौंह के कमान हैं॥
श्रीराम भरत, लखन शत्रुहन लाल,
सुख के देवैया चारो नौशे जन प्रान हैं।

स्वस्ति श्रीमत्सकल जगदघध्वंसन परमोदार विनोद विचार सदाचार सच्छास्त्राध्ययन विद्वज्जन गोष्ठी प्रकाश वशिष्ठ गोत्र वाशिष्ठैक प्रवर श्रीमन्नाभागवर्मण: प्रपौत्र: १, श्रीमदअजवर्मण: पौत्र: २, श्रीमदशरथवर्मण: पुत्र: ३,प्रयत-पाणि: शरणं प्रपद्ये। स्वस्ति सुवासो भूषयोर्वरकन्ययोर्मंगल मास्ताम्। इति वर पक्षे वारत्रयं पठेत्॥

॥ शाखोच्चार: कन्या पक्षे: ॥

श्रीगुरू मूरति हृदय धारि गणपति सिरनावौं।
गिरिजा शंभु प्रसाद पाइ निमिकुल गुन गावौं॥
जेहि कुलमहँ श्रीपराशक्ति मिथिलेश ललीजू।
प्रगटी करुणाधाम भगत हित कमल कलीजू॥
निमिसुत श्रीमिथिराज ताहि सुत प्रथम जनकजू।
ऊदावसु महाराज नन्दिवर्धन सुकेतु जू॥
देवरात सुत भये बृहद्रथ महावीर पुनि।
श्रीसुधृति सुत धृष्ट केतु हर्यश्व तासु सुनि॥

श्रीमरू पुत्र प्रतीन्धक तेहि सुत भये कीर्तिरथ।
देवमीढ़ महाराज विबुध सुत भये महीध्रक॥
दो०-कीर्तिरात सुत भये महारोमा यशध्वज।
स्वर्णरोम सुत ह्रस्वरोम के भये सिरध्वज॥

॥ कवित्त ॥

ताहि की लड़ैती सुकुमारी शोभाशील खानि,
जाको मुखचन्द्र देखि चन्द्रहूँ लजात हैं।
रूप की उजारी देखि दामिनीहूँ फीकी परै,
भूषन अनेक अनमोल सोहैं गात हैं॥
उमा रमा शारदा न उपमा में आवै नेकु,
रतिसत कोटिहूँ को कहै कौन वात है।
जानकी माण्डवी, उर्मिला, श्रुति कीरति जू,
चारो दुलहिन आज अतिहीं सुहात हैं॥

स्वस्ति श्रीमत्सदाचारा चरण परिलब्ध गरिष्ठादि मुनिगण जे गीयमान यशश्शरच्चन्द्रकर धवलीकृत जगत्त्रयस्य गौतम गोत्रस्य गौतमाङ्गिरसाण्यायेति त्रिप्रवरस्य श्रीमत्स्वर्ण रोमवर्मणः प्रपौत्रीं १, श्रीमत् ह्रस्वरोमवर्मणः पौत्रीं २, श्रीमत् शीरध्वज वर्मणः पुत्रीं ३, प्रयतपाणिः शरणँ प्रपद्ये स्वस्ति सुवासोभूषयोर्वर कन्यपयोर्मंगलमास्ताम्। इतिकन्या पक्षे वारत्रयं पठेत॥

॥ पाणिग्रहण कन्यादान ॥

इयं सीता मम सुता सहधर्मचरी तव ।
प्रतीच्छ चैनां भद्रं ते पाणि गृह्णीष्व पाणिनाँ ॥

दो०-धर्मचरी तुव सहचरी, सदा संचरी संग ।
छायासी माया विगत, दायामय सब अंग ।
मेरे पंकज पाणि में, पंकज पाणि लगाय ।
लेहुलाल अवधेश के,लली मोरि चितचाय ।

बोले जनक सुनहु रघुनाथा । पूरण काम सुखप्रद साथा ॥
गुण आगरी प्राण प्रिय वाला । रुप उजागरि धर्म विशाला ॥
शील विनय संकोच स्वरूपा । सब प्रकार तुम्हरे अनुरूपा ॥
सब विधि अहै अलंकृत कीन्ही । ग्रहन करहु मैं आयसु दीन्ही।

दो०-अस कहि दम्पति हरषि उर,सीतहि हाथ बढ़ाय ।
रामहिं सौपेउ मंत्र पढ़ि तन मन गयो भुलाय ॥
पढ़ि सुमन्त्र यहि भाँति ते, छोड़ि दियो जलधार ।
सुरपुर नरपुर नागपुर, माच्यो जय जयकार ॥
ध्रुवपुर लों अरु भूमि भरि, भूतल में इकवार ।
वाजन बाजे विविध विधि, भो सुख पारावार ॥
एकवार बोले सकल, जय जय दशरथ लाल ।
जय जय जनकलली भली, हम सब भये निहाल ॥

॥ हवन विधि ॥

समिधि मगाय समय कहदीनी । वेदी द्विजन प्रज्वलित कीनी ।
सोधि द्रव्य साकिल्य बनावा । रघुकुल मनि सौं हवन करावा

दो०-चतुरासीनि सुआहुतै, दईं राम निज पानि ।
मंत्रन जुत तन धरि अनल, लई भाग्य बड़मानि ॥

करि श्रुति रीति होमशुचि कियऊ। बरदुलहिन गठबंधनभयऊ
भावरि होन लगी हरषाई । प्रमुदित सुरन निसान बजाई ॥
वरषहिं पुष्प देव हरषाई । मंडप मंगल गीतहिं गाई ॥
विप्र वेद वहु विरदहिं बन्दी । कहहिंजयति जय सबहिं अनंदी

दो०-मुनि आयसु लक्ष्मीनिधी, कुँवर सिय भ्राता मतिवानि ।
लाजा परसत हरषि हिय, भाम भगिनि के पानि ॥

धर्मधीर लक्ष्मीनिधि आये । उत्तम धान सूप महँ ल्याये ॥
सो सिय राघव के कर राखी । परन लगी भाँवर जिमि भाषी
आगे सिय रघुनन्दन पाछै । देहि सुअगिनि प्रदक्षिण आछै ॥
दंपति रूप मनोहर राजै । नहिं तिहुंपुर उपमा तिन काजै ॥
मनिखंभन प्रतिविम्ब दिखाई । तासु तर्कना इकचित आई ॥
धरै विपुल तनरति रति नाहू । अवलोकत रघुराज विवाहू ॥
दरश लोभ इत सकुचव होई । प्रगटत लीन होत जनु सोई ॥
भयो समाज सकल अनिमेषी । भये मगन जिन वह छवि देखी

छ०-युग सखी सिय के संग की, अस कहहिं हँसि हँसि कै तहाँ
धीरे चलहु कछु लाल है सुकुमारि जनकलली महाँ ॥
सुनि दुलह नयन नवाय रहत लजाय मृदुमुसक्याय कै ।
अरविन्द पूरणचन्द देखत रहत ज्यों सकुचाय कै ॥
जबलोपरी त्रय भाँवरी तबलो सिया आगे चली ।
पुनि चारि भाँवरि देतमें भे दुलह आगे छविभली ।

जब रही सिय पुरसर चलत तब अस भली सोहत रही ।
जनु जात आगे भान के सित भानु पूरणिमा लही ॥
जब भये दशरथ कुंवर आगे चलत जनक कुमारी के ।
तब लसत मानहुँ चन्द्रमा पीछे प्रयात तमारि के ॥
सिय दुलह भांवरि अग्नि की दोउ देत प्रमुदित मोहहीं ।
सिय पानि नीचे दुलह कर आगे चलति सिय सोहहीं ॥
परसत सुलाजा प्रेमयुत तन मन दशा सब खो गई ।
श्रीनिधिहुँ सिया दूलह लखी अनुपम छटा आनँद मई ॥
वहु देव वरसत सुमन सुख मन मुदित वाद्य वजावहीं ।
मन मोह त्रिभुवन राम सिय सेहरा सिरन झमकावही ॥
घनबीच दामिनि दिव्य जनु बनरा वनी लखि लखि परै।
सिरमौर मौरी सोह सुठि युग चमक विद्यु त लज मरै ॥
सिया भूषण प्रतिबिम्बयों तन महँ लसत अतिलाल के ।
जनु नखत आदित चन्द्र छाया मधि खसै जल श्याम के ॥
प्रभु पानि शोभित सिय सहित मरकत मनहु कंचन कसे।
जनु गौर लागत राम सिय साँवर लसे प्रतिबिम्ब से ॥
यहि भांति सप्त पदी कराये कुमार गौतम को सुखी ।
वेदी निकट ठाढो करायो राम सीता शशि मुखी ॥
लाजा परसन लाल लक्ष्मीनिधि करायो करन सों ।
कीन्ह्यो निछावर सकल जनु वर वधू रतना भरनसों ॥
भाँवरि भयो आनन्द अपारा । भाग विदेह कहै को पारा ॥
गुरु वशिष्ठ तब कही सुवानी । कुँवर नेग पावै सुखदानी ॥

दशरथ सहित प्यार प्रभुकीना । दियो मणिमाला प्रेम प्रवीना
राम बाम दिसि आसन एका । बैठहिं सिया बिलम्बन नेका ॥
सखिन सुनत शुचि सिया उठाई । दूलह वाम दीन्ह पधराई ॥
लखिलखिदेवसुमनबहुबरषहिं। वजत निसान मनहिमनहरषहिं
पुनि वशिष्ठ अनुसासन पाई । भये जथाथित आसन आई ॥

॥ प्रतीज्ञा वर दुहिन के ॥

सात वार सिय वांछित दीने । सिय पै पाँच बचन प्रभु लीने ।
गुरु निदेश लै पानि सिंदूरा । सिय सिर दीन्हे रघुवर पूरा ॥
सिय सीमंत सिन्दुर लगायो । कमलकरन सो लगेउ सुहायौ ॥
मनहुँ जलज निज अरुण परागा । देत सुससिहिं सुधा अनुरागा
बहुरि सुआसिनिसेदुर दीन्हा । चिरअहिवात मनहुकरिचीन्हा
सह त्रिदेव सब सुर की वामा । मंगल आशिष देहि अकामा ॥
अक्षत पुष्प हाथ निज लीन्हा । सुरनर मुनि समाज सुखभीना
मंगल पढ़हि सनेह सम्भारी । जयति राम जय सिय सुकुमारी।
पुष्प बरषि सब भरे उमाहा । कह त्रिवाच भो राम विवाहा

दो०-यहि विधि सीताराम को, श्रुति विधि भयो विवाह ।
देखि देखि सब सुख मगन, साने महा उछाह ॥

छ०-बैठे वरासन रामु जानकि मुदित मन दशरथ भए ।
तन पुलक पुनिपुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फलनए ।
भरि भुवन रहा उछाहु, राम विवाहुभा सवही कहा ।
केहि भाँति वरनि सिरात रसना एकयहु मंगलु महा ॥

॥ तीनों भाइयों का विवाह ॥

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै ।
मांडवी श्रुति कीरति उरमिला कुअँरि लई हँकारि कै ॥
भरतचन्द्र आवहु यहि ठौरा । पूरहु लाल मनोरथ मोरा ॥
शतानन्द जब आयसु दीन्हा । शुदर्शना बोलि तब लीन्हा ॥
दो०-बैठायो कुशकेतु को, गाँठि जोरि प्रिय सदासना नारि ।
लियो अंक सो मांडवी, तिमि संकल्प उचारि ॥
दई भरत मांडवी कुमारी । जनक अनुज कुशकेतु सुखारी ॥
पुनि बाजे बाजे नभ माही । वर्षें फूल देव हरषाहीं ॥
पानि ग्रहण करि मांडवी केरो । बैठयो भरत सकुचि प्रभुनेरो।
मातु सुभद्रा बैठी आई । गठवंधन मुनि तुरत कराई ॥
दो०-लखनलाल आपहु इते, सनमुख बैठहु आय ।
करहु उर्मिला कन्यका, पाणिग्रहण हर्षाय ॥
पुनि विदेह के वचन सुहाये । लखन लाज वश नयन नवाये ॥
दीन्हयो सैनहिं सासन रामा । बैठयो लखन जायतिहि ठामा ॥
तहँ उर्मिला अंक बैठाई । लै कुश अक्षत निमि कुलराई ॥
पढ़ि कै मंत्र सुता करकंजू । धरि लक्ष्मण कर पंकज मंजू ॥
कान्तीमती कर जल ढरवाई । दई लखन उर्मिला सुहाई ॥
तिहि अवसर वाजे पुनि बाजे । वरसहिं सुमन देव जय गाजे ।
यहि विधि पाणिग्रहन कराई । बैठे लखन उर्मिला सुहाई ॥
बहुरि बचन मिथिलेश उचारा । अब बारी रिपुदवन तुम्हारा
पाणिग्रहण श्रुति कीरति केरो । करहु मुहूरत मुनिन निबेरो ।

सकुचि शत्रुहन प्रभु रुख पाई। बैठे कुशध्वज सन्मुख आई।।
पढ़ि सुमन्त्र संकल्प समेतू। दिय श्रुति कीरति कहँ कुशकेतू।
श्रुति कीरति रिपुदवन लजाई। बैठे निज आसन पै आई।।
बजे मधुर बहु भाँति नगारे। मंगल गान उमंग अपारे।।
दो०-यहि बिधि चारिहुँ दुलह को, चारिहुँ बधुन सुहाय।
पाणिग्रहण कराय करि, प्रमुदित निमिकुल राय।।
जेहि विधि सिय रघुवीर केर,सुखद भयो शुभब्याह।
सकल कुमारन ब्याहे तिमि, कीन्हे अति उत्साह।।
यहि विधि चारिहु दुलह को, चारि हुवधुन सुहाय।
पानि ग्रहन कराय करि, प्रमुदित निमि कुलराय।।
जेहि भाँति रघुपति भाँवरी लाजा परोसनहुँ भयो।
तेहि भाँति तीनहूँ बन्धु भाँवरि चार विधिवत ह्वै गयो
छ०-निज दिव्य दूलह संग शुचि दुलहिन सुमंडप राजहीं।
जनु ब्रह्म चार स्वरुप बनावनि शक्ति सहसुख भ्राजहीं।
लखि देव चौगुन रंगरस भरि प्रेम दुन्दुभि बहु हनीं।
सुर बृक्ष फूलन बृष्टि करि, आनन्द जयतिवना वनीं।

।। राजाओं की कन्याओं का कन्यादान ।।

दो०-दस सहस्र नृप प्रथम जे, भये विगत अभिमान।
तिन आपनि आपनि सुता, अरपि प्रभू कहँ आन।
विनय करी भो राम विलासी। कीजहु इनहु सिया की दासी।
कृपा दृष्टि प्रभु सब तन जोये। करे असंख्यन प्रेम समाये।।
चारहु दूलह मंडप राजैं। को वरणै सुख आनँद आजैं।।

आरतिकरहिं निछावरि करहीं। आनन्द उमगिउमगिउरभरहीं
गुरु निदेश ध्रुव दरसन लीना। बहुरि हृदय अवलोकन कीना
बारहु दूलह दुलहिन देखी। सब समाज सुख लहेउ विशेषी।।
दशरथ सुख को वरनिन जाहीं कह सियराम मोदमन माहीं।।
सुतसुत वधू निहारिन हारी। तुच्छ गिनै सब सुख फलचारी।
दाइज दीन्हो जनक बहूता। को कवि कहै नहीं कहिजाता
पुनि वर वधू विभूषण नाना। जटित सूर्य शशिमानी प्रधाना।
अमित निचोलअमौलललामा। दियोजनकसुख भरितिहिठामा
पारिजात पुहुपन की माला। पहिराई मिथिला महिपाला।।
वस्त्र विभूषण विविध प्रकारा। मनि सुवरण नवरत्न अपारा
हयगय स्पन्दन दास सुदासी। धेनु अलंकृत काम दुहासी।।
देख सुरेसहिं लागत लाजा। पायो दाइज दसरथ राजा।।
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी। रहा कनक मनि मंडपु पूरी।।
पूजन कियो वर वधुन समेतू। षोडष विधि नृपनिमि कुलकेतू
साधु साधु मुनि देव बखाने। दानि शिरोमणि जनकहिं जाने
दो०-दीन्ह जाचकन हरषि हिय, नृप दशरथ बहु दान।
उबरा सब जनवासहिं गयो, देवहुँ हने निशान।।
जनक मुदित मन मुनि सब केरी। कीन्ही पूजा विविध सुखेरी
दान मान विनती सुखसानी। किये सरस हिय होय अमानी।।
सकलवरातहि नृपसतकारयो। भक्तिविविधतनभूति बिसारयो
पुष्पाञ्जलि करि सुरन्ह प्रणामा। कियेजनकवर विनयललामा
अवसर जानि सहितनिज भ्राता। उठयोविदेह विनोदनाघाता

कौशलपति को पूजन कीन्हयो । हयगय वसन विभूषणदीन्ह्यो
स्पन्दन शिविका सजे अनेका । भाजनविविध भाँति सविवेका
देयहु अंगन अतर लगायो । मोद मूल तांबूल खवायो ।।
दियो अँगूठी रत्न प्रधाना । बहुरि विनय वस बचन बखाना
तब सम्वन्ध जो भयो नृपाला । मारे भाग बढ़ गई विशाला ।।
भयो महान आपके नाते । सबविधि गिनिये मोहिं निजताते।
दो०-राजभूति परिवार गृह, सेवक सुत तब नाथ ।
मोहिं मानि आपन सदा, करहु छोह पद माथ ।।
वोलयो पुनि विदेह करजोरी । परिचारिका दारिका मोरी ।।
भाग्य विवश तुम्हरे घर जाहीं । तजि खेलन ज़ानैकछु नाहीं ।
समय सम्हारव क्षमि अपराधा । अवलो लहींन कौनिहुँ बाधा
इतते उतसुख विभव महाना । पैशिशु भाव कछू नहीं ज्ञाना ।
राजरीति सब दिहहु सिखाई । करै न कछु विन शासनपाई ।
रहीं कुमारी प्राण पियारी । भई सकल सुत वधू तिहारी ।।
चारहु कुँअरि यथा तब प्राणा । मानहिं लरकिन्ह तथा समाना
करुना करन योग ये वाला । नयन पुतरि समवली भुवाला ।।
मोर मान इनकर कुशलाई । बहुत कहाँ लगि कहौं बुझाई ।।
पुत्रवधू पुनि आपु कुमारी । को इनते अब मोहिं पियारी ।।
जिमिमिथिलातिमिअवधअगारा।जानहु सबविधिसुखउपचारा
नयन पूतरी सरिस कुमारी । बसिहैं सदन सदा सुखारी ।।
भयो कष्ट आवत यहि देशा । बोलि पठायेऊ सुनहुँ नरेशा ।।
सो अपराध क्षमहि हिय हेरा । जानहु सदामोहि निजचेरा ।।

देखि जनक वर विनय सुप्रीति । बोले दशरथ बचन सप्रीति ।।
आतम सखा मोरे नर नाहा । रहे सदा रहिहैं चष चाहा ।।
भाव विनय रस दोउ नृपछाके । कहैं परस्पर सुखमन साके ।।
दो०-यह शुभ तब सम्बन्ध ते, भये हमहुँ धनि रूप ।
पुत्र कीर्ति, जय, भूति भली, लाधे ललित अनूप ।।
राजन देहु रजाय अब, जनवासे कहँ जाऊँ ।
निशा अशन कुँवरन सहित, करन हेतुचलिजाऊँ ।

।। चक्रवर्ती को जाना ।।

कही विदेह आप पगु धारे । बाकी कछुक विधि व्यवहारे ।।
चार कराय सुतन पठवैं हौं । अब नहिं कछुक विलंब लौहौं ।
बालक नींद दिवस अलसाने । किमिकरिहौं विलंब जियजाने ।
शुन मिथिलेशहिं बारहिं बारा । करिप्रणाम मुनिजनन उदार।
पुनि नृप चले मुदित जनबासा । वरनत जनकप्रीति सहुलासा
विश्वामित्र वसिष्ठ समेतू । चलयो भूप जनवास निकेतू ।।
विविध भाँति पुनि वजै नगारा । भये सयंदन सब असवारा ।।
भयो सुमंत सहित तिहिकाला । चली संग चतुरंग विशाला ।।
इत भूपति जनवासे आयो । शतानन्द उतवचन सुनायो ।।
मंडप महँ सब रानी आई । कुंवरि कुंवर चुमाइ सुख पाई ।।
गावन लागि सखिन विधिनाना । परमानन्दन जाय बखाना ।

।। कोहवर परिकरण ।।

बोली तहाँ सुनैना रानी । बोली सखीजन सुखी सयानी ।।
लै दुलहिन दूलह कहँजावो । हिलिमिलि कोहवर चारकरावो

सुनि उमगान्यो अनुरागा । सखिन संग जुरि कै बड़भागा ।।
गावहिं गीत मोद रससानी । दुलहन सो असगिरा बखानी ।।
चलहु लाल कोहवर सुखदाई । चारहु बंधु उठे मुसक्याई ।।
आगे आगे चलीं सुवासिनि । अर्ध्य देत हिय माँह हुलासानी ।
तहाँ लक्ष्मीनिधि की नारी । सिद्धी नाम तुरत पगुधारी ।।
राम पाणि गहि चली लिवाई । जोरे गांठी चारिहु भाई ।।

दो०-पुनि पुनि रामहि चितव सिय, सकुचति मनु सकुचैन ।
हरत मनोहर मीन छवि, प्रेम पियासे नैन ।।

आगे दूलह दुलहिनि पीछे । उभय और सब सखी तिरीछे ।।
सिय सह कोहवर चली लिवाई । तैसे अलग अलग सब भाई ।
जनकनगर की सखी सयानी । बोलहि व्यंग भरी बहुबानी ।।
चलहुँ कुवँर कछु धीरे धीरे । सुनियत घरके अहो अमीरे ।।

दो०-शोभा अमित न जाय कहि, सुघर दुलह वरवेष ।
नेति नेति कहि सब लखहिं, हारे शारद शेष ।।

स्याम शरीर सुभाय सुहावन । शोभा कोटि मनोज लजावन
जावक जुत पदकमल सुहाए । मुनिमन मधुप रहत जिन्हछाए
पीत पुनीत मनोहर धोती । हरति बाल रबि दामिनि जोती।
कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर । बाहु विसाल विभूषनसुन्दर।
पीत जनेउ महाछवि देई । करमुद्रिका चोरि चित लेई ।।
सोहत व्याह साज सब साजे । उर आयत उरभूषन राजे ।।
पिअर उपरना काखासोती । दुहुँ आँचरन्हि लगे मनिमोती ।

नयन कमल कल कुण्डल काना। वदन सकल सौंदर्ज निधाना
सुँदर भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलक रुचिरता निवासा
सोहत मौर मनोहर माथे। मंगलमय मुकुता मनि गाथे ॥
छ०-गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं।
पुर नारि सुर सुन्दरी वरहि विलोकि सबतिन तोरहीं
सुन्दर दुलह चारी सलोना अपार शृंगार मनोर उजेरो।
श्यामल किशोरलला सबको चित चोरहि नैन निहारो ॥
ये निज रुप प्रकाशहित चारो दुलह मण्डप कीन्ह उजीयारो।
ताह पै दुलह भेष सजे मनमोहन मुरति है वर चारो ॥

॥ कवित्त ॥

श्याम गौर जोरी अनुप लसै मण्डप तर,
निज तन प्रभा से करत उजियारी है।
चहुदिशि चन्द्रमुखी ठाढि अनुराग भरी,
करि के चुमावन घर कोहवर तयारी है।
आरती उतारति पर भुषण मणि वारि बहु,
चलन केहेत सखि पाँवड़ेहु डारी है।
यहि छवि सदा मेरे नयनो में छाय रहो,
रघुनन्दन प्यारी जनक की दुलारी है।
द्वार के छेकाई नेगचार भली विधि करै,
आप किछु कहैं किछु लाल से कहावहीं।
देइ गारी सब नवला निहाल होत,
नवल वचन व्यंग सुनि सुख पावहीं ॥

जैसो सुख सरसत कोहबर की दुआरी,
कैसे को बखानै कोई बानीमें न आवहीं।

दो०-कोहबर में दूलह सहित, चले कुँवर बर चार।
हास विलासहिं करन हित, सखियन रोकी द्वार।
एक सखी पिय के भुजहिं,गाहे तिरछे करि नैन।
बोली मृदु मुसकाय के, परम रसीले बैन॥

॥ श्रीलालजू बचन ॥

प्राण प्रिया मोहि जाने दो भीतर,
बाट क्यों रोकत योवन माती।
मुसकाइ लुभाय लियो मन को,
सब यारन के जियरा तरसाती॥
उठाय के घूंघूट घेर में घूमत,
नैन के सैन से मैंन जगावती।
काह फिरौ इठलात प्रिया तुम,
जाय लगो कोइ और के छाती॥

॥ सखी बचन ॥

ठाढ़ रहौ अब लाल यहाँ पै, नहि बल चले तिहारो।
देहु नेग जो रीति यहाँ की, तब कोहबर पगु धारो॥
यहां नहीं कोउ अहै ताड़का, सहजहिं मारि गिरायो।
नही ऋषि नारी पग छुवाईं, जेहि डारयो कहाँ पठायो।
नहिं इत अबला चाप लेकर के,झपटि कियो दुइ खण्डा।
यहाँ नारि मिथिला के प्यारे, सकल चपल है सण्डा॥

हर्ष सहित मम नेग दीजिये सुजश लीजिए भारी।
मनमोहनजू सुनहु साँवरों, कोहबर जाहु करारी ।।
जबहिं सखी अस बचन सुनाई। बोले लखनलाल मुसकाई ।।

।। श्रीलखन लालजू ।।

का तुम चाहत नेग सखी सब, नेकहुँ जो हमहूँ सुनि पैहौं।
जो न बनै उनसों कछु नेगु,सो मैं तुमको सबही भरि दैहो।
बाहु पै पूरी परै नहिं जौ तौ तुरंत खवरि जनवास पठैहौं ।
है रघुवंश कुमार घनो 'वसुनायक' मैं तब हेतु बुलैहौं ।।
लखनलाल की सुनि असबानी। कही सखी एक चतुर सयानी

।। सखी वचन ।।

लाल बोलते बचन आप कस, सुधा समान रसीले।
देखन में लागत अति सूधो हो छटि छयल छबीले ।।
हम तो मांगत नेग आपनो तुम मुदरस गरवीले।
रघुनन्दन जु नेग दीजिए, प्यारे रसिक रंगीले ।।
असवानी भाषी सखि जबहीं। बोले भरतलाल हँसि तबहीं।

।। श्रीभरतलालजू वचन ।।

देन हेतु मोहि अवधपुरी सों, आपुहिं लियो बुलाई।
अब उल्टी माँगत हमही सों, सुनि अचरज उरछाई।
देन काम है प्यारी तुम्हारो, लेन हमारो कामा।
जोतुम दियो लियो हम सदासो, और करो कछुनामा।
भरत वचन सुनि के एकनारी। बोली बिहँसि बचन सुकुमारी

॥ सखी बचन ॥

सुनहु जगत के सार भरतजी, रस के बचन कहँ सीखे।
जानि परत है निज भगिनी ढिग जाय जाय रस चीखे॥
मिले मोहिं चितचोर आजु तुम कवन सहाय बुलैहौ।
यहाँ नहीं बल चले रावरे मारि गुलच्चम खैहौ॥
नेग चुकाय जाहु कोहबर में, सुनहु लाल सिख मोरी।
रघुनन्दन नहिं सको देइ तो,विनय करो सिय करजोरी॥
सुनत सखीन के बचन रसीले। बोले रिपुहन छैल छबीले॥

॥ रिपुहनलालजू ॥

नेगहिं लेन की चाह सखी अस,जोतुम्हरे चितमाहिं समाई
ले चलिये सँग चारों भाई को,लीजिये नेग सबै भरवाई।
जेहिं विधि सो सुख होय तुम्हें,करिहैं नितही हम सोइ उपाई।
द्वार तजो हठ छाड़ि के भामिनी, काही करावत प्यारी हँसाई
सो०-सुनि रिपुहन के वैन, भइ निहाल सुकुमारि सब।
बोले राजिव नैन, बचन अमिय रस बोरि जब॥

॥ श्रीराघवजू बचन ॥

विश्वामित्र मुनि ज्ञानी पिताजी से माँगि आनि,
संग में न हम कछु लाये हे सहेलिया।
देर होत जाने देहु बात मोरि मानि लेहु,
ठाढे ठाढे चरण पिराये हे सहेलिया।
दिल एक साथ लायो, प्यारी तुम लियो चुराय,
तिरछी नजर को चलाई हे सहेलिया॥

प्यारे की प्रिय मधुमय बानी । विना दान बिक गई सयानी ।।
रतन अमूल्य आज मै पाई । सहस नेग सम जाय न गाई ।।
तजौ द्वार अब सिया दुलारे । कोहबर चलो प्राण के प्यारे ।।
रउरे दरशन हित सब लागीं । आई सखीं भवन अनुरागीं ।।
रसिक राज रघुनन्दन प्यारे । रजनी भर सुख लेहु दुलारे ।।
करो मोहि चरनन की दासी । यहि अभिलाष रही उरखासी।
दो०-मणि जर तारिन की वनी, आसन मन अभिराम ।
तहँ तहँ बैठति भई कुअरी कुअर सुखधाम ।।

।। कोहबर प्रवेस ।।

दो०-मँगलमय दुलहिन सिया, इलह मंगल रूप ।
मंगल कोहबर के भवन, प्रविसे परम अनूप ।

।। कवित्त ।।

।। कोहबर घर वर्णन ।।

मणिमय महल है विसाल सप्तावरण,
चित्रित बिचित्र बनो शोभा अधिकाई हैं ।
मध्य के भवन स्फटिक मणी की भीत,
वनेउ है चन्दोबा चन्द्र सूर्य हूँ लजाई है ।।
मूँगा अरु मोतिन की झब्बा लटकाय घने,
हीरन के झालर ललित लहराई है ।
सुन्दर झरोखा जाली रतन रचित बनी,
नवरंग मणिन कीं लटटू लटकाई है ।।

॥ पुरइन बाँस पुजाना ॥

रानी सकल समाज ते, सुआसिनी लै संग ।
विधि व्यवहार करावहीं, गान सहित बहुरंग ।
पुरइन बाँस पुजावहीं, दुलहा दुलहिन हाथ ।
मातुशिवा पुजवाइ के, सबबिधि भई सनाथ ॥
नर नरायण पद कमल, करि प्रणाम सियराम ।
ताहि भांति अनुजहु करी,दुलहिन सहित प्रणाम ।
पृथक पृथक विधि सब करे, दुलहा दुलहि समेत ।
मगन गान रनिवाँस सब, करते तालहिं देत ॥

आगे सिद्धि सखि सब पाछे। सुरतिय सम पर भूषण आछे ॥
वद्रीदेव पुजन करवाई। विप्र बधु सब चार कराई ॥
तहाँ कमला शशीकला पियारी। बोलि बचन भरी सुखारी ॥
हमरे कुलकर जो कछु चारा। हमकर वहै सहित बिचारा ॥
ऐ अजान जानहि कछु नाही। कहँते आई यह घर माही ॥
असकहि दुलह दुलहिन ढिग आई। चार करावन लागी सुहाई

॥ देवि पूजन ॥

आये रघुवंशिन के देवा। तुम सो लाल करावन सेवा ॥
तिनको सिर नावहुँ सब भाई। इन्है देवी कौशल्या पठाई ॥
भरत विहँसि तब बचन बखाने। रंगदेव तजि देबन जाने ॥
जिनके घर देवन बहुताई। ज्ञान विराग योग अधिकाई ॥
ते सेवन देवन को जानै। देवन रीति भुवन महँ आनै ॥
कहै बचन पैहो नहि पारा। सखि कर वहुँ कोहवर चारा ॥

गाय गाय वर मंगल गाना । चार करायो सहित विधाना ।।
तहँ रनिबास हाँसरस माचा । सबही कर अतिशय मनराचा ।

।। देवी पूजन ।।

तब सिद्धा रघुवर ढिग आई । कहि मृदु वचन सनेह जनाई ।।
उठहु लाल सब अनुज समेता । चलहु देवि घर पूजन हेता ।।
चारो कुंवर उठे तत्काला । चले सकल जनु राज महाला ।।
कोई कोई भेद सकल यह जाने । विहँसति मदन भेद वखाने ।।
तिन कहँ नयन सैन समुझाई । सिद्धा गई लवाई रघुराई ।।
मूरति निकट गये जब रामा । कहि सिद्धा तुम करहु प्रणामा ।
राजकुअर हे मुनि मनहारी । यह देवी कुल पुज्य हमारी ।।
विनय उक्त तेई रीझे । नाहि करो तबहीं ई षीझे ।।
ताते शीघ्र नबावहु माथा । लेहु अशिस पुलकि रघुनाथा ।।
तुम्हेहु चित इहँवाँ के आये । द्वोथिथि मंगल इनहिं मनाये ।।
नाईं रिझे जप तप कीन्हे । नाईं खुषी गान मन दीन्हे ।।

दो०-केवल कर जोरे द्रवति, इनकी सरल सुभाव ।
सर्वों विघ्न विनास कर, सब कामना पुराव ।।
बेगि पाय परू दीन है हँसि वोले रघुराय ।
क्रोध अनुग्रह किमिलषों बैठी बदन दुराय ।
कहि सरहज गृहि गोचरी, माया इनकी नाम ।
मुख सब कहनदेखावहीं द्रवति करत प्रणाम ।।
तुम अश्नान करी नही, छुवोनइन कहँ लाल ।
बरबस राम छुअत भये, हँसी सकल नव बाल ।।

कहि रघुनन्दन पद तरी हमरी लई चोराई।
ताकहँ निज कहति, अनुचित कहिन डेराई ।।
तुम सबका हम कहँ ठगहु, नाना युक्ति लगाय ।
सकल कला हम जानहीं, दीन्ह बशिष्ठ पठाय ।।
सब सरह जहँ सती भई, लालन मुख निहार ।
ननदोई सरहज सहित करत अनेक बिहार ।।

पुनि आई निमि वंसिन की सुता,
सुहाई दूलह देखन नारि जुरि आई ।
आई सारि सरहज सम्बन्ध,
गारी देन बाँधी पर बन्धु ।।
फटिक पुतरि धरि दूलह चारो,
बचन रचन कहि अनुरागे ।
यह कौशलपुर केरी कुमारी,
मिथिला महँ आई सुकुमारी ।।
तुमहि देखी लाज बसन बोलती,
नहि आसए उरकी कछु खोलती ।
भगनि मनाय लिवाय जाहु घर,
करहु समीप चुक सांवर वर ।।

।। मुदरी विधि ।।

अनुशासन रनिवास पाइ के सखी सयानी ।
मणि जराव के थार बिमल कमला जलआनी ।।

रामलला के निकट चमेली सखि धरि दीन्हा ।
निरखि बदन छबि सिन्धु राम को अतिसुख लीन्हा ।।
युग वराटिका रतन की रानी सबहिं देखाइ के ।
कमला जल मणिथार में ताकहँ दई डुबाइ के ।।
बिधि रानी उच्चार करी सबही सुनाइ के ।
दुलहा दुलहिन वोर सब बिधि बुझाइ के ।।
सुनहु राय के सुअन सुनहु तुम राजदुलारी ।
जोत कर्पदिक जलते लैहि पहिले सोइ हरी ।।
ताते शीघ्र निकालहू कहि मंगल गावन लगी ।
जन्त्र अनेकन बाजही परानंद सुख जगमगी ।।
पार्वति कहि सुनहु लाल रघुलाल बिहारी ।
लेहु कर्पद्दिक अैंचि थारते विजय तुम्हारी ।।
रामकुँअर जब जनक थारमहँ कर दीन्हो हैं ।
सिय मुख शशि प्रतिबिंब रत्नमें लषि लीन्हो हैं ।।
नहि चालत भुजको लला मनमें अतिआनंद भाई ।
सिय शारद के कहेते पिय करतर ते लै लई ।।
पहुँचि में श्रीराम लाल नवरत्न विराजे ।
ताहि मध्यमणि बृहद येक तहँ सिय छबि छाजे ।।
लखि पियरस बस हारिगे विजय भई श्रीजनकजा ।
सखियन हास बढ़ायऊ रामलाल तब गै लजा ।।
भरत लषन अरु शत्रुहन हारि गगे यहि रीति ।
श्रुति कीरति अरु मांडवी भई उर्मिला जीति ।।

सिद्धा लक्ष्मीनिधि प्रिया, रघुवर सों वर वयन।
बोली रौरे हारली, सिय सों राजिव नयन ।।
अब तों सब रस रीति में होइहि रौरे हार।
चेतक छबि इत कुँवरि सब, तुम आशक्त विहार।

॥ जुया खेल की विधि ॥

जो तुम्हरे कछु मन अभिमान। हमहिं है बड़ चतुर सुजान ।।
खेलहु लाल जुआ यहि ठाऊ। जीते चतुर धरायो नाऊ ।।
दो०-असकहि रतन अनेक धरि, कनकथार भरि बीर।
लगी खेलावन विमला सखि,सियको अरु रघुवीर।

॥ सवैया ॥

मुसक्याय सुनैन नचाय तबैं कह सिद्धि कहै हँसि कै बतिया।
न जुया में लाल ललि से जीतन पैहौ लगाय रहे अपनिघतिया
सिय आजु न लाज को काज कछु छल छाजि छटे रघुराइपिया
मतो बातजई मिथिलापुरकी पछितात जई सिगरी रतिया ।।
सजनी कोउ सिद्धि की बोली तहाँ,
अब जनि हैं सत्य सखी सिगरी।
यदि हारि गये लला इतते,
रघुवंशिन बात सबै विगरी ।।
सति भे नहिं कौशलनाथ सुते,
यह विस्व में कीरतिहूँ बिगरी।
रघुराज के श्यामल गौरन की,
नहिं न्याय की नीति अवै निगरी ।।

दुलह त्यौं दुलहीन को जुआ सखि,
यान लै सिद्धि खेलावन लागी।
लै मुक्तामणी मानिक हीरन,
पाणि उछालन लगी सुहागीन ॥
लागे होन यथा के खेल,
हसति परस्पर निजदाव सभार।
हारे लला अब हारे लला,
अस भाषति देति तिया बहु तारी ॥
जीती हमारि लली रघुराज,
मगाओ द्रुतै अनुजा मुनि प्यारी।
कही नागरी कोउ मिथिला की। करहु कला करिकलाचलाकी
आज लो हारेन तब रघुराज,
सोहारे गहौ सिय पायन पावन की।
आतुरी चातुरी भुलि गई सब,
मोहनी रूप कीरति अनोकी ॥
रावरे को ठगिवो रह्यो आवत वाउुरे की पहीचाना की।
जानकी जानी इतीन सुजान लगे जुया खेलन की ॥
चंचलता न चली रघुराज करीलली सीछटा छल छकी।
पटुका छोर पकरि सुकुमारी। हँसी बोली लक्ष्मीनिधि प्यारी।
लेहुँ काह मुदलालन लहकौरी। करहुकुँवर करकेली सकरौरी
मिश्रीयुत दधि देहु खवई। कुवरि खवैहैं पुनि बरियाई ॥
कहैं सिद्धि पुनि गहि पट छोरी लालन कहँ मनभाई।
रामहि लगी सिखावन गौरी, देखहि सियहि खवाई ॥

लाड़नि तनिक दिखाय संकोचहि लीन्ही निज गुठानाई।
देखत दशा हँसि दै तारी रघुवर सरहज सारी ॥
अति संकोच लखि दूलह लाजे दिये वोर बुधवारी ॥
हास विलास विविध विधि होत कोहवर में साज

बिधि कराइवे हेतु राम दिशि पारवती हैं।
जनक नन्दनी बोर शारदा परम सती हैं॥
मंगल समय बिचारि विधि लहँकौरी आई।
दधि मिश्री मणि जटित थारवहु सहचरी लाई॥
दुलहा दुलहिनि के निकट धरि दीन्ही अनँदभरी।
मंगल गान करें सखि चहुँदिशि कोहवर मेखरी॥
पार्वती कहि मधुर बैन रघुनन्दन सों हँसि।
लहकौरी निजकर खवाइये सिया वदन शशि॥
रघुनन्दन सकुचात कमल कर संपुट कीन्हे।
मन्द मन्द मुसुकाई सबन के चित हरि लीन्हे॥
पारबती तब आपने करते रघुबर करधरी।
जनकलली मुख देति है देहि मिश्री आनँद भरी।
सिद्धि कुअरि हँसिसो सुधा दियो अधर लपटाय।
यहु के रस पिय चखि लेहु रहे लाल मुसकाय॥

॥ लहकौर ॥

मानो अहि निजमणि प्रतक्ष करि शशि के मध्य में।
छवि अमृत को ग्रहन करत अति प्रेम बध्य में॥

अरु अपनी मणि शशिहिं देत अस छबि ह्वै आई ।
ऐसहिं कर अहि वदन इन्दु त्रैबार सोहाई ।।
पुनि यहि विधि रघुकुल तिलक दधि मिश्री खवाइतै ।
सब निज प्रियन षवायउ ये कहिं छवि सब ठौंर भै ।।
बहुरि शारदा जनकलली कहँ लगी सिश्वावन ।
छवि अमृत को ग्रहन करत अति प्रेम बध्य भे ।।
रामलाल को मुख निहारि जो चंदत जावात ।
दधि मिश्री मुख इन्दु देहु मन भावति प्यारी ।
मंद विहँसि गई गृहि सकोच में जनक दुलारी ।
अपनो जूठन जानि के नहीं उठावती कर कमल ।
तब सारद निजकर धरी सिय सरोजकर अतिअमल ।
लगी सवावन रामलला मुख दधि मिश्रि को ।।
घुंघट वोट निहारी अैन मुख भई लषिपिको ।
फूली कंचन बेली मनहूँ फलतरु तमाल को ।
चुम्मन करत सप्रेम सारदा लषि विहाल भो ।
ताहि समय की उपमा कविजन हृदय विचारहीं।
मन बुधि चित अहमित विसरि जातन बनत उचारहीं ।
हे रघुवंश कुमार लाल अति प्रेम समेता ।
अध रामृत कुंअरिन कि लेहु पावहु सुख हेता ।।
एहि विलासमय बचन सुनते रघुवर मुसुकाने ।
ताहि समय की प्रीति रीति को कौन बखाने ।।

बहुरि शारदा जानकी कर कमलनि को धरिलई।
दधि मिश्री को लेन हित थार उपर करधर दई ॥
बहुरि हाँस रस युक्त कहति हे राजदुलारे ।
एह लहकौरी बाहु प्रेम युत प्राण हमारे ॥
ऐसी स्वादिक वस्तु तुमहिं नहि प्राप्ति भई है ।
कौशल्या यद्यपि खवाईं दई वस्तु कई है ॥
तुम जननी के प्राण सम यद्यपि तुम सबको लहै ।
इन कन्यन की जूठरस अति दुर्लभ मोमन कहैं ॥

॥ दुलहा सखी हास सियाजू की जूठन ॥

रस स्वाद के भौन प्रवेस किये,
अबही कहु स्वाद कहाँ से बताऊँ ।
सुधि पाई जबै मुनि नारद से,
तबते हिय में अति ही अकुलाऊँ ।
चलि के द्विज के संग आय यहाँ,
उवलोकि पुरी सो महा सुख पाऊँ ।
करुणा करि के 'जय-माला' मिली,
तब ते चित चौगुन चाह बढ़ाऊँ ।
रस स्वाद हमार अधीन है आपके,
प्यावो जबै रस स्वाद बताऊँ ।
हम भूखे हैं दिनन अनेकन के,
नहि थोरि सुधा करि पान अघाऊँ ।

दुवले हम हैं तुम जानति हों,

रसपूरण दो जेहि शीघ्र मोटाऊँ।

सव साज समाज संयोग जुरे,

केहि कारण हो अजहूँ ललचाऊँ।

दो०-यो कहि लालन चुप रहे, सबके हृदय चोराय।

सिधिकुअरी अति नम्र होइ, कही सुनहु रघुराय।

॥ कवित्त ॥

ओह प्राण प्यारे अबधेश के दुलारे,

आप मिथिला में कृपाकरि आपहीं पधारे हैं।

धारे हैं अंग-अंग कोटिन मनौज छबि,

मिथिला निवासिन पर जादु पढ़ि डारे है ॥

डारे हैं घायल करि नैनन के बानो से,

कसकत हिय रेन दिन होत नहि न्यारे है ॥

न्यारे कोई चाहै नाहि, काम धाम भावे नाहि,

आपके सनेह सुधा छाके मतवारे हैं ॥

दो०-सिद्धि कुँअरि हँसि सो सुधा, दियो अधर लपटाय।

यहुके रस पिय चाखिलो, रहे ललन मुसुकाय ॥

सियकर अँगुरिन मणिजराव के भूषण सोहै।

तेहि नग महँ पिय मुख मयंक प्रतिबिब लषो है ॥

मगन भई छवि देखि आँगुरी चालति नाही।

मोहि गई सिया पिया इन्दु मुख की परिछाही ॥

शारद नही उठावही मेरो कर असमन रही ।
चष चकोरि श्रीजानकी रघुवर मुखको शशि कही ।।
दसा प्रेम सिय देखि पिया सुधि भूलि गई है ।
तैसहिं सब रनिबास नेह में बिबस भई है ।।
कोहबर में जे रही ताहि क्षण सब बरभागी ।
सब दुलहिनि दूलह सरोज मुख के अनुरागी ।।
तहँ की सकल विलास सुख नहिं वचनन में आवई ।
मन बुधि बर वाणी अगमता कहँ कबि किमि पावई ।।

।। हवीस खीरख्योन विधि ।।

मेवा मिश्री युत हविष्य मणि थारन आई ।
सरहज सब निजकर सरोज ते धरि सब ठाई ।।
बहुरि अमित पकवान थार सहचरि ले आई ।
लाई बहुरि मलाई अपर सब तरह मिठाई ।।
ललित कटोरन में घरी दधि माजून बनाई के ।
सब दुलहन को कहत भई पावहु प्रेम अघाई के ।।
चली हाँस की बात लाल तुम काके जये ।
कौशल्या है गौर राय पुनि गौर सोहाय ।।
तुमको देखत श्याम ताहि ते शंका आई ।
लक्षमण काहे गौर स्याम तुम देहु बुझाई ।।
मातु पिता अनुरूप जग पुत्री पुत्र सोहात हैं ।
मातु पिता तब गौर है यह परपंच देखात हैं ।।

दूथि उर्मिला स्याम राम कहि मृदु सुसुकाने ।
सुनहुँ कुअरि अब श्याम हेतु हम सत्य बषाने ।।
ताते मेरो अंग स्यम रंग शृंगार रूप हम ।
है शृंगार को श्याम रंग शृँगार रूप हम ।।
ताते मेरो अंग श्याम छवि धाम काम सम ।
निध्या करि बोलति भई है परत्व पुनि गौर को ।।
स्याम जहाँ मोहित रहें तुम आये इतदौर को ।
दो०-सुनहुँ सुमन मकरंद हित मधु पहिं कौन बौलाई ।
भ्रमर आपु ते आवई, जहँ सुगन्ध रस छाई ।।
सुनि सरहज रसमर्म्म को फूली हिय अरविंद ।
सब के मन अति मोद भई भाकति मुख रघुनंद ।
निध्य करि कोई प्रशन बहुरि पिय उत्तर सुनिके ।
जनकनन्दनी मुदित बात सब मन में गुणि के ।।
मंद मंद मुसुस्याति दमिनि द्युतिहि लजावति ।
झीन वसन के ओट देषि पिय मन अगरावति ।।
लषि लषि पिय मन हर्षअति मनहुँ रंक राजा भयो ।
सिय मुखचन्द निहारि के विरह ताप पिय मिटि गयो।
ननदोइ ते बहुत हाँस रस सरहज कीन्ही ।
मन भावत सुख दुहुँ और दीन्ही अरु लीन्ही ।।
भोन भई उपनेति सिलय सूची झारी लाई ।।
सहचरि सबकी मुख धोवाई दीन्हीं अँगु छाई ।।
बीरी ललीत सँवारी के साशु सकल दुलहन दई ।
सहचरि कुअरिन को वीरी ललीत सुख भई ।।

यशध्वज नँदन प्रिया जाहि रति मोहनि नामा ।
नख शिख मधुर सरूप सुन्दरी छबि की धामा ।।
महरानी ते बसन ओट करि वात जनाई ।
बड़ी बेर ते मौर शीस पर हे रघुराई ।।
उतरि जाइ तो अति भली रानिन की सम्मत लई ।
मौरि लई उतारि के कुलही पेन्हन को दई ।।
बहुरि दई गुलचाइ हँसन लागे रघुराई ।
पानदान वीरी समेत सियवर ढिग आई ।।
मणि कोपर गरीदाष बादाम बिराजे ।
लौंग छोहरा किसमिसादि सब मेवा भ्राजे।
श्रीसिद्धा बोली तबै खाहु लाल वीरी ललित ।
बहुरि खाहु मेवा मधुर अतिसप्रेम मिश्री सहित ।
पानदान जो रामलाल ढिग सखियन राखी ।
बीरन में छल भरे भेद कोइ सकइन भाखीं ।।
जब रघुवर कर लई खोलि के देखन लागे ।
उड़ी फुदगुदि फुरर मधुर स्वर बोलत भागे ।।
दशवीरा तक खोलि के देख्यो ये कहिवात है ।
रसिक शिरोमणि नवल छवि मन्द मधुर मुसक्यात है
सखियन हाँस बढ़ाइ जे रघुलाल बिहारी ।
कुअँरि सकल मुसुक्याति वोट घूंघट छविकारी ।।
नयन कोर रघुकुल कुमार निरखत सो शोभा ।
विहँसिन मधुर निहारि सिया की मन अतिलोभा ।

जनक प्रिया सुखमानि के वीरी ललित सुगन्ध मई।
अपने करते ल्याइ के रामलाल कर में दई ।।
दो०-चारों कुंअर प्रणाम करि, लइ बीरी निज हाथ ।
पावन लगे निशंक ह्वै रानी निरखि सनाथ ।।

।। सातों सरहजों के नाम ।।

जनक पुत्र लक्ष्मीनिधि सिद्धा तेहि प्रिया नाम ।
कुशध्वज के हैं श्रीनिधि, निध्या करि तेहि बाम ।।
यशध्वज के धितवर्त्त हैं, रति मोहनी प्रियाजानि ।
विरध्वज के पुत्र त्रय, प्रथम देव दानि नाम ।।
चित्रकांति तिनकी प्रिया, रूपशील गुणखान ।
अज्ञा पर दोसर तनय, रूपशील गुणखान ।।
सौदर्य गर्भिता नारि तेहि, मंगल मोद निधान ।
तृतिय वंश प्रवीण हैं, मन मालिनि प्रिया जान ।।
केकी ध्वज के पुत्र येक सेवा पर छवि अैन ।
मदनावलि तिनकी प्रिया,जेहिछवि कहत वनैन ।।
इतिसातों रघुलाल की, सरहज सुख की रासि ।
रहिं सिय वरढिग करत अति,विविधि भाँति की हाँसि

।। देवि पूजा ।।

अपर सहेलिन संग लै, तेहि कोठरी माँहि ।
जो लीला करने चहति,सो कोइ जानत नाहिं ।
सब दुलहिनि की पदतरी, किंकरि तै मगवाइ।
येक मूरति निर्मान करि, वस्तर दियो उठाइ ।।

।। देवी पूजन ।।

झला बोर तापर धरी, चद्दर येक अनूप ।
अंग छपा बैठी मानो, कोउ एक सुघर सरुप ।।

तब सिद्धा रघुवर ढिग आई । कहि मृदु वयन सनेह जनाई ।।
उठहु लाल सब अनुज समेता । चलहु देबि घर पूजन हेता ।।
चारो कुअर उठे तत्काला । चले सकल जनु राज महाला ।।
कोइ कोइ भेद सकल यह जाने । विहँसति मदन भेष बषाने ।।
तिन कहँ नयन सैन समुझाई । सिद्धा गइँ लवाइ रघुराई ।।
मूरति निकट गये जब रामा । कहि सिद्धा तुम करहुँप्रणामा ।
राजकुंवर हे मुनि मन हारी । यह देवी कुल पुज्य हमारी ।।
विनय सुनत तेई रीझै । नाहि करो तबहिं ई षींझे ।।
ताते सिघ्र नबावहु माथा । लेहु अशिस पुलकि रघूनाथा ।।
तुम्हेउ रिझे जप तप कीन्हें । नाई खुसी गान मन दीन्हें ।।

दो०-केतल कर जोरे द्रवति, इनकी सरल सुभाव ।
सर्वों विघ्न विनास कर, सब कामना पुराव ।
बेगि पाय परू दीन ह्वै, हँसि बोले रघुराय ।
क्रोध अनुग्रह किमिलषों, बैठी बदन दुराय ।।
कहि सरहज गृहि गोचरी, माया इनकी नाम ।
मुख सब कह न देखावहीं, द्रवती करत प्रणाम ।।
तुम अश्नान करी नही, छुवो नइन कहँ लाल ।
बरबस राम छुअत भये, हँसी सकल नव बाल ।।

कहि रघुनन्दन पद तरी, हमरी लई चोराइ ।
ताकहँ निज देबी कहँति, अनुचित कहिन डेराइ ।
तुम सबका हम कहँ ठगहु, नाना युक्ति बनाय ।
सकल कला हम जानहीं, दीन्ह बशिष्ठ पठाय ॥
सब सरहज हँसती भई, लालन मुख निहार ।
ननदोई सरहज सहित, करत अनेक बिहार ॥
अब जाइये जनवास को, लाल होत अतिकाल ।
कालि कलेउ के समय देहौं उतरु रसाल ॥
सुनि सरहज के युक्ति युत, बैन मंजु मुसुक्याय ।
प्रेम सुधा बरसत श्रवन, कहे बचन रघुराय ॥
छं०-सुनि सिद्धि के अस बचन सुन्दर, रचन पाय हुलास ।
चारिहु कुँवर प्रमुदित उठे, करि विविध हास विलास ।
दिय छोरि गाँठी सिद्धि सुँदरि वर वधुन की सकुचाय ।
चारिहु कुँवर चारो सासु को सहुलास शीश नवाय ॥
यहि भाँति चारिहूँ बंधु द्वारे आ गये सुखछाय ॥
तेहिकाल मिथिला पाल संयुत लाल आयो धाम ।
मिल राम वारहिं बार भरतहिं लषण अरु रिपुशाल ॥
करजोरि सब माँगे विदा शिरनाय दशरथ लाल ॥
भेटेयों वहुरि लक्ष्मीनिधिहुँ प्रभु मिले सहित सनेह ।
चारहु कुमार सवार भेइत गये गेह विदेह ॥
गवने कुंवर जनवास को सुन्दर सखा सब संग ॥
जनक सजाये हय तब पाँचा । श्याम कर्ण देखत मन राँचा ॥

कुंवरहिं कह हय लाल चढ़ाई। देहु तुरत पितु पहँ पहुचाई ।।
सुनत कुँवर अति भये सुखारी। हयन चढ़ायो दूलह चारी ।।
आपहु चढ़े सखन संग लीने। जे गुण शीलहुँ प्रेम प्रवीने ।।
दो०-सखन बीच दूलह लसत, नाचत जात तुरंग।
सम वयस्यक सबहीं फबत, देखत बनत सुदंग ।।
छ०—बाजी उछालत नयन चालत चले राजकुमार।
मैथिल सखा राजकुमार गवने संग पंच हजार ।।
फहरात विमल निशान आगे तुंग ह्वै असमान।
मनु तासु पवनहि पाय तारा बृन्द नभ विलगान।
बाजत अनेकन दुन्दुभी नहिं शोर भुवन समात।
पुर नारि नर मोदित खड़े पथ बृन्द बृन्द बतात।
गल मुख पद सुभ भूषण भूषित चमचम चमक सुभाय।
मनहु मदन हय रूप विराजित परसत प्रभु ललचाय ।।
हयहिं नचावत अति थिरकावत दूलह राम सुवेसा।
अमित काम वारततिन ऊपर, सिहरा मौर घनेसा ।।
चारहुँ दूलह जात सुसोहैं सह लक्ष्मीनिधि सारा।
हास विलास होत मगमाही हँसहिं सबै निमिवारा
देखि देखि सुर होहिं सुखारी, वरषहिं बहु बिधि फूला।
जय जय कहहि प्रेम रस पागे, दुन्दुभि हनि अनुकूला।
देखहिं चढ़ी अटारिन्ह नारी, भरी प्रेम रस बाँकी ।।
दूलह कहहिं सुनाय सुदूलह जात बहिन रक्षा की ।।
सुनत लाल सकुचहिं हिय हरषत मैथिल हँसत सुभाये ।।

दो०-अवधपुरी दासी सकल खड़ी महल के द्वार ।
आवत लाल निहारहि नयनिनि मेष बिसार ।।
उतरी सवारिन ते सकल दूलह चारो भाई समेत ।
चले महल अति मुदित मन विप्र आशिष देत ।।
छं०-यहि भाँति चारिहुँ कुँवर आवत भये वर जनवास ।
देखन बराती सबै ठाढ़े नहिं समात हुलास ।।
तजिके तुरंग उमंग भरि एक संग चारि कुमार ।
पितु कियो निउछावरै पद बन्दि बारहिं वार ।।
आई सब माता आरती करि निछावर कीन ।
गई भीतर मातु लिवाय चारो,ललन मोदहिं भीन।
हिल मिल किये भोजन सबै व्यंजन विशेष निकाय ।
कीन्हे शयन पर्यंक निज निज अरुण नैन अलसाय ।।
तहँ सकल कौशलनगर बासिन बढ़ी अतिशाय प्रीति ।
नहिं राम व्याह किसाबिती वर्णत निशागय बीति ।।
दो०-सकल वराती जागते, लहे प्रमोद प्रभात ।
बन्दी जन विरुदावली गाय उठे अवदात ।।
नौवत झरन लगे सब ठौरा । भये दुन्दुभि के कल शोरा ।।
उठ्यो चक्रवर्तीं महराजा । सुमिरि आतम राम छवि छाजा ।।
प्रातकृत्य सब भुप निबाही । दीन्हो दान समायन उछाही ।।
रघुकुल तिलक उठेयुत भाई । करि भज्जन सिंगार सुखदाई ।।
सहित वन्धु पितु के दरवारा । आये चारहु राजकुमारा ।।

उतै जनक सब साज, भरि शतानन्द के संग।
पठवायो जनवास महँ, हित व्यवहार अमंग ॥
तुरंग नचावत मग छवि छावत बाजत बिपुल नगारे।
चोपदार जाँगरे अलापत जनक नगर पगु धारे ॥
छ०–द्वार समीप देखि अतिसुन्दर मणिमय चौक सँवारे।
राजकुँवर रघुवंशिन के तहँ ठाढ़ भये मतवारे ॥
लक्ष्मीनिधि तब उतरी तुरंग ते चारहु कुँवर उतारे।
पानि पकरि रघुनन्दन जी को भीतर महल सिधारे।
द्वीप द्वीप के जहँ महिप सब जनक समीप विराजे ॥
बैठे सभा सकल निमिवंशी सुरअंशी इमि छाजे ॥
रघुनन्दन तहँ अनुज लखन युत सादर पाय जुहारे।
देखत उठे सकल निमिवंशी जनक निकट बैठारे ॥
इते सुनैना सखी पठाई । लक्ष्मीनिधि कहँ निकट बुलाई ॥
जनवासे अब लाल सिधारौ । लै आवहु लिवाय वर चारौ ॥
इतहिं कलेऊ करहिं कुमारा । भवन विभूषित होय हमारी ॥
दो०-सुनि विदेह नन्दन चल्यो, दुलह लिवावन काज।
चढ़ि तुरंग मढ़ि मोदरस, संग सखान समाज ॥
गयो जहाँ राजत रघुराजा । सभा सभायुत राज समाजा ॥
लक्ष्मीनिधि आवत लखि राजा । भयो अनंदित सहितसमाजा
लक्ष्मीनिधि तहँ कियो प्रणामा । आशिष दई भूपमति धामा ।
शीश सूघ अंकहिं बैठायो । चिबुक परसि बोल्यो कहँ आयो ॥
लक्ष्मीनिधि कह हे महराजा । भेजहुँ कुवर कलेऊ काजा ॥

भूप कह्यो लै जाहु कुमारे। का पूछहु मिथिलेस दुलारे ॥
सुनतसुखी लक्ष्मीनिधि भयेउ। लालनिकट आशुहि चलिगयऊ
बिहँसि कह्यो चलिये रनिवासा। मातु बुलायो दर्शन आसा॥
करन कलेवा बन्धु समेतू। आशु पधारिये रघुकुल केतू॥
उठि रघुनन्दन चारिहुँ भाई। पिता चरण पंकज शिरनाई॥
चढ़े कुवर सब तरल तुरंगा। चले सखा सब सोहत संगा॥
डगर डगर तिमि नगर मझारी। फैली सुधि आवत वरचारी।
दो०-पुर नर नारी लखन हित, बैठे अटारी द्वार।
कहहिं कलेऊ करन हित, आवहिं राजकुमार।

॥ विदेह का मिलना ॥

मिलि विदेह आशिष दई, लै गये भवन लिवाय।
यथा योग्य भ्रातन सखन, सहित लाल बैठाय॥
करत भये सतकार बहु, अङ्गन अतर लगाय।
दै वीरी पूछि कुशल, प्रेम अम्बु दृग छाय॥
प्रभु बोले करजोरि कै, आप कृपा कुशलात।
जैसे लक्ष्मीनिधि अहैं, तैसे हम सव भ्रात॥
छं०-तहाँ सुनैना की यक आई सहचरी।
कुवर बुलावन हेतु महाँ मुद उरभरी॥
रामहिं आवत देख सुनैना आई धाय के।
तीनहु अनुज समेत आरती करि बैठाय के॥
तहाँ लक्ष्मीनिधि नारि सिद्धि आवत भई।
करन कलेऊ हेतु विनय करत भई॥

उठे राम लै बन्धु कलेऊ करन को।

बैठे आसन माहिं महामुद भरन को॥

व्यंजन विविध प्रकार थार भरि ल्याय कै।

मुख सरहज अति सुख पाय परोसे आयकै॥

सनमुख बैठी सिद्धि सहित सखियान के।

गारी गावन हेत स्वरूप गुमान के॥

चितलाय सुनहु चितचोर छयलघनु धरि सारी,

सरहज की प्रेम भरी रस गरी॥

अवध बिहारी और वस्तु तो सुलभ अनतहुँ,

यह तो सुलभ य हाँही।

यह रस स्वाद मधुर गारी को औंर ठोर कहँ नाही।

चुनिचुनि हम सब गुनगन गावहि सुनहुँ गुनहुँ मनमाँही

कवहु रसिक सुनि हँसहि ठठाके कवहु मन्द मुसुकाही।

नित रहै विलसती यह विनोद कोहवर अवध बिहारी।

दो०-यहि विधि मिथिलापुर युवति, गारी गावत जाहिं।

मन्द मन्द भोजन करत, सकल बन्धु मुसुक्याहिं॥

यहि विधि भोजनकरिअभिरामा। कियआचमनबन्धुजुतरामा

उठि चामिकर चौकन जाई। बैठे धोय कर पद सब भाई॥

मुकुटन शिरन सुधारत माहीं। आय सुनैना कह्यो तहाहीं॥

कौशल मुकुट उतारहु लाला। मिथिला मुकुट देहु यहि काला

असकहि मणि मंडित धरिथारन। मुकुट चारिवर प्रभापसारन

पहिरायो चारिहुँ वर माथे। पद्मराग मरकतमणि गाथे॥

अति कोमल फूलन की माला। लालन गर पहिराय विशाला
बन्दि विदेह महिप पटरानीं। नेग कलेवा कर सुखदानी ॥
माँगहु जौन रहै अभिलाषे। तब प्रभु जोरि कञ्जकर भाषे ॥
यही नेग जननी अब दीजे। लक्ष्मीनिधि सम मोहि करि लीजे
मैं सुत सेवक तू महतारी। देह अम्ब रुचि यही हमारी ॥

दो०-शील विनय रस के भरे, मधुर लाल के वैन।
सुनत जनक रानी युगल, भरि आये जल नैन ॥

लालन नात हमार तुम्हारा। यही रहै सर्बदा बिचारा ॥
एवमस्तु वोले रघुनन्दन। सदा प्रनत जन पर अभिनंदन ॥
सर्वस पाइ सुनैना रानी। गई अनत सिधि आगम जानी ॥

तुम्हरे दरस हम भये सुकृत पुनित सकल प्रकार सो।
महिमा तुम्हारी भुति महिमा कौन करै उपचार सो।
हम दियो तुमको सोंपि चारहुँकुँवर ताजि छल छन्दको।
लालन करन पालन करन तुम पिता देन अनन्द को ॥
कौशल नगर मिथिला नगर के आप एक अधिश हो।
यामेन दूसरी बात कछु तुम बिषय कर्म अनीश हो ॥
दशरथ वचन सुनि सब सभा सद साधु साधु उचारही।
दशरथ सनेह विदेह लखि दृग वारी धारहि ढारही ॥
बोल्यो वहुरि निमिवंश भूषण काल्हि महल धधारिये।
करि कै कृपा निज कुंवर युत मम भवन जुठन डरिये ॥
मांगी विदा निज भवन गवन विदेह लहि सुखसार है ॥

पहुँचाय द्वारहि देश लौ अवधेश चले मिथिलेश को।
करि सबिध वन्दन सहित नन्दन पाय मोद अशेश को ॥

॥ शीष्टाचार दोनों राजा मीलन ॥

दो०-सुनहु लाल अभिराम अब, करहु जाय आराम।
साँझ समय मिथिला नृपति, आईहै हमरे धाम ॥
द्वै धावन तहँ आशुहि आये। अवधनाथ यह खबर जनाये ॥
दरशहेत मिथिलापति आवत।सुनिदशरथ अतिशय सुखपावत
कियो सकल दरवार तयारी। लियो बंधु सरदार हँकारी ॥
राम बन्धु युत लियो बुलाई। नर भुषण आये सुखदाई ॥
दो०-महाराज नवखंड पति बैठायो सहित समाज।
राज मण्डलि नखतसम चन्द्र सरिस रघुराज ॥

॥ छन्द गीतिका ॥

मिथिलेश आवत जानि कौशलनाथ चारि कुमार लै।
कछु लेन आगे चल्यो सकल उदार वर सरदार लै ॥
चलि द्वार देशहि मिल्यो मुदित महीप सो मँड़ित महाँ।
मिथिला धीराज प्रणाम कीन्ह्यो भुजन भरी मुदित तहाँ ॥
तहा राम चारहु बंधु कीन्ह प्रणाम जनक महिश को।
मिलि मुदित मिथिला नाथ हाथ पशारि दीन आशीश को।
अबधेश को अभिवंदि कुशध्वज मिल्यो कुँवरन जायके।
तिहि राजकुंवर प्रणाम कीन्ह सलाज शीश नवाय के ॥
पुनि आये लक्ष्मीनिधि गह्यो पद कोशलेश नरेश को।

यहिविधि परस्पर मिलिसकल पुनि पूछिकुलश अनंदसो।
अवधेश चले लेवाइ जनकहि पकरि कर अरविंद सो ।।
दोउ राज बैठे एक आसन दहिन दिशि मिथिलेश है ।
बांये सुकौशल राज राजत और वीर अशेश है ।।
आगे विराजत लाल चारहुँ बंधु लक्ष्मीनिधि युते ।
दहिने कुशध्वज और निमिकुल वीर एक एकन युते ।।
वहु भाँती शिष्टाचार वचन उचारि अवध भुवार को ।
करजोरी बोल्यो जनक आपु समान यहि संसार को ।।
निमिवंश पावन कीयो दीन्हो सुयश मोहि दराज है ।
किमि करौ प्रति उपकार गुणि उपकार आवति लाजहै ।
प्रेम मगन नृप गिर उचारी । कहियो पितुहि प्रणाम हमारी ।।
पुनि कहियो अस सो सुखदाई । जो महि होंइ रजाई ।।
लक्ष्मीनिधि तहँ वन्दन करि कै । गयो महल मुदित मनभरीकै
कौशलनाथ निदेश सोहावन । दियो सुनाय पिता कहँ पावन ।
सुवर सुरकारनति हिवारा । कीन्ह्यो जनक तुरत हँकारा ।।
दियो निदेश रचहुँ ज्योनार । त्रिभुवन व्यंजन विविध प्रकारा
सिगरे सुपकार सुनि शासन । लगे रचन ज्यवनार हुलासन ।।

।। जेवनार परिकरण ।।

दो०-मिथिलापति ज्योनार हित, बोलि पठाये नाथ ।
जो आज्ञा प्रभु दीजिये, करों वेगि धरि माथ ।।
भूप बचन सुनि परम सुखारे । गुरु वशिष्ठ असवचन उचारे ।

दो०-अवसि चलिय मिथिलेश गृह,आजु उचित असआहि।
लै बराति निज संग में, भोजन करनो चाहि॥
विजोइ भई जनवास में, नित्य नेग सब कीन।
दुतिय विजोइ चलतभये,भोजन दिशि चितदीन।
सुनत महीप जुड़ानी छाती। जेवन चले साथ ले बराती॥
इतै करी अवधेश तैयारी। महल पधारन हेतु सुखारी॥
साजें सकल मुन्दर रघुवंशी। जे त्रिभुवन महँ विदितप्रशंसी।
चारि कुमारन भूप बुलाये। चारि उतंग मतंग चढ़ाये॥
नाम जासु शत्रुंजय नागा। जिहिं विलोकि दिग्गजमदभाग॥
तापर भयो भुवाल सवारा। जिमि ऐरावत शक्र उदारा॥
दो०-राम लखन दक्षिण दिशा, बाम भरत रिपुशाल,
चारि चारु चामर चलत, सोहत छत्र विशाल॥
सजी सैन्य सब बजे नगारे। फहरत लगे निशान अपारे॥
प्रतिहार बोलहिं यक ओरा। मंजुल करहिं जाँगरे शोरा॥
पुरवासी देखन सब धाये। देखि-२ धनि-२ सुख छाये॥
जहँ तहँ कहहिं जनकपुरवासी। धन्य-२ नृप अवध निवासी॥
भई खबर महलन महँ जाई। आवत अवधनाथ नृप राई॥
राज समाज सजि सब साजा। बैठ रह्यो विदेह महराजा॥
समधी आगम मनहिं बिचारी। आगे लेन चले पगुधारी॥
द्वार देश अवधेश निहारी। कर गहि जनक लियो उतारी॥
कीन्ह प्रणाम परस्पर दोऊ। बन्दे यथा योग्य सब कोऊ॥

दो०-दीन बन्धु बन्दे जनक, सहित बन्धु युत बन्धु ।
शील सिन्धु को रामसम, नागर नेह प्रबन्धु ॥
छं०-परत पाँवरे महल द्वार लौं, वसन अनूप बिछाये ।
तेहिं पर सुतन समेत चले, दशरथ नृपति मनभाये ॥
आस पास महराज बन्धु सब,अति छवि शोभा करहीं ।
रघुवंशी जेते कुमार, दूलह सँग मन हरहीं ॥
सकल बरातिहिं मण्डपहिं आये, अति शोभा भई ।
जनक मुदित भावहिं सहित, पदपखारि आसन दई ॥
सादर सबके चरण धोवाये । जथा जोग्य आसन बैठाये ॥
मुनि वशिष्ठ आदिक विप्रनको । धोये जनक हर्ष चरननको ।
पुनि दशरथ के पाँय पखारे । शील सनेह को वरनै पारे ॥
राम सहित पुनि तीनों भाई । धोये चरण हृदय हुलसाई ॥
धोये चरण चारु सबहीं के । सीच्यो सलिल सदन सव नीके ।
अवधनाथ कहँ सहित कुमारा । रघुवंशिन तिमि और अपारा
भोजन मन्दिर गये लेवाई । यथा जोग्य आसन बैठाई ॥
मृदुल गलिचा पन्नन के प्यारे । बैठाये तिन राज कुमारे ॥
जड़ित चन्द्रमणि चौकी चारु । बैठाये कौशल भरतारु ॥
मखमल बिछे सुपीढ़न ऊपर । बैठी सव बरात सुख तापर ॥
छं०-वीरसिंह अरु सूरसिंह जय शील सिंह बर ।
विजय सिंह श्रीरतन भानु परताप दिवाकर ॥
शशि शेखर इत्यादि सब रघुवंशी मंडप लसै ।
पीताम्बर पहिरे सबै, धन्य भाग्य जे उर बसै ॥

गोप ग्रींव वर लसत रतनमय जड़ित सवन को।
मुक्तामणि की माल नाभि लो लसत बरन को ॥
दुलहुन की शोभा अनूप सो वरनि न जाई।
पहिरे मणि भूषण अपार नखशिख छवि छाई ॥
मंडप के चहुँओर अवधवासी सब सोहैं।
रूपशील गुण भरे लखत नयनन मन मोहैं ॥
भूषण वसन अनूप सबन के सुन्दर राजै।
कोटि काम मन हरण कान्ति छविभौन विराजै ॥
परदा गिरी अनूप झलि मिलि वरनि न जाहीं।
पुरवासिन को भीर गान धुनि अधिक सुहाहीं ॥
पंच शब्द धुनि होत विविध नूपुर तहँ बाजै।
मानहु रागिनि सकल आय नृप धाम विराजै ॥
जब नृप समुझे सकल वराती बैठे आदर।
सूपकार नृपसुनि निदेश पत्रल परसन लगे आगर।
हरित मणिन के पत्र कनक की कील जराईं ॥
अस पनवारा विमल सवन के ढिग पहुँचाई ॥
स्वर्णपात्र जल भरे सुहाये। सबके दहिने ओर धराये ॥
दो०-सब सुआर मणिथर लै, परसहिं अति हर्षाय।
सूपोदन प्रथमहिं दियो, छोड़ि सुधृत सुखछाय ॥
परस्यो ओदन विविध प्रकारा। मोती भात सुनाम उचारा ॥
केशरि भात नाम शशि भातू। कनकभात पुनि विमलविभातू
अरुण पीत अरु हरितहुँ वरणै। आदेन विविध कौन कविवरणै

षट रस भोजन चार प्रकारा । इक इक पुनि बहुभाँति अकारा
मधुर सरस शुचि सुखद सुवासे । परसे मुदित सुआर सुघासे ।।
विविध भाँति पकवान सुहाये । जनकहुँ पावन हेतु निहोरे ।।
पंच कवलि करि सकल बराता जेनन लागि मुदित मन भाता
जेवत जानि सुमैथिल नारी । गारी देन लगीं सुखकारी ।।
नारि पुरुष लै नाम सुगावै । पावनहार प्रमोदहिं पावै ।।
दशरथ राउ मुदित मनहोही । हँसहिं समाज सहित सुखजोंही
छ०–अगनित वस्तु अनूप भूप तुम सब बनवायो ।
व्यंजन विविध प्रकार सार अमीय जनु लायो ।।

।। सवैया ।।

सुनि के शुभ गारि पियारी लहैं सुखभारी सबै अतिमोद भरै
मुसुक्याय के ग्रास उठावत पावत जेंवत माहि विलम्ब करै ।
मधुरे धुनि वाणी मनोहर जो सब ब्यंजन को सुख स्वाद हरे
श्रुति के सुखदायक मंगल में रसना रस के सुख भूलि परे ।।
छ०–श्रवण करत राजाधिराज अवधेश सुवन सँग ।
सब भाइन मिलि हँसत राय प्रमुदित नाना रंग ।।
राम वन्धु जुत अति अनुरागे । भोजन करन लगे सुख पागे ।।
दधि चिउरा विदेह कर लीन्हे । कौशलपति आगे धरि दीन्हे ।
कह्यो जोरिकर तिरहुत माही । याते और पदारथ नाहीं ।।
और सकल रावरी विभूती । हमरे तौ इतनी करतूती ।।
हमनहिं तुमहिं जेवावन लायक । लेहुकृपाकरि रविकुलनायक
कह्यो अवधपति सुनिय विदेहू । जो करि कृपा आजुतुम देहू ।।

सो सादर हम सिर धरि लेही। असदाता पैहैं पुनि केही ॥

॥ गारी गान ॥

सुनहु राम दूलह मनभावन पावन रूप तुम्हारी जी।
पै एकबात सुनी हम ऐसी माय तुम्हारी छिनारी जी॥
आजी रही तुम्हरी रघुनन्दन बांकी निपट चलाकी जी।
कामकला की सब गुण छाकी डोलत परपति झाँकीजी।
जो तुम्हार नानी सुनु न्यारे सुखदानी गुण खानी जी॥
रसिक बात में बड़ी सयानी सकल बात हम जानी जी।
मामी रहि तुम्हार सुखधामी अवलन में रहि नामी जी।
अति चटकीली रसिक रंगीली करत अनेकन स्वामीजी।
रामलला तुम्हार जो मौसी गुण शोभा उजियारी जी॥
रूप सँवारी गलिन गलिनमें करति फिरति बहुयारीजी।
फूफू रहि तुम्हार जो प्यारे सो जोवन मदमाती जी॥
पान चबावति मृदु मुसुकावति परसों प्रीति लगातीजी।
बहिन तुम्हारी नाम शान्ती दइ सन्तन सुखकारी जी।
विभान्डक के पुत्र शृंगी रिषि तिनके संग सिधारी जी।
राजकुमारिन सहित जहाँ लगि है रघुबर को प्यारीजी।
सब मम भाइन के हैं सारे सब दुइ बापन वारे जी।
रामलला युत भले सखा सब सुनिये गारि हमारी जी।
रघुनायक यह प्रेम की गारी लीजिये पटुक पसारी जी।

रस रस पावत विहँसि बराती। सुनत गारि नहिंहोहिं अघाती
भोजन बीच महारस छायो। पुनि पुनि परसि सुआर सुहायो।
लेहिं और पुनि औरहुँ लेई। शब्द सुनत प्रेमारस देई॥

सो सुख वरणि लहै नहिं पारा। महामोद मन सरहत सारा।
भोजन भयो यहि विधि भाता। देखत सुनत कहत सुखदाता।
अचमन करि पुनि पान सुपारी। पाई सकल बरात सुखारी॥
माँगी विदा जान जनवासे। कह्यो बचन तब जनक हुलासे।
केहि विधि कहौ जान अवधेशा। जान कहत जियहोत कलेशा
कौशल नायक बंदि विदेहू। गमन्यो वर्णत जनक सनेहू॥
जनकहु बोलि घराति लीन्हे। भोजन किये सवहि सुख भीने॥
चले हरषि दशरथ जनवासे। बजत बाद्य वहु कौतुक हाँसे॥

॥ राजकुँवर सब कोहवर जाना॥

चलहु लाल अबहीं कोहबर में समय नेग की आई।
चले रसिक मणि हँसि सरहज जो सखियन मंगल गाई।
कोहबर आय विराजे छविनिधि वन्धु सहित रघुराई।
तेहिं क्षण पुरकन्या बहु आई सरहज सबहिं बुलाई।
सादर सो बैठायो निज ढिग चमकत अंग गोराई।
हाँस कुशल सब गान प्रवीणी चितवन में रसिकाई।
लखि छवि धाम राममुख निर्मल सबके नयन लोभाई।
वचन विलास अनेकन उचरत दुहूँ दिशि अति मनभाई।

॥ हास्य विनोद॥

दो०-वसन रुचिर बहु मोल के, झीनी अतिहिं सुगन्ध।
पहिरे सब नारी मुदित, छवि निधि रूप वैसंघ॥
इन्द्रहिं वरुण कुबेर गृह, जो संपदा प्रमान।
अधिक ताहिं ते नारि एक, भूषण बसन परिधान।

जगमगात भूषण सकल, मणि मोतिन चहुँओर ।
निरखि मगन नृपसुवन सब, रतिपतिके चितचोर ।

॥ छन्द ॥

सिद्धा कही रघुवर सुनाय मृदुवचन अनूठी ।
तियको पिय सुख विन सकल सुख लागत झूठी ।
ताते तुमहिं बुझाय कहौं, जो जग व्यवहारा ।
सर्बोपरि सुख है विशेष समवयस विहारा ॥
शान्ता भगिनि तुम्हारि विपिन रिषिसंग दुख पावति ।
कबहुँ रहति उपवास कन्द भषि दिवस गमावति ॥
कोइल नाहिं करील बृक्ष पर रहि सुख लहई ।
हंस कुमारी नहीं मानसर तजि निरवहई ॥
ताते सुनहु सरोज मुख, अब बिलम्ब नहिं कीजिए ।
शान्ता बहिन बुलाइ कै, आरज सुत कहँ दीजिए ॥
सुनि सिद्धा के बैन अपर सरहज मुसुकाई ।
भली ठीक रचि दीन्ह, मानिहैं यह रघुराई ॥
रघुनन्दन सरहज के बैन, सुनि मृदु मुसुकाने ।
सर्वगुणन के सीव, शत्रुहन कहहिं वरवाने ॥
सुनहु चारु बदनी तुम्हरी मति मोहिं सुहाने ।
एही चलन तव ग्राम तो, हम सब कर कल्याण ।
हम सब तुम सब एकवय, चलहु अयोध्या सुखकरै ।
अपर नारि तब ग्राम सब, लेहिं बराती मन हरै ।
हँसे राम अनुजहिं समेत, सब नारि नहिं हँसाई ।

बढ़्यो हाँस अगनित प्रकार को, कोहवर में छवि छाई ।
एक सखी बोलत भई, सुनहु लाल चंचल महाँ ।
चलती तो तब संग में, तुम लोलुप मोहिं सुखकहाँ ।
कोई सखी कहि जान देहु यह बात सयानी ।
लखहु राम को रूप सहज आनन्द सुखदानी ।
नयन श्रवन कोलाभ आजु निधि सब विधि कीन्ही ।
सुकृत भयी सहाय जो मनभावत सुख लीन्ही ।
सरहज पान खवावहिं अमित हाँस अससुख भई ।
सिद्धादिक नारी सबै मनवांछित सब सुख लई ।
।। अष्ट सरहज के नाम ।।
दो०-जनक पुत्र लक्ष्मीनिधि, सिद्धा तेहिं प्रिय नाम ।
कुशध्वज के है श्रीनिधि, निध्या तेहिं नाम ।।
यशध्वज के धृतवर्त हैं, रतिमोहिनी प्रिय जान ।
बीरध्ब्रज के पुत्र त्रय, प्रथम नाम देव दान ।
चित्र कान्ति तिन की प्रिया रूपशील गुणवान ।
अज्ञापर दूसर तनय, महाँ सुशील सुजान ।।
है सौन्दर्य गंभीरता तिन प्रिया मोद निधान ।
तृतीय वंश प्रवीण है मनमालिन प्रिय जान ।।
केकी ध्वज के पुत्र एक, सर्वो पर छवि ऐन ।
मदनावती तिनकी प्रिया, जेहिं छवि कहत बनैन ।।
छं०-इन सातों सरहजहिं लाल की सुख की रासी ।
रहि सियवर ढिग करत अति विविध भाँति की हाँसी

तब सिद्धा कहि सुनहुलाल, रघुलाल बिहारी ।
हम कहँ अति अभिलाष चलव हम संग तुम्हारी ।
लक्षण सब लखि लेहु, बुद्धि निधि विद्या भारी ।
हम तो सेउब सर्वकाल, पुनि रह आज्ञा कारी ।
हँसि बोले सीतारमण शुभ लक्षण तब अंग है ।
लेव संग छाड़व नहीं, मो मन अधिक उमंग है ।

दो०-यहि विधि अमित विनोद करि,विदा माँगि पुनिलाल ।
आये जनवासे सकल, अति हर्षित नृपलाल ॥

॥ इति कोहबर विनोद ॥

दो०-छोड़ दइ तब द्वार को, दुलहा दुलहि समेत ।
कोहवर में गवनत भये, बनत न उपमादेत ॥
मणि जरतारिन की बनी आसन मन अभिराम ।
तहाँ तहाँ बैठति भई कुंअरी कुँअर ललाम ॥
रानि सकल समाज ते सुआसिनि ले संग ।
विधि ब्यवहार करावहीं गान सहित बहुरंग ॥
पुरइन बाँस पुजावही, दुलहा दुलहिन हाथ ।
मातु सिवा पुजवाई के, सब विधि भई सनाथ ॥
नर नारायण पद कमल, करि प्रणाम सियराम ।
ताहिभाँति अनुजहिं करी,दुलहिन सहित प्रणाम ॥
पृथक–पृथक विधि सब करे,दुलहा दुलहि समेति ।
मगन गानरणि बाँस सब करते तालहि देति ॥

❀ पद बातीं मिलावन ❀

क्यो न मिलावत बाती लाल तुम क्यो न मिलावत बाती ।
बात मिलाये मिलत दम्पति मन नेह दीन दीन अधिकाती ।
याको प्रभाव विदित जग सो कापै कहि नही जाती ।
सकुच बिहाये मीलायो वावी वीती याम गुण राती ।।
समुझावती मुसुकावती सखियन सबही प्रेम रंग राती ।।
काहे न टारत वाती लाल अब काहे न टारत बाती ।
वाती देख संशय उर उपजी लिखै मातु कहँ पाँती ।।
यह न होय धनु तोरेअ शंभु को मारेऊ ताड़का धाती ।
कोउ जननी भगनी न सिखलायो वाती लागे ताती ।।
की लै जैहो नगर अयोध्या मातु कौशिल्या काती ।
नयन बनाय भौन कस होई रहेउ पठयो बोली बराती ।।
कीटारो की भगनी हारो जौ तुम्है सुगम सुहाती ।
जो मागो सोई देउ लाड़ीले मणि माणिक बहु जाती ।।
शाल दोशाला मोल बहु केरे जो तुम्हारे अधिक सुहाती ।
बिहँसीं बयन बोलेउ रघुनन्दन हमरे कुल नही लहाती ।
कै कै सुमति चारी जनि कहाँ है जो हमरे संग जाती ।
सुनत बचन मुख मोरी हँसी सखी कोउ कोउ असकहती ।
अरीसखी खोट छोट जानी सब जानो रघुवंशिन की जाती ।
जो मागउ सो दीयो सासु सब लालन बाती मिला रसवाती
लागी असि सै मनाय शंभु सुर छोह मोह मदमाती ।
बनी रहै लालन लाड़ली सब अचल प्रीति दीन राती ।

जन परिषत सो सुख किमि कहि सकै हिया शारद सकुचाती।
दो०-साँझ समय सानन्द नृप, निमिकुल मणि अवतंश।
निज समाज लै हर्षयुत, गे जनवास प्रशंस ॥
आज चतुर्थी कर्म विधाना। ताकर सब साजहु समाना ॥
शतानन्द कहँ जनक हुलासे। बर चारों पठयो जनवासे ॥
गौतम सुत चलि अवध भुवालैं। कह्यो चौठारि कर्महिं हालैं।
राउ कह्यो मम गुरु पहिं जाहू। तिन युत कुंवरन कहँ लै जाहू
गौतम सुत वशिष्ठ पहँ गयऊ। विश्वामित्रहिं आवत भयऊ ॥
समाचार सब दियो सुनाई। सम्मत कह्यो दोउ मुनिराई ॥
दो०-तहँ वशिष्ठ चारिहुँ कुँवर, लीन्हें आसु बुलाय।
रत्न जाल की पालकी, दुलहन लिये चढ़ाय ॥
गाधि सुवन अरु आपहुँ आशू। चढ़ें एकरथ सहित हुलासू ॥
पंच सहस संग राजकुमारा। छरे छबीले तुरँग सवारा ॥
अगनित परिकर विविध नकीबा। चले संग बोलत जय जीवा
चारि चारु चामर अति चारू। करै कुँवर शीशन संचारू ॥
राकाचन्द्र छत्र छबि छाजे। मुर्छल विविध विशाल विराजे ॥
यहि विधि चारिहु कुंवर सुहाये। जनकभूप रनिवासहिं आये।
दूलह आवत सुनत सुनैना। कलश साजि लिये महिषि सुनैना
पठई मंगल हित अगवानी। गावत चली सुमंगल वानी ॥
द्वार देश महँ दूलह लीनी। देखि महाछवि आनन्द भीनीं ॥
मुकुट जड़ाऊ रतन के खासे। मुकुत्त झालरै झलक विलासे ॥
तनु नारंग रंग वर वागे। कटि फेटे अति सुन्दर लागे ॥

छहरति सुछवि छोर छै छोनी। मुक्तामणि माणिक अतिलोनी
दो०-परे परतले कंध में, जगत जवाहिर ज्योति।
हीरन की हारावली, हिमकर किरण उदोति।
लसत कंठ पन्नन के कंठे। मनु बुध बहुत रूपधरि बैंठे ॥
जुगलजुगल श्रुति जलज सुहाहीं। मनुउड़श्वेत श्याम घनमाहीं
भुज अंगद वर कड़े विराजै। मणि मंजीर कमल पद भ्राजै ॥

॥ प्रथम कंगन छोरण विधि ॥

❀ सिद्धावचन ❀

कंगन की बर गाँढ़ को, खोलहु लालजू।
प्यारी बदन विलोकत होहु निहालजू ॥
सरहज की मृदु वचन सुनत पुलकित भये।
कंगन खोलने के दिशि मन अरु दृग दये ॥
प्रथमदृष्टि परि नयन नयन नयना लगी।
कंगन पर दिये हाँथ हाँथ रस उर पगी ॥
कंगन खोले कौन सुद्धि नहिं देह है।
पिय प्यारी मन में मन हरण सनेह है ॥

॥ निध्याकरी वचन ॥

एहन होय सारंग जो तुम झटि तोरिदै।
सिय डोरन छोरन चित चोरन लाल हैं ॥
सिथिल भये पिय हाँथ साथ कंगन लसे।
चंचल दृग रतनार गाँठ पर नहिं बसे ॥

जनककिशोरी गोरी भोरी लाल को।
डोरी छोरि न जाय लषन मुख बाल को॥
पुलक अंग रोमांच लाल अद्भुत लसे।
सदा विहारी नेह प्रेम इन मन वसे॥

॥ इति मोहनी वचन ॥

की कंगन डोरी छोरहु चित थीर कै।
नाहि तो लेहु बुलाई बहिन कहँ बीर कै॥
सरहज हँसि हँसि कहँहिं सुनत खोलन लगे।
पुनि कर भूषण दृष्टि लगे तहई पगे॥
गाँढी कंगन कठिन छुटत नहिं प्रेम बस।
मन सकुचत गणपतिहिं निहोरत वारदश॥
कर कंपत झंपत विबिलोचन लाल कै।
छवि निहारि सब रानी गय निहाल भै॥
कोपर जल ढरकावत पूगीफल धरे।
छवि अद्भुत देखि सकल की मन हरे॥
रति रति नायक देखत चमर ढुरावहीं।
सो शोभा सुखसागर किमिकवि गावहीं॥
कर पर कर कहँ धरे बिबस मन ह्वै रहै।
कंपत कर संकत मन जब छोरन चहै॥
कंगन में अँगुरी अरुझे सरुझेन सो।
मानहु व्याल लरत शशि छाँह मराल सो।

॥ अथ मालिनी वचन ॥

कि कर जोरहु लाल कि खोलहु कंगना ।
धीरज धरि खोलि सकुचीं सब अँगना ॥
एहि विधि सकल कुअरि कंगन खोलत भये ।
तेहि अवसर भरि मंडप आनंद सुख छये ॥
महरानी मन मोद महासुख को कहे ।
बर दुलहिनि कहँ देखि जन्म को फल लहे ॥
राई लोन उतारहिं मंगल गावही ।
आरति सबहिं उतारति छवि मन भावहीं ॥
चारिहुँ दूलह अनुपम शोभा । देखि सकल नारिन मनलोभा ।
लेहिं सकल दूलह बलिहारी । तिनका तोरहिं पलक निवारी
तहँ वशिष्ठ कौशिक मुनि आये । शतानन्दहूँ संग सिधाये ॥
औरहुँ विप्र बृन्द जुरि आये । पढ़न लगे स्वस्त्ययन सुहाये ।
आरती करि नीछावर कीन्हा।अतिअनन्द उमगसुख लीन्हा ॥
उतर पालकी ते वर चारी । अन्तःपुर कहँ चले सिधारी ॥
तेहिंअवसर लक्ष्मीनिधि आये। मिलि कुँवरन तिनसंग सिधाये
मंगल गान करत कलभामिनी । अर्ध्यदेत गवनी गज गामिनी
कौशिक शतानन्द गुरु तीनो। मंगल पढ़न प्रवेशहिं कीनो ॥
मंडप तर दूलह सब आये । मिली सिद्धि सखि मंडप भाये ॥

दो०-चारि चारु आसन अमल, बैठे दूलह चार ।
शतानन्द कौशिकहूँ गुरु, लगे करावन चार ॥

गौंरि गनप पूजन करवाये । पुनि चारिहूँ वर वधुन बुलाये ॥
बरन बधुन मज्जन करवाये । पट भूषण नवीन पहिराये ॥
पुनि बैठाये आसन माहीं । सविधि कराये होम तहांहीं ॥
सकल चार चौथी कर कीन्हें । अन्त: पुरवासिन सुख दीन्हें ॥
तेहिं अवसर आयी महरानी । अपर दया वपु मनु निरमानी ।
कह्यो मुनिन सो वचन त्वराई । भयो असन अतिकाल महाई।
चौथी कृत्य शीघ्र करवाई । भोजन करै अवसि इन आई ॥
सूखी गये कुँवरन मुख कैसे । शरदा तप लहि सरसिज जैसे ॥
मुनि कह कृत्य भई विधि लाई । असन करावहु कुंवरन जाई।
तब रानी सब कुंवरन काहीं । असन करायो भौनहिं माहीं ॥
करि भोजन रघुकुल कर चन्दा । बैठे आय चौक सानन्दा ॥
तहाँ सिद्धि लै सखी सिधारी । दीन्हों अतर पान सतकारी ॥
दो०-करजोरी कह्यो लाल सो, सुनहु प्राणपति लाल ।
हमरे कुल की रीति यह, चलि आई सब काल ॥
चौथी छूटि जाति जिहिं बारा । तिहिंदिन होरी होत अपारा।
दुलहिन दूलह सरहज सारी । होरी खेलहिं रंगन डारी ॥
ताते सजहु आप हित होरी । यह सुख देखन की रुचि मोरी ।
सिद्धि वचन सुनि कै सुख छायी । बोले मंजु बचन रघुराई ॥
जो जो रंग तुम्हें मनभावै । सो सो करिय न कछु रहि जाबै ।

॥ चौठारी की होरी ॥

बहुरि चले रघुकुल मनी जहाँ होरी के कुन्ज ।
अवरख और अबीर की लगी अनेकन पुन्ज ॥

रचना अतिविचित्र लखि रामलाल मनमोह।
अतर गुलाब अनेक रंग के अनेकन सोह ॥
पिचकारी के ढेर बहु सब रंग मनिमय चित्र।
और दमकला अमिति विधि देखहु परम विचित्र ॥
थाल अनेकन हैं धरे भो कसतुरीके छवि ऐन।
गने कवन कुँकुमा को सकुचत सारद वैन ॥
फूलन के छरी गेंद बहु जहाँ तहाँ धरे अपार।
जनु दशदिशि आनन्दकी फूली नव तरुवाग ॥
चोबा चंदन की बनी कुँड सुगन्ध अपार।
जहाँ तहाँ डलियन में भरे बहु फूलन के हार ॥
श्यामहि सखिन दिखायेउ फिर फिरहँ सत हँसाय।
परमानन्द मगन सब मोपे वरनि न जाय ॥
मध्य चौक मनिन सिंहासन दुलहा दुलहिन हेत।
तहाँ बैंठे प्रिय सिय सहित वहिनिन्ह प्रेम समेत ॥
छत्र लिये कोऊ सखी चामर कोऊ करसोह।
ब्यजन लिये कोऊ सखी छबिरति मनमोह ॥
सुख सागर रघुवंश मनि बोले सिद्धा पाहि।
अब संकोच या महलमें तामें सुख कछु नाहि।
घूँघट में मुह ढ़ाकिके बैठी ननद तुम्हार।
कैसे खेलिहैं मम संग होली सुख सुकुमारि ॥
मंद विहसि सिद्धा कही है संकोच समाज।
है महान कुल में उचित यही रसिक सिरताज ॥

फिरि रउरे अनुकूल सब कोऊ मन बाहर नाहि ।
यह कहि वीरी ललित वरदई श्यामहि मुखमाहि ॥
गुल चालेउ पुनि मंद हंसी नैनन भरे सनेह ।
श्याम मनोहर वैन सुनि पुलकि पल्लवित देह ॥
बोले पुनि रघुलाल विहारी । सुनिये सरहज वर वैन हमारी ।
हम एक संग खेलहि रंग पिचकारी । देखै ननदै दसातुम्हारी॥
अरु मेरो मन हरन विनोदा । देखहि ननद तुम्हारि प्रमोदा ॥
रस में सब लज्जा मिट जाई । विहरहि मम संग तुमहि देखाई
घूँघूट में दुलहिन मुसकाही । अति अहलाद सो वरनि नजाही
तब तकि एक सखि पिचकारी । भरी लालरंग लालउर मारी
पीत वसन भये अरुन सुहाई । अति छविमय सो वरनि नजाई
मंद विहसि बोले रघुराई । यह छल भयो अनींत कहाई ॥
नीति यह जो भरी पिचकारी । खड़े होहि हम तुमहि प्रचारी
तब तुम मन भावत रंग धरहु। हार जीत कहँ तबहि विचारहु
सो०-चन्द्रानन चहुँ ओर लिये फूल गेदा ललित ।
मध्य किशोरी किशोर फुल गेंदा खेलन लगे ।
विविध फूल के हार पिय प्यारी पहिने दोउ ।
लज्जित तन रतिमार कसकत फूलन के लगे ।
नख निष भूषण फूल फुले खड़े सनेह में ।
निरखि नैन अलिभूल सकल प्रियन के एकरस।
फूलन खेल अनेक कला अमित तेहि खेल में ।

करि करि सकल विवेक हास कलाजुत खेलही ।
उड़ी अलि अतर लगइ पिया पिया के हाथ से ॥

॥ होरी खेल ॥

अस कहि उठे लाल रघुराई लगी होन होरी सुखदाई ।
गावहि सखी मनोहर गीता चलत पिचका परमपूनीता ।
अतर अबीर उड़े चहुओरी नचै सखी सब कंधनजोरी ।
नूपुर की धुनि वरनि न जाई यन्त्र बजत सों अधिकसोहाई।
जाल रन्ध्रपुर जुवतिन देखी लखि छवि अतिसुख भयेविशेषी
फूलन गेद चले चहुओरा दोउ दिशि हर्ष प्रेम नहि थोरा ।
चोवा चंदन प्रकरि लगावै नाचन चावहि ताल वजावहि ।
चलत कुँकुमा अतिहि परस्पर जगमगाइ गयो सब होलीभरे।
सकुच त्यागि सब जनकदुलारी कछु कुँकुमा चलाइ उरमारी
रघुनन्दन भरि भरि पिचकारी तकितकि उरज लाड़िलीमारी
घूघुट ओट विहसि मुखमोरी मारी पिचका जनककिशोरी ।
येहि विविधि करि अनेकन लीला रामश्याम सुन्दर मृदुशीला
तेहि अवसर रघुनन्दन कुंकुमा लै कपोल तकि मारी ।
लखि तेहि कोरी राजकिशोरी लै झोरी उठि दौरी ।
मूठिन चपल गुलाल चलावति घेर लियो चहु ओरी ।
ललकोरे पुनि रघुनन्दन को बहु कुंकुमा पमारी ।
कोउ के भुज कोउके कपोल तकि कोउ के कुच विच मारी।
मूठिन प्रति मूठी चलाइ के चमकहि चपला कुमारीं ।

चहल पहल भो राजमहल में छाई अबीर अधियारी।
कोहो होरी ओहो होरी बोलहि सब हो हो होरी।
गावनवारी गावन लागी दै दै हाथ हथेरी।
लखि कौतुक छज्जन ते छाड़े केशर रंग पिचकारी॥
राजकुमर कुँकुमनि चलावैं पिचकारी सुकुमारी।
निज पराय लखि न परै काहू की मची धूम धुधकारी
तब रघुनन्दन सिद्धि वदन महँ दौरि मलेउ मृदुरोरी।
सो अति चपल लपटि लालन को लाल गुलाल मलोरी
भीजी पागै लटपट बागै लपटि सो अंगन लागै।
रंगी अबीर अनोखी अलकै हलकै कुँडल आगे।
परसि कपोल रामलाल को प्रेम मगन में प्यारी।
वार वार पट सो मुख पोछति करति प्रान बलिहारी।
लखि प्रसन्नमुख पान पवावति सरहज प्रान पियारी।

दो०-रंगमय वसन उतारि सब पहिरे श्रीरघुवीर।
परम मनोहर मनिन मई नाना भूषन चीर॥
सब सरहज गई कुज में नवल सिंगार बनाय।
कुमरिन कहँ लै आयेउ दइ पिया ढिग बैठाय।
सब सखियन मिलि गाइ पुनि सजि सव अंग अनूप।
पुनि आई नन्दोइ ढिग निरखति मधुर स्वरूप॥
परम ललित वीरी दई लालन मुख करि रंज।
बहु उपमा को भवन भो मुख दोउ करकन्ज॥

पुनि उर अतर लगाय के मंद विहँसि श्रीरघुलाल ।
याह छवि परम अनूप लखि काम रति उर शाल ।।

।। सिद्धाजी के साथ होरी ।।

हमहिं कहौ तौ वाहर जाई । होरी वसन पहिरि सब भाई ।।
नर्म सखन लै अपने संगा । आवैं करन फाग रस रंगा ।।
कही सिद्धि यह भली विचारी । सजि आवहु करि फागुतैयारी
हम देखब बल सकल तिहारे । जैहौ जनवासे हठि हारे ।।
उठें लाल सब वन्धु समेतू । बाहर आये रघुकुल केतू ।।
भवन जाय सब सखन बुलाये । होरी होन हाल सब गाये ।।
नर्म सखा सुनि भरे उमंगा । सजै श्वेत अम्बर सब अंगा ।।

।। सवैया ।।

फेटे कसे कटि में चटकीलो मजीले महीप लला हैं अनोखे ।
चौलड़े त्यों मुक्ताहल माल सुता राबली छवि छीने अनोखे ।
खेलन फाग सजे रघुराज सुराज कुमार महाचित चोखे ।
अंगनि अंग उमंग भरे निज जोहत होत अनंग के धोखे ।

दो०-होरी मन्दिर में उतै, सिद्धि सजाई साज ।
लै सीता सँग गवन किय, संयुत सखिन समाज ।

छं०-भरि भरि झोरी करलै रोरी राजकिशोरी गोरी ।
उठी भई सिद्धी के आगे पिय सँग खेलन होरी ।।
सिद्धि समीप महीप सुता सब चहुँदिशि मंडल कीने ।
महल महोदधि ते मनु निकसे कोटिन चन्द नवीने ।।

पुनि तहँ सिद्धी कुँवरि बुलाई आई गावनि वारी।
जिनकी ताने परत सुकाने सुरतिय मानै हारी॥
झाँझ मृदंग शंख सहनाई वीणावेणु सितारैं।
जल तरंग मुरचंग उमगहुँ बाजै सब एक बारैं॥
लाल रिझावन काम जिवावन वाम सुगावन लागी।
सुनि तियरंगी फाग उमंगी हृदय रंगरस जागी॥
मृदु मुसक्याय खाय मुखवीरी सखियन ओर निहारी।
ठाढ़ भई होरी खेलन को लक्ष्मीनिधि की प्यारी॥
बोली चन्द्रकला विमला सो तुम नरहो मुद होरी।
नृप लालन मारी गुलाल नहिं गही लहै बरजोरी॥

॥ सिद्धि के साथ होरी है ॥

गोरी एक ठौरी सबै, लै लै झोरी वाम रहियो तैयारी।
अली झुंड बाँधी तत्काली चली जहाँ लाल सुखधाम॥
अगर कपुर और कस्तुरी। केसर अंग राग अति रुरी॥
कमला लिय विमल कर सोहै। अति आसक्त लाल तनजोहै॥
यहि विविधि वस्तु सुख दाई। सरहज रुख सहचरि लै आई।
लगि होन मंगल बहुगाना। बजन लगे बाजन विधि नाना॥
इत रघुनन्दन अनुज सखन युत सुन्यो सिद्धि दिशि गानै।
सुघर सेवकन सपदि बोलाये, जे कलगान सुजानै॥
मुरलि मुचंग मृदंग मंजीरन में मिलाय सुर दीने।
दै दै तारिन गाइ धमारिन मतवारी तिय कीने॥

चलत लाल के सखा अनुज सब मंडल बाँध सिधाये ।
अति हुलसे विलसे दिलसे रस फन्दहिं से तहँ आये ।।
उत सुन्दरी घमंडभरी सब रिधि सिद्धी करि भाइयीं ।
दमकिदमकि दामिनि सो कामिनि गजगामिनि उठि धायी ।
चंचल नैनी चितवनि पैनी मुददैनी पिक बैनी ।
राजकुमारहिं रूप रिझैनी नैनी दरप दरैनी ।।
लिये गुलाल उताल बाल सब, लाल समीप सिधारी ।
चितै रहै मुखचन्द लाल को तन मन योवन वारी ।।
तेहिं औसर एकसखा कुमकुमा कोलै कपोल तकिभारी ।
लखि तेहिं गोरी राजकिशोरी लै झोरी उटि दौरी ।।
मूठिन चपल गुलाल चलावति घेरि लियो चहुँओरी ।
ललकारे पुनि लखन सखन प्रति बहु कुमकुमनि पवारे।।
कोउ के भुज कोउ के कपोल तकि कोउके कुच बिचसारी ।
मूठिन प्रति मूठिन चलाय कै चमकहिं चपल कुमारी ।।
चहल पहल भो राज महल में भय अबीर अँधियारी ।
निरखन आयी नगर नागरी ते चढ़ि सबै अटारी ।
लखि कौतुक छज्जन ते छाड़े केशर रँग पिचकारी ।।
राजकुँवर कुम कुमनि चलावै पिचकारी सुकुमारी ।।
रंगनि सनीधुन्ध पाटानी दरसी कछुक उजेरी ।
तब रघुनन्दन सिद्धि वदन महँ दौरि मल्यो मृदुरोरी ।।
सोई अति अपरया लालन को गाल गुलाल मलोरी ।
चन्द्रावती मुखचन्द्र चितै पुनि रिपुहन परम खेलारी ।।

झपटि लपटि रोरी मुखमारयो करनहिं छाड़्यो प्यारी ।
सोउचित चंचल चपल चातुरी आतुरि नवल नवेली ।
रिपुसूदन दृग अंजन दीन्ही मलि कपोल अलबेली ।।
इत रघुवर के सखा छवीले, उत सब राजकुमारी ।
अविर गुलाल रंग पिचकारिन मची महल में रारी ।।
हेलि मेलि सों झेलपेल सो खेले खेल खिलारी ।
नेकन रुकै चुकै नहिं, मूठी करहिं मार पर मारी ।।
ललकारयौ पुनि अलिन लाड़िली ते खुलि खेलन लागी
एक-एक गोरी सौसौ झोरी मूठि करोरन तकि मारी ।।
को केहिं बूझै एकन सूझै अस छाई अँधियारी ।
रामचन्द्र मुखचन्द्र चन्द्रिका तेउ न छिपी छिपाई ।।
सिद्धि कुँवरि तब रामकुंवर को लियो तुरत पहिचानी।
चूमि कपोल अमोल महल में गइ लिवाय गहिपानी ।।
सारीं सुभग ओढ़ाय लाल को घूंघट दियो बनायी।
सिय समीप बैठाय सलोनी बोली बात छिपायीं ।।
सियनइ दुलहिन आई है यह काहु न परीं चिन्हारीं ।
होरीं कौतुक देखन आयीं भूलि परीं इत प्यारीं ।।
बड़ीं लजोरिन घुंघट खोलति बोलतिहुँ सकुचाई ।
राखेहुँ अपने पास लाड़िलीं नहिं कहुँजाइ भुलाई ।।
सिद्धि कह्यौ सब राजकुमारिन बंद करो अब होरीं ।
करहु न रारीं भो श्रम भारीं सब मन काम फलोरीं ।।

अस जिय जाकी गति मनसा की तस ताकी मति पाकी ।
नृपति सुता की मौज मजाकी रहि नहि अब कछु वाकी ॥
सुख सो ह्वै हैं सिद्धि महल में वीस विसे रघुराई ।
सबसे पहिले सिद्धि सिधारी जहँ श्रीजनकदुलारी ॥
मधि में पट परदा करि दीन्हीं बाहर अवध बिहारी ।
गोल कपोल पोछ अंचल ते ऐचि लियो अँग सारी ॥
भूषण वसन साजि बैठायो पान खवायो प्यारी ।
तेहि छिन गये भरत रिपुसूदन लखन सखन सँग ठाने ॥
रामचन्द्र मुखचन्द्र चितै कै नैन चकोर जुड़ाने ।
लखन कह्यो पुनि सिद्धि कुंवरि ते तुमसब विधि सुखदाई
देहु रजाय करहिं अब मज्जन सखन सहित रघुराई ।
सिद्धि कह्यो फगुआ बिन लीन्हें नहिं मनिहैं सुकुमारी ।
सुनि सरहज के बचन रंगीले बोले अवध बिहारी ॥
यह सब राज समाज साज जुत हम तुम्हार बढ़ि प्यारी ।
भूषण बसन बात यह केती लेहिं सबै सुकुमारी ॥
अस कहि नैन सैन दिये रघुवर लखन सुचैन सुभाये ।
विविध निचोल अमोल आभूषण वहुत निडोल मँगाये ॥
जानि लाल रूख सिद्धि कुंवरि के सब समीप धरि दीने ।
राजकुमारी सब प्यारी प्रति पठयो सिविरि सुखमाने ॥
तेहि अवसर सिरताज तियन की जनकराज की रानी ।
एक सखी तहँ तुरत पठाई जहँ श्रीनिधि की प्यारी ॥

चारिहुँ कुवर तुरत नहवाबो भो अब बहुत प्रयासू ।
दोउ कर कमल जोरि रघुवर सो बोली मृदु मुसुकाई ।।
अब रघुनन्दन मज्जन कीजै बंधुन सहित बिहारी ।
यह सुनि तुरत उठे रघुनन्दन अनुज सखन युत प्यारे ।।
सुरभि सलिल महँ मज्जन करिकै सासु समीप सिधारे ।
पुनि थारिन मह वहु परकार के विंजन परुसन लागी ।।
जेवत जानि सखन युत रामहि बोलि अति सुखपागी ।।
कहहु तात होरी किमि खेल्यो केहि विधि भयो हुलासु ।
बार बार दुलारि राम को पुछति सब रनिवासु ।।
उतरन देत सकुचि रघुनन्दन लखन कह्यो तब वैन ।
होंरी सुख रावरे महल को देवहु वरनि सकैन ।।
दई अचै वीरी मुख दीन्हें सेवक दियो पोसाके ।
पहिरे चारों कुँवर रंगीले छैल छबीले बांके ।।
सखन सहित सिरनाय सासु पद पाय अशीष वहोरी ।
हरषित आये सिद्धि महल में जहँ सब राजकिशोरी ।।
सब सुकुमारी सिद्धि कुमारी देखि उठी सुख बाढ़ी ।
बैठारे अपने समीप में होत विनोदहिं गाढ़ी ।।

।। शयन कोहबर में है ।।

दो०-तब दुलहिन सब चलि, शयन कुन्ज अति प्रीति ।
मरि अनुराग को कहै, गाय कबि मिलत न रीति ।
कोहबर मधि जहाँ द्वार है, सब कुँअरि ठाढ़ी तहाँ ।
भीतर कुँजन जाति लालन बैठे हैं जहाँ ।।

सखिअन बहुत बुझाइ लाल संकोच मिटाई ।
निज-निज पति ढ़िगगई कुँअरिन सब हरषाई ।

॥ कवित्त ॥

कोठा पर जाय पिया सेज पर विराजे,
सिया प्यारीजू न सेज पर जाति सकुचाइ के ।
कोहबर द्वार कुंअरि ठाढ़ि जहाँ,
सिद्धि कुमारी बात कहे समुझाय के ॥
शुभ दिन आज यदि संग में न सोबो,
तो भी चरण छुवावो, सेज सगुन मनाय के ।
फेरि मेरे संग चलु, सोउँ तहाँ कुँज प्यारे,
रूचिर अनुहारी सेज राखिहै लजाइ के ॥

॥ दशरथजी की होली ॥

॥ छप्पय ॥

धनुष जज्ञ जहँ भइ तहाँ बरफ रसक रामे ।
दशरथ नृपहिं बोलाइ तहाँ सादर बैठाये ।
निज समाज युत महाराज दशरथ तहँ सोहैं ।
एक दिशि जनक नरेश लसे सुसमाज बनो है ।
पुर नारी रणि बाँस युत महल चतुर दिशि राजहीं ।
सब पुर के आये तहाँ बाजन नाना बाज हीं ।
नृत्य अमित बिधि होन लगी सब गुणिगण आये ।
उडन लगे अबरख अबिर चहुँओर सोहाये ।

पिचकारी दमकला चलत चहुबोर सोहावन ।
नभते सुरगण लगे पुष्प अंजलि बरसावन ।
एक पहर होरी भइ दोउ दिशि परमानन्द भये ।
अमित रत्नमणि द्रब्य बहु जनक राय दशरथ दये ।
सभकी भई सलाह चलिए कमला अश्नाना ।
उठे राम दोउ सब समाज युत कीन्ह पयाना ।
मग में रंग अमित प्रकार के बरसन लागे ।
पुर नभ लौ आनन्द देखि सबहि अनुरागे ।
कमला तट की को कहे जलमें जो उत्सव भई ।
सारद शेस न कहि सके यह बिहार अद्‌भुत नई ।
करि अश्नान सुदान देइ दोउ राम सिधाये ।
दशरथ गै जनवास जनक निज मन्दिर आये ।
पुत्र दमादन सहित अमित बिधि भोजन कीन्हा ।
निरषि रामछवि श्याम राम वांछित फल लिन्हा ।
बहुरि आचमन करि सकल पान अत्तर वर पाइके ।
निज निज थल सबही गये प्रेमानन्द अघाइ के ।

॥ राम कलेवा ॥

भोर भये अपने कुमार को जनक बेगि बुलवाये ।
सुनिके पितु निदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये ।
सादर किये प्रणाम चरण छुइ लखि बोले मिथिलेसू ।
गवनहु तात तुरत जनवासे जाह श्रीअवध नरेशू ।

बिनय सुनाय राय दशरथ सोपाय रजाय सचेतू ।
आनहु चारिहुँ राजकुमारन करन कलेऊ हेतू ॥
यह सुनि शीशनाय लक्ष्मीनिधि भरे उरमोद उमङ्गा ।
सखन समेत मन्द हँसि गवने चढ़िचढ़ि चपल तुरङ्गा ॥
सखन सहित तह उतरि तुरंग ते मिथिलापति के वारे ।
चारिहु सुत युत अवधराज को सादर जाय जुहारे ॥
अतिसुख निधि लक्ष्मीनिधि को लखि सखन सहित सतकारे ।
रघुकुल दीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे ॥
तेहिछिन सानुज निरखि राम छबि सखन सहित सुखसाने ।
लक्ष्मीनिधि मुख दरश पाय के रामहु नैन जुड़ाने ॥
तब श्रीनिधि करजोरि भूप सों कोमल वैन उचारे ।
करन कलेऊ हेतु पठाओ चारिहुँ राजदुलारे ॥
सुनि मृदु वचन प्रेम रस साने दशरथ मृदु मुसकाने ।
चारिहु कुंवर बुलाय बेगहीं बिदा किये सुखसाने ॥
जनक नगर की जान तैयारी सेवक सब मुख पागे ।
निजनिज प्रमुहिं सवाँरन लागे लैभूषण वर वागे ।,
रघूनन्दन शिर पाग जरक सी लसी श्रिभङ्गी बाँधी ।
तिमि नौरङ्गी झुकी कलंगी रुचि–रुचि पैं जनु साधी ॥
कनक कलित अति ललित मणिन की मंजुल मोर विराजी ।
सिंधुर मणि के सजे सेहरा जोहि होत मनराजी ॥
ताके कोर कोर चहुँओर भिलगी रतन की पाती ।
जगमग ज्योति होत चहुँदिशि ते लखि अखियान झपाती ॥

कुण्डल लोलै हलै कपोले लगी अमौलै मोती ।
जेवदार जगमगहि जड़ाऊ युगल जंजीरन जोती ।।
जालिम जोर जोहरी जुल्फै युवतिन जीवन हारी ।
छूटी झलकैं चहुदिशि मनहुँ मपन तरवारी ।।
रत नारी कारी कजरारी अति अनियारी आँखे ।
रसवारी वरवस वसकारी प्यारी आनन राखे ।।
अति अवरंगी तिररस रङ्गी चढ़ी त्रिमङ्गी भोहें ।
मनहुँ मदन के युगधनु सोहैं जोइ जोहें सोइ मोहैं ।।
तिलक रसाल विशाल भाल पर किमि वरणों छवि ताको ।
जनु नवधन पर रीझि दामिनी नेमलियो थिरताको ।।
अरुण अधर बिच दामिनि दुति दमके दशननि पाँती ।
सनमुख मुखकरि जेहि दिशि वोले अजब छटाछहराती ।।
जगमगात अति श्यामगात पर जरब जरनि को जामा ।
ताके कोर-२ चहुँओर निगुथे रतनमणि ग्रामा ।।
पीत सुफेटा सुछबि सपेटा कमर लपेटा राजे ।
नवल पटू को करन लटूको कन्धपटू को भ्राजे ।।
छोरन लगीं करोरन मोती कोरन लगी किनारी ।
अतिशय हलकै लगे न पलके लखि ललके सुरनारी ।।
सिंधुर मणि के परे चौलड़े मणि न माल बहुसोहें ।
कठुला कण्ठ बिजापठ बाहन देखत ही मनमोहें ।।
दो०-वरणि सके को राम को अनुपम दूलह वेष ।
जेहि लखि शिव सदकादिको, रहतन तनहि सरेख ।।

इमि सजि अनुज सहित रघुनन्दन चारों राजदुलारे ।
बड़े उमङ्गन चढ़े तुरंगन अङ्गन वसन सँवारे ।।
जो रघुवंशी कुँवर लाड़िले प्रभुकहँ प्राण प्यारे ।
चढ़े तुरंग संगते गमने राम रंग मतवारे ।।
बोले चोप दार ले मामे निज-निज युक्ति अलापे ।
चंचल चमर चले दुहुँदिशि ते छत्रसखा सिरढापे ।।
राम वाम दिशि श्रीलक्ष्मीनिधि सखन सहित तेउ सोहैं ।
चंचल वागे किये तुरंग की बात करत मन मोहैं ।।
जगवन्दन जेहि नाम जाहिरौ रघुनन्दन को बाजी ।
ताको गुणछवि कहँ लौं वरणों जोहि होत मनराजी ।।
इमि मग होत विलास विविध विधि बिपुल वाजने बाजे
सुनन नकीव् पुकार नगर तिय कढ़ि बैठी दरवाजे ।।
कोउतिय निरखि बदन की सुखमा अति सुखमासो पागी
भरी सनेह देह सुधि नाही राम रूप अनुरागी ।।
कोउ घूंघट पट खोलि सुन्दरी लै पानी ।
देखत दूलह रूप राम को आनन्द सिंधु समानी ।।
दो०-कोउ सूरति लखि साँवरी, तोरति तृण सुख पागि ।
मधुरी मूरति में पगीं, निज सूरति सुख त्यागि ।।
कोउ रघुनन्दन छबि विलोकि कै बोली सुनसखि वैन ।
राजकुमार सब करन कलेऊ जात जनक के ऐना ।।
छ०-बोली अपर सखी सुनु सजनी भलीबात बनि आई ।
हमहुँ चले सब जनक महल को हँसिये इन्हे हँसाई ।।

तुरंग नचावत मग छवि छावत बाजत विपुल नगारे।
चोपदार जाँगरे अलापत जनक नगर पग धारे ।।
द्वार समीप देखि अति सुन्दर मणिमय चौक सवारे।
राजकुंवर रघुवंशिन के तह ठाढ़ भये मतवारे ।।
चोपदार जाँगरे अलापे बहुविधि नौवत बाजै।
फहरे विपुल निशान जरीके नवगयन्द गजराजै ।।
तेहि छिन तहाँ गये रघनन्दन मन फन्दन वरुवेषा।
देखत उठी सकल रनिवासे रह्यो न तनहि सरोषा ।।
करि आरती वारिमणि भूषण सादर पाँय पखारे ।
चारि रंग के चार सिंहासन चारहु वर बैठारे ।।
पुनि करजोरि राम सो रानी बोली अति मृदु मोई ।
उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रुचि हिय होई ।।
यह सुनि सखन समेत उठे तहँ चारिहुँ राजदुलारे।
भरी भाग्य अनुराग सुनैना निजकर पाँय पखारे।।
रचना अधिक मखमलि तापर जाजिम बैठारे सबभाई
कञ्चन थारी मृदुल सोहारी परसी विविध मिठाई ।।
रुचि अनुरुप भुप सुत जेंवत पवन डुलावै सासु।
बुझि बुझि रुचि व्यंजन परसे बरणि न जाय हुलासु।
स्वाद सराहि पाय पुनि अंचये सखियन पान खवाये ।
बैठे पहिरि पोशाक सखनयुत विविध सुगन्ध लगाये ।।
दो०-राजऐन, सब चैन युत, राजे राजकुमार ।
जिनको हांस विलास लखि,लाजहि लाखन मार ।।

॥ दूसरा दिन का कलेऊ ॥

छं०—व्यंजन विविध प्रकार थार भरि ल्याइ कै।
सुख सरोज युत ल्याय परोसे आय कै॥
मेवा मिश्री युत हविष्य मणि थारन ल्याई।
सरहज सब निजकर सरोज ते धरि यकठाँई॥
बहुरि अमित पकवान थार सहचरि ले आई।
लाई बहुरि मलाई अपर सब तरह मिठाई॥
ललित कटोरन में धरे दधि भाजनहिं बनाइ कै।
सब दुलहन को कहत भई पावहु प्रेम अघाइ कै॥
पावत कोउ नाहीं सरहज मन में अनुमानी।
दीन्ह अमित मणि रत्न नेग मन में सुखमानी॥
लगे जेवने सब कुमार सब कुँवरि सहीता।
मृदु कहि सबहिं हँसाइ देति रघुवर अरुसीता॥
यहि विधि भोजन करि अभिरामा।
किय आचमन बन्धु युत रामा॥
उठि चामि करार चौकिन जाई।
दैय मुख वीरा सुख पाई॥
कुशध्वज नन्दन प्रिया निध्या जेहिकर नाम है।
सन्मुख बैठी श्याम के प्रेम भरी छबि धाम है॥
चली हाँस की वयन लाल तुम काको जायो।
कौशिल्या है गौर राय पुनि गौर सुहायो॥
तुमको देखत श्याम ताहि ते शंका आई।
लक्ष्मण काहे गौर श्याम तुम देहु बुझाई॥

मातु पिता अनुरूप जग पुत्री पुत्र सोहात है ।
मातु पिता तबे गौर है यह परपंच देखात है।।
दुइ दुलहिन है श्याम राम कहि मृदु मुसकाने ।
सुनहुँ कुँअरि अब श्याम हेतु हम सत्य बखाने ।।
है शृंगार को श्याम रंग शृंगार रुप हम ।
ताते मेरो अंग श्याम छबि धाम काम सम ।।
निध्या पुनि वोलति भईहै परत्व पुनि गौर को ।
श्याम जहाँ मौहित रहें तुम आयो इत दौरि को ।।
सुनहु कौन मकरंद हित मधुपहिं कौन बोलाई ।
भ्रमर आपने आवई जहँ सुगन्ध रस छाई ।।
सुनि सरहज रस मर्म को फूली हिय अरबिन्द ।
सबके मन अति मोद भई ताकति मुख रघुनन्दन ।।

।। श्रीसिद्धि सदनमें राम कलेवा ।।

तेहि अवसर सुधि पाय सखी युत लक्ष्मीनिधि की नारी ।
नाम सिद्धि परसिद्धि जासु गुण रूप शील उजियारी ।।
अति गुणवान निधान रूप की सव विधि सुभग सयानी ।
लक्ष्मीनिधि की प्राण पियारी निमिकुल की महरानी ।।
अलबेली सरहज अति प्यारी बड़ी सनेह शृंगारी ।
प्रीतम प्रीति निवाहन हारी रामरूप रिझवारी ।।
चंचल चखत चहुदिशि चितवति देखन को अतुराई ।
भरी उमंग संग सखियन लै तुरत राम ढिग आई ।।

निरखि बदन अरविन्द लिए कर विहँसत मन्दिर सोहै ।
रामकुँवर को पकर लाड़िली बोली ताकि तिरछोहै ।।
ए चितचोर किशोर भूप के बड़े चोर तुम प्यारे ।
सुरति हमरि भुलाय साँवरे सासु समीप सिधारे ।।
उलटी बात कहौ जनि प्यारी आपन दोष दुराई ।
तुमहीं रहिउ छिपाय छबीली सुनत हमार अवाई ।।
हम आये तुम महलन भीतर तुमहिं न परयो जनाई ।
भलो सदन तुमरो है प्यारी जहँ सब जाहिं समाई ।।
सुनत राम के बचन लाड़िली बोली मृदु मुस्काई ।
तुम्हरे घर की रीति लालजू इहाँ न चलै चलाई ।।
सासु सुनैना के समीप महँ देत जबाब बनै ना ।
पाणि पकर रघुनन्दनजी को गई लवाइ निज ऐना ।
चारि सिंहासन दे तहँ आसन भरीं हुलासन प्यारी ।
बारहिं बार निहार बदन छवि बहु आरती उतारी ।।
मेलि सुकंठ मालती माला बसननि अतर लगायो ।
अंचल सो मुख पोछि दुलह को निजकर पान खवायो ।
कोउ उपंग मुरचंग मिलावै दै मृदंग मुख थापै ।
कोउ लै वीण नवीन सुरन ते मनहुँ बसीकर जापै ।।
कोउ मृगनयनी कोकिल बैनी पञ्चमगीत अलापै ।
परत कानमें मधुर तान जेहि विरहिनके जियकाँपै ।।
जे निमिराज नेवत सुनि आई कोटिन राजकुमारी ।
राम मिलन की बड़ी लालसा कहि न सकै सुकुमारी ।।

अति निरदूषन भूषित कंजन कैसी बनी नवेली ।
रूपशील गुणवान रंगीली राजकुँवर अलबेली ।।
जानहिं प्रीति रीति की बाते केलिन कुशल नवेली ।
जिन जोहत मुनिजन मन मोहत मनहुँ मदन की चेली ।
जिन यह सुन्यो कि सिद्धि सदन में आये चारिहुभाई ।
तुरतहि पहुची सबहीं प्यारी जानि समय सुखदाई ।।
देखन राजकुँवर सव आई राम दरस की प्यारी ।
अति सनमान कियो सबही को सिद्धिसदन सुखकारी ।।
चिक्कन चिलकदार चुनवारी अलकै मुख पर छूटी ।
जोहत जहर चढ़त युवतिन को जड़ीन लागत बूटी ।।
मन्द हँसनि जनु फँसनि लाल को भोह कसति गरवीली
अतिसुकुमारी राजकुमारी सिद्धि सहित अनुरागी ।
तहँ प्यारी गारी रघुवर को देन दिवावन लागी ।।
एक सखी कह सुनहु लालजी यह स्वरूप कहँ पायो ।
कानन सुन्यो काम अति सुन्दर की तुमको सोइजायो ।।
बोली सिद्धि सुनहु रघुनन्दन तुम हमार ननदोई ।
एक बात तुमसो हम पूछत लालन राखहु गोई ।।
होत ब्याह सम्बन्ध सबन को अपने जातहिं माहीं ।
निज बहिनी श्रृगी ऋषि को तुम कैसे दियो बिवाही ।।
की उनको सुनीश लै भागयो कै वोइ मुनि संगलाजी ।
एती बात बतावहु लालन तुम रघुवंश अदागी ।।

लखन कह्यो यह सुनहु लाड़िली जेहि विधि जहँ लिखदीना
तहँ संयोग होत है ताको ब्याह तो कर्म अधीना ॥
कहँ हम राजकुंवर रघुवंशी कहँ विदेह वैरागी ।
भयो हमार ब्याह तुमरे घर विधि गति गनै को भागी ॥
औरो एक हास उरआवै अचरज है सब काहू ।
तुमतो हो सिद्धि वे लक्ष्मीनिधि नारि नारि कस ब्याहू ॥
एक सखी कह सुनहु लालजी तुम्हें सकै को जीती ।
जाहिर अहैं सकल जगमाहीं तुमरे घर की रीती ॥
अति उदार करतूति दार सब अवधपुरी की बामा ।
खीर खाय पैदा सुत करती पतिकर कछु नहि कामा ॥
सखी बचन सुनतै रघुनन्दन बोले मृदु मुस्काते ।
आपनि चाल छिपावहु प्यारी कहहु आन की बाते ॥
कोउ नहि जनमें मातु पिता बिनु बंधी बेद की नीती ।
तुमरे तो महि ते सब उपजे अस हमरे नहिं कहैती ॥
बोली चन्द्रकला तेहि अवसर परम चतुर सुकुमारी ।
सिद्धि कुंवर की नन्द सुप्यारी लक्ष्मीनिधि की दुलारी ।
लरिकाई ते रह्योलालजी तुम यसिन संग माहीं ।
ये छल छन्द फन्द कहँ पाये सत्य कहो हम पाहीं ॥
की मुनि नारिन के संग सीखे की निज भगिनी पासे ।
मीठो सीठो स्वाद लालजी बिन चाखे नहि भासे ॥
बोले भरत भली कह सजनी तुम्हु तो अवै कुमारी ।
वर्णहु पुरुष संग की बाते सो कहँ सीखे दुलारी ॥

रहैं मुनिन संग ज्ञान सिखन को सो सब सिखे सिखाये ।
कामिनि काम कला अब सीखन हम तुमरे ढिग आये ॥
सिद्धि कह्यो तब सुनहु भरतजी ऐसे तुमने वखानो ।
तुम्हरी तो गिनती साधुन में लोक बात का जानो ॥
भरत कहत तुम साँची कहत हौ हम साधु परकाजी ।
ऐसी सेवा करो कामिनी जासो हो मनराजी ॥
आये ऐन अपूरब योगी अस निजमन गुणि लीजै ।
अधर सुधारस को दै भोजन अतिथिहिं पुजन कीजै ॥
एक सखी कह सुनहु सबै मिलि इनकी एक बड़ाई ।
मख राखन को गये कुँवर ये तहँ हम यह सुधि पाई ॥
इन्ह कहँ सुन्दर देखि कामवश त्रिया ताड़का आई ।
सो करतूति न भइ लालन सो मारेहु तेहि खिसिआई ॥
वोले रिपुहन सुनहु भामिनी नाहक दोष न दीजै ।
जो करतूति बने नहि इनते सो हम से भरि लीजै ॥
बिन जाने करतूति सबन को तुम्हरे घर भो ब्याहू ।
यो पछि ताव न राखो प्यारी अब करि लेहु समाहू ॥
जाके हित तुम रोष बढ़ावत सो मति करहु उपाई ।
वैसीनि सेवा में तुम्हरे हम हाजिर चारहु भाई ॥
सुनि वानि रिपुदमन लाल की बोलि कोउ सुकुमारी ।
कहँ पाई ऐसी चतुराई कहिये लाल बिचारी ॥
की कहूँ मिली नारि गुण आगरि की गणिकन संग कीने ।
तीनो भाइन ते तुम्हरे महँ लखियत चिन्ह नवीने ॥

रिपुहन कह भल कह्यो भामिनी भेदिया भेदहि जाने।
गणिका नारिनहूँ ते सौगुण तुम्हें अधिक हम माने॥
हमरो तुम्हरो चिन्ह लाड़िली एकै भाँति लखाई।
ताते सखी हमारि तुम्हारी चहिए अवसि सगाई॥
सुनि नबयुक्ति युक्ति की बाते बोली सिद्धि कुमारी।
सुनिए रसिकराय रघुनन्दन आनन्द कन्द बिहारी॥
अति अभिराम कामहूँ मोहत मूरति देखि तुम्हारी।
कैसे बची होयगीं तुमसे अवधपुरी की नारी॥
यो कहि रही चुपाय सुन्दरी सिद्धि कुँवरि सुख ऐना।
ताको हाथ पकरि रघुनन्दन बोले अति मृदु बैन॥
अनुचित उचित बिचरि लोग सब तहँ तस राखत भाऊ।
तुम तो अपने अस जानति हो सबही केर सुभाऊ॥
यह सुनि भरत लखन रिपुसूदन हँसे सकल दै तारी।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी तेउ भई सुखारी॥
यहि विधि हँसि हँसाय रघुवर सोंदे दिवाय मृदु गारी।
नाना भाँति मनोरथ मनके लगी करन सुकुमारी॥
रसिक शिरोमणि श्रीरघुनन्दन नवल नेह अभिलाषी।
जस जाके जिय रही लालसा तस तेहिके रुचि राखी॥
अवधपुरी दिलदार यार सों लगीं अलिन बिच प्यारी।
परबस परी प्रेम पिंजरा में उड़ि न सकति सुकुमारी॥
रघनन्दन तब कह्यो सिद्धि सों जो तुम देहु निदेशू।
तो अब हम गवने जनवासे जहँ श्रीअवध नरेशू॥

सिद्धि सहित सबहीं सुकुमारी प्रेम सकै को भाषी ॥
चतुर कुँअर कोहबर गये, मन अहलाद बढ़ाय ।
पुर कन्या सारी जिती, गई कोहवर हरषाय ॥
दो०-कुँअर तहाँहि सबहीं कहि कहि बचन अनेक ।
सो सुख सजहि सोक हे, कहत बनत नहि येक ॥

॥ छप्पय ॥

माता सब कुअरिन पवाई अचवाई सप्रीती ।
सषि सब सेवालहिं जवन सब दीन की रीतौ ॥
पान अतर सखि दीन्ह जननी अज्ञा कहँ पाई ।
चदर वोढ़ि अनूप शीस नव लो छविछाई ॥
षष्ट अष्ट षोडस सकल सजि समाज प्रमुदित अली ।
लक्षण भई अभिसार की हर्षितमन कोहबर चली ॥
अर्धराह में मिली सकल भोजाई प्रेमी ।
सिय मुख शसि के जो चकोरि दर्शन के नेमी ॥
सब कोहवर महँ जाई बैठीं गई निज निज आसन ।
मोहति रति अति काम नवल पिय हैरि विलासन ॥
श्रुति कीरति अरु मांडवी चारुशिलादिक कुंअरि सब ।
निज महलनिते आयऊ अति छवि भई कोहवरि तब ॥
सविधि बैठि गई सकल महल अदभुत छवि भयऊ ।
निज निज भवन मगन सबे मनमोदिन छयऊ ॥
सिद्धा कहि सबहीं सुनाई अति कोमल बानी ।
चलहु कुँअर सब अपनि कुन्ज उर्मिल संग सोहहीं ॥

भरत गये निज कुँज में संग माण्डवी सोहही ।
षष्ट अष्ट षोड़स सकल संग लसत मनमोहही ।।
लखन गये निज कुज अर्मिला संग बिराजे ।
सखियन की तह भीर सकल सेवा कह साजे ।।
रिपुसूदन श्रुति किरति संग निज कुन्ज गये है ।
सोभा कुन्ज निहारि फलि हिय बेलि नये है ।।
रामकुअर कुअरिन सहित गये कुन्ज सुख पाइ के ।
पुरकन्या निज घर गई युगल चरण मनलाइ के ।।
सरहज सब गई आपनि गेह कोहबर सुख पाई ।
कोहबर केर निकुंज मुदित बैठ रघुराई ।।
प्रिया सब लसहि समीप मोहनी रूप सोहावन ।
कोटि काम को काँति राम कुअरिन मनभावन ।।
सखियन विनय जनायऊ चलिये लालजी सेजवर ।
प्रिया संग तहँ बिहारिये यह तो युगल बिहार घर ।।
सखि तहँ अगनित यूक्ति भेद करि लाड़ लड़ाई ।
बिबिध भाँति रस को बढ़ाई कुअरिनि विहारई ।।
सज्जा सब की भीन्न भीन्न सुख अैन वनी हैं ।
कोमल अतिमान छविमान दिब्य सुभग गंध बनी है ।
तहँ कुअरि मन भावति लालसंग बहु सुख करे ।
रूप अनूप देखाई के कुअरिन लालन मनहरे ।
दो०-एहि विधि विहरत लालजी सकल प्रियनके संग ।
जालरंध्र सखि निरखहीं, क्रीड़ा नाना रंग ।।

तहँ की सकल विलास सुख, जानहि प्रिया अरुलाल ।
दृष्टि भोग सहचरि करे, पुनि पुनि होत निहाल ।।

दुतिये रात है ब्याह की, लीला ललित अनन्त ।
कुअँरि कुअंर विहार वर, सुखरस मिलत न अंत ।।

शेषचारि घटिका निशि जानि । मंगला चारत दृगसुआनि ।।
मदनकलादम्पति रुपनिहारी । भरहि दृगनमह कर बलिहारी
अगर कपुर और कस्तुरी । केशर अंग राग अति रुरी ।।
कमला लिय विमलकरसोहै । अति आशक्त लाल तन जोहै ।।
अनुपमभूषण बसनलिये हावन । चन्द्रकलाकर लिये मनभावन
यहि विधि विविध वस्तु सुहाईं । सरहज रुख सहचरि लैआई
लगि होन मंगल बहुगाना । बजन लगे बाजन विधि नाना ।।
सब दुलहा सखि संग आई । सबके मनहि मोद समाई ।।
सिद्धा कहि सुनहु रघुराई । आपन नेग लेहु मनभाई ।।
उपटन मोहि लगावन देहु । कोहबर किस वरिति करेहु ।।
मणि थारन मणिमुक्ता आई । नाना रत्न अमोल सोहाई ।।
भूषण भरि बहु थारन आई । गुथी अंगनित सोहाई ।।
चीरा सम लाताज अनेका । रचना अधिक येक ते येका ।।

अवस्व तन्त्र बर दुलहिन विहरै निज रुचि पाइकैं ।
रहहु जोगवत रूचि सकल निरखहु नयन अघायकै ।।

दो०-प्राचीदिस की महल की सब घर देहु खोलाय ।
उहँही सकल कुवरि रहहिं सब दिन रहीं हर्षाय ।।

गई सिद्धा सहचरी सहित सब घर देखेउ खोली ।
रचना नाना तरह की, सब बिधि सव अनमोल ।।

॥ शयन महल ॥

चौथ उच्चता पर अनूप एक महल विराजै ।
अतिशोभा को ऐन एकाँतिक बहु छवि छाजै ।।
तहा सब सुख की कुंज पृथक रति कोमन हरई ।
पूरण भोग विलास धाम को वरणन करई ।।
जालरंध्रन ते चर्तुदिशि पुर शोभा सब लखि परै ।
कमला दर्शन होत है त्रिविध पवन बहि चितहरै ।।
प्रथम आवर्ण सात तेहि भिन्न मणि वर्ण ।
संज्ञा भिन्नसु जानिये यथा चिन्ह अनुहर्ण ।।
प्रथम स्वेत फटिकमणि तरुण तरणि इव कान्ती ।
अति विशाल अतिउच्च पर लसत कँगूरा पान्ती ।।
चतुरदिशा लौकित चतुर विस्तृत कनक अकार ।
ता मधि विद्रुममणि कलित रम्भा कुसुम सुढार ।।
तापर मधुर मयूर छवि शोभित नृत्य सुभाव ।
मुख लच्छामोतिन को चहुँ कन में चितचाव ।
नव खण्डे नवरंग के अतिविचित्र मणि गोक ।
ताकी छवि छलकत अधिक लखि लज्जित श्रीओक ।
ललित झरोखे जाल बहुँ छज्जे झालरी सोह ।
तोरण कलस विचित्र अति ध्वज पताक मनमोहे ।।

परदा परे विचित्र ढंग कहुँ मणिमुक्ता जाल ।
तहँ निवसत अलिगन अमित लिय सियलाल ।।
बिछे बिछोना मखमलि विविध रंग सकलाद ।
ताकी कवन प्रकार बहुनिरखि रमा सन्नबाद ।।
कहु सिंहासन मणि रचित कहुँ मसलन्द विचित्र ।
कहुँ पर्यंक सुहावने सुखप्रद घोषित मित्र ।।
तनी चाँदनी बादले कहु किमखाप सुरंग ।
कहुँ अतलस बहु रंग कहु ईकरंग दई रंग ।।
लच्छे लटकत पाटके कलित सुकंचन तार ।
मणि मानिक मुक्तान की बूटे सघन अपार ।।
परदे कहु सुरंग रंग कहू नील पीत सीत देखु ।
कहुँ पित दीन कर दुति, कहुँ विचित्र वहुयेषु ।।
रचना तीन प्रदान में कनक रुप पोली तार ।
मणि माणिक मुक्तानकी बेलबूट छबि साह ।।
तीनके बूटे बेल वहुँ मणिवहु रंग अपार ।
तीसपर दान के प्रान्ति में कनक किंकिनी जाल ।।
जब छोरत अलिकर गहि तब सख होत रसाल ।

।। सवैया ।।

भूमिमणि भये रंग विरंग विचित्र कहु एक रंग सोहै ।
कुज तहाँ कल कंचन चित्र विचित्र झलाझल लखि विमोहै ।
जाल झरोषामी झालरी मोतिन जोतिन को वरनौ असकोहै
खंभ खचेमणि कंचन के बहुमुरती ताखवनी सखिन सोहै ।।

वाटिका प्रफुलित रंग अनेक सुगुन्जत भृङ्ग मधु मतवारे।
कुन्जत वारी विहंग अनेकन हंसिनि हंस विहार की नारे।।
सारस लक्ष्मणयुत खेलत नाचत मोर मंजुरी निहारे।
फूल नीके द्रुम फूल अनेक लता सुवितान निकुँज अपारे।।
दो०-सिद्धा चहुँदिसि देखि के महल विचित्र अनूप।
भई मनमोद विशेष ते रचना अद्भुत स्वरुप।।
आई सरस समीप पुनि कहि लखी सब धाम।
अति अद्भुत मोहि लखि परै जोग जानकी राम।।
महरानी कहने लगी निज प्रिय बधुन सुनाय।
जब ते सीता मम भवन प्रगट भई सुखदाय।।
तबहिते वह महल की रचना अनुपम एक।
प्रति सम्मत होन लगी करि परम विवेक।।
अब विहरे तेहि महल सह सीतारमन स्वतन्त्र।
सब दिन को श्रम सुफल है यहि हमारे मत्र।।
सब दिन वहि बितावहि करहु सकल अनुकूल।
सुनत बचन मृदु सास के हृदय बन जगई फुल।।
जब मुहुर्त शुभ आयऊ सीता बहिन समेत।
करि सिंगार मनमोहनी गवनि ताहि निकेत।।
पुनि रघुनन्दनहुँ गये प्रमुदित सुखमा सहेत।
सकल प्रिया सेवहिमुदित वनत न उपमा देत।।
एहि विधि पश्चिम दिशि रहे भरत माण्डवी भवन।
श्रुति कीरति के भवन में दक्षिण दिशि रिपुदवन।।

लखन उरमिला धामते, उतर करहि विहार ।
प्रिया मगन पियकी छवि पियाप्रिय बदन निहार ।।
सखी तहाँ अगनित भेदयुक्त कर लाड़ लड़ाई ।
विविध भाँति रसको वढ़ाय कुंवरिन विहराई ।।
सेज्जया सबके भिन्न भिन्न सुख सौज सकल धरिहै ।
कोमल अति छवि मान दिव्य शुभगंध सनी है ।।
तहँ कुँवरि मन भावती लालसंग बहु सुख करै ।
रूप अनूप दिखाये के कुमरिन लालन मन हरै ।।
यहि विधि विहरत रघुलाल सकल प्रिय के संग ।
सो०-सेवा कौ अधिकार जिन जिन कौ जिहि भाँति दिय ।
तिहि विधि बुद्धि उदार, परिचर्जा रुचि सौं करहि ।।
अभिधान सखी श्रीमाना । निज अनुगामिनी जुत मतिवाना
सेष चारि घटिका निसिजानी । मंगला रतिहि करत सुआनी
मदनकला दंपति रुप निहारी । भरहि दृगन महकर बलिहारी
प्रातमंगलीक वस्तु जू होई । सुखमा दरसावत तह सोई ।।
सांति सुरुपिनि रहि ढिगमाहीं । दुहुन दंतु धावन करवाती ।।
नाना सुरभि सुनाभिनि आली । करहिं उदवर्तन रचि हाली ।
स्नान निकुन्ज स्वच्छ सोभना । अन्हवावत तन दरस विलोना
दो०-कुमरिन की उपमा नहीं सकल अनूपम सोह ।
जिनके एक-२ अंग पर कोटिन रतिहि विमोह ।।
करि सिंगारनि हरलि महल निजानन्द सुखमाही ।
लखि छवि महरानिन मुदित कहिवे कीं कछु नाहि ।।

सब दुलहिन की भई सिंगारा। अब वरनत हौ राजकुमारा ॥
बड़के दिशि की सरहज आई। सब शृंगार लिये छबि छाई ॥
चारुशिला सखी कर लीन्हे। सकल सौज सेवा मन दीन्हे ॥
सखी उज्वला माल वहु ल्याई। फूल पंच रंग परम सोहाई ॥
काँचनी अतर दान कर लीन्हे। चितवहि दुलह रूप छविभीने।
विमला पान दान कर सोहै। ललित सुगन्धित वीरी भरो है।
जोवक अतितर अरुन सोहाई। सोना जलमह मेल मिलाई ॥
उत्कर्षनी कोप-२ मह लीन्हे। चितवत दूलह श्याममन दीन्हे
कजला अति मृदु श्याम सोहावन। संतोषाकर लिये मनभावन
चित्रा मेहदी ललित बनाई। लिये हाथ में अति सुखदाई ॥
अगर कपूर और कस्तूरी। केशर अँग राग अति रूरी ॥
कमला लिये विमल जलझारीसोहै। अतिआसक्तलालतनजोहै
मणि नूपुर बहु शब्द सोहावन। चन्द्रकला करलिये मनभावन
यहिविधिसकलवस्तुसुखदाई। सरहजरुख सहचरी लै आई ॥
लगी होन मंगल बहु गाना। वाजन लगे बहु बाजन नाना ॥
सिद्धा कहि सुनहु रघुराई। आपन नेग देहु मन भाई ॥
तब रघुवर कछु वसन उतारी। भरथादिक उतारी छविभारी
बैठे सकल कुँवर अति सोहै। भामिनि सकल देखि मनमोहैं।
सब सरहज पुर की सारी। अब टौनी पर भई तयारी ॥
बाँटि लीन्ह सब निज विजसेवा। लगे लगावन प्रेम समेवा ॥
दो०-अंग सुगन्ध मिड़ी कै, वसन गुलावी भिजाई।
सब अंग पोछत भई सो सुख वरनि न जाई ॥

भूषण नख शिख साजी के जाबक चरण लगाय ।
अंजन नैनन आँजि के, वीरी ललित खवाय ।।
बैठाय पुनि पलंग पर, सादर राजकुमार ।
दर्पण सबके कर दये देखत मुख सुकुमार ।।

पुष्प माल तब लगी पेन्हावन । लगी सखी गनमंगल गावन ।।
सिद्धा रामहि दई पहिराई । निध्याकर भरत मन भाई ।।
लखनहि पहिराईरतिमोहनी । रिपुसूदन मदनावली सोहावनी

दो०-प्रीति सहित निध्या कही, विनय जनाई श्याम ।
कछु भोजन करि बैठिये, राजीव मन अभिराम ।।
श्रीसिद्धा रघुलाल को करगहि कही मृदुमय वैन ।
षट ऋतु आज बिहार है सुखप्रद मंगल ऐन ।।

विबाह के बाद श्रीकौशिल्या माताजी श्रीसुनैना माताजी से मिलना

सुदिन सुअवसर मंगल आवा । होय राम सिय मातु मिलावा ।
भेजे कुँअर गये जनवासे । बैठे शीशनाइ नृप भाषे ।।
भूप प्यार सुचि सादर कीना । पितु संदेश कह कुंवर प्रवीना ।
राम मातु दर्शन मम माता । आजु प्रतिक्षा कर हर्षाता ।।
आयसु होइ तो जाउँ लिबाई । सुनत नृपति अन्तःपुर आई ।।
सर्वहिं जानकहि कीन्ह तयारी । सह रनिवास मातु पगुधारी ।
रतन पालकी सबहिं विराजी । कुअँर लिवाय चले सुखसाजी।
रक्षक सेवक दासी दासा । बाजत विविध वाद्य सुखबासा ।।

दो०-सुखसंह विविध बनाव युत, अन्तःपुर के पास ।
लक्ष्मीनिधि सह पहुँचिगे, श्रीदशरथ रनिवास ॥
सुनत सुनैना हिय हर्षानी । आरती करी मिली सन्मानी ॥
राममातु सिय मातुमिलापा । वरनि न जाइसोप्रेम प्रतापा ॥
युग रनिवास परस्पर मीला । प्रीति रीति सुठि सुन्दरशीला ।
पुनि अनुपम आसन बैठारी । षोडष पूजेउ रानि सुखारी ॥
राम सिया के विविध चरित्रा । कहहिं सुनहिं मनकरनपवित्रा
सियामातु सबहिंन करजोरी । व्यंजन विविध पवाय वहोरी।
बीड़ा दै शुचि गन्ध लगाई । बिविध भेटि अरपी सुखछाई ॥
बस्त्र अमोलक मणिगन नाना । भूषण साज अनेक विधाना ॥
दो०-अलग अलग सब कहँ दियो,सीय मातु सुखदान ।
दशरथ तिय भई नेह वश, भाव प्रेम लखिमान ॥
बोली राम मातु सुख छाई । आजु भेट भई भाग सुहाई ॥
सुनी प्रशंसा राउर केरी । अधिक लखी निज नैनन हेरी ॥
रूपशील गुणधाम सरलता । भगति ज्ञान वैराग निपुनता ॥
सीय मातु सुनि अतिहिं लजाई । बोली तेहिं पदशीश झुकाई।
देबि बड़ेन की इहै सुरीती । नीचहुं नवहिं मानकरि प्रीती ।
जासु कोख भे राम गोसाई । कस न होइ तस सोल सुहाई ॥
चिर अभिलाष आज मम पूजी । मोसम भागवंत नहिं दूजी ॥
दो०-सब प्रकार पावन भई, लही बड़ाई देबि ।
राउर गृह सम्बन्ध भे, पूर्ण सुखी पद सेवि ॥
दूनहुँ रानि परस्पर नवही । सीयराम मातहिं असफवही ॥

सुदिन सुमंगल विनुगुरुवानी । सीय दरश नहिं निज मनआनी
यद्यपि मातु नयन अकुलाते । बिना दरश सुख शांति नपाते ।
तदपि कौशिला धीरजधारी । मनहिं चलत जनवास बिचारी।
सीय मातु रुचि समुझि सुहाई । कहेउजाननिज कुँवर बुलाई।।
हिलिमिलि सुभग दोउ रनिवासा । भयोप्रेम बस दर्शन आशा
यथा रीति गृह आवन भयऊ । तथा कुँवर पहुँचावन गयऊ ।।
पहुँचि बास अन्तःपुर माहीं । हिये लगाई रघुवर काहीं ।।
दो०-सीता मातु को प्रेम शुचि, स्वागत अतिहिं उदार ।
राम मातु भूपाहिं कहेउ, भयो यथा ब्यवहार ।।

।। मिथिला पुरिकरन ।।

प्रिया वचन सुनि प्रीतिहिं पागे । दशरथ राउ अधिक अनुरागे
यहि विधि नितनव उत्सव होई । कहत न बने समय सुखसोई
प्रमुदित मिथिलानगर निवासी । रहत सदा देखत सुखरासी ।
जो सुख मिथिलानगर मझारा । सो सुख नहिं बैकुण्ठ निहारा
नितप्रति कुंवर जाहिं रनिवासा । होत महासुख हास विलासा
नितनुतन आदर अधिकाई । दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई ।।
नितप्रति मिथिलानगर भुवारा । करहिं नवीन राज सतकारा
नित नवमंगल आनन्द उछाहु । दसरथ गवन सोहाइन काहु ।।
भूले बरातिन अवधहिं काही । कहहिं जाब मिथिला ते नाहीं।
यहिविधि वीति गयों बहुकाला । नितनित नवनवमोदविशाला।

।। श्रीदशरथजी मिथिला परिचहन ।।

को कहिसकै समग्र उछाहू । इतै जनक उत कौशल नाहू ।।

जहँ त्रिभुवनपति दूलह भयऊ। दुलहिन सीता महासुख पयऊ
दशरथ कहुकहु देखन मिथिला। कहहु जायजहँ कमलाविमला
रथ चढ़ि चारो ओर सुहाये। देखे शिव मंदिर मन भाये।।
इष्टदेव बद्रीनारायण। निमिकुल केरे सहज सुभायन।।
तिन मन्दिर देखे रघुराजा। भये मगन मन सहित समाजा।।
दो०-मिथिलावसि नृप मुकुटमणि,सह समाज रसबोर।
जाय जाय बहु तीर्थवर, देखे चारों ओर।।
रघुपति ब्याह उछाह में, वीते दिन बहु रैन।
जानि परे छन एकसम, पाय महाचित चैन।।
दिन प्रति अवधपती महराजा। चाहहिं अवधगवनकृत काजा
जनक बंधुसह चलब न चाहै। राखहिं अधिक सनेह उछाहै।।
नित नवीन सत्कार महाना। होवे सुखद न जाइ बखाना।।
।। बिदाई के लिये ।।
यहि विधि वासर बीतत जाही। जानि न परै सुखद सबकाही
प्रेम पास फसि गये बराता। जान अवध कहिजाइ न वाता।।
एक समय वशिष्ठ निजधामा। बैठे रहे सुमिरि हिय रामा।।
।। मिथिला विलास ।।
विविध भाँति भोजन करवाये। सुतसम हितसिय मातु बिठाये
विदा माँग जनवासे आये। नृपको सब बृतान्त सुनाये।।
अति हित समुझि सनेह बढ़ाये। कौशलपति सब मुनिहिसुनाये
तिरहुति नाथप्रीति गुनरासी। छिनछिनप्रतिइमि करतखवासी
जिमि प्रसन्न अति कौशल राऊ। रहै अमित विधि रचै उपाऊ

अमित असंख्य बराती साथा। नृप सम सेवत तिरहुति नाथा
नित प्रति सकल बरातिन डेरा। जाइ हेतु अति साँझ सबेरा।
निज गुण सब कहै बसकरिलीने। सहित अवधपति भयेअधीने
सात दीप के सज्जन भूपा। रिषि मुनि साधक सिद्ध सरूपा।।
नारदसुक सनकादिक चारी। जोगेश्वर नव दृढ़ ब्रतधारी।।
होइ सभा सिद्धान्त प्रसंगा। राम रूप अनुराग अभंगा।।
सव आसक्त भये छबि देखी। बिसरे निजनिज विरति विसेखी
वेदशास्त्र अरु स्मृति पुराना। अमित प्रमाण और अनुमाना
राम प्रत्यचछ लख्यौ सब ठाना। मिटै विवाद नाम दृढ़ज्ञाना।
यहि विधि दिन दस पांच बिताई। एक दिवस नहुसभा जुराई
परिजन पुरजन सकल बुलाये। अतिउर हरखि सबै जुरिआये
देवराज सम दोउ नृप राजैं। मुनि मंडली अधिक छबि छाजै
कुंवर मंडली दुहुँदिसि केरी। प्रजामोद परसत हित हेरी।।
कौशलपति सौ तिरहुति नाथा। कहन लगे मिथिला वनगाथा
महाराज मिथिला श्रुति गाई। विष्णु लोकहूँ ते अधिकाई।।
मिथिलाविपिनवसहिंमुनिदेबा। मिथिलागतिजानहिंकरिसेवा
महाप्रलय ईस जब करई। काल रूप लोकन संहरई।।
तहाँ न मिथिला कर प्रभुनासा। सदा एकरस अमित प्रकाशा
दिव्य रूप मिथिला के वासी। ब्रह्म समान देह अविनाशी।।
नित्य विलास महारस भोगी। परतम ईस परम संजोगी।।
प्रथमआठवन मिथिलाराजै। निरखन मुनिमन अतिसुखसाजै
ताकर भिन्न भिन्न नृप नामा। सुनत श्रवण अतिही सुखधामा

प्रथमकमल वनसुन्दर सोहा। पूरवदिशि लखि विगत विमोहा
कमलासरित वरा तहँ राजै। मणिन रचित वहुघाट विराजै।
सिलानाथ तहँ वसहिं महेशा। चहुँओर अति रुचिर प्रदेशा।।
सेवहिं सकल अपसरा आई। प्रीति सहित मृदुगान सुनाई।।
महामोद वरसै दिन राती। रितु वसंत लखि अधिक लुभाती
रंग विपिन उतरदिशि भारी। मिथिलेश्वर तहँ वसहि पुरारी
सर सुन्दर वापिका विसाला। तहँअतिकौतुक लखिय भुवाला
आवहिं सुरतिय कौतुकजाला। रचिरचिपहिरहिं कंजनिमाला
लीला जुतसर मज्जन करहीं। गान तान संकर मन हरहीं।।
दक्षिनदिसिगिरजाबनसुन्दर। अतिविशाल चित्रितमणिमंदिर
नाना रंग वाग सर नाना। गुंजत भँवर करत पिक गाना।।
कनक कोटि रेषितरचनावर। सुरनिवास चहुँदिशि सोभाकर
गंधर्वगान करहिं नित आई। पूजहि गिरिजहि प्रेम बढ़ाई।।
दो०-पश्चिम दिशि नेपथ्य वन, तहाँ जलेश्वर ईस।
वनदेवी तहाँ वारुनी, नित सेवत सुर ईस।।
हरि चंदन संतान बहु, पारिजात मंदार।
कल्प साखि सुर दारु बहु, अमृत फली उदार।।
रंग रंग के कुसुम अपारा। कनकपाट शोभित काशारा।।
नील पीत सित पंकज राजै। हरित अरुण कहुँ कहुँ छवि छाजै
मत्त मधुप गुंजत अति सोहा। नाना खग मुखरनि मनमोहा।।
मृगवहु जाति अभय तहाँ चरई। सिंघ मतंग वैर नहि करई।।
मणि आकर बहुरंगनि सरसे। तहँ रजनीतम कबहुँ न परसे।।

सुरतिय नित शिव पूजन आवै । वीण बजाई मधुर सुरगावै ।
चारिउपदिशाविपिनचारिउ वर। कामदवन पूरव अरु उत्तर ।
पूरब दक्षिण मधु संदीपन । पश्चिम दक्षिन दीपक दीपन ।।
पश्चिम उत्तर वृन्दक सोहै । महारम्य मुनिजन मन मोहै ।।
कामद माधविका अरुदीपा । क्रम ते लखि वनदेव महीपा ।।
बृन्दा बृन्दक विपिन विराजे । सेवत सकल सिद्धि सुखसाजे ।।
तेहितेषोडसविपिनअधिकवर । चलिदेखियेमहिपालविदितवर
अपनाये मिथिला बड़भागी । मै सेऊँ पद निज सुख त्यागी ।।
मिथिला विपिन प्रदक्षिण कीजै । अपनी प्रजामानि सुखदीजै।
धर्मशील नृप कहि मृदुवानी । नृप अहो परम विवेकी ज्ञानी ।
मैं राउर आयसु अनुगामी । जानहु प्रीति रीति सव स्वामी ।।
मुनि वशिष्ठ कुल इष्ट गुसाई । तेहि प्रसन्न करि हमैं भलाई ।
कौशिक सतानन्द पुनि तैसे । मो कहुँ विन इन कौन अँदेसे ।।
मुनि वसिष्ट दोउ नृप रुचिजानी । बोले परम मनहोर वानी ।
भलो समाज समय भलराऊ । सबही के मन परम उछाऊ ।।
मिथिला तथा जथा नृपवरनी । ताप पाप हरनी सुख करनीं ।
येक समय पूछा मुनि नारद । विश्व पितामह ज्ञान विसारद ।
श्रीमिथिला अरु अवध प्रसंगा । नित्य एकरस रहत अभंगा ।।
कही पितामह कथा अनूपा । अति परतर परतम समरूपा ।।
सकल धाम कारन दोउ धामा । परतम परम ईस विश्रामा ।।
कहत कहत चतुरानन अंगा । उदय भयौ अति प्रेम प्रसंगा ।।
लीन भयो चित कछु न कहाई । रही सभा सब प्रेम समाई ।।

पुनि विधि सब कहँ कहा बुझाई । गोपनीय यह कथा सुहाई ।।
काहू सन अवलौं नहि भाखा । निजउर भवन गुप्त करिराखा
सुत सब कहँ अधिकारी जानी । सुनौ नृपति यह कथा बखानी
चलिये बेगि बिलम्ब न कीजै । सबकहँ अति दुर्लभ सुख दीजै।
दोउ नृप सुनि वसिष्ठ मुनिवानी । अतिमुद हियेन जातबखानी
पुरवासी परिजनसब हरषे । लोभिहि लाभअधिक जिमि परसे
रुख लखि वहु चोपदार सुजाना । कनक छड़ी करमें निजबाना
सब डेरन छिनमहँ फिर आये । राजसैन सब साज सजाये ।।
पुरवासी सब सजि सजि आये । वाजीशज सुखपाल सुहाये ।।
कोऊ भये स्यंदन असवारा । मिथिल महाजन के सुकुमारा ।।
सजी फौज बहु तिरहुति नाथा । निजरनिवास कियों सबसाथा

मिथिला वन छवि निरखि अति, कौसलपति मनमोद ।
तिरहुति नाथहि संग लै, देखत मृगन विनोद ।।

एक एक जन मंदिर राखी । अतिहि वृद्ध बहुविधि हित भाषी
चली सकल मिथिला उमगाई । रतनाकर जनुनिधि उपराई।
राजकुमारन की असवारी । लखि मोहैं हरिहर मुख चारी ।।
चर्म असी धरकर धनुवाना । पैदल संग रंग बहुवाना ।।
रंग रंग मिलि चले सुहाये । रंग तत्व जनु फौज वनाये ।।
कनक दण्डकर लिये अपारा । आगे भीर चलत चोपदारा ।।
एक संग जब बोलत टेरी । मनो रजोगुन मत्त सजेरी ।।
कनक जरित सोटे छविकारी । आगे भीर सोटे वरदारी ।।
साजे रंग तुरंग अपारा । तापर सजिवहु जन असवारा ।।

सजते सुजन चहुँ ओरन भीरा। टाप सवद गो सागर तीरा॥
हय गय भये मुक्ति प्रद आई। महिरज करि बैकुण्ठ बसाई॥
हरि हिय हरष भयो अधिकाई। धन्य भाग मिथिला रजपाई।
पीछे दोउ नृप की असवारी। कोटि पुरन्दर वैभव भारी॥
कौशिक अरु दोउ राज पुरोधा।अपर मुनि बहु सम्यकबोधा।
तिनको रथ आगे करि चलहीं। धर्म रेख नहिं लव संचरही॥
विश्वामित्र तहाँ चलि आये। उठि बशिष्ठ आसन बैठाये॥
गाधि सुवन कह मंजुलवानी। सुनहु ब्रह्मानन्द मतिखानी॥
बहुत दिवस मिथिला में बीते। उभयराज नहिं सुख सोरीते।

दो०-वीति गयो बहुकाल पुनि, मिथिला वसे बरात।
उचित अवध को गवन अब,सो तुम साधहु तात।
उभय महीपति मोदरस, मगन भये यहिकाल।
जानत नहिं निशिवासर, नित नव हर्ष विशाल॥

सुनत गाधि सुत की बड़वानी। बोले ब्रह्म तनय विज्ञानी॥
सत्य कहेउ कौशिक अवदाता। चलन अवध अबउचित बराता
ताते सतानंद बुलवाई। हम अब जतन करव मुनि जाई॥
तब बशिष्ठ कौशिक सँग लीना। गौतम सुवनहुँ रहे प्रवीना॥
जाइ जनक कहँ बहु समझायो। भई मकर संक्रान्तिहुँ गायो॥
गवन अवधपुर चहत नरेशा। हिय हरषि असदेहु निदेशा॥
दिन दिन प्रीति पगे एहिभाँती। रहिहैं दशरथ आवत जाती।
अवधजान सुनिजनक बिभोरा। मुनि निदेश धरिधीरज थोरा
आयसु नाथ शीश कहि मेरे। तुतर बुलायो पुत्रहिं नेरे॥

भीतर जाइ जनावहु ऐहा । अवधनाथ चह गवनत गेहा ।।
दो०-विरह पगेपुर लोग सब,नृप गृह कहुँ जनवास ।
आवत जात अचेत सब,मननहिं लहत सुपास ।
।। चौबोला छन्द ।।
अन्त:पुरहिं जाई गौतम सुत विदा खबरि खुलि गाई ।
हहरि उठयो रनिवास सकल सुनि जनुसुख दियो गँवाई ।
रानि सुनैना विलखि कह्यो तब अबै न जाइ बराता ।
सुख समुद्र कुँभज कस होवहु समय सुखद उत्पाता ।
दो०-फैलत फैलत फैलिगै, खवरि नगर चहुँओर ।
करत कालिह भूपति विदा,चलन चहत चितचोर ।।
असकहि विबिध सभ्य समझावहिं, पैन धरहिं कोउ धीरा ।
मिलहिं बरातिन्ह सो चली पुरजन नयन वहावत नीरा ।।
जथा जनकपुर वासिन को दुख, अवध निवासिन तैसो ।
दोउ दिशि के भे बिकल नेहबश कोउ समुझावे कैसो ।।
मिलि-२ कहत अवधपुर के जन, तजेहु न सुरति हमारी ।
तैसेहिं कहत जनकपुर बासी, विछुरन दुसह तिहारी ।।
और कछुक दिन रहै अवधपति, होइ आनंद बधाऊ ।
अथवा छोड़ि रामकहँ कछु दिन, जाहिं अवध कहँ राऊ ।।
कह कोउ सज्जन कहहिं जनन कहँ राम प्राण ते प्यारे ।
अवध प्रजा किमि धरहिं धीर उर, विनु रघुवीर निहारे ।।
दो०-जस तुमको लागै इतै, राम अवध नहिं जाहिं ।
तैसहि अवध प्रजा सकल, बिन देखे विलखाहिं ।।

दो०-जब ते सतानन्द अन्तःपुर सीय विदा मुख भाषे।
तबते सव रनिवास हुलास निवास बिरंचिहिं माषे॥
दुखसानी वानी रानी कहि करती विदा तैयारी।
सियहिं विलोकि विलोचनते सब विलखि वहावहिं बारी
सीय मातु कुशकेतु कामिनी सिद्धि समेत बुलाई।
बैठि सिखावहिं जोहिं जानकिहिं पतिब्रत धर्मबताई।

॥ माताजी सिक्षा ललीजू को देतीहै ॥

दोउ कुल की मरजाद कन्या का हाथे बसति कुमारी।
इष्टदेव गुरुदेव कन्त कहँ मानहु धर्म बिचारी॥
रीति सनातन ते चलि आईं कन्या पति घर जाहीं।
गौरि गिरा इन्दिरा शची निजनिज पिय पास सोहाहीं।
नहिं बेटी बिलखहु चितमें कछु पठे तिहारो भाई।
परिछन हीके पीछे आछे लई हैं भूप बोलाई॥
दशरथ सरिस स्वसुर जग में नहिं जनक-२ समपाई।
कंतभानुकुल कमल दिवाकर तुहि समद्वितीय न जाई।
रहियो सदा पति के रुख राखत परिहरि सब सुखप्यारी।
पति शासन अनुसार काज सब कीन्हों धर्म विचारी॥
सास ससुर को पूजन करियो जनक जननि सन मानी।
नातो जाको जौन होइ कुल सो मानहु निज जानी।
चारौं भगिनी मिलि रहियो नित, कबहुँ न होइ बिरोधू।
सब सासुन को मान राखियो करियो कबहु न क्रोधू॥

प्रीति रीति उर राखि देवरन मान्यो बालक भाऊ ।
कुलवंतिन नारिन रघुकुल की साध्यो सील स्वभाऊ ।।
गृह कारज आरज के कारज सब दिन रह्यो सम्हारे ।
रघुकुल की निमिकुलहूँ की अब है कर लाज तुम्हारे ।।
पुनि उर्मिला मांडवी और श्रुतिकीर्नि लियो बुलाई ।
जननि सिखावन देइविविध विधि अम्बुजअम्बु बहाई ।
रहियो सबैं सिया के सम्मत करियो सिय सेवकाई ।
दोउ कुल पतिब्रत धर्म उजागर रहे सुयश जग छाई ।।
दो०-अँखियन में अँसुवा भरे, सुनि जननी की सीख ।
कहति न सिय कछु सकुच वस,लही नीति की भीख ।।

॥ रामजी का विदा मागने जाना ॥

तहँ वसिष्ठ मुनि अतिसुख पाये । राम सहित सब बंधु बुलाये
कह्यो विदेह निवास पधारो । बधू बिदा करि सुदिन न टारो ।
तजत जनकपुर उपजत पीरा । मनहीं मन विलखत रघुवीरा।
मानिराम गुरु पिता रजाई । चले विदेह महल सब भाई ।।
उदासीन पुर देखत जाही । तेहि अवसर उछाह कछु नाहीं ।।
सकल जनकपुर प्रजा दुखारी । सीय विदा सुनि ढारहिं वारी
पृथक-२ प्रभु प्रजा जुहारे । रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारे ।।
दो०-पग पग महँ घेरहिं प्रजा, चारिहुँ राजकिशोर ।
अनिमिष निरखहिं मुखन को, जैसे चन्द चकोर ।।
कब पुनि दरश लहब इनकेरे । अवध जात अब कुँवर सबेरे ।।
जब लगि रहीं जनकपुर सीता । नित नवमंगल मोद पुनीता ।

यद्यपिजनकसिय बहुरिबुलैहैं। पुनि पुनि लाल लिवावन अइहै
दशरथ पाहिं कहौ कोइ जाई। यद्यपि करी मिथिलेश विदाई
तदपि सकल मिथिलापुरवासी। राखहिं एक दिवस सुखरासी
कोउकह जाइकहौ मिथिलेसहिं।आजुसुदिन नहिं गवनभदेशहिं
कहैं नारि कोउ विगत उछाहू। लेहु आजु लगि लोचन लाहू।
कहौ कुमारन को चलि कोऊ रहिहै कालि दया बस ओऊ॥
कोउसखि प्रेम विवशअस भाषे। बरबस पकरि दुलहु कहँराखे
जाहिं अवधपुर राउ भलाई। रहै मौन मिथिलापुर साई॥
हमहीं राखब दूलह चारी। जब लगि पूजि न आस हमारी॥
कोउसखि कहहिंन करहुखभारा।सुदिवसआजुहोत भिनसारा
जब लगि जाइ बुझाय सुनैना। राखव कुंअरन भूपति ऐना॥
कोउकह अससुख अबकवहोई। लखीं राम सियपुनिधनिसोई।
दो०-अलक पास पसरायमन, लियो विहंग फसाइ।
हाय दई यह निर्दयी, का करिहै घर जाइ॥
एहि बिधि सुनत नारिनरवानी। चलेजात रघुपति छविखानी
अतिविमनसकछु कहतन बानी। प्रीतिरीति नही जातिबखानी
दौरि दूत तेहि अवसर आये। मिथिलापति कहँ खवरि जनाये
आवत राजकुंवर मनभाये। सोहत सखा संग छवि छाये॥
उठे भूप आये चलि आगे। राम दरश कहँ अति अनुरागे॥
आवत देखि विदेह कुमारा। उतरि तुरंगन ते मिले इकवारा
किये प्रणाम नाम निज लीन्हे। भूप यथोचित आसन दीन्हे॥
सभा भवन महँ गये लिवाई। सिंहासन आसीन कराई॥

यथा योग सब सखन महीपा। बैठाये रघुनाथ समीपा ।।

तेहि काल श्रीरघुलाल वचन रसाल कहकर जोरि के।
नयननि नवाय सुछाव जल मानहुँ सवनि चितचोरि के।
तुम अवधपति सममम पिता हम अहैं बालक रावरे।
जो भयो कछु अपराध तौ प्रभु छमिय मुनिनिज रावरे।
प्रभु छोह मोह सदैव राखियो आपने शिशु जानिकै।
हम अहैं लक्ष्मीनिधि सरिस अस सुरति राखियो मानिकै
अव चलन चाहत अवध को अवधेश सँयुत साहनी।
मोहिं विदा माँगन हित पठायो वात है दिल दाहिनी ।।
आवन चहत आपुहिं इतै माँगन विदा अब आपसों।
हमरो सकल सिद्ध काज होई आप कृपा प्रताप सो ।।
जो नाथ देहु निदेश तौ जननी चरण बंदन करौं।
अवजाइ अन्तःपुर सपदि निमिकुल निरखि आनंदभरौ।
सुनि प्राण प्यारे के बचन विलख्यो विदेह महीप है।
गदगद गिरा कछु कहि न आवत बचन परम प्रतीप है।
असुवानि ढारत जोरि कर बोले बचन मिथिलेश हैं ।।
तुम जाहु असकिमि कढ़ै मुख दृग ओट होत कलेश है ।।
यद्यपि अवध मिथिला सकल निमिकुल सुरघुकुल रावरे।
तुम आइहौ मिथिला अवध हम जाब नितनित साँवरे ।।
यद्यपि सकल थल रावरे को रूप मोहिं लखात है।
तद्यपि लला तुम जाहुअस नहिं बदन सों कहिजात है ।।

जस होइ राउर मन प्रसन्न निदेश जस अवधेश को।
सो करहु सुरतिन छाड़ियो निज जानि यह मिथिलेशको।
अब आसु चलि रनिवास महं कीजै नयन शीतल लला।
तुम अहौं सबको प्राणधन जानत न कोउ तिहरी कला।
सुनिकै विदेह निदेश सहित सनेह तिन सिरनाइ के।
संयुत सकल बंधुन चले मिथिलेश कुंवर लिवाइ के।।
प्रभु जाइ अन्तःपुर सबन्धुन चरण बंदे सासु के।
मिथिलेश महिषी चूमि मुख बैठाइ सहित हुलसि के।।
रनिवास में फैली खबर आये करावन बर विदा।
सब नारि धाई दरशहित जोई देखि मनसिज सरमिदा।।
अब अवध कहँ अवधेश गवनत कह्यो मोहिं बुलाइ कै।
मिथिलेश अरु रनिवास पहँ तुम विदा होवहु जाइ कै।।
देखि सुनैना हिय हरखानी। सहरनिवास प्रेम रससानी।।
आरति करि मुदमय बरचारी। चारसिंहासन लाय पधारी।।
ताते विदा अब देहु जननी सहित आर्शीवाद है।

तुम्हरी कृपा दश दिशहूँ मंगल हमहिं अतिअहलाद है।
जनि सुरति मोहि विसारबी जिय जानि वालक आपनो।
फिरि आइबी हम दरशहित आनंद अदभुत धापनो।

जननी बिलगन मानबी हम सर्बदा तब निकट हैं।
जव सुरति करवी आइहैं नहिं कतहुँ संकट बिकट हैं।

इत आइ सतगुण अवध ते सुख लहयो तुम सत्कारसो।
जननी न आवति सुरति कहू आपकी सनेह अपारसो।

है जनक साँचो जनक हमरे जननि सीते जननि है।
नहिं कबहुँ मोर विछोह होइहै जानु साँची भननि है।
दो०-सुनत सुनैना लाल के, बयन नैन जल ढारि।
बोली आनन्द अयन सो, कोटि मयन छवि वारि।
अवन न जाहु प्यारे कबहु, इतहीं करहु निवास।
दरश ओट की चोट लगी, करिहैं प्राण प्रवास।।
दरश देहु नितहीं हमें, करहु कलेऊ आय।
चारहु बंधु विशेषिते, आँगन खेलहु धाय।।
वसि विदेहपुर कछुक दिन कीजै अवध पयान।
अवधनगर मिथिलानगर, लालन तुम्हैं समान।।
लाल तुम्हे देखे बिना, किमि रहिहै तन प्राण।
बार-२ बिनती करौ अवजनि करहू पयान।।
प्रभु जननी सनेह बस जानी। भरि आये नयनन में पानी।।
धरि धीरज पुनि दोउ करजोरी। कहौंवचन विनती असमोरी
मातु रजाइ शीश महँ मोरे। नहि बिसंच मोहि सन्निधितोरे।।
तोर सनेह विलोकि अघाता। नहिं उत्तर आवत कछुभाता।।
जो कछु उचित करौ अबसोई। करिहौ मैं जो आयसु होई।।
कबहूँ न तोहि वियोग हमारा। ते जननी हम तोर कुमारा।।
भोजन देहू भूख अति लागी। अब जनिऔर कहौ बड़भागी।
सुनत लाल के वचन सुनैना। उठी आसु उर आनंद ऐना।।
बहुरि धीर धरि मातु मनभाई। चारहू भाई सविधि नहवाई।
भूषण वसन अनेक प्रकारा। चारहू दुलह कहँ कीन शृंगारा।।

मन रंजन व्यंजन लै आई । राम सहित बन्धुन बैठारी ॥
भाँति अनेक रुचिर षटव्यंजन । मातु पावई जन मन रंजन ॥
पुनि अचवाय गंध सुचि दीन्ही । बीरामधुर सुसिद्धि प्रवीनही
बैठायो पुनि आसन माही । जुरि सकल रनिवास तहाही ॥
दो०-लै अपने कर कमल सो, बीरी विमल वनाय ।
चारो भाईन को हुलसी,दिन्ही सिद्धि मृदु खवाय ।
दिये दहेज नेग बहूद्रव्य अपारा । पाये प्रिय चारहू कुमारा ॥
विरह गवन तन थरथर काँपि । मातु सुनैना प्रीतिन मापि ॥

॥ श्रीदशरथजी का विदा होना ॥

उते अवधपुर करन पयाने । भूप चक्रवर्ती अतुराने ॥
सहित वशिष्ठ सुबृन्द समाजा । गये विदा होन हित राजा ॥
अवधनाथ की जानि अवाई । लियो द्वार ते निमिकुल राई ॥
ल्याये सभा मंदिर बैठायो । करि सत्कार बहुरि यश गायो ॥
तब बशिष्ठ बोले मृदुवानी । सुनहु जनक भूपति विज्ञानी ॥
राउ संकोच सनेह तिहारे । विदा न मांगि सकत दुख भारे ॥
करन चहत अब अवध पयाना । वीते बहु दिन जात न जाना ।
कुँवरी विदाकरि सुदिवस आजु ।देहु रजायस सहित समाजा॥
अस को करि प्रीति की रीति । जस तुम नेह निवाही नीति ॥
दो०-सुनि वशिष्ठ मुनि के बचन जानि अवधपुर जात ।
नृप विदेह के नेह वस, दुख नहिं देह समात ॥
सजल नयन गदगद भयऊ । नृपति हुलास बीति सब गयऊ ॥
पुनि धरि धीरज भूप विज्ञानी । बोलेउ बचन जोरियुगपानी ।

शील सिन्धु प्रभुकौशल राऊ। किमितिनकीबिछुरनिसहिजाऊ
दीन जानि मोहि दीन्ह बड़ाई। किमिनिकसै मुख तासुबिदाई।
तुम त्रिकाल ज्ञाता मुनिराई। मोरे शिर पर आप रजाई ।।
बहुरि बिदेह सनेह वड़ाई। दशरथ सो अति विनय सुनाई ।।
तुम समरथ कौशल पुरराऊ। शील सिन्धु जग प्रगट प्रभाऊ।।
जानेहु मिथिलापुरी हमारी। मोहि भलपग पाँवरी तिहारी ।।
जासु राम असपुत्र प्रधाना। सकै कौन करि विरद बखाना ।।
अगुन जानि अब कृपा करीजै। करौं सकल जो अनुशासनदीजै
सौपहुँ नाथ कुमारि चारी। पालव लघु सेवकी बिचारी ।।
दो०-धोखों अनुधोखो कछुक, जौंन चूक परिजाय।
क्षमा करव निज बाल गुनि,मोरमान सुधिल्याय।
करि सनेह विदेह सुवानी। सुनि कहराउ नयन भरिपानी ।।
पुत्रवधू पुनि आप कुमारी। इनसे अधिक न परे निहारीं ।।
करिय विदेहनकछुकखवारा।जिमिमिथिला प्रतिअवधअगारा
सब सौंपति करिहै सब सासू। होइहैं सुनिनित निरखि हूलासू
पुत्रवधू पुत्रन ते अधिक प्यारी। तापरपुनि मिथिलेशदुलारी।
धन्य भाग हमारे घर जाती। अधिक न इनते दरसाती ।।
दो०-आपने जानि सनेह करि, राखेहु सुरति हमारि।
कोन अधम जो रावरी, दैहै सुरति बिसारि ।।
शतानन्द तिहि अवसर आये। तिहि बसिष्ठ कहि वचनबुझाये
आयो विदा मुहरत जब्रही। परिछन होइ जनावहुसवही ।।
परिछन करै जनक महरानी। दै दधि बिन्दु उतारहि पानी ।।

आयसु अकनि जनक मगवाई । रतन पाल की सुभग सजाईं ।
बर दुलहिन पालकी चढ़ाई । द्वार देस महँ ठाढ़ कराई ।।
वर लै विदा बाहिर आई । करहिं गवन आगे सब भाई ।।
पाछे चलहि पालकी चारी । अस अनुमति मुनि अहै हमारी ।
सुनत बशिष्ठ बचनहुलसाई । आसू गौतमसुवन जायरनिवासू
बोले सुनैनहि दियो बुझाई । रानी चारि रतन पालकी मगाई
दूलह दुलहिन सपदि चढ़ाई । मंगल गीत मनोहर गाई ।।
कनक थार आरती उतारी । पढ़ि सुभ मंत्र उतारयो वारी ।।
कीन्हयोंसबबिधिपरिछन चारा । लियो बहोरी उतारिकुमारा
कनक पीठ महँ वर बैठाई । विविध वसन भूषण पहिराई ।।
दो०-मणिमनिक मुकुता मुकुट, वर हीरन के हार ।
अति अनुपम पाये विबिध बिधि दीन्हे नृपतिवहोर
वोले राम जोरि जुग पानी । जननी ते अधिक जननि सुखदाई
देहु मातु अब मोहि रजाई । अवध अम्व अवलोंकहु जाई ।।
क्षोह मोह राख्यो सब भाँती । तैं न विसारिहै मोहि दिनराती
कोशिल्या कैकेयी सुमित्रा । यद्यपि मातु मम प्रीति पवित्रा ।।
सबते अधिक मातु तैं मोरे । जस लक्ष्मीनिधि हौ तस तोरे ।।
जब करिहै सुमिरन मोहि माता । तबहि अइहौं मृषान वाता ।
यदपि प्रबोध्यो बहुबिधि रामा । रामविछोह भई तनु क्षामा ।
प्रभु जान्यो मोहिकरतपयाना ।तजिहै अवसि जननीप्रियप्राना
दीन्हो भक्ति ज्ञान अवदाता । पोछि नयन बोली तब बाता ।।
तुम सर्वज्ञ सकल गुनआगर । प्रेम नेम जानहुँ नय नागर ।।

दो०-रह्यौ न देखन की दुखी, दर्शन दीजै आय ।
होंहु ओट इन नयन के अस कसकै कहि जाय ।।
चरणवन्दि पुनि चारो भाई । सिद्धि समीप गये अतुराई ।।
उठी जनक सुतबधू सयानी । करगहि कही प्रीति बस वानी ।
नेह लगाय नरेश किशोरा । अवमति जाहु अवध की ओरा ।।
दरशन बिना किमिरहिं शरीरा । विछुरतहोत दुसह तनु पीरा
प्रभु मुसक्याय कहि मृदुवानी । यदपि न गमनत वचनसयानी
पितुसासन शिरपर सब भाँती । काह करौ अबमति अकुलाती
देहौ दरशन बहूरि मै आई । तुम जानि शोचकरहू मनभाई ।
जन्म जन्म नातो यह होई । तुम सरहज हम ननदोई ।।
तुमहिंकबहूँनहिं विछुरिन मोरी । येहो अवशिप्रीति लखितोरी
यह सम्बन्ध सनातन केरा । तुमहूअ वधपुर करहू बसेरा ।।
दो०-सिद्धि सुनत ननदोई के बचन,पुनि बोलि करजोरि ।
पालब सब अपराध क्षमी, ननदि चारहू मोरि ।।
पालब सकल अनुचरि जानी । इतना कहत ढारयो दृगपानी ।
सिद्धि प्रीतिनहिजाय बखानी । बोले सीतारमन मनोहरवानी
अवध जनकपुर भेदन काऊ । उभय अमान समान प्रभाऊ ।।
प्रीति विवस दूलह वंदन कीन्हे । बाहर चलन हेतु मनदीन्हे ।
मणि भूषण सुन्दर पट नाना । दियो सिद्धिनहि चित्तअघाना ।
सुन्दरमणि मुदरी इक ल्याई । दियोसियदूलह अंगुलिपहिराई
दो०-सो मुदरी मणि में लिखे, अस आखर रस भीन ।
कबहू न सिद्धिसुधि छोड़िहौ, लाल प्रवीन प्रवीन ।।

गे कुशकेतु रानि ढिंग नाथा। बोले बचन नाय तिहि माथा ॥
दो०-चारहुँ बंधुन की अहौ, जननी युगल समान।
कौशिल्यादिक मातु महँ मोहि न भेद दिखान।
राखेहु सुरति मातु सब काला। चारिहु बन्धु तुम्हारे लाला ॥
सुनि कुशकेतु दार प्रभु बानी। प्रीतिविवशअतिमतिअकुलानी
वोली कंजकरन युगजोरी। राखेहुसुरतिआपनलालक्षमिखोरी
यदपि सनातन ते चलि आई। ह्वै विवाह वरवधू विदाई ॥
पुनि कुशकेतु भूप की रानी। रत्न विभूषण पट वहु आनी ॥
चारिहु बंधुन दियौ समाना। भेद भाव मनमें नहि जाना ॥
नगर नारि रनिवास निवासिनीं। जे आई दर्शन की आसिनी
बारबार मिथिलापुर आई। दीजै दरस चूक विसराई ॥
तब सबको करिकै सनमाना। जानि सुनैना सिद्धि समाना ॥
बैठे सभा जहाँ दोउ राजा। भ्रातन सहित गये रघुराजा ॥
दो०-आवत लखि रघुराज को, सिगरी उठी समाज।
श्वशुर पिता पद बंदि प्रभु, बैठे शील दराज ॥
पंच सहस्र महीप कुमारन रघुपति सखन बुलाई।
नृप समान दीन्हों पटभूषण हयगय रथन मँगाई ॥
पुनि एक एक गजमुत्तन माला पृथक-२ पहिराई।
एक एक चिन्तामणि नामक दीन्हों मणि सुखदाई॥
जनक पानि पंकज निज चारिहुँ कुंवरन दिय पहिराई।
गज मुत्तन के महाहार यकजिहि बीचबीच छविछाई।

चन्द्रकान्ती औ सूर्यकान्ती मणि लगी तेज समुदाई।
सो कर हार धार मिथिलापति दशरथ को पहिराई॥
अक्षोहिनी एक मिथिला की जाति कुमारिन संगा।
लाखन अभिलाखन गमनत संग दासी दास सुभंगा॥
तिनकर पोषण पालन लालन राउर हाथ पहीपा।
हम सेवक रावरे सदाके, आप भानु हम दीपा॥
तहाँ जनक सब सचिव बुलाये। ल्यावहु दाइज बचन सुनाये॥
राजा वहुरि सभा महँ आये। मंत्री सकल बोलाइ पठाये॥
कहिजय जीव सीसतिन्ह नाये। बैठे निज आसन रूष पाये॥
जनक राय कहि तिनहि सुनाई। अवध चले अब दशरथराई।
जहँ जहँ आवत बसे बराती। भेजहुँ वस्तु तहाँ बहुभाँती॥
तुरत उठे सब भेजन लागे। चले लोग सब अति अनुरागे॥
सकल ठौर बहु बस्तु भराई। मेवा अन्न अनेक मिठाई॥
पुनि सु आर तहँ भेज्यो नाना। ठौर ठौर तिन्ह करि अस्थाना
राहखर्च ते भई सुचि ताई। भोजन वस्तु अनेक पठाई॥
तुरग लाख रथ सहस पचीसा। सकल सँवारे नख अरुसीसा॥
देव विमान विलोकि लजाहीं। रबिरथ तेहि रथ तूलतनाही।
दो०-दश हजार हाथी सजी, बहु मणिमय शृंगार।
जिनहि देखि दिग्गज लजे, शोभा अमित प्रकार।
सोना मणिगण नाना जाती। वसन अनुपम अगणित भाँती॥
गाड़िन पर सब लाद पठाई। सो बर धन लखिधनद लजाई॥
पुनि महीषी वर धेनु मगाई। काम सुरभि सरिस दीन्हसोहाई
यहि वस्तुसब विविध मँगबाई। नृपति अवधपुर दीन्ह पठाई॥

लोकपाल अवलोकि सिहाने । जनक विभवलखि सब सकुचाने
तब राजा मनमहँ अनुमाना । कइबार दइ दाइज नाना ।।
सो सब नृप जाँचक कहँ दयऊ । अवधपुरी नहिं एको गयऊ ।।
पुनि वहि विधि सब वस्तु मगाई । जनक अवधपुर दीन्हपठाई
दो०-जानी रानि बरात अब चलि, रहिहि अब नाहीं ।
भई विकल जिमि मीनगण, थोरे जल के माहीं ।।
दिये बरातिन लघु बड़ सबहि जाहि जौन जस भाये ।
कोउ नहि रह्यो तहँ अस जन जो पट भूषण नहि पायो ।।
जनक नगर के सभ्य महाजन धनि धनदकी जोरी ।
पृथक पृथक दाईज ते दिन्हे करि कीरति चहुँ ओरी ।।
अवध निवासी सकल सराहत जनक उदार सुभाऊ ।
जनि करहु अचर्य कोई जानिय सिया कृपा प्रभाऊ ।।
अधिक अधिक सो बड़यो घटयो नहिसिय महिमा अधिकाने।
जहाँ प्रत्यक्ष रमा तहँ की केहि विधि संपति जाय बखानी ।।
तेहि अवसर गौतम सुवन बोल्यो बचन बिचारी ।
गवन मुहुरत आइगो कन्या चले सिधारी ।।
गवन करै वर चारहुँ यहि मुहुरत माही ।
पुर वाहर परखहीं । पितै नृप अंतहपुर जाही ।।

।। मंडप का बन्धन खोलना ।।

।। छन्द चौबोला ।।

करि विधि मंडप मोचन समधिनि सो रचि फाग ।
पुत्रवधु लै संग गवन करै सहित वराति बड़भाग ।।

दो०-एव मस्तु दशरथ कह्यो चले राम चारहु भाय ।
चले तुरंगन पिता सशुर पद शीरनाय ।।
लक्ष्मीनिधि को पाणि पकरि कै उठे अवधपति आशू ।
विधि मंडप मोचनी करन को चले हर्षि रनिवासू ।।
परिचारिका सुनैना की तहँ डयोढ़ी ते चलि लीन्ह्यो ।
अवध चक्रवर्ती को मंडप के तर आसन दीन्ह्यो ।।
सुरभित तैल अनेक मशाले ताँबूलन युत ल्याई ।
बृद्ध बृद्ध कुलनारि पाणि निज दियो लगाय खवाई ।।
फेरि कह्यो करजोरि भूप सो मंडप बंधन छोरौ ।
नेगन में निज भगिनि देहु नृप जनि उदार मुखमोरौ ।।
नृप उठि मंडप को बंधन तहँ निज कर छोरयो एकू ।
कहयों बहुरि मुसक्याय सुनहु मम वचन विचोरि विवेकू ।।
हम लेने कौशलते आये नहिं दीबे के हेतू ।
जो जो देहो सो लैके हम जैहै बहुरि निकेतू ।।
दीन्हो पुत्रवधू अति सुन्दरि सो पुत्रन कों भाग ।
हम न अवधपुर जाब छूछकर कछु हाथे नहिलाग ।
जो मिथिलेश भगिनि होवे कहुँ तो नेगमँह दीजै ।
ना तो चलै सुनैना रानी यहि निवाह करीजै ।।
सुनि सुल वधू बृद्ध नृपबानी कही सुनैना जाई ।
अवसर जानि चारकरिवे हित सो बाहर कढ़िआई।
कनकथार लै पाणि रंगभरि धरि काजर टिकुली को ।
करि प्रणाम समधी को सुन्दरि दियो भालमहँ टीको ।।

अंगनि अंग रंग लै ढारयो सहित उमंगा ।
नयननि में काजर पुनि दीन्हो करि कछु कपट प्रसंगा ।
उठि कौशलपति सब समधिनि को करि प्रणाम सुख पायो ।
चिंतामणि मणिहार पाणि लै समधिन को पहिरायो ।।
पद्मराग मणि माल सुनैना समधी के गल दीन्ही ।
जोरि पाणि पंकज भूपति सो सनै विनय असकीन्ही ।।
ये चारिहु दारिका हमारी परिचारिका तिहारीं ।
लालन पालन अव इनको सब कीन्हयो बाल विचारी ।।
तुम्हरे कर सौंपहुँ नरनायक ई चारिहु कुमारी ।
ये अजान जानती नहीं कछु पालेहू भूल विसारी ।।
अपनी अरुसिगरी सासुन की सेवा सब करवायो ।
केहु सों कबहुँ विरोध होइ नहिं निजकुल रीति सिखायो ।।
सुनत सुनैना वैन अवधपति जोरि पाणि कहवानी ।
प्राणहुँ ते प्रिय पुत्रवधू मम स्वप्ने दुख नहिंरानी ।।
जस मिथिलापुर तस कौशलपुर भेद कछू न विचारो ।
को नहिं करत पतोहु छोह जग यह संदेह बिसारो ।।
शासन देहु जाहुँ कौशलपुर पुनि ऐहौं बहुबारा ।
मिथिलापति को अहै अवधपुर मिथिलानगर हमारा ।।
असकहि करि प्रणाम समधिनि को भूपति वाहर जायो ।
चलन हेतु मिथिलापति सो पुनि जोरि पानि उचारयो ।।
शासन देहु बिलम्ब होति बड़ि तुम अवलम्ब हमारे ।
मोद कदम्ब मिलनि राउरि मोहि विसरी नहिं विसारे ।

कह्यो विदेह विवश ह्वै पहूचैहौं कछु दूरी ।
यह कुल रीति नाथ वर जौं जनि तुव बिछुरनि दुखभूरि ।
नृप प्रणाम करि चल्यो चढ़ियो रथ वाजे विविध नगारे ।
मिथिलापति सो कह वशिष्ठ सब सूदिवस सुभग विचारे ।
आयसु अकनि जनक मँगवाई रतन पालकी सुभग सजाई ।
चढ़ै पालकी सकल कुमारी साजहु साज बिलम्ब विसारी ।
पुनिपुनि सीतहिहृदय लगावौ । करत प्यारबहु विधिसमुझावौ
सिया पितापद लखि लपटानी । सोदुख अब किमिजायबखानी
लली लपटिदाऊ कहि रोती । कहि नजाय गति तहँ विरह्रौती
वारबार पितु मिलति जानकी । छूटि गयी मर्याद ज्ञानकी ।।
सियदशा लखिनिज परिवारा । सहतिविरह अबकलेशअपारा
रहे कहावत परम विज्ञानी । तौन ज्ञान गति सकल भुलानी ।।
कहि न सकत मुखते कछु वानी । तेहि अवसर धीरता परानी
भाषत सीय वहोरि बहोरी । छाड़हु पिता सुरति नहि मोरी ।।
मच्यो कोलाहलसब रनिवासू । तिहिक्षण भयो सकलसुखहासू
दो०-करुणा बिरह परवस लखे जनक सकल परिवार ।

सियहि चढ़ायो पालकीहि, जानि लगन सुखसार ।।

सुमिरि शिवाशिव सुखद गणेश । सकल कुँअरिय धराय नरेश
जस तस कै धरि धीरज राजा । बोल्यो बिलखत मन्द अवाजा
निमिकुल की सिगरी मर्यादा । रक्षण कियहु विहाय विषादा ।
अमल श्वसुरकुलसुता सिधारी । जसइत तसउत पितुमहतारी
ल्याउव हमइत वारहि बारा । किहहु न नेसुक मनहिं खभारा

करिहै मोसे अधिक दुलारा । ज्ञान शिरोमणि श्वसुर तिहारा
पतिरुख राखि कीहहु सबकाजा । सदा प्रसन्न रहहु पतिकाजा
इतना कहत गला भरि आयो । जनक निकरि तब बाहरआयो
सियहि बुझाय कहेउ तब भइया । अइहौ अवधहि वने लिवैया
मिलि सिय कुभकेतुहि जाई । तनु ते धीरज गयो पराई ॥
लीन्हो लाय सिय उरमाही । रहयो धीरता लेशहु नाही ॥
करगहि कोउ तहँ सखी सयानी । लै गवनि बाहर दुखजानी ।
मातु अंक महँ सिय लपटानी । मनहू करुणारस सरि उमगानी
लियो सुनैना गोद बैठाई । धरि धीरज कछु बात बुझाई ॥
तहाँ कुशकेतू भूप की रानी । कहत बुझाय परम प्रियवानी ॥
जनि मानहू दुख मनहि कुमारी । लेहू सनातन रीति विचारी
कन्या अवसि सासुरे जाती । पुनि मइके अवशि सब आती ॥
दो०-बार बार मिलि भेटति, सबसन सकल कुमारि ।
भई असीस धुनि दशदिशा, भीर सकल पुरनारि ।

॥ छप्पय ॥

जनक द्वार पर महाभीर कछु बरनि न जाई ।
सब करि करि परितोष सिया की उठी सवारी ॥
चलि तेहि सँग कुँअरिन की नालकी की बरधारी ।
बाल बालिका जो सिय पाये । मातु निदेश सबहि सुहाये ॥
तिरहूत राउ सबहि कर प्यारा । दीन्हे भूषण वसन अपारा ॥
सबहि पालकी अमित मँगाई । भेजे सिय संग हरषि चढ़ाई ॥

पुत्री न ऊबै अवध मझारी। दीन्ही दासी सखी अपारी ॥
सीतहि सब विधि सेवन हारी। लखि रुखकार्य सँभारनवारी।
दो०-सिय सुख सेवाहित नृपति, करि करि सूक्ष्म विचार।
सबहि पठाये अवध कहँ, वस्तु अनेक संभार ॥
तेहि आगे अरु पाछ वाम दहिने सब दासी।
चढ़ी पालकी चली सकल सुख शोभारासी ॥
मिलति परस्पर यहि विधि सीता। द्वार देश लै गई पुनीता ॥
धरि धीरज तहं परम सयानी। आई आसु सुनैना रानी ॥
शिवकन आनि रत्नमय चारी। दिये चढ़ाय चारिहुँ कुमारी।
दो०-दधि टीका दै भाल में, सकुन सकल धरवाय।
करि परिछन की रीति सब दिये पालकी चलाय।
चलत पालकी नगर मझारी। कीन्ही प्रजा कोलाहल भारी ॥
चलत जानकी सुगन सुहाये। होन लगे बहुभाँति सुभाये ॥
पशु विहंग मिथिलापुर केरे। रोदन करत जानकी हेरे ॥
विप्र सचिवपरिजन परिवारा। सहित वन्धुमिथिलेश भुआरा
चले संग पहुचावन हेता। विरह करुण हिय किये निकेता ॥
जानि समय बहु बाद्यसू वाजे। सकल बराती वाहन साजे ॥
दशरथ राउ द्विजन शिरनाई। दानमान करि किये विदाई ॥
चरणरेणु निज शीश चढ़ायो। आशिश पाय हिये हरखाये ॥
दो०-पुनि पुनि सबहि प्रनाम करि, सुमिरि गणेश महेश।
मुदित निसान बजावते, जानहि चढ़े नरेश ॥

चलत महीपहि जानि सुर वरषहि सुमन अपार ।
मुदित हनहि वर दुन्दुभी, जयजय करत पुकार ॥
चढ़ै विमान देव युत दारा। तिय बिलोंकि बह आँसुनधारा ॥
तेहि छनक्रोंअस त्रिभुवनमाही । आयोजहिसियलखि दुखनाही
पाले सिय विहंग कुरंगा। रोवत चले पालकी संगा ॥
प्रेम विवश निमिनगर समाजा । पीछे चली भूलिसब काजा ।
दशरथ करि वर विनय सुहाई । शील सनेह बचन निपुनाई ॥
अक्षौहिनि साहनी साजी। चली संगमह हय गय राजी ॥
चले संग नाना नर याना । चढ़ि सखी सजि विविध विधाना ।
चले सकल पुरजन पहुँचावन । बाल बृद्ध करि मारग धावन ।
वार वार सब ईश मनावै । जल्दी जनक जानकी बुलावै ॥
यहि विधि सिय बरात महँआई । बाजे मुरज दुदुभी सहनाई ।
दो०-दशरथ के तहँ मिलन हित, स सुतै बन्धु विदेह ।
मुनिन सहित आवत भये, भरे अछेह सनेह ॥
दशरथ करि वर विनय सुहाई । शील सनेह वचन निपुनाई ॥
फेरे सबहि कृतज्ञ कृपाला। बोलि जाचकन किये निहाला ॥
मागध सूत बन्दी वहु गायक । दिये अमित धन कौशलनायक ।
दै अशीश रघुवर उर राखी । फिर सकल मुख जय जयभाखी
जनकचले नृपसंग-२ जाही । फिरततिनहि मनभावत नाही ॥
आवत जानि विदेह महीपा । रुके अवधपति नगर समीपा ॥
तहाँ बिलोकी कौशलपति काही । वाहन तज विदेह तहाँही ॥
कछुक दूरि चलि जानहिरोकी । उतरी अवध नृपकहेंबिलोकी

दो०-फिरहि महीपति कुंअर सह, आये इत बड़ि दूर ।
कहत भुकारे सो भरे, नयन रहे जल पूर ।।
सुनत जनक अति भयेअधीरा । गदगद शब्द सुलोचन नीरा ।
चरण शीश धरि कह करजोरी । केहि विधि करौ बड़ाई तोरी
सकल क्षमेउ अपराध हमारे । सेवा बने न योग तुम्हारे ।।
सबहि भाँति मैं लहेउ बड़ाई । कृपा तुम्हारी सुनहुँ नृपराई ।।
अवधनाथतहाँ सहित कुमारा । मिलि कछुक चलि प्रेमअपारा
राम सबन्धु आय शिर नाये । जनकललकि उरमाँही लगाये ।
असकहि वार बार उरलाई । चूमि वदन बहुविधि समुझाई ।।
कह्यो जनक सो प्रभुकरजोरी । राखहुँ वालमानि सुधिमोरी ।
प्रेम विवस नहिं वदत विदेहू । मूर्तिमान जनु राम सनेहू ।।
जस तस कै धरि धीरज राऊ । बोल्यो बैन न प्रेम अघाऊ ।।
यद्यपि मोहि तुम दीन्ह बड़ाई । पै मोहि रुचत चरन सेवकाई।
दो०-रघुनन्दन वन्दन कियो जनक लियो उरलाय ।
प्रीति रीति तेहिकाल की, वरनि कौन विधि जाय ।।
भरत लखन रिपुहन पुनि भेटे । दीन्हे अशीष प्रेंम लपेटे ।।
बहुरि कुँअर रघुनाथहि भेटे । हिय लगाय फफकत दुख मेटे ।।
पुनि विदेह कौशल पतिकाही । बारहि बार मिले मुदमाही ।।
समधी समधी नेह समाने । भरे कंठ नहिं वचन वखाने ।।
जस तस कै विदेह धरि धीरा । बोल्यो प्रेम गिरा गम्भीरा ।।
यह मिथिलापुर की ठकुराई । आपुनि जानब गुनि सेवकाईं ।।
नहि कछु मोर रावरो सिगरो । करब माफ जो हमसे विगरो

दशरथ कहयो सनेह तुम्हारा । यह हमरे शिर महँ बड़भारा ।
कौशल मिथिला उभय तुम्हारा । सेवक सिगरे मोर तुम्हारा।
तहाँ जनक मिलि वारहि वारा । चले भवन दृगवह जलधारा
कुअरहि करत प्रणाम उठाई । दशरथ लीन्हे हृदय लगाई ।।
दो०-ललन मोहि रघुनन्दन सम, प्यारे लगत सुजान ।
रामहुँ मानत प्राण सम, सहित भ्रात सुखदान ।।
आयहुँ अवध सुखद सुकुमारो । पित निदेश लखि प्राणअधारो
असकहि बारबार उरलाई । चूमि बदन बहुविधि समुझाई ।।
फफकत कुंअरदण्डवतकरिकै । चलेउविकल विरहिउरभरिकै
गुरुबशिष्ठकौशिकऔंरमुनिकहजाई । वन्देनृपतिहृदयअकुलाई
सुभग अशीष कृपा लहि राजा । वन्दे सीगरी मुनिन समाजा
विश्वामित्र समीप राय आय हर्षाई ।
चरण वंदि करजोरि कर ठाढ़ भये वचन सुनाई ।।
हे मुनि तब दरशन अमोघ पूरयौ सब आसा ।
जो फल अगम अनूप कृपा तब सुलभ प्रकासा ।।
जो सुख यस सुरपति चहे करत मनोरथ नहिं लहे ।
सो सुख यस तब दरस ते अगम नहीं मोमन कहे ।।
कुअँरहि करतप्रणामहिदेखी । दोउ ऋषिमुनि हरषेप्रेमविशेषी
हिय लगाय बहुँ भाँति दुलारे । अशीष दीन्हे अधिक सुखारे ।।
सिय राम कहँ प्राणन प्यारे । होहुँ लाल सब गुणन अगारे ।।
सुनि अशिष नयनन जल छाई । वन्दे सकल मुनिन शिरनाई ।
मिथिलापुर पुरजन सुखरासी । मिले सकल कौशलपुरवासी ।

महि बहुरत कोऊ भवन वहोरे। सिगरे बंधे प्रेम के डोरे।।
जस तस कै सब किये पयाना। करत अवध पति कीरति गाना
उत कौशलपुर चली बराता। बजे दुदुंभी शोर अघाता।।
दो०-सहित सुवन मिथिला महिप, आये रघुपति पासु।
हिय लगाय जमात सब, भेटत डारत आँसु।।
कुवरहुँ मिलि यथा विधिरामा। अनुभव बिनको कहै अकामा
जनक कहे रघुवीर कृपाला। अहो सदा प्रणत प्रतिपाला।।
परब्रह्म परमारथ अहऊ। नित्य एकरस अगमनिगमहू।।
आपन भाग कहौं किमि गाई। शेष शारदा अंत न पाई।।
निजजन जानि मोहि अपनायो। सर्बहिंभाँति यशपात्र बनायो
मिथिला विलग एक क्षननाही। रहौ सदा मामहुँ मनमाही।।
राउर ओझल कबहूँ न ह्वै हौ। दिव्य दृष्टि पथमाहि भ्रमैंहौ
यहि प्रकार श्वसुरहि समुझाई। कहे श्याम सुनिय नृपराई।।
दो०-गुरु बशिष्ठ कौशिक सरिस, पितु सम मोर आप।
कृपा छोह रखिऔ सदा, प्रीति अनूप अपनाय।।
असकहि कीन्ह प्रणाम कृपाला। लीन्हे हृदय लगाय भुआला।
मधुर मधुर मंगल पढ़राई। आशिष दीन्ह हृदय हरषाई।।
भरत लखन रिपुहन भेटे। हिय लगाय फफकत दुख मेटे।।
यथा राम सब भ्रातन मिले। चिपटि-२ हिय प्रेम रंगीले।।
रामहिनिरखिनयन जलढारी। कहेउ जाहुलाल अवधसिधारी
धरनि गिरि नेक सुधि नाही। देखे विकल रामतेहि काही।।
राम उठाय ताहि उरधारे। कछुक चेत लखि नृपति उचारे।।

पुनि पुनि कुअंरहि धीर धराई । हिय लै नयन नीर बहाई ।।
जनकहि बन्दि सुखद सरसाया । हरषि चढ़े रथ रघुकुलराय
चलत राम सब चली बराता । बजत निसान सुखद वहवाता
वरषहि सुमन छनेहि छन देवा। बाद्य बजावहि करि शुभसेवा
प्रीति रीति वरनत सब कोऊ । जाहि मुदित मन नेह सँजोऊ।।
इहाँ जनक रघुवीर पयाना । देखत रहे समय अधिकाना ।।
दो०-आशिष दीन्ह अनेक विधि,करि प्रणाम रघुनाथ ।
चले अवधपुर मनहिं मन, वरणत नृप गुणगाव ।।
जनक शील सत्कार गुनि, सम्मति सहज सुभाउ ।
वरणत पुनि-२अवधजन हिय नहि होत अघाउ ।।
छ०–बाजे बिविध विधि दुन्दुभी मुरचंग मुरज मृदङ्ग ।
नौवत बजत गज पर बजत तृरज उपङ्ग अभङ्ग ।।
फहरत पताके बहू किताके, आत पत्र अपार ।
घर्घरकरत रथचक्र चहुँकित झांझ की झनकार ।।
मणि जड़ित सोटे विविध वल्लम मुकुत झालरदार ।
पैदर अनेकन बृन्द सायुध वसन अंग सुरङ्गदार ।।
तिन मध्य में सुन्दर युगल स्पंदन विराज अनूप ।
यक में चढ़े गुरु ब्रह्मसुत एक माँह कौशल भूप ।।
नर नाह पाछे वनक आछे छाजत गजन सवार ।
रघुवीर भरत लखन रिपुहन सहित सब सरदार।।
मंडित अतिहि मतंग मंडल चले रघुकुल वीर ।
संगचलि चारिहु पालकी मिथिलानगर की भीर ।।

यहि भाँति मिथिला नगर ते कौशलनगर की ओर ।
गवनी बरात वतियात सुख मिथिलेश यश चहुँओर ।
करिकै पतोहुन क्षोह छनछन लेत सुधि क्षितिनाह ।
नहि तृषित होहि न छुधित श्रमित कोऊ मग माह ।।
मिथिलेश के बहु सचिव तहँ सब सैन्य आगे जात ।
जे वास के थल रचे प्रथमहि तिन बतावत जात ।।
जहँ होय नृपति प्रसन्नता तहँ करै सैन्य निवास ।
करिपान भोजन वस्तु अगनित बने विविध अवास ।।
यहि भाँति मिथिला नगरते जब चलि अवध बरात ।
मंत्री सुमंतहि कह्यो भूपति उर न मुदमोद समात ।।
अब चारि चार तुरंग दिजै, अवधपुर कहं पठवाय ।
बने अवधपुर सब भाँति ते उत देहि सुभग सजाय ।।
तोरन पताके द्वार द्वारन देहु तुङ्ग निशान बधाय ।
सब राज मारगै गलिनगलिन सुगंध सलिल सिंचाय ।।
कौशल नगर के प्रजन घर-२ देहु खबर जनाय ।
आवत बरात विदेहपुरते वर बधुन सखिन लिवाय ।।
तिहि भाँति पुनि रनिवास महँ जाहिर करावहुआशु ।
परिछत तयारी करहि सब भाँतिन विविध हुलासु ।।
सुनिसब अनुसासन सचिव कहयो सपदि सकल विधान
चढ़ि के चपल तुरंग धाय चारि चार धावन प्रधान ।।
कौशलनगर घर घर सुचर वर जाय तिमि रनिवास ।
दीन्हेजनाय बरातआवत अवध पंथचारि करिनिवास ।

प्रथम वास तहँ जनक बनावा । मिथिला सम सबभाँति सुहवा
पाकर ग्राम वसे सुखदाई । सुख समधि सोये सरसाई ।।
तादिन जानि परम अनुकुला । बसे बराती सुखमय सबभूला ।

दो०-सुखसह सुखद बरात वर, वसि अमित सुखपाय ।
मिथिलाहि सोये मनहु, पगे मनहु लोभाय ।।

मिथिला प्रीति रीति मैं गाई । सिय विदा जस भई सुहाई ।।
यथा राम सिय सहित सुभ्राता । दसरथ राउ समेत बराता ।।
बहुरि भुप सव साज सँभारी । लै बरात चल दिय सुखारी ।।
वरनत मिथिला विविध प्रसंगा । चले जाहि हरषित सबअंगा
हरषहि गुनहि जनक पहुँनाई । करत परसपर विविध बड़ाई।
आये भवन विरह रसधाये । मियिला मनहु न नेकन भाये ।।
देखि विकल सबहि रनिवासा । रोवस कहि सिय राम अवासा
मिथिलापुर की विरह विषादा । अकथनिय नौशय प्रेमदा ।।
सिय विवाह आये मेहमाना । भूपति विप्र मुनीश सुजाना ।।
विविध भाँति लहि नृप सतकारा । भये विदा बहु होतसुखारा
मागध सुत वन्दि गुण गयक । नेगी भाट विदुषक नायक ।।
सबको उपाय अमित धनरासी । भे प्रसन्न सब भाँति सुपासी।
जनक सुनैना पुत पतोहु । बसहि सदन सिय राम सुमोहु ।।
राम प्रेम की चोटहुँ मीठी । जाहि पाय जग लागत सीठी ।।

दो०-सिया राम के विरह मधि, मिथिलापुर नर नारी ।
तीन दिवस भोजन भूले, नयन बहै जल धारि ।।

जनकराय निज महल में, आय विकल उदास ।
सियविनु देख्यो महल कहँ,करुणा विरह निवास ।
ब्रह्म अनन्त अखण्ड अमाई । वेदान्ती जहँ चित्त रमाई ।।
सोई वनेउ विहारी मिथिला । रमैं अब करि प्रभात शिथिला
दुलह वनि मौरहि शिरधारी । मैथिल गन सो कीन्हेउ प्यारी
नयनविषय मिथिलहिकरि लखव । रहैछको नित प्रेमविशेषेव
मिथिला भाग अमित जगमाई । सब समर्थ प्रियनात बनाई ।।
दरश परस करि भाग महाना । निशदिन आनँद सिन्धुसमाना
कोऊ जामाय कोउ बहनोई । कोउ कहै ये प्रिय ननदोई ।।
दो०-धनि धनि बर मिथिलापुरी, ब्रह्म राम सो करि प्रेम ।
प्रेम सुखहि साने रहै, ज्ञान योग तजि सब नेम ।।
सो०-सीताराम विवाह, चरित गुनत करि नेमनित ।।
कहत सुनत उत्साह शान्ति विरति प्रभु प्रेम लहै

इति श्रीमिथिला मधुर विलासे पूर्वार्ध श्रीमिथिलेश राजदुलारी जी को जन्मोत्सव पौगन्ड लीला श्रीविश्वामित्रा गमन, धनुष यज्ञ, अवध से मिथिला को बरात आना, विवाह होना श्रीचक्रवर्तीजू का विदा होना यहाँ तक प्रकरण पूर्ण हुआ ।

।। पूर्वार्ध समाप्त ।।

अगता जब रनिवास पठवा । कीय विचार दल सुमंगल गावा
कौशल्यादि सकल नृप वामा । आई सुखमहँ अवधि सुधामा ।।
पाव प्रमोद भोग पुरनारिनी । बड़मंगल मानिउ अधिकरिनी ।
आगम कौउत्तसवसुचि कीन्हा । निजनिजकार्य निवेदनलीन्हा

राम मातु अतिनिपुन महाना। दीन्हेउ सवन वहुप्यार सुजाना
मिलिवे कौहित जुरी सुखछाई। रघुकुलकी पुरयुवतिसबआई
सुनी विवाह कहँ हर्ष विशेषा। पुलके तन मन आनन्द अलेषा
दो०-सुन्दर ताई बंधुन की, समधि नेह अछोह।
वैभव प्रेम विदेह की, सुमिरत होत विदेह ॥
नीतिव्यवहारनिरतपुरभामिनि। सबकेजाँहिउभयदिनयामिनि
तेहि अवसर जे दूत पठाये। ते कौंशलपुर कुशल लै आये ॥
कहीं भूप से मंगल बानी। अवध प्रजा दर्शन अकुलानी ॥
इत बिलम्ब नहिं होइमहाना। रोजहिं कढ़हिं अवध अगवाना
दूत वचन सुनि भूप तुरंता। बोल्यों बचन हँकरि सुमंता ॥
दो०-चलवावहु सेना सकल, आसु अवध की ओर।
सुनि सुमंत शासन दियो, भयो दुन्दुभी शोर ॥
चली सेन कछु वरणि न जाई। मनहुँ उठी पूरब मेघवाई ॥
चढ़ि रघुनन्दन स्यंदन माहीं। चले सबंधु अवधपुर काहीं ॥
चढ़ि गुरु नृप निजनिज याना। कीय प्रमुदित अवध पयाना ॥
पणव निशान बाजने बाजहिं। मुदित बराती जात विभ्राजहिं
चलि जनकपुरते जिमिसैना। तेहिविधि चली भली भरिचैना
बीच बीच वर बास बराती। मगलोगन्ह सुख दै सब भाँती ॥
दूलह निरखि ग्राम नरनारी। पाय नयन फल होहिं सुखारी।
हर्षहिं गुनहिं जनक पहुँनाई। करत परस्पर विविध बड़ाई ॥
कियो पन्थ दिन चारि वसेरा। लहे जनक सत्कार घनेरा ॥

जनक सचिव कीन्ह्यो सेवकाई । कहुँ न बिदेश निवास जनाई
यहिविधितहँबरातहु लसानी आय अवधपुरकहँ लखिनजिकानी
योंजन भरि महँ परिगो डेरा । जानिकाल्हि दिन परछिनकेरा
सबके नयन दुसह लखवे काही । राजकुँवर कबयुगल दिखाहीं
इत तव आपसु माँझ बुझावै । थोड़े दिवस महँ पाहुँन आवै ।।
बड़े अतिसुकृति अवधपति अहही । तिनकेभागधन्य सुखलहहीं
छवि निधि चार कुंवारन केरी । चार धर्म पत्नी तिन्ह हेरी ।।
नही सुनी भाषहि सबकोई । सीता नाम धरणिजा सोई ।।
कब हम देखब राजदुलारी । जेहि सब कहत त्रिपुर उजियारी
तेहि सेवा हित दीन्ह नरेशन । सुता सहस दश ब्याहि सुवेषन।
कोउ कहे लाये राम विहाही । ऐकते ऐक महाछवि ताही ।।
तिन्हकर गुहण कीन्ह रघुनाथा । आवहिं तेहु अवध कहँ साथा
कोउकहे ऊन सब राजकुल की । अपर बहु व्याही कहिपुलकी
राम अलभ्य पार पद दीन्हो । अकथ भूरि भामिनि भवचीन्हो
कोइ कहेप्रेमविवस बहु आई । सोउसब अदभुत ललित सोहाई
निज निज सुन्दर सदन सँवारे । हाट बाट चौहट पुर द्वारे ।।
वना बजारुन जाइ बखाना । तोरन केतु पताक बिताना ।।
सफल पुग फल कदलि रसला । रोपै वकुल कदेव तमाला ।।
लगी सुभगतरु परसतधरनी । मनिमय आलबालक लकरनी।
भुप भवन तेहि अवसर सोहा । रचना देखि मदन मन मोहा ।
दो०-विविध भाँति मंगल कलस, गृह गृह रचे सँवारि ।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं, सब रघुवर पुरि निहारी ।।

कहि अपर युवति तिरहूत में अवधेश को रहियो भयो ।
कोइ कहे अमित यूथ सखि आई मंडप कोहबर नेगन पाई ।
आय सुनि सुधि पाँच लक्ष सुतान वर अनुसारयो ।
इत अवधवासी चार वरन के पुत्री ब्याही कर धरयो ।
मिथिलेश तिन कहँ दान मिथिला की सुकन्यन की करयो ।
सो०-निज कुमारिन सँग, करिहौं विदा महीश मणि ।
देहौ वित्त अभंग, आहे चारिय बरात महँ ।।
दो०-भए न होइहैं होइ नहिं, ऐसो कतहुँ विवाहु ।
सखि किये राम विवाह ने, सबहिं समान उछाहु ।।
विदित भई सुधि सब पुरमाहीं । बढ़यो मोद मंगल जहँताहीं ।
जनक सचिव सब जे सँग आये । माँगी विदा नृपहिं सिरनाए ।
देन लगे नृप सम्पति नाना । लिये न मन अनुचित अनुमाना ।
करि नृप की सिगरी सेवकाई । गए जनक पहिं माँगि बिदाई।
मंगल साज सजहिं हरषानी । गावहिं गीत सुमंगल साजीं ।।
घर घर होवहि मंगल रचना । सजहिं पताके तोरण ध्वजना ।
मणिन चौक बहु गृहगृह पूरी । सिंचे सुगंधन मारग भूरी ।।
अवधपुरी बहुभाँति सजाई । इन्द्रपुरी जेहिं देखि लजाई ।।
बाजहिं बाजन विविध प्रकारा । घरघर उत्सव गान उचारा ।
सजत बरातिन सुखित अपारा । निशासिरानि भयो भिनुसारा
होत प्रभात कुमारन काही । कह्यो भूप विलमो अब नाहीं ।।
करि मज्जन भोजन अति आसू । सजे कुँवर सब सहित हुलासू
सुभग रंग नारंग पोशाका । जेहि लखि सुर नरमुनि मनछाका

लसैं मणीन मौर शुभ सीसे। रतन विभूषण अगनित दीसे।।
काम विमोहक सकल कुमारा। बरणि कौन कवि पावत पारा
तेहि दिन नृपहुँ पीत पट धारे। गवन हेतु गज भए सवारे।।
करि बहु बिनय बशिष्ठहुँ काहीं। भूप चढ़ायो सिंधुर माहीं।।
दो०-भये अनंग समान सब, कुँअर तुरंग सवार।
बजे नगारे निकट तहँ, बाजत बाद्य अपार।।
सजी सैन सुन्दर चतुरंगा। चले बराती भूपति संगा।।
आगे सुतर सवार अपारा। सोहि रहे गन्धर्व अपारा।।
तिनके पाछे पैदल जाती। निज निज यूथबरण वहुभाँती।।
लसहिंगजनपरविविध पताका। मनुतिनमहँ अरुझतरविचाका
बहु नागन पर नौबत बाजैं। तिनके गुरु गैयर गण गाजैं।।
तहँ परिकर अगनित गतिसीधे। चले सवारन के पुनि पाछे।।
कनक छड़ी वल्लम बहु सोटे। गवने सुन्दर जोटे जोटे।।
परिचर बृन्दहि मध्य सिधारे। पंच सहस बर राजकुमारे।।
दो०-राजकुमारन मध्य में, सोहत चारि कुमार।
तिन पीछे गज पै चढ़यो, गवने अवध भुवार।
रघुबंशी सरदार अपारा। सजे मतंगन भये सवारा।।
तिनके पीछे चली पालकी। चारि बधुन की रतन जालकी।
वर वाहन सिवकादि अनंता। आवैं तिन पछै दुतिवंता।।
चली मिथिला की कन्या अपारा। दासीदास अनेक उदारा।।
मिथिला की दुहिता तिन माही। बैठि महाँ मोद मन माँही।।
कहहि परस्पर सकल बराती। देखी कौशलपुरी सोहाती।।

हने निसान पनव वर बाजै । भेरि संख धुनि हय गयगाजै ।।
हल्ला परयो अवधपुर जाई । अब बरातपुर नेरे आई ।।
झाँझि बिरवड़ि ड़िमिसुहाई । सरस राग बाजहि सहनाई ।।
पुरवासी सुनि अकनि बराता । भए मुदितमन पुलकितगाता ।
आतुर सजे अवधपुरवासी । दूलह दुलहिन देखन आसी ।।
चले लेन आशुहिं अगवानी । सकल पुण्य फल आपन जानी ।।
मंगल भेट हाथ निज लीन्हे । सकल चले मनभाव नवीने ।।
अवध प्रजा निरखन अभिलाषन । आए अगवानी कहँ लाषन
चारहुँ कुँअर निहारि निहारी । प्रेम मगन सबपुर नर नारी ।
इत बरात उत पुरजन रेला । मानहु तजे सिंधु युग बेला ।।
दो०-यद्यपि रहयो मैंदान बहु, कसमस परयो अघात ।
चली अवधपुर पंथ तब, मन्दहिं मंद बरात ।।
मिलहिं बराति पौरजन, प्रथमहि यही बताय ।
दुलहिन दूलह दुहुन को, दीजै तुरत दिखाय ।।
प्रविशे पुरजन दलमहँ आई । रामचरण परसहिं सुखछाई ।।
मन्द मन्द अब चली बराता । पुरजन करत परस्पर बाता ।।
पुनि पुरजन नर नाथ जोहारे । कृपा दृष्टि नृपसबन निहारे ।
प्रगटहिदुरहिंअटनपरभामिनि । चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि
सुर सुगंध सुचि वरषहिं बारी । सुखी सकल शशिपुरनरनारी
करहिं निछावरिमणिमय चीरा । बारि बिलोचन पुलकसरीरा
आरतीकरहिं मुदितपुर नारी । हरषहिंनिरखि कुँवरवरचारी
शिबिका सुभग ओहार उघारी । देखि दुलहिनहोहिं सुखारी ।

॥ छन्द ॥

गोतनी आवत लगी महल में परिछन हेत ।
सुता पतोहनि सजे विमल अनुराग समेत ॥
रति मुर्छित जेहि देखिकै अस सुन्दरि नर नारी ।
सील सागरी गुणनिधि प्रेम भरि छवि सागरी ॥
पुनि दशरथ के अष्ठ भाई तिनकी सब रानी ।
आई अवधनरेश धाम बधु विद्या खानी ॥
वीरसिंह की युगल रानि समरुप सोंहावनी ।
रत्नमालिका सो एक जेठ सबही विधि पावनी ॥
रत्नकला पुनि दुसरि छवि सुख सोभा की सदन ।
निज समाज वर साजिके अति पुलकित हर्षित वदन ॥
सुरसिंह की रानी रत्नप्रभा सो आई ।
रुपवति जय सील सिंह के रानी सोहाई ॥
विजयसिंह मदवति रानी सो परम सोहावनि ।
रत्नभानु के भ्रमर केसिसत रति लजावनि ॥
मदन शीला पावनि परम सो तो चन्दशेखर प्रिय ।
सजि समाज आवति भई मन प्रफुलित हर्षित हिय ॥
महावाहु की चन्द्रवती रानी छबि खनी ।
धर्मशील की रानी सुचित्रा सुमति सयानी ॥

सब समाज निज सजि महल आई अतिप्रीति ।
कौशल्या सनमान पाई बैठी निज रीति ।।
उतरि चादर सकल की पान अतर पावति भई ।
पंच शब्द बाजन लागे सब गावहिं मंगल मई ।।
दो०-परिछन को ताईं आई सब, मन महँ मोहन थोरि ।
देवतिया संग राजहिं मुग्धा मध्या किशोरि ।।
ताहि समय नृप के महल महामीर अरु सोर ।
चहुदिशि भामिनि की दमक दामिनि सीतन गोर ।।
सीय दरश लालच बस नारी । राजसदन सब चली सुखारी ।
दो०-यहि विधि सबहीं देत सुख, आये राजदुआर ।
मुदित मातु परिछन करहिं,बन्धुह समेत कुमार ।।
करहिं आरती बारहिं बारा । प्रेम प्रमोद कहै को पारा ।।
भूषण मणि पट नाना जाती । करहिं निछावरि अगणितभाँती
बधुन्ह समेत देखि सुतचारी । परमानंद मगन महतारी ।।
पुनिपुनि सीयराम छबि देखी । मुदित सफल जगजीवन लेखी
सखी सिय मुख पुनिपुनि चाही । गानकरहि निजसुकृतसराही
वरषहि सुमन छनहि छन देवा । नाचहिं गावहि लावहि सेवा
देखि मनोहर चारिउ जोरी । शारद उपमा सकल ढढोरी ।।
देत न बनहि निपट लघु लागी । एकटक रही रुप अनुरागी ।।
।। छन्द ।।
चारिहुँ दुलहिनि दूलहको तबलियो शिविकाते आसुउतारी ।
होनलगी न्यौछावरि तेहिछन मणिगण पटभूषण जरितारी ।

राई लोन उतारिस रवीजन पढ़ि मंगल मनु पावक डारी ।
गावहिं मंगल शोर मनोहर श्रीरघुराज जाहिं बलिहारी ।।
सकुचति सिय सासुनको निरखति चलति मंदपद पदुम उठाई
पग आगे सखि धरहिं ठीकरी सियपग गहि तेहि देहि छुआई ।
कहहिं राम ते लाल उठावहु, प्रभु जननी लखि रहे लजाई।
पुनिवर को करकमल पकरि अलिलेहिं ठीकरी हठि उठवाई
यहिविधि हासविलास विविधविधि करहिंसखी कौतुकदरषाई
गावत बाज बजावत वहुविधि नाचहिं भाव बताइ वताई ।
बैठाई रघुराज वधूवर रंगनाथे के मन्दिर लाई ।
करवावती वर बधुन्ह कर श्रीरंग पूजन विधि सहित ।
सियराम को सिखावहि सखी इनकी कृपा मेटति अहित
युग-२ जिये जोरी सु चारिहु लखैं हम एहि भाँति नित ।
यहि विधि मनावैं पुनि खिलावैं द्यूत दोहुन मोदमित ।।
कोउ कहैं मोरि पतोहु जीती कोउ कहे मम लालजित ।
रनिवास हास विलास एहि विधि होत सखिगण अतिहंसित
एहि भाँति लोकाचार करि सब वर बन्धुन्ह लै गई तित ।।
जहँ सभा मन्दिर बन्यो सुन्दर विशद मणि गणते जटित ।।
बैठाय पूत पतोहू आगे सुछवि लखि सब भई चकित ।
कुल नारि सब रघुबंश की देखहि दुलहिनी आइ इत ।।
जानि मातु प्राण प्रियरामा । सोपि सब विधि सियहि ललामा
दिन्ही सासु सियहि हर्षाई । सुखकर नेगसु मुख दिखलाई ।।
देवि अरुनधति सिय मुख देखी । सुखमय भरि प्रमोद विशेषी

दै अशिष दीन्ही दिव्य भूषण । शीश परसी करवलि लै दरन

सिय मुख देखि सुभग सब सासु । होहि मगन मनप्रेम हुलासु ।

किन्ह प्रणाम सबहि सुचिसीता । आशीष लेहि सुमंगलपुनीता

मंगल गान आनन्द बधावा । नृप रनिवास सरस भरिछायो ।।

निजनिज वस्तु अमित मनभावत । दीन्ही नेग नेह सरसावत ।

लोकरीति कुलरिति कराई । देखि मातु सकुचत रघुराई ।।

सबहि मातु मनमोद अपारा । जनु पागि परमारथ सुखसारा

दो०-निगम नीति कुलरीति करि अरघ पावड़े देत ।

बधुन्ह सहित सुतपरछि सब, चली लिवाई निकेत।

लोकरीति ललनी करहि वर दुलहिन सकुचाहि ।

मोद बिनोद बिलोकि वड़ राम मनहि मुसुकाहि ।

चारि सिहासन सहज सुहाये । जनु मनोज निजहाथ बनाये ।।

तिन पर कुंवरि कुंअर बैठारे । सादर पाँय पुनीत पखारे ।।

धूप दीप नैवेद्य वेद विधि । पूजे बर दुलहिनि मंगल निधि ।।

बारहि बार आरती करहीं । व्यजन चारु चामर सिरढरही ।।

वस्तु अनेक निछावर होही । भरी प्रमोद मातु सब सोही ।।

समय सुहावन जानी माता । खोली सिय मुखपट झलकाता ।।

फैली शशि मुख सरिस जुन्हाई । पूरि प्रकाश भरेव अँगनाई ।

लखि मुख सरसत सासु सुहाई । प्रेमविवश तन दशा भुलाई ।

अनुपम सिय मुख सुंदर टीका । अमितचन्द्र लाजहिलगिफीका

सुनी लखी नहि सुन्दरताई । जनकलली जस अहैं सुहाई ।।

असमन गुनत कौशिला सासू । प्रेम उमगि चलि आयोआँसू ।।

मो कहँ रहा महा अभिमाना । मोर लाल सौंदर्य निधाना ।।
मिलहिन दुलहिन सुत अनुरूपा । त्रिभुवन मोहनश्याम अनूपा
सो अभिमान चूर हुइ गयऊ । सुत सो बधू अधिक भल भयऊ।
सब विधि सियाराम शुभजोरी । देति सुआनँद सिन्धु हिलोरी
सिय मुख सुन्दर अधिक लखाई । देखिलाल रहिहैं रसछाई ।।
दो०-यहि प्रकार मनमोद भरि माता करति विचार ।
मुख देखराई नेग महँ, काह देउँ सुखसार ।।

।। छन्द ।।

लखि सासु शोभा सीय मुख तन पुलक हिय हरषित भई ।
निज लाल छवि कहँ वारि कह धनि जननि जिन सियजई ।
मुख देखि चाहति नेग दिय कहुँ खोजि नहिं पावत भई ।
सत इन्द्र भूतिहुँ भूप की कण छुद्र सम मन गिन लई ।
गुरु नारि सो कह मोद भरि निज बधुहिं देऊँ अब कहा ।
मान सोच चाहति देन जेहि सो लगति मो कहँ लघुमहा ।
कह देबि सीतहिं राम दे मन महँ परम सुख छाइ के ।
सुनुमात कौशिल लाल कर हरषित सियहिं पकराय के ।।
दो०-रघुवर कर सिय हाँथ धरि, भई प्रसन्न महान ।
चिरंजीव जोरी जयति हरषित करति बखान ।।

।। दशरथ वशिष्ठ जी को लेकर रनिवास को जाना ।।

चलो नाथ मम संग रनिवासा । देहु दुलहिनिन सुन्दर बासा ।।
दो०-अस कहि भूप बशिष्ठ लै, गयो आसु रनिवास ।
मचि रह्यो जहँ आनन्द सुन्दर, हाँस विलास ।।

गुरु भूपति लखि उठी समाजा । आनि सिंहासन युगलदराजा
भीतर जाय हृदय हरषाये । पूत पतोहुन लखि सुख पाये ।।
नृपति मुदित तीनों पटरानी । बैठाये सिंहासन आनी ।।
चारिहुँ कुअँर चारि कुँवरानी । बैठायो आसन सुखमानी ।।
चलै चारु चामर चहुँओरा । छजत छत्र मनि खचित करोरा
रतन दीप फैली उजियारी । नाचि रहीं सन्मुख सुरनारी ।।
तेहि अवसर अपार आनंदा । केहि विधि बरणौ मैं मतिमंदा
गुरु उठि अर्घ्य पात्रकर लीन्हा । वेदमंत्र अभिमंत्रित कीन्हा ।।
किये वर वधु सविधि अभिषेका । अधिष्ठान करियथा बिवेका
दो०-बस्तु कर्म करि भवन को, गवन कियो गुरुगेह ।
भूप कहन लागे कथा, यथा विदेह सनेह ।।
यहि विधि कौशल्या मुदित, आई कोहबर द्वार ।
साँता शृंगी रिषि बड़े, द्वारे तेज अपार ।।
विविध नेग सांता लईं, पुनि शृंगीऋषि लीन्ह ।
कौशल्या प्रमुदित दई, छोर द्वार तब दीन्ह ।।
कोहबर गे दूलह सकल, सब दुलहिन तेहि साथ ।
रानीपुर नारी सहित, लखि बर दुलहि सनाथ ।।
लोकबेद विधि करि सकल, दुलहा दुलहि समेत ।
बैठी सकल समाज तहँ, बनत न उपमा देत ।।

।। न्योंतारी सबको बिदा करना ।।

उठे बसिष्ठ सहित महराजा । गये बाहर जहँ भूप दराजा ।।
बैठउ सभा भवन महँ जाई । राज समाज सहित छबिछाई ।।

न्योतारी भूपति सब आये। यथा योग सब कहँ बैठाये ॥
भूपति कियो सबन सतकारा। विनय किए अतिजन अगारा।
देन लगे तिन नृपहिं विदाई। रथ तुरंग मातंग मँगाई ॥
वरणत दशरथ सुयश नृपाला। निज निज देसन चले उताला
भूपति बोलि वराती लीन्हे। मान वसन मणि भूषण दीन्हे ॥
आयसुपाइ राखिउर रामहिं। मुदित गये सब निज-२ धामहिं
पुर नर नारि सकल पहिराये। घर घर वाजन लगे बधाये ॥
जाचक जन जाचहिं जोइ जोई। प्रमुदित राउ दिये सोइ सोई
सेवक सकल बजनियाँ नाना। पूरण किये दान सनमाना ॥
दो०-देहि अशीश जुहारि सब, गावहिं गुण गण गाथ।
तब गुरु भूसुर सहित गृह, गवन कीन्ह नरनाथ।
जो बशिष्ठ अनुशासन दीन्ही। लोक वेद विधि सादर कीन्हीं
भूसुर भीर देखि सब रानी। सादर उठी भाग बड़ जानी ॥
पायँ पखारि सकल अन्हवाये। पूजि भली विधि भूप जेवाये ॥
आदर दान प्रेम परितोषे। देत अशीश चले मन तोषे ॥
बहु विधि कीन्ह गाधि सुत पूजा। नाथ मोहि सम धन्यन दूजा
कीन्ह प्रशंशा भूपति भूरी। रानिन्ह सहित लीन्ह पग धूरी ॥
भीतर भवन दीन्ह वर वासू। मन जोगवत रह नृप रनिवासू।
पूजे गुरु पद कमल बहोरी। कीन्ह विनय उर प्रति न थोरी।
दो०-बधुन्ह समेत कुमार सब, रानिन्ह सहित महीश।
पुनि पुनि बंदत गुरु चरन, देत अशीष मुनीश ॥
बिनय कीन्ह उर अति अनुरागे। सुत सम्पदा राखि सब आगे

नेग माँगि मुनि नायक लीन्हा । आर्शीवाद बहुत विधि दीन्ही
उर धरि रामहिं सीय समेता । हरषि कीन्ह गुरु गवन निकेता
विप्र वधू सब भूप बोलाई । चेल चारु भूषण पहिराई ।।
बहुरि बुलाइसुवासिनि लीन्हीं । रुचिविचारि पहिरावनदीन्ही
नेगी नेग जोग सब लेहीं । रुचि अनुरुप भूप मनि देहीं ।।
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भली भाँति सनमाने ।।
देव देखि रघुवीर विवाहू । वरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू ।।
दो०-चले निसान बजाइ सुर,निजनिज पुर सुख पाइ ।
कहत परस्पर रामयश, प्रेम न हृदय समाइ ।।
सब विधि सबहिं समदि नरनाहू । रहा हृदय भरिपूर उछाहू ।
अस कहि भूपति उठे समाजा । लै बशिष्ठ गयो महराजा ।।
चलो नाथ मम संग रनिवासा । देहु दुलहिनि न सुन्दर बासा।
गुरु भूपति लखि उठी समाजा । आनि सिंहासन युगल दराजा
भयो विराजमान अवधेशा । गुरु बसिष्ठ तब दियो निदेशा ।।
भीतर जाय हृदय हरषाये । पूत पतोहन लखि सुख पाए ।।
नृपति मुदित तीनहुँ पटरानी । बैठायो सिंहासन आनी ।।
चारिउ कुँवर चारि कुँवरानी । बैठायो आसन सुखमानी ।।
लिए गोद करि मोद समेता । को कहि सकै भयो सुख जेता ।।
बधू सप्रेम गोद बैठारी । वार वार हिय हरषि दुलारी ।।
देखि समाज मुदित रनिवासू । सबके उर आनँद कियो बासू ।
कहेउ भूप जिमि भयउ विवाहू । सुनि-२ हरष होत सबकाहू।
जनकराज गुणशील बड़ाई । प्रीति रीति सम्पदा सुहाई ।।

बहुविधि भूपभाटजिमि बरनी। रानी सब प्रमुदित सुनिकरनी
कोउ नहिं जनक सरिस सत्कारी। मैंलीन्ही सव भुवननिहारी
गइ बरात सुख पाइ अनूपा। को कह जनक सत्कार सरूपा।।
सुनि सुनि सकल हर्षही रानी। कौशल्या बोली तब वानी।।
सुनहु नाथ मम मति अकुलानी। जिय संदेह न जाइ बखानी।
डरत रहे गवनत अँधियारी। कुंवरकौन विधि निशिचरमारी
थकत उठावत भाजन हाँथा। हर धनु किमि तोरयो रघुनाथा
बिहँसि भूप बोल्यो तब वानी। औरहुँ अचरज सुनु महरानी।
गौतम को आश्रम रह सूना। कौशिक गे लिवाय दोउ सूना।।
रही श्राप बस अन्तर्धाना। प्रगट भई पूज्यों विधि नाना।।
जनक नगर ते आवत माँही। मिले कोपि भृगुपति मुहि काँही
दो०-धनुष भंग अपराध गुनि, कीन्हों कोप अपार।
करन चहत संहार जनु, कंधहि धरे कुठार।।
तहाँ जाय यह लाल तुम्हारा। कोमल कठिनहुँ बचन उचारा
छीनी सरासन भृगु पति केरा। दीन्ही शांती कोप घनेरा।।
यह बशिष्ठ कौशिक प्रभुताई। ओर हेतु नहिं परे जनाई।।
सुनि रानी मन अचरज मानै। राखे कुँवर मेरे भगवानै।।
भूपति कह्यो सुनो सब रानी। पुत्र वधुन्ह प्राणहुँ प्रियमानी।।
नयन पलक सम राखहु नीके। दिनदिन दून उछाहन जीके।।
रंच विशंच होइ नहिं पावै। नेक विषम तिनके नहिं आवै।।
जनकराय अरु रानि सुनैना। चलत समैं मोसे कह बैना।।
सौपी तुमहि कुमारी चारी। तुमहि मातु पितु परहु निहारी

दून होत सुख नैहर केरे। तब मम बचन सत्य जे टेरे ।।
दो०-पलक पुतरि सम राखि नित, रामहुँ ते बड़ प्यार।
जोगवत छन छन प्रेम युत, करबि सकल संभार।।
केकय सुता कही करजोरी। होई यहि गिरा सति मोरी ।।
दो०-पुत्रवधू अरु पुत्र मम, सबके प्राण पियार।
औंघाते सुत नींद बस, सुनहु करहुँ जेवनारि।।
महा मृदुल यह जनक दुलारी। बैठि लखौ कबकी बिचारी ।।
पुनि सुकुमार कुमार तुम्हारे। इनने अवलौं असन निहारे।।
सबके सहित सनेह जिमावहु। रही नेग पर दिवस करावहु।
असकहि उठी सकल महरानी। पट नवीन चेरी बहु आनी ।।
भोजन बसन पहिरि महराजा। कुमर समेत महाछविछाजा।
रानिन पुत्र वधू लै आई। निज निज संग सकल बैठाई ।।
भूप संग बैठे सब भाई। होन लगी ज्योनार सुहाई ।।
मंगलगान करहिंबर भामिनी। भइ सुख मूल मवोहरजामिनि
अचय पान सब काहू पाये। स्रग सुगंध भूषित छबि छाए ।।
रामहिं दे खिरजायसु पाई। निज-२ भवन चले सिरनाई ।।
नृप सब भाँति सबै सनमानी। कहि मृदु बचन बुलाई रानी।
बधू लरिकनी पर घर आई। राखेउ नयन पलक की नाई ।।
दो०-लरिका श्रमित उनींद बस, शयन करावहु जाइ।
अस कहि गे विश्राम गृह, रामचरन चित लाइ।।
भूप बचन सुनि सहज सुहाये। जडित कनकमणि पंलग डसाये
सुभग सुरभि पय फेन समाना। कोमल कलित सुपेती नाना।।

उपबरहन बर बरनि न जाई । स्रग सुगंध मणि मन्दिरमाही
रतन दीप सुठि चारु चँदोबा । कहत न वनइ जान जेहिजोवा
सेज रुचिर रचि राम उठाये । प्रेम समेत पलँग पौढ़ाये ॥
आज्ञा पुनिपुनि भाइन्ह दीन्ही । निज-२ सेजसयन तिन्हकीन्ही
नींदहुँ बदन सोह सुठि लोना । मनहुँ साँझ सर सीरुह सोना ।
घर घर करहि जागरन नारी । देहिं परस्पर मंगल गारी ॥
पुरी विराजत राजत रजनी । रानी कहहिं विलोकहु सजनी।
सुन्दर बधुन्ह सासु लै सोई । फनिकन्ह जनु सिरमनिउरगोई ।
बधुन्ह सबहिं लै पौढी माता । महामोद मन पुलकित गाता ॥
उरमि लहि उर महँ मीलाई । पौढ़ी प्यार करी सुख पाई ॥
श्रुति कीरतिहिं दुलारत भई । किय विराम प्रमुदित कैकेई ॥
तिमि माँडविहिं सुमित्रा रानी । पौढ़ी सुख नहि जाइ नखानी।
सो सुख मोपे बरनि न जाई । जानहिं जननि न सकै वताई ॥
सो रजनी सब नगर मँझारी । अवध प्रजन को कियो सुखारी
घर घर बाजहि वाद्य बधाऊ । राम आगमन भयो उराऊ ॥
तेहि रजनी सोये नहिं कोऊ । रहयो जो भीतर बाहर सोऊ ॥
चारि दंड निशि रहिगै बाँकी ।लालशिषाधुनि भय सुखछाकी
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । अरुण चूड़ बर बोलन लागे ॥
सुप्रभात बाजन बर बाजे । जागे सबहिं मोद मन छाजे ॥
बंदि माग धन्हि गुनगन गाये । पुरजन द्वार जोहारन आये ॥
बंदि विप्र सुर गुरु पितु माता । पाइ अशीष मुदित सबभ्राता ।
जननिन्ह सादर बदन निहारे । भूपति संग द्वार पगु धारे ॥

दो०-कीन्ह सौच सब सहज सुचि, सरित पुनीत नहाइ ।
प्रात कृया करि तात पहिं, आये चारिउ भाइ ।।
महाभोज नृप कियो अगारा । पुर नर नारी प्रजा परिवारा ।।
आये नृप पद मनुज अनेका । आश्रमचारी चारवहु वरनका ।।
विविध भाँति भोजन सब कीन्हे । तृप्त होत बहुआशीष दीन्हे
दो०-गुरु बशिष्ठ कौशिक कृपया वामदेव जावाली ।
औरहु मुनिगण हुलसी हिय पुजे नृप सुखशाली ।।
धेनु वसन मणिगन उपहारा । दीन्हे नृपति अनेक प्रकारा ।।
दशरथराय भवन मधि आई । सबहि आपन नारि बुलाई ।।
कहवसि यहि गुणि प्रानन प्राना । सुखी करेहु सनेह विधाना ।
पितु घर छोरि श्वसुर घर आई । बालमोरि सुकुमारी सुहाई ।
पिय पितु मात वधुन प्यारी । पालन करेहु सनेह सुकुमारी ।।
सो पति किह्यो पतोहुन केरी । रंचनहि विसंच जेहि हेरी ।।
ये नव वधु विदेह दुलारी । नैन पुतरिसम करि रखवारी ।।
याम याम महँ सुधि सब लैके । किन्हौ सोपत सब सुख दैके ।।
दो०-पलक पुतरि सम राखि नित, रामहू ते बहु प्यार ।
योगवत छनछन प्रेम युत, करवि सकल सँभार ।।
भूप बिलोकि लिये उरलाई । बैठे हरषि रजायसु पाई ।।
देखि राम सब सभा जुड़ानी । लोचन लाभ अवधि अनुमानी।
पुनि वशिष्ठ मुनि कौशिक आये । सुभग आसनन्हि मुनिबैठाये
सुतन समेत पूजि पद लागे । निरखि राम दोउ गुरुअनुरागे।
कहहिं बसिष्ठ धर्म इतिहासा । सुनिहिं महीश सहितरनिवासा

मुनिमनअगमगाधीसुतकरनी । मुदितबशिष्ठविपुलबिधिवरनी
बोले बामदेव सब साँची । कीरति कलित लोकतिहुँ माँची ।
सुनि आनंद भयो सब काहू । रामलखन उर अधिक उछाहू।
दो०-मंगल मोद उछाह नित, जाहिं दिवस यहि भाँति ।
उमगी अवध आनंद भरि,अधिक अधिक अधिकाति ।
मंगल करेउ समय अनुकूला । सनमुख लसहिं दूलहिन दूला
राम श्याम तन मेघ समाना । तड़ित विनिन्दक सिय श्रीमाना
ब्याहवसन भूषण बहुभाती । साजे विराजहिं सहित सुभ्राता
दम्पति दिव्य सिर मौंर सुसोहैं । कज्जलयुत तहँकमल विमोहैं
सोहैं पनरथ रत्न जड़ाई । चरण अरुण जावक छबि छाई ।
कौशिल्यादिक दशरथ दारा । बैठी गोतनिन बृन्द मझारा ।।
देखहिं बधुवन छबि मधुराई । पियत दृगन मगनाहिं अघाई ।
यहि विधि उत्सव भयो महाना । अति आनन्द न जाइबखाना
नित नव उत्सव आनन्द मूला । होहि सरस सब सुर अनुकुला
शुभ दिन शुभ मुनि आयसु पाई । दशरथसहित रानिसुखछाई
रानी मनोवाछितशुभ कारनी । करि देव पूजानृप सहितरानी
बधुन सहित चारो सुत लीन्हे । आए राजभवन छबि छीने ।।
पूजन हित सिय प्यारी लाई । बैठारे सानुज रघुराई ।।
मंगल करेउसमय अनुकूला । सन्मुख लसहिं दुलहिन दूला ।
देखहिं बरहिं बधुन मधुराई । पियत दृगन मग नाहिं अघाई ।
तिय व्यवहार निपुण ढिगआनी । कह दूलह प्रतिकोमलवानी
कंगन जनक नन्दिनी केरो । छोरहु समय सुहावन हेरो ।।

दो०-कीन्हे तन को सकुच बस, मन सिय रूप लुभान।
छोरत लागे मृदुकरन, कंगन भयो सुहान ।।
सुदिन सोधि कल कंगन छोरे। मंगल मोद विनोद न थोरे ।।
बंकचितवन चितईरसमाहीं। कहिकै ईमिभुरि मुरि मुसुकाही
सुखी नृपति दारन मुद लूटी। हाँस सकल रघुवंश बधूटी ।।
विश्वामित्र चलन नित चहहीं। राम सप्रेम विनयवश रहहीं।
दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ। देखि सराह महामुनि राऊ ।।
माँगत विदा राउ अनुरागे। सुतन समेत ठाढ़ भे आगे ।।
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी। मैं सेवक समेत सुत नारी ।।
करब सदा लरिकन्ह पर छोहू। दरशन देत रहब मुनि मोहू ।।
अस कहि राउ सहित सुतरानी। परेउ चरन मुख आवनबानी
दीन्ह अशीष विप्र बहुभाँती। चले न प्रीति रीति कहि जाती
राम सप्रेम संग सब भाई। आयसु पाय फिर पहुँचाई ।।

कौशिल्याजी बधुन को आज्ञा देना पाक बनाने के लिये

दो०-रामरूप भूपति भगति, ब्याह उछाह अनन्द।
जात सराहत मनहिं मन, मुदित गाधिकल चन्द ।।

।। पाक रसोई बना ।।

सुदिनविलोकिकौशिल्यारानी। सीतहिंभगिनिनसहितबखानी
सब मिलि पाकशाल तुम जावहु। रंगनाथ के भोग बनावहु ।।
सकल बहिन युत चली सुजानी। गई सुपरम मनोहर ठानी।
सिय परिचर्या हित ह्वै राजी। अन्नपूरणा आनि बिराजी ।।
निज सामर्थहिं गुणबहु भारी। पाकसुविधा क्रिया विस्तारी।

युत अनुजनि सीया तहँ आनी। करन लगी ब्यंजन मुदसानी।
जबहि करत आरम्भ दिखाई। नहिंलखि परहिं कबै वनिजाई
केसरिया इमि भात बनाई। दाल स्वर्ण युत लगे सुहाई ॥
विविध सुगंध मेवा बहु भाँता। मिश्रित करि मीठी सुखदाता।
व्यंजन बहु तहँ लगे कतारा। केतिक गनि न सके अपारा ॥
अगनित चरनि अचार बनाये। मधुर के अलग थार सजाये ॥
भाँति भाँतिके साग रुचिकारी। षटरसमधुर स्वाद बहुकारी
पूरण पुरी कचौंरी बनाये। मधुरक लगल कतार सुहाये ॥
छरसचारि बिधिकिएकमनीया। नहिसंख्या तिनकी गणनीया
दो०-सकल पदारथ थार महँ, सची अनेकन थार।
राजभोग श्रीरंग को, अरपो कर अनुहार ॥
द्विज कुल जन सम्बन्ध सनेही। तोषे असन समय बैदेही ॥
पंगत महँ बैठे भूपाला। पुरजन युत छबि लगत विशाला ॥
भेद रहित व्यंजन सुपुनीता। परसे अगनित संयुत सीता ॥
अमित राज कन्या तेहि साथा। लिए करहिं सामाग्रिनहाथा।
लै लै तिन करते शुभ धारन। परसत निपुन किये सिंगारन ॥
परसन नेग सीय कहँ होई। करत विचार नृपति सुख भोई ॥
सिय अनुकूल न पावत राजा। यदपि इन्द्रसत सम्पति भ्राजा
बहुरिनृपतिनिजमनहिबिचारा। प्रबलमणीदिब्य जनकभुवारा
सोइ सिर भूषण सिय कहँहोई। मनहर दिव्य सुभग छबि सोइ
चूड़ामणि जेहि सम बिच नाहीं। लई इन्द्र ते जो मखमाहीं ॥
दुलहिन सुखहिंतुल्यनहिंचीन्ही। सकुचिसहितसोसियकहँदीन्ही

दो०-अस उर आनि सो कौशिला, दियो तुरंत बताइ ।
सुनतहिं सिय मन मुस्कनि, नेग लीन्ह हरषाय ।।
वार वार परसति हैं ब्यजन । अति रुचिकारी नइनइ भाँतिन
दई माण्डविहिं हिमकर माला । उर्मिलाहिं किंकिनी बिशाला
श्रुति कीरति कहँनूपुर नीके । सुवरण रचितजड़ित मणिठीके
सिय सँग नृपजा छबिवाना । तोषीं नृपति बधुन्ह समाना ।।
औरउ भूषण बसन सोहाना । दीन्हे मणि गन नृपति बिधाना
स्वाद एक ते यक सुखमानी । अमित स्वादनहिं सकियबखानी
पाये सबहीं दुगुन अहारा । अपरै रुचि न घटी तेहिं बारा ।।
नव रुचि होय मोद उपजाहीं । हृदय प्रमोद होत सब काहीं ।
पाय नृपति तबअचमन कीन्हा । मगनमोद छणछणहिं नवीना
दो०-चली बात मिथिलेन्द्र की, जस उन प्रेम जेमाय ।
जब लगि पायउ नृपति बर, वही वात सुखछाय ।।
कौशिल्यादि बहु नृपतिय ज्ञाता । करत भई भोजन यहि भाँता
सिय वय देखि अरु निपुनाई । करहिं बखान रानि मनभाई ।
सखा सखी दासी अरुदासा । लहेउ असन कर परम हुलासा ।।
सब बहिनिन युत भोजनकीन्ही । अचवन करि वीड़ासबलीन्ही
यहि विधि उत्सव भयो महाना । अतिआनन्द न जाय बखाना
सुन्दर सदन सहज सुखरासी । मधुर अनंत सुगंध सुभासी ।।
दिव्यअनंत गुनआकरसीता । कियेस्ववसप्रियपियहिसहपुनिता
राम सियाशुचि सुन्दर प्रीति । कहेन शारद शेष श्रुतिअमिती
छनसम समय जात दिन रैन । प्रीतिरीति रस सहज सुख दैना

सुनहु सखि भैया भलभावा। मन बुधि अगम नव रनत बुझना
प्राण-२ मानत जिय जीना। करहि दुलार सुभाव अतीवा ॥
मोविन भोजन कबहु न करही। देखि-२ मोहि आनंद भरही।
कहतकहत सियप्रेम विभोरी। श्रवत नयनजल सुधिहोननवेली
राम सिया कर नितनव प्यारा। कोकहि सकैको जानन हारा
नितभलिरहनिसबहिबसकीनी। पतिसुप्यारलहिसरस सुखिनी
दो०-दरस परस रघुलाल के, सिय सुख रुप लखाया।
तदपि विरह मिथिलान के, डूवत नित दिखाय ॥
सब गोतिनिन आशीषै देई। निज-२ महल गई सब कोई ॥
सियहिं व्याह घर जब ते आई। नितनव बजत अनन्दबधाई।
ऋधि सिधिवैभवबिपुल दिखाती। छाइ अवध सियसेवसुभाँती
सिय पग धरत अयोध्या केरा। भाग विभव नित बढ़त घनेरा
सास ससुर कहँ प्राणन प्यारी। सीता लगति अमित सुखकारी
सिय सुख रुचि रघुबर निजमानै। तैसहिं सिया भावहियआनै
दिब्यअनन्त गुणआकरसीता। किये स्वबस प्रिय पियहिंपुनीता
राम सिया सुचि सुन्दर प्रीती। कहैं कवि शारद शेष अमीती।
छन समसमय जात दिन रैना। प्रीति रीति रस रहज सुखैना
दो०-ताकी महिमा कहत महँ, सुख समृद्धि रस रूप।
कौन बिना अनुभव बके, अमित अनादि अनूप ॥

॥ चारो दूलह दुलहिनों को महल देना ॥

कनक भवन सीता कहँ देहू। माण्डवी को मणि मंदिर गेहू ॥
देहु उर्मिला को सुख बासू। सौरभ सदनहिं काह निवासू ॥

श्रुति कीरति कहुँ प्रीति विलासु। सीफिलित सदन सुदेह वासु

॥ छप्पय ॥

महरानी नृप बचन सुनत निज सखी बुलाई।
तृतिय उच्चता महल चतुर्दिशि योग लगाई॥
चारि महल में विबिध भाँति के पलँग डसाई।
तोषक उपबरन अनूप छबि बरनि न जाई॥
स्रग सुगन्ध अगनित विधी, मणि दीपक अगनित बरे।
मनहुँ मदन रति की भवन, सर्व सुभोग नितँ भरे॥
सब सवाँरि रानी समीप आई सो सहेली।
उठी सकल रनिवास फली मन की जनुबेलीं॥
दुलहा दुलहि लिवाय चली सब साज सजाई।
निज निज महलन गये मुदित मन चारो भाईं॥
अस कहि सिय हिय भाव भरी नयन वहावति नीर।
तुरत कौशिला गोद लै, दुलरावती धरि धीर॥

महा विभूति भूरि जिन माहीं। सपनेंहु सक्र लखेउ जो नाही।
शील स्वभाव सहजसुख सीता। सासू स्वसूर प्रतिभाव पुनीता
सीय चरित लखि नृपयूत रानी। आनँद मगन रहितमुदमानी
नेहर सूधि आवत मन माही। ढारति नयन प्रेम अवगाही॥
जननीजनक सूप्यार बिचारी। होती मगन विरह अतिभारी।
करि-२ सूरतिहिं ढारत आँसू। अति दुलार समझावहिं सासू।
कबहुँ सयन बिच सपनेहुँ देखी। मैया भनति अधीर बिशेषी।
लेहिं कौशिला हृदय लगाई। पुनि पुचूकारी देहिं सुताई॥

प्रिय पितुमातुबंधु अरु भाभी। प्यार सुरति सुइहिय कहँडाभी
दो०-सखिन्ह मध्य में बैठि नित, बरनत नैहर प्यार।
धनि धनि सीता लाड़िली, जनन हिये निजधार।
एक दिवश मिथिलेश किशोरी। भोजन करति सुधा रसबोरीं
करि दुलार सिय सासु पवाती। आई मैया शुधि कसकाती ।।
पूछति पुत्रि कहा तुहि भयऊ। देखि-२ मम मन दुख छयऊ ।।
कहति सीय मोहि गोद बिठाई। मातु पवावति रही सदाई ।।
जननी जनक सुदिब्य दुलारी। नित्य खेलावत अंक बिठारी।
सो सुख सालत हृदय हमारा। कबमिलिहैं मोंहि नैहर प्यारा
बहु पुचकारि धीर दै सीतहिं। निजकर दियो पवाय सुप्रीतहिं
भूप जानि जिय कहत कौशलहिं। बहू प्यारबहुकरेव मोदलहि
दो०-पितु पुर बिरह विलास जेहि, करहु जतन अनुसारि।
सिय सुख मो सुख जानि जिय, सेयहु पुतरि सम्हारि ।।
एकदिवस सियकनकभवनमहँ। सहरघुलाल राजतिचैननिजहँ
चहुदिशि अलिगण अनुपम राजै। सकल सजे सेवाशुभसाजै ।।
रिझवहिं युगल किशोर किशोरी। प्रेमपगी सुख सिन्धुहिलोरी
मैथिलप्रेम परमप्रिय चरिता। गावहि सखी महामुद भरिता
कहहु प्रिया निज दशा बखानी। कारण कवन करुण रससानी

।। कवित्त ।।

महरानी माथ सुधि कहि सदा सुहागिनी हो।
अचल अहिवात रहै तेरो तिहुलोक में ।।

चुचकारी धरी पोछी गोद में बैठारि अंक ।
बोली हमें विधिना फल दिन्हसु विशोक में ।।
इतनेहि मै आये लाल निरखि निहाल मातु ।
देखि अंक सिया रहै सकुचि थोक में ।।
कहत ठाम हमरों पे दखल करि लीन्ह ।
ओपै रहि बैठि हमहु तो बैठे जोक सौक में ।।
सुनिकै समाज सब मन में आनन्द होत ।
सौत सुख बाढ़यो महरानीजी के उर में ।।
लालकहि सुधी मांथ माता लै बैठारी गोद मोद भरे ।
देखि जोरी पुनि पुनि प्राण तरु रूप में ।।
एक गोद सिया एक गोद लालजी विराजे ।
याफल पाय नैन कहै ओर सुखधूर में ।।
गुर्रतिया पुरतिया महरानि सब कहै ।
ऐसो ऐ समाज ऐसो नाही तीहपुर लोक में ।।
पौढ़ा सखी सियाजु कौ सासु पै लिवाय जात ।
बुझयत दोउ कुलरिति सुख सव साज है ।।
आवत है माण्डबी अरु श्रुति कीर्ति उर मिलाहु ।
राज महल आये जुरि सकल समाज है ।।
अलिराज रीति पांय लागने सिखावै ।
साशु आशीश दै बुझै वहु निकेतो मिजाज है ।
शील की समूह सिया सकुचात सासु पास ।
सुनै सनै बोंले जैसे भारीवसी लाज है ।।

पितु पुर सुरति कहति बैदेही । बढ़त ब्यथा सुनु प्राण सनेही ।
जननि जनकमोहिंप्राणकी नाई । जोगवहिं सदा कृपालुगोसाई
दै धीरज पुनि प्रीतम बोले । प्रीति पगे निज बचन अमोले ।।
प्रियासुनहुमिथिलाजिमिप्यारी । आपुहिं अहैं मोहितिमिसारी
सासु ससुर शुचिभाव सुप्यारा । सुरतिकरत नहिं होयसम्हारा
अस लागत मोहिं जाय उड़ाऊ । सासु ससुर कहँ प्यारहिं पाऊ
दो०-सिद्धि कुँवरि शुचि प्रेम सुधि, कसक करै हिय मोहि ।
कबहुँ सो दिन आइहै, देखिहौ नयनन ताहिं ।।
बहुविधिसियपियसुमिरनकरही । आवैलक्ष्मीनिधि सोइकहहीं
दूत संत ब्राह्मण व्यौपारी । मिथिला होत अवध पगु धारी ।।
जानि राम निज निकट बुलाई । पूछहिं श्वसुर पुरी कुशलाई।
दो०-कुँवर दरश चष चाह बहु, छिन छिन छावत जाय ।
भये विरह दशरथ कुँवर, मनही मन अकुलाय ।।
रसिक राम हिय जानिबिहाला । गुरु निदेश दशरथ महिपाला
चतुर दूत दै पत्र अनूपा । भाव भरा रस रीति स्वरूपा ।।
पठयो तिरहुत जनक ठिकाना । कुँवर बुलावन हेतु सुजाना ।।

।। श्रीसुनैना अम्बाजी का प्रेम ।।

जाके कोख सुता भइ सीता । जगत जननि छबि छई पुनीता ।
प्रेम सनी सो मातु सुनैना । लली विरह कशकत उर ऐना ।।
कबहुँ सबेर होत सिय माता । सियहिं जगावति हियहुलसाता
पुत्रि पलँग जब पावत नाहीं । सिया सिया कहि रुदति लहाँहीं
कबहू सखिन सँगबैठ सुनैना । सिय सुभाग वरणति सुखअयना

सब सुख सदन श्याम पतिपाई । अमित तेज गुण सुन्दरताई ।।
भई भाग्यकी सबविधिअधिका । लालप्रेम प्रियनितनवलधिका
चक्रवर्ति नृप श्वसुर सिया के । होहि लाज लखि शचीपियाके
धाम अयोध्या शुचि ससुरारी । प्रेम प्रवाहिन सरयू धारी ।।
कबहुँ कहति सिय सकुच स्वरूपा । निज दुखकहीन चाहअनूपा
को नित लाल कहँ जाय जगाई । गावत लोरी प्यार पवाई ।।
को तेहि दइहै समय कलेवा । प्रेम पगे सरसाइ सुसेवा ।।
को नहवाय अनूप सिगारी । खेलन साज कौन सजि सारी ।।
लाल अवधन्य मिथिला राजै । कहुकहु जाति भूल भ्रम भ्राजै
कुँवरहि कबहु कहति अतुराई । भ्रातन युत द्रुत लाल बुलाई।
लखहु करन कलेवा काजा । बेर भई बड़ि थार सु साजा ।।
कहत कुंवर सुनुरी मम मइया । अवध गये सियराम भुलइया
दो०-कोमल पलँग डसाय नित,करत तत्र पुचकार ।
सीतहिं शयन करावई,होवत सभी खभार ।
भूप सने सियराम वियोगा । भाव समधि मगन रस भोगा ।।
जेवन जबहिं जाहिं जहँ राजा । बोलत सियहिं जिवावनकाजा
कोउ कह सीता अवध सिधारी । सुनत सूख बड़ विरहविदारी
तैसहिं सुरति राम के आवत । भूलि अपनयौं विरह समावत।।
दो०-अम्ब विरह सिय श्याम की, रटति नाम यश पाँति ।
राम सिया सुख समुझि शुचि,कहुँ कहु धीरज शाँति ।
तैसेहि सुरति लाल के आवत । भुलि अपनपौ विरह समावत
कबहुँ मानत मिथिला मधि राम । रहहि सदानहि गयेस्वधाम

विरह सनी श्रीमिथिला धरती । नित्य-२ नयनन जलढरती ।
कोमल कलित सुखद रसभीगी । अबलौ दिखत प्रेमजल पीगी
सुरति करति सिय समय विकाई । अवहुदरार होतजनुभाई ।।
दो०-लता बृक्ष बड़भाग जे, लहे परश सिय राम ।
मुरझि मुरझि महि सूखहीं, ग्रसे विरह रुजधाम ।।
छ०-पशु योनि देखे सीय निज शुक मोर मैंन खगावली ।
बहु नैन नित्यहि अश्रु अति, बहुविरह बोल वचावली ।
सियराम उचरहि शोकभरि, नहि बनत वरणत सो दशा ।
सुनि देखि मैथिल आतुरन, अतिसय पगे विरहहि रसा ।।

।। श्रीमिथिलाजी सखी बिरह वर्णन ।।

मिथिला चरित सुनहु अब आगे । मैथिल यथा प्रेम रस पागे ।
जनकपुरी सब नर अरु नारी । रहहि वियोग सने हियभारी ।
अहनिशि पगे प्रेम के भावा । चित्त भयो लय रामहि पावा ।।
घरघर छनछन इकइक प्राणी । कहहिसुनहिसिय मधुरकहानीं
एक सखी कह सुनु सखी मोरी । श्याम बनाय गयो मोहि बैरी
जालिम जुलुफ नागिनी पाली । निठुर कटाय निबुकगो आली
कहै एक सखि सततब बयना । मोहन मधुर रसिक रस दयना
केश पाँस दृढ़ फाँसि किशोरा । गयो अबध लै सखि मन मोरा
कही एक मुस्क्यान रसीली । बशीकरण की कोमल कीली ।
लखिमम मुखहि मधुरमुस्काई । वशी कियो अब अनत नजाई
दुसर कही हँसनि रस घोली । श्याम पियाय लेय बिनमोली ।
दुलहा रसिक रसहि लै आलीं । गयो अबध हँसिमोहनी डाली

एक कही सखि चितवनि मीठी। तिरछि मधुर मनोहरदीठी।
दो०-बोली अपर सुप्रेम भरि विह्वल सी अकुलाय।
रसिक राम अंखियान की बात कही नहीं जाय॥
चितवनि तीर करेजेहि मारी। करै चोट रसमई शिकारी॥
मधुर तकनि डारेव सखि टोना। कीन्हे स्ववससबहिं महँमौना
सोहन श्याम सलोने नैना। बड़े-बड़े विशद मदीले पैना॥
अपर कहैं हलकति मनिनासा। पियै अधर रसनित्य सुवासा।
एक कहै सखि सुनहु अलोला। कुण्डल हलनि सुसोह कपोला
चिक्कन सुखद सुकोमल ऐना। गोदिखाय रसिया रस दैना॥
दो०-कवहुँ भाग खुलिहैं अरी, बनि कुण्डल बर राम।
परसि चूमि सुख पाइहैं, मिथिलापुर की बाम॥
एक कहि सखि मौर ललामा। रघुवर धरे माथ अभिरामा॥
मोहिलियोसबहिनबनिबनरा। मंत्र कियोधरि मणिमयसिहरा
एक कहै बड़भागी हारा। लपट रामउर पावतप्यारा॥
हिय हुलास सखि होय महानी। बनि सुहार रहतेउ लपटानी
अपर कहै कटि केहरि रामा। शोभनीय सुख करन ललामा।
कहा एक सखि छनि-२ नूपुर। पायन लगीं रहै करमृदु सुर॥
असमन होत मुदरीबनी प्यारी। पानि परसलहि रहौं सुखारी
कोउकह सखिसतश्यामसुहावन। धरिपीताम्बरमनहिंलुभावन
दो०-सुनत अपर बोलत भई, हृदय होत अति चाह।
बनि पीताम्बर लिपटि तन लेवहिं सुख सियनाह।
मिथिलाहिअवधसहित तिहुलोका। दुलहराम प्रथमअवलोका

समय पाई कछु सबहु कीन्ही । वीरी गंध माल शुभ दीन्ही ।।
हंस निवक्त राम सुहाई । दुलह राम कृपाल अधिकाई ।।
सब विधि भाग पुज रसबोरी । अहैं नित्य मिथिलेश किशोरी
दो०-प्रथम युगल झँकी सखी, रसमय रसहिं हलोर ।
मिथिलहि देखे लोग सब आनन्द अतिहि बिभोर ।
प्रेम पुरी यह मिथिला नगरी । लौटे मुक्ति जहाँ प्रति डगरी ।।
तदपि सखी रघुवर घनश्यामा । मिथिलहि पगे भूलतन धामा
सियहु केर ममता अधिकानी । पुरतृन मानहि प्राण समानी ।।
निमिकुल पूषण भूपसुनैना । यशवरणहि सुर मुनिदिन रैना ।।
तिनके भाग्य कहौ किमि गाई । राम सिया निज अंक बिठाई।
किन्हे प्यार विविध विधि तेरे । प्रेम भाव भरि सरस सुखेरे ।।
प्रीती पगे तिन श्यामहु श्यामा । रहहिं नित मिथिल अठयामा
ताते विरह विकल नृप नैना । ललचत लखन भरे जल अयना
कोहबर हँसिहँसायसखितिनही । बहुविधि छकीछकायो उनही
जब तब जाय राज गृह माही । कीनही बात मधुर तिनपाही ।
बारबार मिथिला मधि अइहैं । कुंअर प्रेम रह अवध न पइहै ।
जनक नेह वश राम वोलाहीं । सहित सीय सुख मूरि सोहाही।
सीय कृपा सबविधि सब पाई । भई भाग भालन अमिताई ।।
करि सम्बन्ध अचल सिय प्यारी । दीन्ह डुबायसवहिं रसधारी
तिनकी कृपा राम की आसू। लगती सारी सरहज सासू ।।
कहैं एक सखि मिथिला धन्या । विहरति जहाँ सिया सुरमन्या
बाल केलि जहँ कीन्ह सुभाँती । उमा रमा शारद ललचाती ।।

सहि शक्ति शिव अज सनकादि । लोजधूरि ललिहि गुनिमादी
वस्क बिरह दुखसहिहोआली । निज प्रतिकुल न चलिहोआली
नीके रहैं अवध सखि दोउ । नीको सुनै नीक पुनि जोउ ।।

।। जनकजी का विरह ।।

कहौं जनक कर प्रेम बखानी । सहित सुनैना सुनु सुखमानी ।।
कहु मानत मिथिला मधिरामा । रहहि सदा नहिगये स्वधामा
दो०-नयन नीर हिय तपत नृप, मधुरि होत अधीर ।
तदपि धैर्य हित स्वजन के भोजन करत प्रवीर ।।
मातु सुनैना दशा दुखानी । सुनहु विरह के सिन्धु समानी ।।
प्राकृत मातु प्राकृति बाला । पति गृह जात विरह उरशाला ।
जनित वियोग दुःख मतिमोई । पगली बनै रात दिन रोई ।।
तासु अकर्षण लाल लोभायो । आये मिथिलहि बिना बुलायो
किन्ही विविध भाँति भलि लीला । मनहर बनराबनेउरसीला

श्रीमाताजी के प्रेम वर्णन

अब लौ ललि किशोरी मोरी । भोजन कियो नही बड़ी मोरीं
तुम्हरे साथ पाय सुख मानै । ताते लाल ललिहिं अब जानै ।।
भ्रात भगिनि पावहु सुख छाई । बैठि जिवावहु जीव जुड़ाई ।।
दो०-कछुक कहति कहि जात कछु करति औंर करिजाय ।
सुनती और सुनति कछुक, लखति और लखि पाय ।।
कबहु सबेर होत सिय माता । सियहि जगावति हिय हुलसाता
पुत्रि पलंग जब पावत नाहीं । सिया सिया कहि रुदति तहाँही
कबहुँ सखिन संगबैठ सुनैना । सियसुभाग वरराति सुखअयना

सब सुख सदन श्यामपति पाई । अमित तेजगुण सुँदर ताई ॥
भइ भाग्यकीसबविधिअधिका । रामप्रेम प्रिय नितनवलधिका
चक्रवर्ति नृप श्वसुर सिया के । होहिं लाज लखि शची पियाके
को नित तेहि कहँजाय जगाई । गावत लोरी प्यारी पवाई ॥
को तेहि दइहें समय कलेवा । प्रेम पगे सरसाइ सुसेवा ॥
को नहवाय अनूप सिगारी । खेलन साज कौन सजि सारी ॥
राम अवध या मिथिला राजै । कहू कहू जाति भूलि भ्रमभाजै
कुअँरहि कबहु कहति अतुराई । भ्रातन युत द्रुत राम बुलाई ।
लावहु करन कलेउ काजा । वेर भइ बड़ थार सो साजा ॥
दो०-अम्ब बिरह सिय श्याम की रटति नाम यश पाँति ।
राम सिया सुख समुझि सुचि कहुँकहुँ धीरज शांति ॥
ताते सुनहु सखि सतवाता । मिथिला गुनहु सकल सुखदाता ।
रहै वसत सिय राम सुभाये । रखिहै निज रस रहसि दवाये ॥
प्रभु रस सदा रँगे सब रहिहौ । तदराम सिय निकटहि रहिहै।
दो०-यहि प्रकार मिथिलापुरी, विरह सनि सब बाम ।
नित्यहिं ढ़ारत नयन जल, करहि सुरत अठोयाम ॥
धनि धनि खगमृग विरह रस, पगे रहत दिन रात ।
राम राम सिय सिय रटत, कहत देव पुलकात ॥
सीय राममय चलत सुश्वासा । हृदय बनेउ सिय रघुवरवासा
सुमिरन चिंतन मनन महाई । निदिध्यासन दूलह रघुराई ॥
सीयराम महँ लीन सुप्रज्ञा । अहं गयो नशि प्रीति सुतज्ञा ॥

दो०-प्रकृति सरिस नित कर्म करि, सुमिरत सीताराम ।
भाव भरे गुण गान करि, दरश आश अठयाम ।।

॥ सखि प्रेम ॥

विरह सने इक एकहिं भेटी । वरणत रामचरित दुख मेटी ।।
यहि बिधि प्रेम पगे पुरवासी । दंपति दशा कहौं किमि भाषी।
भइया लक्ष्मीनिधि को भाऊ । सिद्धी भाभी केर स्वभाऊ ।।
सिय पिय प्रेम पगे सबकोऊ । लली लाल दरशन कब होऊ ।।

दशरथजी पत्रिका मिथिला में जाना

दूत पत्र अवधहि से लाये । दिये भूप कर शोक मिटाये ।।
अति आनंद न जाय बखाना । पत्र बाँचि सुनि सब सुखमाना
छेम कुशल बाँची नर नाहू । गये रनिवास विशेष उछाहू ।।
सकल पत्र बाँचत तब भयऊ । सुनि रनिवास महासुखलयऊ ।
छेम कुशल सब भाँति सोहानी । पुर परिवार भूप अरु रानी ।
भ्रात सखनयुत रघुबर श्यामा । सखीभगिनि सहसीय ललामा
आशिश प्यार कियो मनमोंदी । चाहत लखन बिठाय स्वगोदी
सब सिय सासहु प्यार सुभाषा । चहत दरश तब नयननचाखा

॥ जनकजी पत्रीका ॥

शुभ समचार सदैव उत्तके चहिये ईत अनुक्रोस सो ।
जब जब पठावत पत्र पावत मोद बड़तब तोष सो ।।
दो०-मम दरसन की कामना, प्रिय कर तब मात ।
सुनिके मम जननिह,प्रति विनय लखि बहु भात ।।

दो०-निमिकुल कन्या बधुन में, बैठव प्रमुदित पास ।
होहै हरदम नये नये, दिन प्रति वाक बिलास ।।

तुम प्रति प्यारी पित मानही । विनय लिखि बहु भातही ।।
जब कबहु ईश्वर महिपाला । विनती मान करहि कृपाला ।।
तब दोउ लक्ष्मीनिधि भ्राता । आवहि तुमहि लिवावन पाता
पितु अवध की वात चलाई । समाचार सब कहेव सुहाई ।।
दीन्ह पत्रिका कहि सिय केरी । पठय अवधनाथ हिय हेरी ।।
दोउ कहे अवध वस सिया । भेजी प्रेम पत्र निज हिया ।।
पितु निकट पाति प्रीय आई । अवध नृपति कर कृपा पठाई ।
आये अब दै दरसन भैया । होवहुँ आखिन प्यास बुझैया ।।
मोहि लिवाय जनकपुर जाई । मातु पिता भाभी दिखलाई ।।

दो०-आपुन कहि सुधि पहिल जो, होय सत्य वह नाथ ।
चलहु दुहिता मिथिला हितै, बने रहो चिरसाथ ।।

सीता सो हँसि बोले पिया, अवसि जाहु तुम जनकपुर
कछु दिन बीते आई हो, करन अभिलाष पुर ।।
पहुँची मिथिला जाई,परमानन्द प्रफुलित बदन ।
दई सब बात जनाई, अवधपुरी सुख सवन ।।
बाड़ी सुनयना प्रीति, सिया आगवन सुनतपुनी ।
करन लगि सब रीति,लक्ष्मीनिधि के विदा की ।।

आय शीघ्र दै दरसन भइया । होवहु आंखिन प्यास बुझैया ।।
मोहि लिवाय जनकपुर जाई । मातु पिता भाभी दिखराई ।।
मोरी भाभी मोहिं कस भूली । तब दरशन को मो मनफुली ।

सिद्धि सुनत प्रेमाकुल होई। विरह सनी सिसकति दुख मोई।
कहत सुनत सिय केर सुभाऊ। दम्पति मगन सुधी नहिं काऊ।
लाल दशा कहि दशरथ राऊ। दीन्हे पत्रहिं माहि जनाऊ॥
लक्ष्मीनिधि भयेप्रेम विहाला। सिय-२ कहसिसकत बहुकाला
पुत्र दशा लखि भइ अतिदीना। पतिसन बोली मातु प्रवीना।
नाथ कुवर सिय राम वियोगू। इनकी दशा देखि सब लोगू॥
याते आयशु देय सुखारी। जान अवध की करै तयारी॥
सियहिं बुलावन समयहुँ आयो। जाहि कुवर अबमो मनभायो
कुवर गये सिय आनँद मानी। लहिहैं सुख श्यामहुँ सुखखानी।
बोले जनक प्रिया सुनि लेहू। मोरे हृदय विचार सुयेहू॥
पहुचे मिथिला जाये, परमानन्द प्रफुली बदन।
दई सब समाचार सुनाय, अवधपुरि सुख सदन की।
सुनि बाढ़ी अति प्रीत सुनैनहि, सिया आगवन की।
करन लगी सब रीति, लक्ष्मीनिधि को विदा की।
अवध नृपति की पाती पेखी। तब ते करौ बिचार बिशेषी॥
ताते कुवर अवशि उत जाबै। सीय लाय मोहिं दरश करावै।
राउ बचन सुनि हरषी रानी। यथा मोरनी बारिद बानी॥
कुवरहिं भयो अनन्द अपारा। प्रफुलित बदन कहै को पारा॥
मुख प्रसन्न नव पंकज फूला। उर प्रमोद लहि पितु अनुकूला।
कुअँरहुँ मातु पिता पद बन्दी। आये अपने भवन अनंदी॥
जनक सुवन बोले सुनु प्यारी। पितु आयसु पालौ सुखकारी।
परसो दिवस अवधपुरजैहौ। सियहिलिवाय कछुक दिनअइहौ

दो०-सब विधि भाग विभूति सुख, मोहिं पिता सब दीन ।
अवध जान आयसु दई, आनँद होइहौ लीन ।।
भ्रात सखन्ह पुनि लियो बुलाई । करि सुप्यार आसन बैठाई ।
श्रवण सुखद बोंल मृदुवानी । कालि अवध गमनब सतजानी ।
सुनत कुवर के बैन सुहाए । हरषित बदन सखन मनभाए ।
सखा भ्रात सब शीश नवाई । गए सदन सुमिरत सियभाई ।
नृप बिदेह मंत्री बुलवाए । आयसु दिये हर्षहिय छाए ।।
कालि कुमार अवधपुर जैहैं । सीय बुलाय कछुक दिन अइहैं।
दो०-करहिं तैयारी मंत्री बर, हरषि हृदय अनुमानि ।
उचित सुखद जो जो रुचै, अहहु दक्ष मतिमान ।
सचिब रजायसु धरि सिरमाहीं । गयो तयारी हेतु उमाही ।
बहुरि कुमारहिं भूप बोलायो । अतिसनेह बर वचन सुनायो
भूपहि मोर प्रणाम सुनाई । यह पाती पुनि दियहु थमाई ।।
विनती विविध सुनाय सुखारी । लायहु तिन्है संग सत्कारी ।
चलति वार वियजुत सुनाय कहिहौ कौंसल्याजी सो प्रीति ।
बहुत दिनविति सिया बदन विलोकी नाही रहत बिरहछाई
अज्ञा जो पावो तो लक्ष्मीनिधि जात सीता आवै सुखामई ।
कौशिल्यादिराम महतारिन । नित्यप्रणाम कहेउ सुखसारिन
भ्रातन्ह सहित लाल कहँप्यारा । कहेउ सुमंगल मोद दुलारा
भगनिन्हसह सीतहि समुझाई । अमित प्यारकहियो सरसाई
दो०-भेट विविध विधि सबहिं कहँ, यथा योग हर्षाय ।
सौपेउ अह मम रहित ह्वै,विनती मधुर सुनाय ।।

पितु आयसु सिर राखि कुवरवर । आये मातु समीप सुखदतर
राम समीप जाहुँ सुख छैंया । सीय देखि हरषी नित भैया ।।
राम मातु कहँ कहेव प्रणामा । मोर ओर करि विनय ललामा
जेहि विधिसियासुखीरहेनित्या । सोइ करणीय परै चितचित्या
नरपति सो सुत मोर सुनमना । कहेउ प्रेम युतबचन करमना
प्राण सुखद सीतहिं तुम लाला । कहेउ मोर जसदशा विहाला
बार-बार मोहिं सुरति कराई । कहेउ प्यार जननी निठुराई ।।
भगिनिन्ह सह सब सखियनकाहीं । प्यार भेटबरणेउ सुखमाहीं
दो०-चारहुँ लालन कहँ कहेउ, अमित प्यार पुनि तात ।
अँखिया प्यासी दरस बिन,अहनिशि अति अकुलात ।
सिद्धि कुवरि सुचि समयहिं पाई । पतिसन बोली बात सुहाई
नाथ लाड़ली मोर सुनन्दहिं । कहिहौमिलन प्रणाम अनन्दहिं
सिय बिन दशामोर जस होई । कहिहौ तस पिय हृदय जोई ।
सीयावर सोकुशल हमारी । मिलन प्रणाम विनयबर प्यारी
दरसप्यास अँखिया अकुलानी । कहियो समयपाइ हितसानी
सीय सासु कहँ विनय विभोरी । कहियोप्रणाम दोउकरजोरी
लाल लड़िली वेगि बुलाई । दइहै दिव्य दरश सुखदाई ।।
भेट विविध विधिसब कहँ दीजै । कृपा जाचना मो दिशिकीजै
दो०-एहि विधि मधुर विनीत वर, श्रीसिधि कहत संदेश ।
सीय श्याम सुचि सुरति सनि, भूली ज्ञान अशेष ।।
जननि जनक पदनायो माथा । माँगी विदा जोरि जुग हाथा ।
दै अशीश मिथिलेश सुनैना । रक्षामंत्र पढ़े उर चैना ।।

कछुक पवाय कहेउ अब जाहू । अवधनगर सुत सहित उछाहूं।
सुनि कुमार पद बंदन कीना । सिद्धि सदन गे प्रेम प्रवीना ।।
गये कुवर गुरु गेह वहोरी । करि प्रणाम बोले करजोरी ।।
आयसु होय नाथ अव मोही । लाल दरशहित जाँव सुसोही ।
कहेउ जाहु सुत सत सुख पागे । सुनि कुमार अतिशय अनुरागे
सकल द्विजन कहँ शीश नवाई । सुमिरि हृदय सियरामगोसाई
दो०-दिव्य रथहिं राजे मुदित, श्रीनिमिबंश कुमार ।
दुन्दुभि धुनि अकाशते, झरहिं सुपुष्प अपार ।।
लक्ष्मीनिधि अरु श्रीनिधी, धृत ब्रत औ देवदान ।
आज्ञापार पुनि सेवपर, बंश प्रवीण सुजान ।।
संग अनुज सव सखा सुखारी । सेवक सचिव सुवेष सम्हारी ।
सेनप कछुक सेन चहु भाँती । लै संग चल्यो हृदय हरषाती ।।
कहहि नारि नर इक इकयाही । लक्ष्मीनिधिहि देखि मगमाही
पये कुमार मिथिलेश दुलारी । रानि सुनैना मातु अधारा ।।
सिया भ्रात रघुनन्दन शाला । सुभग शरीर भुवि भूषणजाला
जातलिवावनभगिनि श्वभामा । दशरथपुरी अवधदि विधामा
सुनि-२ हरषहि मग नर नारी । देखि कुंअर कहँ होहि सुखारी
यहि विधि चले जात मगमाही । मध्यमध्यवास पहुचे अवधही

श्रीकिशोरीजी सखियन वार्ता

जब ते गई लिखी सिय पाती । भई खुशी सो सुनो जेहि भाँती
निज आगे सिय सखियन माही। कहति सुहृदय भाव प्रगटाहीं
चलियत अबनिमिपुर कहँ आली । आयो वरषा ऋतुघनमाली

सावन परम सुहावन धन्या । सबके पिता बोलावै कन्या ॥
पिता विनय कौशलपतिमानी । तेहिअवधि कर दिननियरानी
धरहु धीर लक्ष्मीनिधि भ्राता । आवत होहिं पथ महँ ज्ञाता ॥
जे तुमसब राजन सुकुमारी । उर्मिलादि मोहिंअधिक पियारी
सदा सुशील वती सुखदाई । जाहुँ नही मैं तिनहि बिहाई ॥
मेरो सुख आश्रिय निरधारी । बुलाववहिं सुचि जननि हमारी
पाँच लक्ष कन्यन के दाना । मोहिं निमित्त किये तात सुजाना
विदा कीन्ह मम संगहिं काहीं । चलिहैं मम सँग सुखयुत माही
दो०-जैसी अवध को आइ सब, त्यों मिथिला सब जाहि ।
चलिहै साथ प्रमोद युत, आनँद मो हित ताही ॥

श्री लक्ष्मीनिधि का आगमन

यथा योग निज रुचि अनुसारी । बसि पहुँचेसब अवध सुखारी
दई खबर नृप कँ कर वन्दन । आये जनक महीपति नन्दन ॥
शील निधान राम पहँ जाहूं । करहु निवेदन मम बपु आहा ॥
आये इतै बिदेह दुलारे । नयन अतिथि उनहूं सम प्यारे ॥
गए चहिय सानुज तिन पासा । भेट करहिं स्वागत सहुलासा ।
उचित यथा लालसा समेता । लै आवहु तिनराज निकेता ॥
दो०-पिता मुखहिं आदेश सुनि, गये राम सभ्रात ।
प्रिये परस्पर मिलन हित,वरणत प्रीति दिखात ॥
संग अनन्त चमू सुख छायो । राम राज मारग होय आयो ॥
गजहिं चढ़े मनमोद अपारा । सहित समाज मिलन पगुधारा ।
मध्यमहा मतंग असवारा । सोहैं राजनन्दन सुकुमारा ॥

दक्षिण राम लखन श्रीमाना। बाम भरत शत्रुहन सुजाना ।।
चमर चारु ढोरत अति राजे। उमगे पुरजन दरशन काजे ।।
रघुवंशिन के तनय अनंता । उज्वल छत्र लिए छबिवंता ।।
धामन जाय चढ़ी पिकबैनी । कहैं लषहु सिय पतिहिं सुनैनी ।
चहल पहल बाजन सुनिकाना। श्रवणसुखद आवत प्रियजाना
श्याम भाम मन हरन कुमारे। लखि लखि होत सबहि सुखारे
जनक सुवन रघुनन्दन दोउ। जात वतात स्याल बहनोई ।।
सियके योग भ्रात येइ अहही। रुपशील गुण प्रेम अथाहही ।।
श्याम भाम की सुन्दर जोरी। युग युग जीय सखि रुचिमोरी।
गजहिंचढ़े मनमोदबढ़ावत । सहित समाज मिलन मोहिआवत
धाय धरेउ निमि राजकुमारा। रामहिं मिलेउ कहै को पारा ।।
राम लखन पुनि मिले कुमारा। मानि राम समभाव अपारा ।
यथा योग सबहिंन सन भेटे । पुलकि पुलकि प्रिय प्रेम लपेटे ।
दो०-मिथिलापुर बासी सकल, भेटे राम सुजान ।
सहित भ्रात पुरजन मिलि, प्रमुदित होइ रसखान ।।
मिलन परस्पर शुचि सुखदाई । मिथिला अवधहिं भई सोहाई
कहहिं कुवर अपनी कुशलाता। रानि राय सब हर्षितगाता।
मिथिलापुरी सहज सुखधामा । हैं तेहि वासी सहित अरामा ।
कुवर कहे सुनु प्राण पियारे । आप कुशलता सदा सुखारे ।।
चलहु अवध शत्रुँजय ठाढ़ो । गजन शिरोमणि शोभा बाढ़ो ।।
असकहि पकरि कुँवर करकंजा। चले लिवाय प्रीति रस रंजा
गज सोभा कछु बरणि न जाई। श्याल भाम जेहि चढ़े सुहाई

छत्र चवँरसिर शोभासुलहरत। युगलकिशोरदिब्यछबिछहरत
युगल कुंवर की अनुपम झाँकी। श्यामगौर मनहरण प्रभाकी।
दो०-यहि विधि पवमानंद पगि, अवधपुरी प्रियवाम।
बरसहिं सुमन सुमोदभरि, छाइ सुप्रेम अकाम ॥
पहुचे राजभवन के द्वारे। परम सुशोभित कह को पारे ॥
उतरि राम अरु जनक कुमारा। भाइन भृत्यन सहित उदारा
चले मिलन दशरथ महराजहिं। पाँवरे परे सुखद मन भ्राजहिं
सानुज राम भूप पद बंदे। लहि आशिष अति प्यारे अनन्दे।
कुंवर जाय चरनन्ह सिरनाए। लिये उठाय हृदय महँ लाये ॥
भूपति पगे प्रेम रस धारी। लीन्हें कुंवर उठाय सम्हारी ॥
हृदय लाइ सुख भयउ अपारा। कीन्ह प्यार वहु भाँति दुलारा
दो०-सभा सदन शोभा अतुल, कलित विपुल भूपाल।
भयो सभागम शील लख, सबहुँ भे मोद निहाल।
कुंवरहिं लीन्ह अंक बैठाई। बारबार निज हृदय लगाई ॥
बहुरि धीर धरि दशरथ राई। पूछी कुशल विदेह भलाई ॥
जासु कुशल पूछहु नर नाथा। सबविधि कुशल रहै तेहिसाथा
राउर जबते भयो पयाना। मिथिला दशा न जाय बखाना।
पितु तब पद प्रणाम बहु कीन्हा। विनतीं किए जोसुनहुप्रवीना
भाइन्ह सहित राम कहँप्यारा। योगिन्ह दिये वियोग सम्हारा
सीता प्राण सजीवन मूरी। ता बिनु स्वाँस चलैं नहिं पूरी ॥
सचिवसहितसिगरे रघुवंशीन। तातप्रनाम सहित निमिवंशीन
कहौ कहा अब कुशल भलाई। दरस प्यास सबहि अकुलाई ॥

दो०-स्वाँस सुहागिन स्वार्थ निज चहत रहूत अठयाम ।
ताते आवत जात नित, रटति रहति सियराम ।।
जनक सुवन पुनि वचन मृदु, शीशनाइ करजोरि।
वोले सब कहँ देत सुख, सुनहिं विनय प्रभु मोरि ।

भेजी भेट तात तब चरणा । स्वीकृत करहि दासगुनि शरणा ।
दशरथ कहे काह नहिं पाए । पुनि-२ जनक सुभेट पठाए ।।
धनि धनि वैभव अमित उदारा । लजत कुवेरहु देखि भुआरा
जनक सुवन लहि भूपति प्यारा । बोले बचन विनीत विचारा
आयसु होइ मातु पहँ जाऊ । करि पद परस जनम फल पाऊँ।
भूपति कहेउसकलरनिवासा । निशिदिन रहत दरशतवप्यासा
जाहुँ सबहिं प्रिय रूप दिखाई । करहु सुखी मन मोद बढ़ाई ।।
रामहिं कहा कुमार लिवाई । जावहु अन्त:पुर सुख छाई ।।
कौशिल्यादिक रानी सोहाई । करत प्रतीक्षा रहीं अवाई ।।
कौशिल्या भीतर बुलवाई । चरण परत सुत सो उर लाई ।।
बंदे सब राघव की माता । कीन्ह प्रणामहिं पुलकित गाता ।।

दो०-भरत लखन प्रिय मातु दोउ, प्रेम पगीहियलाय ।
शीश सूँघि आशीश दइ, करत प्यार सुखछाय ।।

दरश प्यास तब रही महाई । आज भई शुभ सुफल सोहाई ।।
कहहु कुशल मिथिलापुर केरी । सहित मातु पितु सुखद घनेरी
करति मोरि सुधिरानी सुनैना । आपन जानि कहहु सत बैना
मोर मातु तव चरण प्रणामा । करिवर विनय कही अभिरामा
चलत मोहिं नयनन भरिवारी । कही सँदेश सुनहु महतारी ।।

प्राण प्राणप्रिय लली सो अहई । तुमहिं सौंपि मैं निर्भय रहई ।
सुनत कौशिला प्रिय रस सानी । बोली सुखद सरल मृदुवानी
मोहिं नृप सहित सकल परिवारा । अबधकेरसिय प्राणअधारा
जीबन भूरि नित्य हिय जानी । सेवहुँ नयन पुतरिकरि मानी ।
सब गुण धाम सुआनन्द रासी । चूक दुःख सपनेहुँ नहिं भाषी ।
छन-छन चेष्टा मोरहु लालन । सिय सुख हेतु रहति सबकारन
कुँवर मातु के प्यारहिं पोषे । वोले बचन प्रेम रस तोषे ।।
पितहिं करी प्रणाम सरसाई । भेजी भेट विनय महताई ।।
दो०-मातहु भेजी भेट मम, तब चरणन के पास ।
करण कृतारथ लेहिं सब, बिनय करत यह दास ।
सुनिवर विनय राम महतारी । बोली धनि-धनि प्रीति उदारी
सियहिं पाइ मैं काह न पाई । सब विभूति तेहिं अंश लखाई।
तापर धनि धनि जनक सुनैना । दीन अमानी बने सचैना ।।
तिनकी भेट परम प्रियमानी । स्वीकृत सदा कुंवर जियजानी।
बहुरि कुमार जोरि युग हाथा । बोले बचन नाइ पद माथा ।।
निरखन ललिहिंनयन अकुलाई । आयसु होइ मिलौं तहँ जाई।
कहत भरे जल नयन मझारी । सुनि सुख लही राम महतारी ।
पुनि पुनि लै लै गोद मझारा । तीनहुँ मातु कीन्ह बहु प्यारा ।
रामहिं मातु कहीं हरषाई । कनकभवन देवहु पहुँचाई ।।
कुंवरहिं कही अवशि अबभैया । जाय बनहु भगिनिन्ह सुखदैया
सकल मातु कहँ कीन्ह प्रणामा । चरण शीश धरि प्रेम प्रधाना
चले कुँवर पुनि पुनि सिरनाई । सहित राम दोनहु दल भाई।।

॥ कवित्त ॥

बीरा जरकसी मांथ बाँधे बंधु सखा अमित साथ ।
आये रघुनाथ मिलन होन तब लागी है ॥
आस पास दास सकल चमर ब्यंजन लीन्हे ।
स्वर्ण रतन झारिन में सरयू जल मागी है ॥
बैठे सकल सावधान वचन रसखान होत ।
बाढ़ो आनन्द सिधु निरखत बड़ भागी है ॥
दासी येक समाचार कह्यो जाई लड़ैति जुसो ।
सो सुनत चरण भूमि ना परत अनुरागी है ॥
निमिकुल कुमार सुकुमार सो प्रफुलित गात ।
चले सिया मिलन हेतु संग लखन लाल है ॥
भरत रिपु दमन संग लज्जित कोटिकाम अंग ।
अतिहिं उमंग भरे सबै आल बाल है ॥
वाक्य विलास सुख रास होत आपसू महँ ।
दास खास पास खड़े सुनि सब निहाल है ॥
कंचन मणि धाम के झरोखा लगि झाँकत है ।
चन्द्रबदनि मृग नैनी लावण्य विशाल हैं ॥
यहि विधि अति हर्षित युगवारे । रथहिं विराजे आ गये द्वारे ।
बहुरि राम श्रीनिधि रुचिजानी । दासी तुरत बुलाय बखानी ।
अंत:पुरहिं कुँवर लै जाहू । प्रेम सहित मन महा उछाहू ॥
जनक सुवन लहि प्रभु संकेता । हिलमिल गवने सिया निकेता
सहित भ्रात मन पुलकत जाही । दरस प्यास बहुसबहियमाही

दासी समाचार कहि गायो । स्वामिनि भाइ मिथिलासे आयो

दो०-दासी सब कुँवरन निकट, गई कही तब जाय ।
होत बुलाहट महल में, चलो उतै हरषाय ।।
पुनि सिय के ढिग आइके, कहि मुदमोद बढ़ाय ।
समाचार सुनि मगन सिय, भ्रात दरश को जाय ।।

दो०-महल द्वार जब गये, देखि सखिन की भीर ।
चन्द्रकला यथेश्वरी, स्वागत करि लै गये भीतर ।।
लक्ष्मीनिधि देखे सियहिं, चरण परे हरषाय ।
चरण कमल छोड़त नही, सिय तब कही बुझाय ।।

सियहु सुढ़ारति नयनन पानी । परत कुमर पदमनहु धुवानी।
बिलखि विलखि भ्रात भगिनि चरण परिगहि टेक ।
प्रेम सरोवर उमगी चली, दिया ढुवाय विवेक ।।

कछुक काललहि धैर्यकुमारा । औरहु भगिनिन मिलेव सुखरा
उरमिला माण्डवि श्रुति कीरति । प्रेम विवसन दशा विभुइति
भ्रातहि कीन्ही सकल प्रणमा । विरह सनी भुली तन धामा ।।
कुँवर उठाय हिय निजलाई । सियसम प्यार किये सुखदाई ।।

भइया तब मम प्राण सम, अस क्यों हौत अधीर ।
जननी कुशल सुनावहू, जाते मिटै सब पीर ।।

कछुक धीर धरि आशिष पाई । सब वहिनिन से मिले सुहाई।
भ्रातन कीन्ह सकल परनामा । बिरह सने भूले तन धामा ।।
सहित सीयसबभगिनि अधीरी । मिलीसकल भ्रातन्हबिरहीरी
हिलमिल सबहिं सिंहासन राजे। मैथिल प्रेमविभोर बिभ्राजे।

पुनि सिय फफकि कहै सुनु भइया। कुशल अहैं मम पिता मैंया
भाभी कुशल सुनन के काना। अतुर रहत सदा अकुलाना ।।
प्रिय परिवार पुरी के लोगा। अहैं प्रसन्न रहै रत योगा ।।
मिथिला प्रैम कहौ किमि गाई। तब वियोग तरु रहे सुखाई ।।
पशु खग मृग छोड़े जल पाना। डारत नीर नयन अकुलाना।
सुनि तब नाम सुहेरहिं तेही। जो कह जनकलली वैदेहीं ।।
मैंया पिताजी प्यारहिं कीन्हें शीश सूघि तोहि आशीश दीन्हे
तिनकी दशा न जाइ बखानी। छन छन बीतत कल्प समानी।
बहुरि कुँवर कछु धीरज धारी। दीन्हेउ सिद्धि पत्रिकाप्यारी।
करि प्रिय प्यार कुमार प्रवीना। मणिगण भूषण वसननगीना
यथासियहिंतसऔरहिंदीन्हीं। सकलभगिनिभरि प्रेमहिं लीन्ही
सखी सेविका जो सिय केरी। ते सब पाई भेट घनेरी ।।
भोजन ललित सवाँरि कै जनक लाड़िली लाई।
सब भाई सम जानि कै, हितसो दई खवाई ।।
अँचवन बहुरि कराय कै, वीरी ललित बनाई।
दीन्ही सबकहँ हेतु सों, प्रिया शरण बलिजाई ।।
प्रिय भाईन के मिलन को, बैठीं सियढ़िग जाइ।
बाते इत उत होन लगी, समुझत हिय हुलसाइ ।।
कुँवर कहे सुनु अनुजा मोरी। संध्या करन भई अब देरी ।।
प्यार पाय सिय पूछि कुमारा। चले बास जहँ सुखद अपारा।
सबके बास अनूप सुहाए। दशरथ नृप दीन्हे मन भाए ।।
जाय कुंवर कृत्यादि निवाही। निशा भई जनु स्वागत काही

बैठ पलँग निज कच्छ सुहाहीं । राम कृपा वरणत मनमाही ।।
तेहि अवसर रघुनन्द प्यारे । मिलन इकान्तहि आइ पधारे ।।
देखत कुँवर उठे हरषाई । हिय लगाइ कर गहि बैठाई ।।
श्याल भाम जस प्रीति सलोनी । भई न है नहिं अब कहुँ होनी
कुमर कहे मम भैया दाऊ । प्यार अशीश कहे प्रिय भाऊ ।।
आप बियोग बने विरहीले । भूले ग्यान विराग रसीले ।।
दो०-प्रेम मदीले बनि रहे, भूलि जात सब भान ।
राउर मिथिला या अवध, कहाँ बसहिं नहिं जाना ।
राम कहा सुनु सखा पियारे । मिथिला विसरत नाहिं बिसारे
सिद्धिकुवरि किमिजाइ बिसारी । प्रीतिरीति जेहिजगतेन्यारी
सब विधि प्रेम दोउ सुख साने । करत बात मनमोद महाने ।।
बहुरि कुवर ले राम गोसाई । ब्यारु कीन्ह मातु गृह जाई ।।
पाय अनुसासन कुंअर पुनि आये तेहि ठौंर ।
जहँ बैठे रघुनन्दन सकल रसिक सिर मौर ।।
रामलाल सुख पायकै, बैठे सकल कुमार ।
नृत्य गान होने लगी, आयो गुणि जन अपार ।।
येहि विधि गान रंग ते, नृत्य गान सुखदीना ।
बहुरि अमित वकशिश भई, अतिप्रसन मनलीन ।
आए रसिक दोउ पुनि तहवाँ । सुन्दर सदन बास रह जहवां ।
कुँवर कहे प्रभु सखा पियारे । जाहु शयन हित निज आगारे ।
यहि विधि दोउ प्रेमरस भीने । उठे सबहिं दरशन प्रियदीने ।।
नित्यकर्म करि नेम निबाहे । गए भूप पहँ अतिहिं उछाहे ।।

करत प्रणाम दूनहूं काहीं। लीन्हे भूप लाय उरमाही ॥
कहि मृदु बैन प्यार बहुकीन्हे। सोहहिं भूप गोद दोउ लीन्हे ॥
यहि विधि कुंअर राम के साथा। भोगहि भोग नित्यसुखपाथा
कहुँसियनिकटकबहुँसियरामा। कुंवरजहहिंसुखशान्तिललामा
कवहुँक भरतकबहुँ रामानुज। कबहुँक रिपुहन भेटहिंभरिभुज
कुवरहिं अपने भवन लिवाई। अतिसत्कार करहिं सुखछाई ॥
दो०-यथा राम बहु प्रीति युत, करहिं कुँवर सन्मान।
तथा करत सिगरे अनुज, सखा सरिस मतिमान।
भगिनि उर्मिला माण्डवी आवै। श्रुति कीरतिसहहिय हरषावै
भवन आपने भ्रात बुलाई। करहिं प्रेम सत्कार सुहाई ॥
यथा सीय सेवहिं निज भैया। तथा भगिनि सिगरी सुखदैया
कबहु बुलावै नृप परिवारा। कबहुँ सचिव सरसत सुखसारा
गवनहिं कुबर प्रीति सरसाने। पावहिं सुख सतकार महाने ॥
कबहु लाल सहअवध मझारा। रथचढ़िकरहिं सुखदसुविहारा
भोजन को दशरथ नरनाथा। लै बैठे सबको निज साथा ॥

॥ कवित्त ॥

कौशिल्या महल राजभोग करि तैयार भई,
एक सुकुमारी आइ कह्यो रामलाल सों।
भूषण बसन कछु उतार सकल सुकुमार खड़े,
सुषमा अपार चले मत्तगज चाल सों ॥
महल प्रवेश कीन्हो दासी चरण धोइ लीन्हो,
बैठे मणि पीढ़न पर परम शोभाल सों ॥

सोना मणि जड़े थार भोजन विधि चार सर्ब,

भोजन परोस्यो आनि पावत रसाल सों ।।

देन लागी गारी सुकुमारी सकल नाम लै लै,

बढ़यो अति विनोद मोद सुन्दर सदन में ।

चहू ओर चन्द्रमुखी चपला युत नयन भरि,

देखति वर शोभा सब लागी परदन में ।।

व्यंजन परोसत में मंद मुसुकि एक सखी,

दधी लपटाई जनक नन्दन के बदन में ।

यह देख सब सुकुमार अट्टहास करे,

दामिनि सी चपल होत सर्ब के रदन में ।।

दो०-भोजन करि करि आचमन, पान अतर पुनिपाय ।

सब कुमार गे सयन हित, निज निज सेज सोहाय ।।

कबहु कन्दुक कहु जल केली । करहि कुअर राम संग मेली ।।

क्रीड़ा होति अनेक अगारा । रसमय पावन प्रेम अपारा ।।

दो०-बन प्रमोद रघुनाथ संग, विरहि कुंअर ललाम ।

देखि देखि पुरवासी सब, कहत धन्य सुखधाम ।।

नित अवधेश सभामहँ आवै । अपनेहि ढिगहि बैठावै ।।

भौजन को दशरथ नर नाथा । लै बैठे सबको निज साथा ।।

अमितराज राजसुत सुराजा । अमित सचिव प्रिय लै भाजा ।

बैठि पंगते अजिर विशाला । बड़ें हर्ष अंतहपुर वाला ।।

जनक सुवन कहँमनअनुरागी । जिनहियोगतेगारी गावनलागी

नव नव पाक अनेक प्रकारा । बनवै शुचि रुचि अनुसारा ।।

सब कह अचमन करवाई । पान अतर माल दै सुख पाई ।।
लक्ष्मीनिधि पटुनिति निधाना । नितहि विदामांगहिं नृपालना
राखे राउ अधिक करनेहु । कछु दिन हमहि नैन सुखदेहु ।।
दो०-यहि विधि सो कछु दिन रहे, लक्ष्मीनिधि पुरमाहिं ।
जो जों सुखपुर लोग लहि, कहिबे की कछु नाहि ।।

।। छप्पय ।।

निकट विदा की दिवश जानि कौशिल्या रानी ।
निसि में राजा सो सुनाइ कहि मधुर सुबानी ।।
सुनहु प्राण पति वधू सकल मन को हर लीना ।
सुन्दरि अति सुकुमारि सर्व गुण माहिं प्रवीना ।।
बिदा करत में मोहि अति पुनि समधिन रुख राखनो ।
उचित जानि मन बोध करि अब कछुबनत न भाषनो ।
राजा कहि सुनु प्रिया बिमल मति नेह सागरी ।
तुरत बोलयब बधुन शोच जनि करहु नागरी ।।
रचहु सिगार अनूप बधुन हित, अतिमन हारी ।
जेहि पहिरत मन मगन होहिं सब जनकदुलारी ।।
समधिन की भूषन बसन रचहु बिचित्र बनाइके ।
बिदा करण में उचित जसतस करहू मन लाइके ।।
दो०-पिय आज्ञा सुनि कौशिला, भइ मन हर्ष अपार ।
प्रात भई सजने लगी, वस्तु अनेक प्रकार ।।
सो रचना को कहत में, कविवर बुद्धि लजात ।
जहाँ प्रगट सियाराम हैं, तहँ सब अदभुत बात ।।

बिदा होन की दिवश शुभ, और लगन शुभ आय।
सासुन जनक कुमारि को, करहिं शृंगार बनाय ।।
अमित सखी कैंकर्य में, मन रुचि जाननिहार।
ठाढ़ी सब सेवा लिये, होन लगी शृंगार ।।
प्रथमहि सरयू जल ललित तामहँ मेलि सुगंध।
मज्जन वधुन कराय के, कीन्ही केश प्रबन्ध ।।
सारी कीनारीं मणि जरित, गतमुक्ता चहु फेर।
मध्य लाल बैली कनक, मणिय बुटे घनेर ।।
लसत विसद नख अवली कोटि चन्द को होत।
नखशिख छवि लखि, सहचरि वीरिकरवर देत ।।
मुकुर दिखावती हर्षते, निरखि वलैया लेत।
राई लोन उतारहि,बारबार नोछा वर करिदेत ।।
यहि विधि माण्डवि उर्मिला अरु आई संग राजकुमारि
श्रुति कीरती आदि सिंगार करि सहचरि भई तैयारी।
दिब्य अनूप अमोल सुची, भुषन वसन नवीन।
पहिराय अति प्रीति सो, सीताहि युत भगनिन ।।
जब मुहूंत शुभ आयऊ, सीता वहिनि समेत।
करि शृंगार मन मोहनी, लखहिं वलैया लेत ।।

॥ छप्पय ॥

कोशिल्यादिक रानी सकल तेहिछन तहँ सोहैं।
बधुन माधुरी देखि सकल सासुन मन मोहैं ।।

ब्यंजन अमित प्रकार थार वहु सादर लाई ।
बधुन खवाइ सप्रेम सहचरी दइ अँचवाई ।।
पान अतर सबहीं लई सुचित महल बिहरन लगी ।
कौशिल्या सजने लगी करनी बिविध सो जगमगी ।।
दो०-राम लाल आए महल, मिलि सिय नेह बढ़ाय ।
चलन समय में प्रेम की, को छबि वरणि सिराय ।
प्रियन दृगन जलझरत लखि, पिय नैनन झरनीर ।
पुनि धीरज धरि प्रियन ते, बोले श्रीरघुबीर ।।
मधुर बचन प्रीतम कह्यो, जनि मनकरहु उदास ।
तुरतहिं हम आउब उहाँ, मिलन हेतु तब पास ।।
सो सुनि सीतादिक मुदित, चली सासु के गेह ।
मिलन परस्पर होन लगि, बाढ़ेउ अधिक सनेह ।।
कौशिल्यादि आशिष दई, बहुरि कही मृदुबयन ।
तुरतहिं लेब हम बुलाइ हम, तुमबिन पलहुँन चैन ।
यहि बिधि सबसों मिलन भई, जानि लगन शुभमूल ।
सकल कुंवरि चढ़ि पालकी, सब सुख बरषत फूल ।।
अवधनाथ सब कुंवरि को, विदा कीन्ह हरषाय ।
भूषण वसन अनेक मणि, दयउसो वरणि न जाय ।
मिथिला ते जो आयऊ, सब कर करि सनमान ।
बिदा कीन्ह राजा मुदित, चले सब करत बखान ।
कन्या जे मिथिला ते आई । बिदा सब की सुविधा कराई ।।
कुंअर जाय भूपति सिरनाई । पितु संदेस वर विनय सुनाई ।।

मिथिला हेत करन पहुनाई । सानुज साजसकल अबजाई ।।

लक्ष्मीनिधि सब बंधु युत, रामहिं कीन्ह जोहार ।
सब भाइन ते विनय करि, बोले बचन उदार ।।
माघ शुक्ल में आइहो, मिथिला विहरन हेत ।
करि कबूल रघुवंश मणि, हर्षित आशिष देत ।।

दो०-चौड़ोला सिवकन रथन यथा उचित आसीन ।
चलि जानकी सखिनयुत, विलहि करि वन्दि प्रबीन ।

सखा जे मिथिलापुर ते आये । बिदा किये सब सुविधा कराये
पूज्य अनुग बर्गन की भीरा । चले लिवाय जनक सुत धीरा ।।
सुखहि सुखी मारग महँ जाहीं । बरसहिं सुमन करैं नभछाहीं
तैसहिं बसत चलें सुख जाहीं । पहुँचि गये मिथिलापुर माहीं।
शुभ मुहूर्त में महँ भयउ प्रवेसा । अगनित मंगल करेउ नरेसा
आगे ते सब कहँ लै आये । लागे बाजन वजत सुहाये ।।
फल्यो सुकृत तरु बहुरि कियारी । देखन को उमगे नरनारी।।
मंगल वस्तु करन महँ लीन्हें । आवै दरश मनोरथ कीन्हें ।।
यहि विधि सब पुरजन सुख देता । पहुँचे सुन्दर राजनिकेता ।

।। छन्द ।।

उत मातु आवति जानि सिय हरषित हृदय आनँद भारी ।
सखि बोली आरति साज सजि,परिछन चली पग लरखरी ।
जल फेरि अपर पालकिहिं पढ़ि मन्त्र रक्षा रस हिये ।
करि बार बारहिं आरती प्रिय मातु हरषित अति हिये ।।

सो०-सीयहिं लई उतारि, मातु सुनैना मोद भरि ।
हिय महँ हर्ष अपार, नयन नीर अबिरल बहत ।।
उतरी सीतदिक सुकुमारी । आगे आनि मिली महतारी ।।
बार बार हिय हरषि लगाई । चूमि कपोल बहुत सुखदाई ।।
जनकलली प्रिय पाइ स्वमाता । महामोद मन पुलकितगाता ।
इहै भाँति सब पुत्रिन काहीं । मातु उतारत पुलकत जाहीं ।।
सखी सेविका बीचहिं सीता । पूर्णचन्द्र समशोभ पुनीता ।।
सादरमिलेउसकल रनिवासा । लहिस्वाती जलपियहिंपियासा
सिद्धि कुंवरि अति आतुर आई । मिली सप्रेम ननद भौजाई ।
दो०-सियहिं भगिनि युत लेइ करि,माता निज गृह जाय ।
बैठाई सब कहँ मुदित, देखि सिया सुख पाय ।।
सियहिं गोद लैं भोग पवाई । अनुजा सहित सेविका पाई ।।
अचवन दै पुनि पान पवाई । माल पिन्हासु इत्र लगाई ।।
सिद्धिकुंवरि मुख लखि-२ सीता । होति सुखी प्रिय प्रेमपुनीता
आवन उत्सव सदनहिं छायो । नृत्यगान बर बाद्य सुहायो ।।
सिया दरस हित मैथिल नारी । अमित सुरी अंतःपुर भारी ।
जानि सबहिं शुचिप्रेमपियासी । धरीअमित तनसिय सुखरासी
छनमहँ मिली सबहिं सुख दीनी । मर्म लखे नहिं कोउ प्रवीनी।
सब कहँ सबहिं भाँति सुख देई । छेम कुशल पूछी सब कोई ।।
जनक महराज कुशध्वज आये । मिले सकल कुंवरिन मनभाये
देखत सिया बिलख उठि धाई । नयन नीर ढारत लपटाई ।।
गोद उठाय लीन्ह हिय भूपा । भूले तन मन बुद्धि स्वरुपा ।।

शीश सूंघि जल ढारत नैना । सिय अभिषेक किये अतिचैना

दो०-बहुविधि सीतहिं प्यार करि, बोलेव भूप महान ।
आज प्रकाश्यो भवन मम, तब पग धरत सुहान ।।

मिथिला अव लौ रहिं अँधियारी । ललीविरह तबदीनदुखारी
सब विधि सुखी पुरी भै आजु । आनंद रूप रही सब भ्राजू ।।
भूपति वैन सुनत सकुचाई । पितु तन लिपट सिया सुखपाई ।
पुत्रिन सकल मिले नृपराई । शीश सूंघि अतिसय दुलराई ।।
बहुरि भूप रानिहि समुझाया । भोजन शीघ्र करावहु भावा ।।
सेज सुलावहु थककर आये । असकहि भूप शयन गृह भाये ।
सीय राम पद सुमिरत चाऊ । शयन कीन्ह अतिसुन्दर भाऊ।

दो०-बहुरि सुनैना हरषि हिय, कुंवरिन सकल खवाय ।
प्रिया शरण अचवाय के, पान दई बलिजाय ।।

सिद्धि कुंवरि सासुहि ढिग आई । पाँय पलोटि प्रेम उर छाई ।
करि बिनती सीतहि लै साथा । शयन कक्ष गइ भरि रसपाथा
कीन्ही बातैं विविध प्रकारा । भाभी ननद सुप्रेम प्रसारा ।।
हाव भाव युत शयन कराई । पाँय पलोटि बहूंत सुखपाई ।।
कहत सुनत पुनि आलस भीनी । सोई दूनहू साथ प्रवीनी ।।

दो०-चन्द्रकलादिक कुंवरि सब, गइ निज जननी गेह ।
जात भई अतिमोद मय, वरणि को सकै सनेह ।।
नित आवहि सिय के निकट,सब कुँवरिन सुखधाम ।
एकै मन एकै दशा, जननिहि लखि विश्राम ।।

जनक महूंल दिन दिन सरस, परमानंद सुख होत ।
नवल नेह नित नित बढ़त, छन छन प्रेम निसोत ।।

ऐक दिना सुनैना रानी । बैठी हर्ष सहित दोउ रानी ।।
क्रीड़ति सखियन में तेहि धन्या । आई निकट सियादिक कन्या
बाहु पसारि लाइ उर लीन्ही । पुलके अंग अंक धरि लीन्ही ।।
चिबुक पकरि निजकरमुखजोहीं । चूमिकपोल अधिकसुखलेहीं
केश सुगंध तैल सन ओछे । महा मृदुल अंचल सो पोछे ।।
बिविधभाँति मिष्ठान मँगावा । करिकरि प्यार सुपाणिपवावा
दासिन पान दान लिये आगे । बीरा दिये सुचित अनुरागे ।।
बिद्रुम अधर रदन लघु नीके । लगे सोहावन मोहन जीके ।।

।। अम्बाजी ललीजू से पुछना ।।

दों०-निरखि निरखि छबि माधुरी, अकथ प्रेम महँबोरि ।
बाते ससुर निकेत की, पूछन लगि मृदु सोरि ।।

सासु तुम्हारी बहुत प्रवीना । ताते लाड़ अधिक तेहि कीना ।।
राजविभव केहि भाँति निहारी । दियो कहाँ मुखदेखितुम्हारी
तब कर असन तुम्हार रसोई । दिए जो ससुर बतावहु सोई ।।
देख्यो केतिक कुटुम बिपुलाई । हीय कौन की बहुत बड़ाई ।।
कैसी सौंज व्यवहार बिशेषा । श्रीयुत अवधनगर किमिलेखा ।
ननद कितेक भानुकुल माहीं । जानै हम शृंगीऋषि व्याही ।।
कहोबातबधुननकिमिमाना । कियो तुमकिमिपरिजनकी काना
कहौ बहुरि किते सासु निकेता । रहतहती अनुजनहिं समेता ।

॥ छन्द ॥

तुम सासु गृह की बात सकल न छिपाउ कछु सकुचाइ कै।
प्रिय परमनिमि महाराज की स्तुति करहुँ न कछू बनाइ कै।
वहुराज दारन मध्य मुदयुत धरै पुत्रि निज गोद में।
हृदिलाइ पुनि पुनि कहैं हँसि हँसि उत्कंठा बचन विनोद में।
सो०-सुमती नैन बनाइ, शील पताका ते सकल।
जितै तितै मुस्क्याय, हेरे युवति विलास युत ॥

॥ धाई जोगई रहि साथ बताती है ॥

दो०-दासी चतुरि सुतान की, लसै पास जोरि पानि।
बोली हँसि हँसि वर सुमति,सब में गौरव बानि।
मम स्वामिनि बातन पटु अहई। सकुचति हैं उतको नहिंकहई
पूछत अति लालसा ते जोई। सुनिये करहु निवेदन सोई ॥
सासू इनकी सब श्रीमाना। शीलबती सब सुमति निधाना।
सो तृभुवन सुनी नहिं ऐसी। देखी बिमल हृदय की जैसी ॥
जानै निज रामादि कुमारा। करै बधुन को इक सम प्यारा ॥
सब ते लघु समधिनी तुम्हारी। तरुणि स्ववस पति रुपकुमारी
विदित नाम जिनकी कैकेई। उर्मिलाहिं लाड़ लड़ावहिं तेई।
नितही राखहिं प्रान की नाई। वहुत जानकी देखि सिहाई ॥
दो०-श्रुति कीरति अरु माण्डवहिं, कौशिल्या महरानि।
लै बैठहिं ढिग लै उठहिं, लै पौढ़हि प्रिय मानि ॥
देखी परम सुमित्रा ज्ञाता। लषन शत्रुहन की जो माता ॥
अपनो सुत व बधुवन केरा। रही इतै दिन मैं नहिं हेरा ॥

प्यारे मातु की अतिसर लाई। नहीं येक मुख करै बड़ाई ।।
जिनके उचित जे नेग पठाये। ते मुनि पतिन्हिं सो करवाये।
जदपि प्रवर जेठी महरानी। सब नृपतिय आगे निज आनी।
तऊ बंश मंडन मतिवाना। सीतहिं लाड़ लड़ावहि माना ।।
कवहुँ मोर अनुमोदन हेता। दरसै प्रेम इकत्र निकेता ।।
छनछनसुधिभूपतिमगवावहिं। बहुतदुलारहिं जबभवनहिंआवहिं
दो०-लोकप जिनके बिभव को, सुनियत करै प्रकाश।
देखौं मैं सबते अधिक, कौशलपति आबास ।।
जबते बधुन विलोकन कीन्हा। सरबस इनही को कर दीना ।।
लोकरीति भूषण पहिराये। देखे अस न कहाँ बनि आये ।।
विविध अनूप अपूरब माता। पहिरि रेशमी बस्त्र सुगाता ।।
भौंजन समय अवधपति दीनो। ते तुरंत ये धारण कीनो ।।
देखियत दुती वरनि नहिं जाई। अहो लड़ैती देहु दिखाई ।।
धरि कर कमल शीश परप्रीता। दिय बतायचूड़ामणि सीता।
दो०-हार मांडवी उर्मिला किंकिन कल द्यु तिमान।
श्रु ति कीरति नूपुर रुचिर, रव अनूप छबिखान।
देखे दुहुँ नृप तियन सराहे। बड़े महीप सुरन जिन चाहे ।।
बहुरि सुमति धाई सायनी। लागी कहन श्रवन रुचिजानी ।।
सूर्यबंश समजग में उदारा। दूजौं नहिं जानिय संसारा ।।
तेहि के नृप सेवन महँ रहई। दशरथ छत्र छाँह सुख करई ।।
सुरन समान ऐश्वर्य सँवारी। लखी महाछवि युत वर नारी।
अगनित पट भूषण नृप दीन्हें। बचे शेष बहुधारण कीन्हे ।।

पहुँची तेहि कुल में वैदेही । अस कुटुम्व हरि सब कहँदेही ॥
चहियतहू तो सासुरो जैसो । तब पुत्रिन को मिलो उतैसों ॥

दो०-रति रति पति से तिय पुरुष, भोग की मूरतिवंत ।
राजै अतुल समृद्धि सौं, रंग रूप श्रीकंत ॥

पहिले गर्भ कौशिल्या रानी । जन्मी शान्ता नृप कल्यानी ॥
मित्रभाव में दशरथ राजा । रोमपाद नृपपुत्री काजा ॥
प्रजा कुशलचहिपुण्यवढ़ावन । शृंगिऋषिहिं ब्याही अतिपावन
शान्ति ननद लागे इन केरी । जेठी गोरी बरण वड़ेरी ॥
बंधु व्याह पूजन जो गावा । सो विशेष उनही सव पावा ॥
विविध विनोद सो लाड़ लड़ावहिं । भोजनअपने संगकरावहिं
और विपुल रविवंश कुमारी । सुता समान महीप की प्यारी ।

दो०-जैसो उचित सुवासिनिन, समय समय परमान ।
कौशिल्यादेवी निपुन, राखै वधुन प्रिय प्रान ॥

सव रविवंश वधू मतिमाना । जानिय निजवर वहिन समाना
नीकी अनुवर्तन महँ भासी । लगै मोहिं निमिकुल दुहितासी ।
जैसे मोहिं माता ये माने । तौनहु भाव सकल वे जाने ॥
वोलचाल विहरन महरानी । इनही सो सवको प्रियमानी ॥
देखे तिन आचरन विसाला । चले यथा कुलरीति वे वाला ॥
तिमि तुम्हार तनया बड़भागी । रहत वहाँ सवको प्रियलागी।
शुशीलादि गुण सौं वसकीनी । रहे सराहत सुहृद प्रबीनी ॥
मरयादा वर्तें अनुमानीं । नृप किंकरी सुप्रेम भुलानी ॥

दो०-मन्दिर कौशलनाथ को, लसै परम विस्तार ।
कौशिल्या रानिन से सदा, भूषित रहत अपार
देखन को उत सब अभिरामा । बनी रहैं निशिदिन बड़बामा
सीतादिक पुनि कियो तहँबासा । करी अनेक विधान विलासा
उत्सव करे कौशिल्या रानी । करहिं विधान बधाइन आनी ।।
लै बैठे मुद युतनिज पाहीं । रुचिर कुतूहल विविध दिखाही ।
बदन विलोकि बिलोकि सिहावै । इनके हाथन सौज दिखावै ।
पुलकित तन सबकी बलि लेही । दृष्टि न लगै दिठौननि देहीं।
।। कौशिल्या दशरथजी बारता ।।
इक दिवस दसर लौ श्रीमाना । बैठे करत रहे मृदु वातना ।।
वात्सल्यलै रति बड़ि जानी । पिता इच्छा कर जो बखानी ।
नाथ प्रभु से मैथिलेश विनय कराई । पठवै ईत सानुजरघुराई
रहै व्याह मै बहु सुख छायो । रहि सुछन्द दरसन न पायो ।।
बनै अतृप्ती नैन अकुलाही । त्यौ अभिलाष भोगपुर माही ।।
जेते दिनवास उत करहि । ते दिन शुभ आयुस मह परही ।।
सुन प्रसन्न मन नृपति उचारा । निज पुत्रन मैंकवन बिचारा ।।
जाहिराम लक्ष्मन तबसाथा । लाड़ लियावहिनीका निमनाथा
भरत शत्रुहन इहाँ रहिहै । तेहिंसन लाड़ल्या अनुसारेही ।।
देहि उभय नुतन सुख दोऊ । दृगनसम लागै रस रुप सोऊ ।।
शयन भवन मह भूपति ग्याता । कहि कौशिल्या सो यह बाता
अहो प्राननी तिय सुचिचारनी । कहिमोहि इमजनकदुलारीनी
निमकी प्रीतिभाव मइ जानौ । तथा सुनैना को अनुमानौ ।।

सब सुख धाम राम अभिरामा । प्यारे महि प्राणते लागे रामा
उन विनहित न लखौ महिमाहीं । प्रेम बंधे उकहिसकत नाही
सुमिर सुमिर शुभवास समधिके । रहे पठावन जीवन जिके ।
हर दिन पुत्र तुमरिन केरी । दरसन ईच्छा लिखहि बड़ेरी ।।
दो०-आपुन कहत तैसे ही, कौशिल्या जुर हाथा ।
समधिन की पाँति सकल, रहि सुनावत नाथ ।।
रहै भरत रिपुदन इहाँही । भल सुमंत कहेऊ गुसाही ।।
युगल युगल ए रूप निधाना । होइ इतै उतै सुखद समाना ।।
नेह मुख्य कर सोचन ल्यावहु दुर्लभ नहि जब चहहु बुलावहु
यहि प्रकार दम्पतिपरविना । विमल बुद्धि सो बोधन कीना ।।
छबि लखि दृगन तोर तृनडारै । पुनि पुनि राई लोन उतारै ।
नाना मणिन निछावर करहीं । हृदय लगाय गोद में धरहीं ।।
दो०-हम सौ सुभगादिकन सो, करै सुबचन विनोद ।
कौन कौन गुण बरनिये, अतुलित देहिं प्रमोद ।।
लाड़ लड़ावति बधु छबि लहई । तुम वियोग टरई सो करई ।।
सुनि निमिराजहिं कह मुस्क्याई । चतुर बिधाता योग लगाई
कबहुँ तहाँ दशरथ महराजा । आवइ देखन बधुन समाजा ।।
आगम जानि बधुन सब बाला । भीतर गृहन जाहिं तेहिकाला
आगे होइ लीन्हे इन सासुन । पैठहिं राम मातु की आसन ।।
तिनको वातसल्य स्वाभावा । देखत वनहिं जाहि नहि गावा ।
नित आपन पुत्रिन की नाई । लाड़ लड़ावहिं अवध गोसाई ।।
संजीवनि सम लेखहिंदुलारी । हिय में बसहु श्रीरूप हमारी ।।

इमि सुदासि मुखते सुखकारी । सुनै प्रसंग सकल निमि नारी
रही घरिक लौ प्रेम समाई । गदगद कंठ पुलकि तन जाई ।।
बोली प्रमुदित बचन विनीता । मो सुमती बड़ भागिनि सीता
उर्मिलादि इहै भाग प्रभावा । भव में अलभ सुलभ गृहपावा ।
रहिहैं सदा समोद कुमामी । हम ते उनहिं अधिक तर प्यारी
फीकी करहि हमहिं सो नीकी । करहिकृपा समधिन समधीकी
दो०-जैसो वास हम सीय को, चाहत रही अनूप ।
तैसे सब दुहिताभने, पायो सब अनुरूप ।।
निज कृतकृत्य जान निमिभामा । भई रहे नित पूरण कामा ।
इक दिन जनकसुता कल्यानी । गई सिद्धिवर सदन भवानी ।
अमित सखी दासी सुखदाई । आई सब नृप गृही सोहाई ।।
सिद्धिजु धर्म धीर बड़प्यारी । पहुँची तहँ शुभ समय बिचारी।
निमिकुल वधू अपर श्रीमाना । राजै नव नय रूप निधाना ।।
लक्ष्मीनिधि की रानि प्रवीना । आवत उठि दूरहिते लीना ।।
परम सुभग आसन बैंटारी । करै यथा विधि शुभ सतकारी ।।
दो०-बोली मृदु बहू दिनन में, आगम भयो तुम्हार ।
अहो भानुकुल कुमुदिनी, लागी प्रिय ससुरारि ।।
ऐसो कौन विलास विशाला । लगै ईहाँ ते अधिक सुखशाला ।
कीन्ह ननँद संग विनोद अपारा । सोमनमहँ जानहु विस्तारा
इन आरंभ व्यंग की कीना । गई विहँसि सब कुँवरि प्रवीना ।
पूछी कुशल विदेह किशोरी । हसि तब सिद्ध कहा करजोरी ।
सदा क्षेम विधि रूप तुम्हारे । भई सुअवते नैन निहारे ।।

सिद्धि चरण गहि वैन उचारीं । सुनहु अवधिपति वधुनहमारी
बूझीबात दइ सब हराई । पढ़ी उतहु यह नव निपुनाई ।।
अवहीं सास सदन तै आई । तह की बाते कहव सुहाई ।।
दो०-श्रीनिमिकुल स्वामिनि निकट कही धाईजू जोई ।
सुनी सुहम नीकै सकल, बहुरन पुछहि सोई ।।
करै भलै वस सारंग पानी । पति निकेत वरते उजानी ।।
जब हम अवधि पुरि कौ जाही । कहिषौ करै चलव संगमाही।
चलते समय न चलव चलावा । रहै बइत नही हमही बुलावा
अपने वपु निज भक्त बताई । परिचर्जा सुलिषाई पठाई ।।
कृपा पात्र हम जेउ न केरी । जहा कृपा रहती तह वेरी ।।
विवस करही भाषहि वेजैसी । तुमहि परंतन चाहिए एसी ।।
छोंटे ते हम संग सुजाना । खेली हंसि परी इकवाना ।।
असन करे पाये मुखवासा । चरचे गंध करे सुविलासा ।।

।। छन्द ।।

भोगे सुखे कतकंत सब हमकौ लै कछु आवती ।
कहती कछु बतियाँ मनोसर श्रवन तै सुष पावती ।।
नव वैसतिपुर बिमोहनी कहुँ लाडपुन कै सैकरौ ।
बड़ रसिक कामकलांन में निकलन मन तुम रौहरौ ।।
सो०-सुन सींता मुसक्याई, गुरुजन भइ इत उत चितई ।
बोली नैन चलाइ, बचन मृदुल मधु ते मधुर ।।
दो०-गोंरे सुवरन कुसुम से, छबिसर कुसुम समान ।
आयइत तुम संतोष कौ, लक्ष्मणइत श्रीमान ।।

सकल सुलक्षनवान विख्याता। विविध कलान विचक्षन ज्ञाता
हम सो जो मागहूं बड़ भागा। अपुमुहु देहि सहित अनुरागा।
रिद्धि कहा जह कौन डराई। सुबन सुमित्रा के सुखदाई ।।
हमैं उनै पर है जिही माता। कर लैहैं जानै नव नाता ।।
सजल जलदसम श्याम शरीरा। नयन विसाल गुनन गंभीरा
हमसौ वाक बंध जे आही। रूची न प्रीनी करत तिनमाही।
सुभगा तब लज्जा बस जानी। बोली तिन प्रति परमसयानी।
रिद्धि सिद्धि सुभाव तुमहारा। इनही न सकुचावहु इहिवारा।
दो०-रहव सदा निश्चय किये, गुणागार श्रीराम।
तेहूं अब आये ईहाँ, कीजै रुचिही सनमान ।।
उपालभ समुचित जो होई। पाइ अकेलै दीजहु सोई ।।
पुछहु तुम कीन्ह कस प्यारा। सव जानहु भव के व्यवहारा
इन सिय के बंधुन को वाला। जैसौ तुम प्यारी सब काला ।।
तैसे जेहू हई निज धामा। यह सुहाग भूषण अभिरामा ।।
हुलसी कहा हँसि सिद्धि प्रवीना। भल विवेक तुम ने करदीना
निज पूछहु येजू मतिवाना। निज मैं होकर नेह प्रमाना ।।
इन भाइन प्यारी हम रहई। तिमि हमरे भाइन जे अहई ।।
फिरौ अर्थ आसय अनुमानी। निपुन सिया सखि वहुरिबखानी
दो०-आज काल निसि दिवस मै, मिलौ उनै जिहिबेर।
वे मानही तुम सौ सघहि, ना तो लेहु निवेर ।।
सुनकै रोम सकल तन छाये। भाषिउ भरत काहि नही आये
नील कमल सम मंजुल अंगा। लसै तड़ित लौ वसन विसंगा।

नयन कमल लावन्य निधाना। पीन हृदय वरभूज आजाना ।।
मोहै मनहि मधुर मुसुक्याई। रामहि सम अनुहार सुहाई ।।
ननद माँडवी के मन मंडन। सोहै भाल विसाल सिषंडन ।।
करशर धनु कटि मैं असिमाथा। देखे ब्याह समय महसाथा।
अरु अरि दमन रमविन बेऊ। सील नियट लहुरे ननदेऊ ।।
चंपक बरन गौर मृदुगाता। सायुध वीर धर्म मह ज्ञाता ।।

दो०-श्रुति कीरति रतिसुखद,मति अतिविचित्र विसेष।
विहसत अग्रज अग्रमृदु छकै, चित्र छवि देष ।।

जानत हतिहम सब संग आवही। अवधिनरेश कृपालपठावही
चारो बन्धु भानुकुल टीका। औरौ अधिक लगतेउ नीका ।।
सहचरि कहेउ सुनहु मृगनैनी। प्रीति तुमारि सबहि सुखदैनी।
चहती अपुन समागम जैसे। तरसत बहु दरस कह ऐसे ।।
ईनहि जथा रुचि मुदित रमावी। तोष लहै तिहि मै समभावी
श्याम गौर छवि के आधारा। रहै सुषित अवधेश उदारा ।।
इतै उतै सुख देन सुहाये। राखउ नहि इनहि पठवाये ।।
अब आगे जब कौनहु काला। दुरागवन करिहै महिपाला ।।
तब इन सीतादिकन लिवावन। अहै उभय कुँवरमन भावन।
बहुत दिनन हुहोइ पहुनाई। तव करियौ अपनी मनभाई ।।

।। छन्द ।।

इम सरस प्रीति उत्तर वचन विलास वहु भातिन भयौ।
सियलोक बृति लिये अधोचित भाभियन पुजन दयो ।।

रघुवंसिनी निमव[illegible]नी सब वैस की हिल मिल हँसी ।
सविनीति संयुत रीति प्रीति बृद्धि मैं अतिही लसी ।।
सो०-ऐसे सुचि परिहास, भेट होत नव बधुन प्रति ।
होत रहैस विलास गान कथन तिनको सुभदा ।।

।। कवित्त ।।

एक दिवस माताजी करिके शृंगार चारु,
हेतु सो दुलाय निकट निरखति मुख कंज को ।
सीता नेह हँसति मंद दूरिक करति द्वन्द्व सकल,
ताही छण आई ध्यान लालन रस रँज को ।।
माता हेतु पाई तब मनोरथ चित आई श्याम,
राम को बोलावो आवें विरह दुख भंज को ।
जीवन कर लाभ एहि निरखे अभिराम श्याम,
पूरणकाम राम छबि काम मद गंज को ।।
राजा सों एकान्त पाय कही जा सुनैना जी ने,
मेरी अभिलाष एही सीता वर आवहीं ।
पावे विविध सुख पुरवासी सो अपनी मति,
जाकी असगती और मैं हूँ सुख पावही ।।
चिट्ठी महाराज श्रीदशरथ को सिघ्र जाय,
बिनै पाय विदा करे राम मन भावही ।
दुख दहाय सुख बढ़ाय बेली मन की फुलाय,
करहीं संतुष्ट मेरे सकल चित चावहीं ।।

रात भई बात प्रातदूत युगल भेजेव राज्व,
चीठी में लिखायो प्रेम जायो जो बचत है।
दिन बहु वित्यो मैंन राघव मुख देख्यो है,
आसा बहु लागी रहत देखो कब बदन हैं ।।
आवे रघुनंदन सत्रू सूदन भरत लखन लाल,
पावे सब लोंग दरस परस जे सजन है।
मेरे तो चाह एहि देख्यो सिघ्र सियानाथ,
हाथ में तुम्हारे राव याहो सो करण है ।।
अवधपुरी पावन जब धावन पहुँचे जाय,
नगर सोहावन देखि हर्ष चित्त आयो है।
किला में प्रवेश कीन्हो बैठे जहँ दशरथजू,
रूप को निहारी भाव सहित माथनायो है ।।
पत्री प्रेम यंत्री जो लीखी है राजा जनकजू ने दीन्हो,
प्रेम सहित लीन्हो बांचि नेह छायो हैं।
अपर बाते दूत के मुखाते सब सुनन लागे,
जनक नृप समाचार सकल वासुनायो है ।।
रामलाल समाचार पाय पिता पास आये हैं,
भरत लखन रिपुसूदन सुनन दौरि आये हैं।
राम अज्ञा पाय रामलाल कर चीठी लीन्हों,
मधुर मुसुकाय बांचि भ्रातन को सुनायो है ।।
बाहर संकोच भीतर आनंद की मिति नाहिं,
राजा हेतु पाय श्रीवशिष्ठ को बोलाये हैं ।।

आये सन्मान पाये बैठे ऋषि सावधान,
जनक नृप पाती जो लिखि है सो जनाये है ।।
येक वार उत्तम आप शोधि के बताय दीजे,
आनन्द अरु मंगल सब भाँति सुखधान हो ।
सब समाज साज सकल निजनिज रुचिसाज,
साज होइके तयार रामलाल संग प्रस्थान हो ।।
दीन्ही मुनि भाषि माघशुक्ल पछ जबहिं जाव,
पखभर अनूप दिवस काहू ते नहान हो ।
राजा सुनि अज्ञा दई चारो सुतमान लइ जेही,
विधि तयार भये कोन ये बखान हो ।।
दो०-माघ शुक्ल की आदि तिथि, मंगल मोद विधान ।
सुख सागर रघुवंशमणि, कीन्ह जनकपुर पयान ।।
सुनि भुआल अधिक सुखमाने । मंत्रीन आये सुदिये सुहाने ।।
मिथिला हेत राम करन पहुनाई । साजहु साज सकलअबजाई
सचिवसुआयसुनि निजसिरधारी । किन्ह सबविधितुरततैयारी
करत पिता वय राम कृपाला । करहि विचारन कौनहिकाला
सानुज मातु पिता उरलाये । मुदित सूंघी शीर आशीष पाये ।
नाई चरणपंकज महँ माथा । चले शीलनिधि लछुमन लैसाथा
मुनि विप्रन ते आशिष लीनी । चढ़े सिंधुरन अतिदुतिदीनी ।।
भ्रात सखन कह रामहु गवने । चले मुदित मन आनन्द भीने ।
वाहन चढ़ि चढ़ि रुचिअनुसारी । चलत समाज सोहअतिभारी
प्रतिवास रतैदिन प्रतिजाई । निमिहीनिवेदनकरहि दूतआवई

वासहि वसत चले सुख सुजाही। पहुचि गये मिथिलापुरमाही

दो०-जेहि जेहि मग रघुलाल संग चलत चतुर दलयुथा।
तेहि तेहि मंगवासी मुदित, निरखत छवि बरुथा॥
बीच बीच विश्राम करी, आये तिरहुत सुख देत।
युगल अनुचर बुधविनय करि, जायनिम नृप पास॥
रघुकुलमणि की आगवन कीन सविनय प्रकास।
सुनत सभासद सहित नृप, हर्षन हृदय समाय।
पुनि धीरज धरि वेगहि, लक्ष्मीनिधिह बुलाय॥
कहि शीघ्र तैयार होय, जाहु सखा सब लै साथ।
आदर सहित सनमान करि, लै आवहु रघुनाथ॥
पितु अनुसासन पाय कैं, सजि सब साज समाज।
गये मिलन प्रमुदित वदन, जहाँ आवत रघुराज।
श्रीनिधि हृदय आनंद अमित, मिलन रघुनन्दन समीप।
सोउ सुठि सुख हिय रहे अकथ अगाथ अनूप॥

बहुरि राम निज बन्धु समेता। लक्ष्मीनिधि भेटे सपुनीता॥
हरषि नयन भरि पुलकित गाता। हिय लगाय भेटे सरसाता
लक्ष्मीनिधि भये अमित आनंदा। देखी राम मुख पूर्ण चन्दा।
मिथिला वासिन दरस के हेता। आप रहे सुप्रींति समेता॥
सब हिय प्रेम रामसब जाना। यथा मिलन तलफत अकुलाना
अमित रूपकरि आपुहि श्यामा। सुन्दर सुखद स्वरुप ललामा
सकल मैंथिलन हृदय लगाई। मिले सप्रेम पुरजन सुखदाई॥
जेहिकेजियजसभाव रहावा। तेहिते मिलतरामलालतसभावा

प्रति मैंथिल ढिग इक इक रामा। देवहिं आनंदअतिसुखधामा
लखा न काहू रघुपति देखा। अपने ढिग श्यामहि सब पेखा ।।
निजनिज हियसब अनुभव करहीं।आनंद महाभाव हियधरहीं।
सबते अधिक लाल मोहि माने। सबहि छोड़मम हिय लपटाने

दो०-आनन्द मगन विभोर अति, तेहि छन मैंथिल लोग।
सो सुख अकथ अगाध अति, रघुवर मिलन सुयोग ।।

जय जय कहत इत्र की वर्षा। करत सुमाग सबहि सुर सरषा
दुहुँ दिशिदल महँ बाजत बाजे। वन्दी विरद बजत बहुराजे

दो०-जनकपुरी सुखसदन महँ, पहुचे रघुकुल चंद।
निरखि नगर नरनारि नभ,सुरसब परमानंद ।।
देवन दीन्ही दुन्दुभी, वरषि फूल सुखपाय।
पुर नर नारिन सहित, कहत अति हर्षाय ।।
विधिसन याचत देव सब, जनकपुरी को वास।
जहँ त्रिभुवन के सकल सुख कीन्हों आय निवास।
जनकपुरी सुख सदन महँ पहुचे रघुकुल चन्द।
निरखि नगर नर नारि सब, नभसुर परमानन्द।
देवन दीन्हीं दुदुंभि मुद भरी,लखे फूल सुखपाय।
पुर नर नारिन भाग को, बरनत अति हर्षाय ।।

पितु आयसु लहि पद सिरनाई। भ्रातन सहित राम रघुराई।
रथ चढ़ि चले कुंवर के साथा। दरसन देत सबहि मुद पाथा।
उत्सव सहित कुँवर लै आयेऊ। मातु महलमहँ पहुँचत भयऊ।

॥ कवित्त ॥

दूरहिं ते दोउ समाज परस्पर मिलाप काल,
चले अति प्रहर्ष चित्त मिलन होन लागी है।
लक्ष्मीनिधि रामलाल भरतलाल लखनलाल,
सखन सहित मिले बिमल नेह पागी है॥
नाना विधि करि जौहार इत उत पुरवासी,
सब चले जनकपुरी महँ रविकुल कुमुदचन्द है।
महल के झरोखन ते नागरी निहारति हैं,
नाना शृंगार कीन्हे अतिहिं आनन्दे हैं॥
मातु सुनैना सुनत अति हर्षाई। आरति साजि सखिन सहधाई
मंगल गावहिं प्रिय सब नारी। प्रेम प्रवाह बढ़त हिय भारी।
आरति करिमुदित सबमाता। नयन सजल अतिपुलकितगाता
भ्रात सहित लाल कीन्ह प्रणामा। मातु कही जीयोमँगलरामा
शीश सूंघि दृग डारति पानी। कीन्ह प्यार विविध विधिरानी
दो०-तृप्त न होहि मातु मन, रूप माधुरि दृग चाख।
सुनहु हे कृपायतन, करौ सफल अभिलाष॥
सिद्धि कुँवरि कह रामहि देखी। पगी प्रेमरस हृदय विशेषी।
सहित भ्रात रघुवर पग लागी। नयन नीर धोयउ रस पागी।
लालहि चली लिवाय सुनैना। प्रेम भरी कछु पूछ सकैना॥
वास रुचिर महलन मैं दीना। लाल नैनहिअति शोभितकीना
राजन के राजा श्रीसीरध्वज कुशध्वजादि,
संग सचिव समाज साथ हर्षचित्त आये हैं।

अनुज सखा सहित रामलाल होइके निहाल,
अति सप्रेम चरण बंदी मिलत सुख पाये हैं ।
कुशल प्रश्न करत सब बाढ़ी है सनेह,
चाव भाव सहित भेट प्रेम मै बिकाये हैं ।।
बहुरि उठि गये जहाँ बैठे श्रीवशिष्ठ मुनि,
देखि के सरूप प्रेम सहित माथनाये हैं ।।
रुचिर सिहासन सजिकर आनी । बैठारे रघुवर सुखसानी ।।
पूजि सविधि पुनि आरति कीनी । कुशल क्षेम सब पूछप्रवीनी
ललकति रही दरस तब रामा । आज भई मैं पूरण सुखधामा
बोले राम हमऊ सुनु माई । दरस प्यास तब रहे दुखाई ।।
देखत मिथिलहिभयो प्रसन्ना । भेटि व्याधि चितभयो अखिन्ना
दो०-सुखद राम निज मातु की, भेट कुशल कह गाय ।
सुनत सुनैना हर्षयुत, रही प्रेम जल छाय ।।
बहुरि मातु बोली मृदुवानी । पावहु व्यंजन लाल सुखमानी ।।
सासु विनय सुनि राम उदारा । पाये भोजनविविध प्रकारा ।
सहित कुँवर सब भ्रातन साथा । अचवन कियेमुदित रघुनाथा
सिद्धि कुंअरि करवीड़ा पाये । दोनोंहु भाई मोद उरछाये ।।
बैठ सिंहासन सोहत मोदभरे । मैंथिल प्रेम पगे सब सिगरे ।।
तेहि अवसर पहुँचे निमिराऊ।देख दरस लहि अतिचितचाऊ।।
भ्रातन सहित लालमुख पेखी । पाये आनन्द हृदय विशेषी ।।
पुनि पुनि लेवै हृदय लगाई । करि वात्सल्य अधिक सरसाई ।
अब लगि तात जोदिन गयेऊ । सो सब तात अनल प्रद भयेऊ

होहुन कबहु नयन के बाहर। होयहु नहि रघुवंश उजागर ।।
राम सासुर मुख सुनि मृदु बैना । बोले बचन मनोहर ऐना ।।
करि प्रिय प्यार भल तोषी । भये मुदित मनआनन्द पेखी ।।
आपु सरिस निज पुज्यहि पाई । मममन कबहुअलग नहिजाई
राउर दरश नयन नित चहै । छन छन बढ़ति अधिक उभाहै।
दो०-पगे प्रेम गदगद गिरा, बोले निमि भूपाल ।

आज सुखी सब बिधि भयो, तुमहि निरखि रघुलाल ।

सीतावर राम स्याम सुन्दर सुखद अंग,

चले नृप महल में किसोरी जहँ राजहीं ।

दास सब पाछे अरु प्रिय अनुज आस पास,

मन में हुलास बहुत सुखमा अंग भ्राजहीं ।।

कानन में कनक फूल नाक में बुलाक,

मधुरमय मयनमद मान गलित देखत कवि लाजहीं।

कौस्तुभ उपवीत पीत सोहत मधुर अंग,

मोतिन मणिहार उरसि नूपुर पग बाजहीं ।।

किंकिन करि राजे लर तीन मधुर बाजे,

उपराजे सब नाना सुख भूषण जे अंग हैं ।

पनहीं चित हनहीं जे जराव मनि मोतिन,

करि चलत छवि देत मन मोहन अंग हैं ।।

दोउ दिशि झरोखन ते चन्द्रमुखी झाँकति हैं,

प्राण नेवछावर करि भीनी रस रंग हैं ।

नयन फेरि देखत मुसुक्यान सहित रामरसिक,
दुहुँ बोर नेह कीं उमंग कीत रंग है ।।
दो०-एहि विधि रघुकुल कुमुदशशि, आय महल के द्वार ।
महरानी महली सवे, आरती लीन्ह उतार ।।
बहुरि अर्ध दै फेरि पट, चलीं लवाइ निकेत ।
करत दुलार अनेक विधि, बनत न उपमादेत ।।
पग धोआइ दासी मुदित, बैठे सब सुकुमार ।
परूसन लागी सरहज सकल,षटरष चारि प्रकार ।।
एक थारमें अमित विधि, व्यंजन बहु सुस्वाद ।
जेवत राघव रसिक मणि, गारि होत मृदु नाद ।।
लावति ब्यंजन मधुरअली,करि-२ मृदु मुसुक्यान ।
बजत चरण करिकर मधुर,भूषण रसमय सान ।।
परुसत शोभित कर कमल, कंचन मणिमय थार ।
लेहु लाल अच्छी बनी, व्यंजन मसाले दार ।।
तब बोले सीतारमन, छबिमय मृदु मुसुक्याय ।
मन दीन्हो तिन्ह सब दई,देहु जो तुम कहँभाय ।।
लेत सियावर रसभरे, देति जो नागरि नारि ।
मुखमें लेत वरणन करत, प्रीतिरीति अनुसारि ।।
तब सिद्धा ल्याई दही, मिश्री ता महँ डारि ।
कछु परुसती कछु हास्यमिस,देत कपोल निसारि ।।
एहि विधि हास्य विलासयुत, पावत राजकुमार ।
निरखत मुख की माधुरी, सबहि हर्ष अपार ।।

मधुर स्वर गारी गान करति नागरी,
सुजान बाजत मृदंग वीण उठत तरंगतान ।
प्रीतम नवकुमार सुकुमार रामलाल सन,
सरहज परोसति ते करति अर्थ को बखान ।
ताहि मिसु नाना रसरंग उमगाय चित,
हित सों बताव भावकीयो है अजान जान ।
तेहि सुख समाज को बखाने कौन प्रिया शरण,
परमानन्द रासि मानो तेहि महँ समान प्राण ।
दो०-सीता नेह अरु प्रेम युत, निरखति लालन बोर ।
जननी घर खिरकिन लगी कोटिन रति चितचोंर ।
किकरी सँवारि साज सकल अँचवावन हित,
बहुतन कर झारी सो सुधारी मणिहीर सो ।
बहुतन कर खरचा बहुत शुक्ल वस्त्र लिए,
ठाढ़ी कोई पादुका फेरी राखयो मतिधीर सो ।
जनक नृप महल सकल भुवन सुख,
उमड़ि आयो दासी रूपखड़ी सखी आनंद शरीर सो ।
अचवन कराय पान अतर मगाय दीन्हो,
लींन्हो चले नृत्य भूमि महल कुटीर सो ।।

।। छप्पय ।।

अनुज सखन संग नृत्य भूमि रघुराज विराजत ।
कोटि पुरंदर सम विलास वरणत कवि लाजत ।।

नाना रसमय गुणिन गान करि प्रभुहिं रिझावत ।
रघुपति सकल समाज संग नाना सुख पावत ।।
वरखत आनंद मेंह देह सुधि सबहिं भुलाने ।
परानंद सुख राशि कहत कविमति सकुचाने ।।
उहाँ सहचरि महल की सिया नागरिहिं सँवारही ।
करि अनमोल सिंगार सुठि तनमनधन सब बारहीं ।।
सीतारमन को तेज भानु कोटि के दुतिहि लजावत ।
करन लगी गुणगान तान वहु मुर्छनि संयुत ।
नृत्यन लगी प्रवीण नायका शोभा अदभुत ।
लक्ष्मीनिधि सखन युत रामलाल संग राजहीं ।
भेजेशुचित जब सकल महल वासी सुखराशी ।
कह्यो सुनैना शयन वैन उठि चलि एक दासी ।
नृत्य महल तिन जाय लक्ष्मीनिधि दास प्रति खबर जनाई।
श्रीरघुनन्दन प्राणनाथ को महल में होत बोलाई ।।
चतुराई ते लावहु रसिक सिरोमणि लाल को ।
अतिनागर सुखसागर नखशिष सुखधाम को ।।
चले दासी जहँ सुख विलास में राजत लाल है ।
उठत तान तरंग की आनन्द सरस सुमाल है ।।
कहा जाय अति प्रीति रीतो सो लक्ष्मीनिध को ।
होत वोलाहठ सीतारमन महल दरशन हीत को ।।
गुनिन निछावर पांय के गये सकल निज सदन ।
राघव भ्रातन सहित आये राजमहल प्रमुदित वदन ।

अनुज सहित सीतारमण सासुन सकल जोहारि ।
प्रमुदित मन आशीष लहि, ठाढ़े मनमोद भारि ।
पिया आये सब हुलसही आनंद उरन समात ।
फूली कंज विलोचन वाल निहाल पिय और निहारत ।
चतुर सखी आई हरषि एक राजकुमार के संग ।
ठढ़ भई बतलाते मृदु पानि पकरि रस अंग ।।
मंद विहँसि निजनिज भवन गई सुनैना आद ।
सानुज निजनिज महल गै सखि संग अह्लाद ।।
राम रसिक रसिकिनों भेटि भे परम सुखारी ।
अति सन्मायो प्राणनाथ कहँ जनक दुलारी ।।
नवनागर नवनागरी भई परम आनंद मय ।
मन बुद्धि चित अहमित बिसरि गई भये परसुखहिलय

।। कवित्त ।।

शोभा सुन्दरता महल की बखाने कौन,
जनकपुर महल में विशेष अनुमान हैं ।
हाटक मणि नाना रंग रचित हैं निकुज,
सकलता में प्रयक नवल सुखमा रसखान हैं।
मणिन को दीप चहुँओर ते विराजत है,
पान अतर पुष्पमाल सर्व शोभामान हैं ।
नेह प्रेम वहिन सब संग में विराजे प्यारी,
राम रसिक राजे संग सकल गुणमान हैं।

हरित नील मणिन की कलीत करधनी,

पेन्हेत कंचन गौरांगी सीता सुकुमारी री।

राघव मनभावन शोहावन सब भूषण छवि,

अंग अंग माधुरी पैकोटिन रति बारी री।

कोटि चंद दामिनि दुति लज्जित मणिहार,

सोहे कनक सूत्र सारी दरदामिनी किनारी री।

अधर सुकुमारी पखेसर दुतिकारी,

मुसुक्यान मनहारी रघुनंदन बलिहारी री।

दो०-कहहु लाल माधुर्य मय, वचन सुखद रसबोर।
अंतर जनि कछु राखहु, प्राणनाथ चित चोर॥
कबहूँ नेहते सुरत करि, तुम देख्यो मम अंग।
कबहू हमारे मिलन की, आयत रहे उतरंग॥
हमें तोक्षण क्षम सुरतिते,बिसरयो नहि तुमप्राण।
कमल नयन हे चन्दमुख, जिमिचकोरि को ध्यान।
असकहि भरि आई सिया, सजल नयन भइआइ।
प्राण पियारे रसिकमणि, लियो हिय में लाइ॥

॥ श्रीकौशल्यानंदन कोकिल वयन को बचन॥

जेहि दिनते प्यारी तुम पिता भवन आय रही,

ता दिन ते सरयू पुलिन कुँजनहिं भावेरी।

क्षण-क्षण विरह तेरी मेरी हिय को बिदारे,

रहत भावतन कवनो वस्तु निरखि बिरह छावेरे।

चन्द्रमा अंगार लागे निशिमें न पलक लागे,
सुधि आये प्यारी तब अधिक व्यथा आवेरी ।
कहते न बनत प्यारी जाने सकल मानस मोर,
चन्द विनु जैसे हीं चकोर दुख पावेरी ।
जा दिन ते पाती जनकरायजू की अवध आई,
पिता मोहि बांचन को दई अनुराग में ।
बाचत सुखपायो सब भ्रातन को सुनायो हिये,
प्रेम उमड़ि आयो तब दरस परस लाग में ।
ता दिन ते कछुक अहलादमन आयो प्यारी,
आज तब दरसनविधि लीन्हो मम भाग में ।
विहरहु विहरावहु मन व्यथा कोमिटावहु तुम,
अतिसुख पावहुगी मेरे अंग राग में ।
महल छविकारी तामें सेज सुख अधिक भारी,
चहुँदिशि सुकुमारी सब सेवा विधि लीन्ही है ।
पान दान को ऊकर कोउ हाथ अतरदान,
पीकदान लीन्हे कोऊ तन मन वारी दीनी है ।
मंद हँसि खवावे पान युगल सखी नेह भरी,
शोभा सुन्दरता सब अंगते नवीनी है ।
नुपूर बजावे कोऊ मधुर मधुर गावे कोऊ,
रस उपजावे स्वर ताल में प्रवीनी हैं ।
जनक सुनयना सम न भाग कोउ देव अरुदेव वधु सुकुचाती
जा घर युगल बिहार मनोहर रस सागर अधिकाती ॥

यहि विधि दूलहा दुलहिनी विहरत राजनिकेत ।
अमित कामरति लार्जाहं बनत न उपमा देत ।।
एक दिवस पिय राम सहित प्रिया निज महलमें ।
पौढ़ रत्न प्रजंक लालन सुखसागर सुखद ।।
प्यारी लगि पिय अंक पोढ़ि अति अहलाद मन ।
मुख छबि अतिसुख देत,युगल मगन मुखचंदलष ।
कबहुकहित बतियां करत बढ़त मंजु रसपुन्ज ।
किय सपथ तोहि कहो हिय निजकी सुनु प्यारी ।
अस न अपनपो मोहि जैसे प्रिय तुम लगत हो ।।
मिलौ कोटि ब्रह्मांडहु अस न मोहिं आनन्द ।
ह्रोत जु तब मुख कमल को पान करत मकरंद ।।
श्रवण नयन मन तुम बसे और न कछु सुहात ।
तेरे हित चितवनि उपर बारे सब सुख जात ।।
सबसु खबारी जात जबहि बोलहु मुसुकाई ।
निरखत तब मुखकंज पलक परणे नहि भाई ।।
मेरे हिय आनन्द को तुमहि प्रिये निदान ।
हौ जिय की जोवन जरी प्रानहु के प्रान ।।
प्रेम भरे पिय बचन सुनि प्रिया मधुर मुसुक्याय ।
वारि विभूषण वचन पर लिये लाल उरलाय ।।
एहि विधि प्रेम ढ़िढाई प्रिया कहँ लीन्ह रिझाई ।
प्यारी सब सुखदीन्ह लाल कहँ उर लपटाई ।।

।। श्रीसुनैना अम्बा के महलमें दोनों भाई का निवास ।।

दो०-पतनी जुत नृप जनक की कहिहैं प्रभु में प्रीत ।
राज बधू दुहितां निपुन, बरतै जिम रस रीत ।।

राम वास अपने गृह जानी । मुदित रहैं मैंथिल पति रानी ।।
चीनहिं विष्णु परन्तु छुपावहि । नित जामातभावसौ ध्यावहि
सुभग सरीर कमलदल लोचन । सुभग अनंत मदनमद मोचन
सुभ्रसु उरध पुंड्र विसाला । श्रवन सुकुण्डल डुलहि विसाला
ससि मुख विहग राजसम नासा । सुभरद अधर मनोहर हासा
लसै कंबु कंधर त्रय रेषै । दुति भृगुपद श्रीवत्स अलेषै ।।
पीन अंश भुज हृदय विराजै । नाभी रोम पांति सुभ साजै ।।
अरूकटि देश सुजंघ सुढारा । पिडुरी ललित गुलफ छविसारा

दो०-चरन अरुन राजीव सम, जनमन अलि विश्राम ।
नाना पट नाना भरन, रतनन मय अभिराम ।।

सुन्दर धनुष बाण कर लीनै । अनुज सहित बैठे मुदभीनै ।।
रुप उपासक उत सब बाढ़े । सब सुबलादि सखाढ़िग ठांढ़े ।।
उत्तम दास छत्र सित धारै । ससिकर निकर सुचामर ढारे ।।
आयुध असि चर्मादिक वारे । बहु आखेट खिलावन वारे ।।
गंध प्रसून पान कर धारी । बीरी सेष ग्रहै जु बिचारी ।।
घड़ी जन्त्र धारै सविवेका । नृत्यगान में कुशल अनेका ।।
नाना मृगज हंस सुक मैंना । लिये पिकादि सुनावहि वैना ।।
सकल बिनोदन में प्रभु ज्ञाता । हंसत हंसावत कहि कछु बाता
उचित जथा आइस अनुसरहीं । रंग महिल कौ सोभित करही

द्रग अर्ध पुलिन करहि इम ध्याना। रहिमन ब्रह्मानन्द समाना
अनुचिंतहि चित मैं मति धामा। हय अमल आतमा रामा ॥
निरगुन विरजअलख अविनासी। स्वयंप्रकाश स्वछंदविलासी
निराकार लिप्त अनूप सरुपा। निर्विकार बहुगुन बहुरुपा ॥
सम सरवत्र विभूति विलासा। सदा येक रस आनन्द रासा ॥
आदिन मध्य अंत नहि पाईय। निगमन अजोर गाइय ॥
दो०-स्वईच्छत कोटि अनन्त के, रचन ब्रह्मांड समर्थ।
तत्व संघटन चित करैं, सत्ता मात्र पुमर्थ ॥
सो०-सीरकेत कुसकेतु, पुत्रि सपुत्र कलत्र कन।
अपनी प्रियन समेत,सेवहि तन मन बचनकर।
दो०-भोजन को बुलवावही, निपुन सुनयना रानि।
मुदित जिमावै अनुज जुत,अन्न मधुर निजपानि।
रम्य सनिग्ध छः रस विधिचारा। व्यंजन विसद अनेक प्रकारा
नाना स्नाद कलित जिनमाहीं। रुचि अनुसार पवावत जाही
राम परम सौंदर्ज निधाना। करहि अपुन रुपामृत पाना ॥
बैठी तहँ बहु महिप कुमारी। रुपवान बड़ नव वय वारी ॥
मोहित ह्वै छबि नैनन आनी। गान करै कलकोकिलबानी ॥
रानी सरल बहुत हटकावै। नागर चहइ सुगारिनि गावै ॥
तिनमैं मिली वोर की हेरन। बरजै भूम सुता बहु बेरन ॥
हरयै तिन प्रति सपथ बखानौ। चंचल बड़ी परंतन मानौ ॥
दो०-प्रनय कोप मूठिन हनैं हमै लगावहु नाउ।
हम बिन जो मन मैं चहौ, करवौ करहु चवाउ ॥

सकुच दसा वह प्रभु श्रृंगारी। लै हिय कौ है दृगन निहारी ॥
पुरुष सूक्ति आदिक श्रुतिकेरी। रिचा रिषिनमुष सुनतघनेरी
राम ब्रह्म रघुवंश बढ़ावन। गनै तैसी कबहु सुहावन ॥
गारी नृप दुहि तन की गई। जैसी अधिक लगी मनभाई ॥
पीन आतम सुख सहित सदाही। भये मोहि गुन सुषित महाही
जग व्यवहार कुशल लखि रानी। प्रभु सुभाव तै बहुतसिहानी
पावन कमला सलिल पिवाये। पौछे अंचल वदन सुहाये ॥
भरी लवंग ये लादि सुगंधन। बीरी विरच दई विववंधन ॥
दो०-अनुकम्पा नित नव करै, वातसल्य तिन जान।
कबहू धरसिर अंक मैं, सोइ रहै भगवान ॥
जग न परहि यहभावबिचारी। निरखै छबिथिरतन सुकुमारी
लगै तेज निध स्यामल गोरे। चित्त निकट जुवतिन के चोरे।
कहैं हृदय मैं ये रघुनाथा। नौ नै लागत होइ सिय साथा ॥
व्यजन सजुक्ति भूप तिय लीना। लगी करन मृदुपवन प्रवीना
दिब्य दृष्टि दरसै हरि होई। अहो तत्व तै चिंतहि सोई ॥
गौर वरन लछमन मृदुगाता। साक्षात ते शेष विष्याता ॥
ये पुन राम नील मनि स्यामा। तेसे सुष सायी अभिरामा ॥
मम परजंक अक मह आई। नीके लागत सयन अरुसांई ॥
दो०-जे आश्रय सब विश्व के, विश्वाधार विराज।
मुहि आश्रय पदवी दयै, धन्य भाग मम आज ॥
इम अनुदिन लडल्यावत माही। सुख मैं जात समझ नहिंजाही
बैठारे अंकहिं महिपाला। देखै एक दिन सुछवि बिसाला ॥

दक्षिन भाग उरमिला सीता। बैठी सुन्दर शील पुनीता ।।
निकट सुचक्षु धर्म मैं चारिनि। लसै अर्ध आसन अधिकारिनि
अपने गौरव के सुप्रमाना। तिन सौ कोमल बचन बखाना ।।
प्रियजू मैं तप तीरथ कीने। ब्रत जप जजन दान बहु दीने ।।
नियम संयमादिक विधि ठाई। दया धर्म नय विनय मिताई।
हरि गुरु भक्तीजोगविधिजागा। सबविषयन मह रहेउविरागा
इम अपने भागहि तिहिकाला। भये प्रसंसत बुध महिपाला ।।
उत्तम आतम बोध प्रवीने। आशिष पुत्र भाव बहु दीने ।।
जोग सुभोगन परिपोषहिं। मैंथिल इन्द्र हृदय अति तोषहिं ।।
जो सुख ब्रह्मानन्द पिछाने। रुपानन्द मध्य सो जाने ।।
प्रिये रहे रघुवंश विभूषन। रमैं रमावहि जुवति अदूषन ।।
निमकुख जा निमकुल नवनारी। अतिसय हर्ष समेत निहारी।
कवहूं सिद्धि रिद्धि सह राजै। बचन बिनोद करत छबि छाजै
रुप माधुरी अमल पिवावही। प्रीति भावते तिनग्रह जावही।
दो०-तहँ असनादि अनेकू विधि, पावै बहु सनमान।
विविध व्यंग भाषन सुनै, कहै परम रसषान ।।
सानुज कबहुँ कबहुँ अकेले। कबहु इकंत कबहुँ बड़े मेले ।।
विविध विलास क्रियनमुद दैही। हरिन द्रगिन के मन हरलैही
कुशल उरमिला की जू सहेली। रुप प्रभा निधि वसेन बेली ।।
करकै सिय सिय पति की काना। जैवहि अकेले लहइ सुजाना
मुदतैनिज स्वामिनिहि प्रसादन। करहिभलैलछमनप्रतिपादन
भोगी राज रुप साक्षाता। रंग निलयरस के बड़ ज्ञाता ।।

बंछहि जे जे हित नव जोषा । करहिं तथा विधि तिन संतोषा
बिहरै रुचि अनुसार अलेषै । अग्रज अग्रस का मन देखै ।।
दो०-सिय अनुजाकुल सीलनिधि, मरिजादा की धाम ।
तिहि समाज बैठहि नही, मिलै जहाँ सियराम ।।
रिद्धि सिद्धि लौ करत विरामा । लहै तोष बड राम अकामा ।
रचि विविध उत्तन सरसाती । जैबौ करी प्रिया प्रति पाती ।
तिनके आसय सुमिर गुसाहीं । उपालंभ कौ मन सकुचाही ।।
रिद्धि सील लक्ष्मीनिधि नारी । विहसत करत कटाक्ष उचारी
भो श्रीरमन सर्व सुख धामा । राम तुम्हार नाम अभिरामा ।।
जिन बड़भागिन के श्रु तपरही । तिनके मन आकर्षन करही ।
सकलरसन को निलयबिचारा । सुमरत रसिक उपासिनप्यारा
महामाधुरज आसय माही । आरसिक जिनहि लगै प्रियनाही
दो०-क्रीडा मैं बर्तत प्रभो, विदित बुधन रमु धातु ।
ते सुबरन तब नाम मैं, कहत सुनत रस दातु ।।
आगे जिनजिन जपेउ सुभाइन । ते तुम मै रमि भइस पराइन
जे अब जपहि जहा मनलाई । तिनहि वही आराम दिखाई ।।
रमा वैभवविषयनमह त्यागा । अनुदिन रमत तुमहि बड़भागा
जपहै जे पुनभोर सबासा । रमहैं तुम मह दृढ़ विस्वासा ।।
नाम रावरे मह सुखकारी । परम रमावन सक्ति निहारी ।।
मन रमनीय नाम तब जैसे । तनु रमनीय विराजहि तैसे ।।
कोटि गंधरव गर्व विमोचन । लजै तेज लखि कोटि विरोचन।
कोटि काम ते मोहन रूपा । कोटि चन्द्र लावन्य अनूपा ।।

छं०-धन प्रान सर्वस सवन के नवरस कंदयक मूर्ति हो।
वर प्रभु सिंगार उपासियन शृंगार रस की पूर्ती हो।
निमनाथ निलय विवाह मै बहु जोषिता मोहित करी।
ते आज लौ तब पुनः दरसन के सुअभिलाषन भरी।।
मोहन वपुष तुमार निहारै। को जेनहि कुलकान विसारै।।
छवि माधुर्ज अलौकिक जानी। थिरद्रग पुरुष विलोकहिज्ञानी
सहसा प्रसूतिय दुहितन टेरी। कहैं लेहु सुन्दर मनि हेरी।।
मृगया मैं बपु परषत हँता। मोहै सब मृग जल जंता।।
दरसन ते नहि चित्त अघाती। भो गोस परस कौं सुख चाही।
दो०-बृद्धि विरक्त अकाम मुनि, विपिन बसै तजधाम।
देख परम अभिराम छबि, रमन चहैं ह्वै बाम।।
हम कामिनि नातौ पुन ऐसे। हँसे हँसावहि चाहइ जैसे।।
रुप सम दमन मीन हमारा। विचरत चहियनत्याग किहुवारा
मीन केतु तै तब छबि नौनी। मोहित भइ कौन अनहौनी।।
अनहोनी तुमहू पर करहू। जो नेहिन कौ नेह विसरहूं।।
वय मैं प्रौढ़न ननद हमारी। बालपन लौ हम संग बिहारी।।
प्रथम गमन मैं बस कर लींनै। नहि जानिय असका सुखदीनै।
रही उहाँ तब छबि अनुरागी। वेहू शुवस भई अस लागी।।
सौ यह परसपर प्रेम अदूषन। दंपतिन को परम विभूषन।।
दो०-हमहि परेषौ होत यह, रूप मोहनी डार।
तरसाई दरसनन कौं, चिर लौ कह सुप्रकार।।
पातिनि मैं जसमति हम माही। लिखत रहो बहु विनतमहाही

देखत मृदुल निठरता लीनी । कतहु न सो अंगीकृत कीनी ।।
चतुराई के उत्तर नींके । रहे लिखावत हौ सुचि हीके ।।
जे अपनी जिन कौ बल राखै । करते हिय पुरौ जिन भाखै ।।
तिन वे जो तुम मैं हम प्रीता । कही न होवहि होत पुतीता ।।
तुम में मिल जो तुम कहि दीने । दये सुलिख स्वारथ महभीने
हम निह काम परायन रहई । बिमल चित्त दरसन तब चहई
लयौन बोलन आपहु आये । सुनैन निज प्रिय होत पराये ।।

दो०-निमकुल की जाई हती, बदल भई रबि गोत ।
परषन हारो कह करै, कसर दाम मह होत ।।

अवधि रहत मह सो सुखसारा । चलत न हतेउ उपाय हमारा
अमित जन्म करनी जह जागी । आये बहुत भले बड़भागी ।।
तिरहूतपति तिरहूतपति रानी । बड उपकार कियो हमजानी
तिनके लिखे भये मनभाये । अवधि अधीश्वर ने पठवाये ।।
अब करवौ में हमरी निपुनाई । रहिहो तिम राखहि रघुराई।
बिमल भावना सौ सन मानहि । द्रग द्वारन हो भीतर आनहि
देव रचित मन मन्दिर माही । पौढ़ावहि द्वद पंकज पाही ।।
अंतह करन करन सौचाहे । संवाहई .पद श्री संवाहे ।।

छ०-पति जान बुधि प्रधान तत्व विधान पूजन अनुसरे ।
महि तत्व सौ करगंध लेपन सुमन भुज भूषित करे ।
जल तत्व षटरस चारविधि नैवेद्य विरचि पबावहीं ।
कर आरती सिषितत्व सौंदर्ज लखि सुख पावहीं ।।

सो०-मंद मंद भगवान, ढोरहि मारुत ब्यजन वर ।
अस्तूति करहि सुसान, नभ सौ जयजय शब्दकर ।
दो०-नित्य आतमा राम विभु, रास रसिक श्रीरंग ।
अनि सचित्त की बृति सौ रमहै हम तुम संग ।।
जा मैं हमहि लाज नहि त्रासा । नहि कोउकर सकि उपहासा ।
इतने हंमह रुप रसाला । अनत गये चाहउ किहूकाला ।।
तौ सुप्रेम बंधन सौ बाधै । सरस समाधि कुठरियन धांधै ।।
फेरहि लोचन पलक कपारा । जैहौ फेर कहौ किहि वारा ।।
व्यंग सुप्रेम सुधारस सानी । सुनी विचित्र सिद्धि की बानी ।
व्यवहारिक बातन मह ज्ञाता । बोले राम रसिक मुसक्याता ।
सिद्धि सरस संभाषन माही । दुतिय अपुन ते कोविद नाही ।
जाकौ संग सुकृत तै होई । बोले बसकर पावहि सोई ।।
दो०-देती विविध उलाहनौं, कहि कहि भाव अगाध ।
कत ब्यापहु मम संग सौ, औरन मह अपराध ।।
मो मैं होइ भावना जैसे । बनै कहत कहि लीजहि तैसे ।।
अपुन अव्यंग लिखी कवपाती । गहिरे आसय सुनत सुहाती ।
सदा प्रियन के मैं आधीना । राखहि ज्यौतिम रहहु प्रवीना ।
अहो प्रधान बुद्धि सो पावन । कहौ सुभग पूजन कर वावन ।।
निजते निज अनुरागिनि केरी । राखहु वान बृति जह मेरी ।।
सत्य भावना मह भो वाला । मो तैं भिनन कोनहु काला ।।
मैं निज च्चित अनुवर्तन कहँऊ । सकल काज मै तुम कह चहऊँ
मेरी कृपा विभूति तुम्हारी । जग में सकल प्रानियन प्यारी ।

दो०-विमल तुम्हारे गुनन कौ, अनुभोगी मइ आहुँ ।
इत आवहु तुम विनन ही, उततुम बिन नहि जाहु ।
गये लिखावन जानकिहि, आये ते निरधार ।
पति के चित्त मोहित किये, वर देवर जू हमार ।।
सम दरसी तुम पूरनकामा । विदित सहोदर सब रस धामा ।।
मिलहिन अनमिल साथजु कीने । जो जस तैसिन चाहिय दीने
नृपति कुमारन सो पहु सोई । सम संजोग कहै सब कोई ।।
रविकुल कंन्यन की हम नाथा । जानै गुप्त प्रगट सब गाथा ।।
सकुचहु तुम सब लखहि सयाने । नहि कीरतिजो सहजबखाने
इम परिहास बचन विधि नाना । कहे सुनै श्रीराम सुजाना ।।
अतुलित मोद परसपर लयऊ । तनु कौ भान प्रेम ते गायऊ ।।
जुत येलादि स्वर्न सम पीरी । सिद्धि सुकर विरची वर वीरी ।
भृकुटि मोरि चल द्रगन चलाई । दई सुघूंघट में मुसक्याई ।।
सुन्दर सरस नेह मह सानी । कही बहुर कोमल सम बानी ।।
सों०-ऐसे वाक विलास, रसिक राम नितह करहि ।
करै सुप्रेम बिलास, जैसौ जब समयो लखत ।।
निरत राम रस चरित्र भवानीं । पूछी हसि रमनहि मृदुबानी
भागवान दशरथ नृप नन्दन । गाये परम पुरुष बुध बृन्दन ।।
जनक भवन वसिरूप विसाला । अनुवरतेकिहि भांति कृपाला
सिय संबंध जोग़ मह ज्ञानी । मन प्रसन्नता किहि विधि मानी
दो०-सवके सब नाते लागै, राघव मै सब काल ।
सब मै सब नातेन की, मानन करै कृपाल ।।

क्षीर सिन्धु में जिम श्रीसाथा। बास करहिं संतत श्रीनाथा ।।
जथा हिमालय में कल्यानी। मै तुम जुत निवसहु मृदुसानी ।।
तथा राम लीनै प्रिय सीता। बसे ससुर आलयअति प्रीता ।।
तन सम्बध जिते जग आही। मुख्य सुतिया पुरुष तिनमाही ।।
तिनके उभय पक्ष मह नाता। होत परसपर अगनित भाता ।।
ताते प्रिय सब कह ससुरारा। प्रगट सनातन जह व्यवहारा ।।
द्विधा रामलीला सुभकारी। इक वास्तविय द्वितीय व्यवहारी
समय समय बरते प्रभु दोंई। जानै जिनहि अनुग्रह होई ।।
दो०-मिथिलावासी दिवस को, छन जानै छवि देख।
बिन देखे छन एक को, वितवै जुग सम लेख ।।
तेज अमित रबि सौतन धारे। कालादिक भूभंग निहारे ।।
बसहि न बैकुंठहि भगवाना। नहि जोगिनि के हृदय सुजाना
जह जस अमल भक्तजन गावै। वास करत तह बड़सुख पावै।
गुन अनुरक्त जान मिथिला को। बसे कृपाकर पति सीता के।
बाल वधू तिरहूत पुरवासिनि। विपुलग्रहस्त सुतां मृदुहासिनि
जौवन रुपवती बड भागी। राम चरित्रंन में अनुरागी ।।
दरसन कोनृपमन्दिरआवहि। वाक बिलास सुरसिक रमावहि
सिय प्रसन्नता हित सुभशीला। करै विविधब्यवहारिक लीला
दो०-नव धन सुन्दर अनुदिवस, सुन्दर सब सुख लेही।
आवत ढिगपुर सुन्दरिनि, सुन्दर आदर देही ।।
बैठारहिं ललित कर पासा। बोलहि बचन करत मृदुहास ।।
चर थावर जग चीनन वारे। सबके हृदय करन उजयारे ।।

कोपु न पुत्रवती छवि बाना । भये न जिनके कौन निदाना ।।
कोकिहिविधिनिजपतिहिपियारी । कोसुकोककोविदनिरधारी
को प्रोषित पतिका सीमंतिनि । को पतिनिकरवतीगुन वतिनि
को वल्लभ बस कर प्रवीना । कौन सुरत रसमह को लीना ।
अपनी बृति कहत कुल बाला । लाज करै सबरै सव काला ।।
केचित धृष्ट होइ पुन ऐसी । कहैं असंसय पुछहूं जैसी ।।
तिहि समाज सब विधि की सोहैं । रुचिर बिलासनमेंमनमोहैं।
औरन को औरहु वाचालै । कहन लगी सरसे दृग धाले ।।
नृप केमया भाजन न व्याही । नेह परम निमि नंदनि माही ।।
जे तब ब्याह समय में भूपा । दइ स्वयंबर बिरचि अनूपा ।।
चतुर बरन की बय महनीकी । भई बधू तब अवधिपुरी की ।
दुहुँ कुल नाम बताबत बारा । कहैं सुकौन सुभाव तुम्हारा ।।
जनवाई प्रगटहु रस ज्ञातन । थकौ कहा सुबिना इन बातन ।
इक नव बधू सुनैना चलाई । कहन लगी कर अग्र ढिढाई ।।
भये न किनके सुत जुवषानौ । वय किशोर की हम सब जानौ
रहैं सुषित सिसुता सुखमाहीं । अबै हमैं सुत सोहत नाही ।।
हेतु न होवे कौ नव :नागर । पूछहु तुम कर व्यंग उजागर ।।

दो०,अमित कोट ब्रह्मांड में, रचना अनुदिन होई ।
इहि पद नख उच्चिचष्ट की, महिमा लेखहु सोई।

हौ लो केन्द्र सुवन श्रीमाना । बड़े भये इहि जोग सुजाना ।।
भुवन सुतासम त्रिभुवन माही । गुन अधिका हम देखहिताही।

सुर नर बंसनमेंछबि वंतिनि । नहि समकौ समझहिसीमंतिनि
विद्या ते बरने गुन चहई । उपमा कौ कितहु नहि लहई ।।
पुरी अजुध्या नाथ तुमारी । कहत रहे सुभजग नर नारी ।।
जिहि सौ शुभ जौ लो नहि आई तौलौ कहिवे मात्र कहाई ।।
अब सीता पद कमल समाना । परे उहां कल्यान निधाना ।।
तिन चिन्हन चिन्हितबिधिकीन्ही । निश्चयहित मुद्राकरदीन्ही
दो०-पूरन भई समृद्धि सौ, सहित उत्सवानन्द ।
करे तिरस्कृत स्वर्गके, जथा अर्थ सुखबृन्द ।
निसिदिन सबहि मोदमह बीते । भई अधिक बैकुँठ पुरीते ।।
जगमें गृह स्वामिनि कौ होई । जहाँ रहैं तहँ शोभित होई ।।
मिली वधू रबि बंसिन जैसी । कौने मिलहि सुलक्षन ऐसी ।।
सत्य कहैं लिय नेउ प्रवीना । बंस तुमार अलंकृत कीना ।।
जह निमिकुल अंभोनिधि केरी । चन्द्रकला जग करन उजेरी।
गगन सद्रस आकार तुमारा । होय प्रकास मान संसारा ।।
प्रथम रची जव भूमि विधाता । रहि दरिद्र ग्रसित विख्याता ।
सीतहू कृपा सुधा वरषाई । करके धन सम्पन्न जिवाई ।।
दो०-सुर पुर नरपुर नागपुर, राखै इहि की आस ।
पूर रहो सब विश्व में, अतुलित रुचिर विलास ।।
भये अपुन सब भांति सभागे । सीताराम कहावन लागे ।।
बैठन लगे हमार सभा में । हीन भाव बरतहु तुम तामें ।।
ससुर भये जीगी वड ज्ञानी । सासैं सुनयनादि महारानी ।।
विदित सवन इनहू के नाता । कहैं सबंधु जनक जामाता ।।

लक्ष्मीनिधि आदिक श्रीमाना । जे जे राजकुमार प्रधाना ।।
भये सकल सारे ईहि पाछै । भय अपुन वहिनेऊ आछै ।।
रिद्धि सिद्धि आदिक वपु नौनी । बन्धुजनककुल की गजगोनी
इहि के जोग भई सहराजै । ननदेउ मानहि तुम काजै ।।
सो०-कौशल्या के लाल, कहत रहे सब अवध जन ।
प्रभुता परम बिसाल, पाई तुमईहि वंस ते ।।
दो०-धनुष नही हौ तौ इहां, करते पन नहि भूप ।
नृप मंडल में कौन विधि, होते विदित अनूप ।
क्रीडा चपल रहे लरकाई । सक्तिवान तुम भइ सहाई ।।
कोकहि सकि तब सुकृत बढ़ाई । रमनी त्रिपुर सुन्दरी पाई ।।
श्रीपति बिन ऐसी वर नारी । पाइन सकि कोऊ संसारी ।।
जो उन सौ प्रारब्ध तुमारो । तौ किन मृदुल हृदय महधारौ।
ये मन्दिर बैकुन्ठ समाना । रमवे उचित नित्य विधि नाना ।।
अंतहपुर ते प्रथक विराजे । सदा सुरत सामग्रिनि साजे ।।
क्रीडा के उद्यान सुपासा । संतत करवे जोग विलासा ।।
कुसमित सर तरु सघन मध्याई । आवति त्रिबिधसमीर सुहाई
दो०-मृग विहंग अलितियन संग, करै बिहार सुछन्द ।
लखिय लतन को लपिट वौ,रघुकुल केरव चन्द ।
नहि निकामता जौं अनुसरही । तौ हमसबकी वंछित करही ।।
रमिहि जान किहि राख सुपासा । होयअवधिसुखकोविश्वासा
दो०-सागर है तिन वचन कौ, राम सकल रस ऐन ।
सुनहि प्रेम मदमत्त ह्वै, हेरे निरख मुख नैन ।।

नित प्रति अमित नरेस कुमारी । अतुलित जौवन रुपसंभारी
सिय प्रसन्नता ते रूचि मानी । राघव लौ अनुमोदहि आनी ॥
गंध तमोल सुमनमय दामा । देहि तिनहि फलमिष्ट ललामा
तुष्ट जुरूप अनूप निहारे । सो कि लाभ में तोष बिचारे ॥
मधु ते मधुर बपुष मधुराई । पियत राम की चितन अघाई ।
सीता सी बड़ भागिनि कोई । जानै भुवन कितहु नहि होई ॥
दम्पति कौ माधुर्ज बिसाला । बनौ अखंड रहै सब काला ॥
जुवतिनि के चित दृढ़ अनुरागे । गृह के काज उचितसबत्यागे
बिविध बिनोद क्रियन में माती । छन लौ जातगने दिन राती

दो०-असन सुनयना हाथ ते, कर इक दिन भगवान ।
ससुर सदन में मृदु सयन, पौढ़े ये कत जान ॥

जैसे मातु सेज किहु काला । पौढ़ रहत ते अवधि कृपाला ॥
रहे सुत्यौ पर प्रेम समोये । इच्छा ते सुख ही मह सोये ॥
पुर्व ग्रहन ढूंढत सुद छाई । राज सुता बहुती तहँ आई ॥
निंद्रावस लखि समझिउ चहई । कैसे सावधान ये रहई ॥
मिल चलके हर ये सुप्रवीनौ । आभूषण पर आयुध लीनौ ॥
कितहू गूढ़ ठौर घर आई । कोउ घोर महावर लयाई ॥
पाँइत बैठ सुढ़ीट सुभावा । लगत जथा तिहि भाँति लगावा
अंगुरी मृदुल मृदु पद छविवाना । मृदुललगावन मैंनहिजाना

दो०-करन चहे अंजन सहित, जल जग निरंजन नैन ।
तब लग परे जग सीलनिधि, परमप्रभा के ऐन ॥

हृती जतन परथितजु सिराने । दृग खोलत चंचल न दिखाने ।
कज्जल कलित तर्जिनी जोई । डारी पौछ विदित नहि होई ।
लैकै ब्यंजन सुभाव गंभीरा । लगी मंद विधिकरन समीरा ।
बोली भले सयनवस होऊ । आयो निकट न जानहु कोऊ ।।
करै रम्य दरसन की आशा । कब की हम बैठी तब पासा ।।
और हरिन दृग मृदुल सरीरा । भजी सुख जुत भये मंजीरा ।।
थित ह्वै ढूर मैंन मतवारी । हंसन लगी दै दै करतारी ।।
कहैं विनोद वती वर बानी । कौन गुनन भाषहि चितज्ञानी ।।
परषी राम रही ढ़िग जेती । हैं परिहास निरत सब तेती ।।
गनही कर पावधरी सरलाई । दरसै आँखिन माहि ढ़िठाई ।।
छ०–कहि राम भो वर काम तुमरे अंग कोमलता भरे।
ये कटिन कर्म परन्तु तुम पर जात कहु किहि विधिकरे।
यह ख्यात बुधवर आचरन मह हृदय की पहिचान ही ।
नहि द्रव्य किहुके सदन में अनुमान सौ हम जान ही ।।
चिंता कौ जिन ल्याउ सुजाना । ससुर तुमार महाधनवाना ।।
तुमहि पुत्र अपने अब जानत । प्यारे प्रानन के सम मानत ।।
तिनते अनमोले सुखदाई । सुनत कृपाल दैहि कढ़वाई ।।
कहं करनै ममता कर रामा । विलसहु वांछित वस्तु ललामा
हम जनमी राजन कुलमाही । सम के राजन के ग्रह व्याही ।।
भोगहि नित सम्पति अलेखी । नहि चल च्याहि वस्तु परदेखी
अपनी बहिनि समान दुरंगिनि । जिन जानहुजुभईमुनिसंगिनि
दुहिता स्वयं वराविन जेती । होती पित आधीन सुतेती ।।

छत्री सुता विप्रन घर जाई। कहि ये कौन सुजाति कहाई ।।

दो०-हतो नृप जो जगत में, सुचि रवि वंस समान ।
नृप कलभाष सुपाद लौ, बनौ रहो सुप्रमान ।।
को जानत माता पिता, करत सुकिय उतपन्न ।
होउ खिन्न नहि चित्त में, हौ अदोस बपु धन्न ।।

विदित धरै दर धीरवर जानी। सीरकेतु तुम कौ बर मानी ।।
त्रिपुर अनूप रुप महभारी। अपनी प्रान समान कुमारी ।।
इई ब्याह विधि सौ कर दाना। ताकौ ग्रहन कियो तुम पाना
अवनहि रही नूनता कोऊ। उत्तम तै उत्तम जग दोऊ ।।
रीझ मनहि भाषो रघुराई। जनहु बहुत बचन निपुनाई ।।

दो०-प्रथमहि हम जानी नहीं, बसत चोर इहि टाम ।
तौ कह अपनी वस्तु कौ, राखन लेते भाम ।।

भाषत ही इम राम कृपाला। बातन तृप्ति होइ नहि बाला ।।
निर्भय लोकलाज नहि आने। बोली ब्यंग बाक रससाने ।।
हौ अनन्य जन प्रिय भगवाना। बली बलिन मैं चरित निधाना
नारिनि के पुरुषन के नाथा। वल ते देखत हंइक साथा ।।
चोरत चित करके चतुराई। कौने यह विध तुमहि पढ़ाई ।।
जुवति ग्रह स्तिनिकीसुबहोरी। किय ग्रह कर्म क्रियनकीचोरी
लोक लाज निन्दा हर लीनी। कीनी बंधुन में हित हीनी ।।

दो०-दृष्टि मात्र जमदग्नि सुत, दीने जरीं बनाइ ।
समयक ईश्वर की बहुर, लिय ईसता चुराइ ।।

तुम में इन्द्रजाल बहु पाये । कौन इन्द्रजाली सुपढ़ाये ।।
सिल ते जडन वस्तु निरधारी । तिहिते करी मनोरम नारी ।।
छन में प्रहुँचाई पति पाही । कहाँ चमत्कृत पद रज माही ।।
खण्ड पर सूकोदंड बडेरौ । मेरु समान सार जिहि केरौ ।।
सब अवनीस गर्व को गंजन । रावनादि कर पावे न भजन ।।
लेत करन मह टूट सुगयऊ । भट समूह में वड जस भयऊ ।।
ऐसे कहि सैनन में कहई । नृप पतिनी ढ़िग ही ग्रह अहई ।।
आइ जांहि तौ बनहि न आली । धर द्विजैन जहाँ प्रनाली ।।
दो०-बड़ी निपुन येकैत ही, वातन रही लगाइ ।
धरी जथा विधि बस्तु सब,येकन दृष्टि बराइ।
भई प्रसन्न आन प्रभु पासा । करत कटाक्ष कहे मृदु भासा ।।
तुमही चोर साहु तुम आहु । मिथ्या अपजस दीजत काहू ।।
मद विहवल हैं नैन तुमारे । नहि नीकै निज निकट निहारे ।
जे देखहु आयुध पट भूषन । धरे इहाँ कोकर सकि दूषन ।।
कहती इम तिनसौ श्रीमाना । बोले करत मंद मुसक्याना ।।
नारी मैं भारी भामिनी । कलि मैं अरु काली महकामिनी ।
आदि पुरुष जिहि अंड बनाया । थापित करै सर्व निज माया ।
तुम सौ को बातन मह जीतहि । तुमरे कर्म देखमन भीतहि ।
दो०-अंतर चहैं न हास में, करत राम के संग ।
पुन पुन औझहि प्रेमते, मोहित करी अनंग ।।
विविध धृषता की तिनबानी । कैसहु सुनि सुनयना रानी ।।
चितींय दुहिता अभिरामा । वयमद करन न देहि विरामा ।।

उचितन सुनहि कबहु महिपाला । नहिप्रसन्न होवहिइहिचाला
निज ढिग ते दासिहि पटवाई । बोल लई कछु व्याज बनाई ।।
जनकनंदिनी सील निधाना । जासु पिता अतुलित श्रीमाना ।
छनछन प्रति पटभूषण भाये पहिरहि जेतन लगहि मुहाये ।।
लोकरीति लज्जा कह लीने । चिर लौ राम दरस बिनु कीने ।
बिना मिलै घनश्याम बिसाला । सुखकर गनत कौनहुकाला ।
सो०-नये नये शृंगार, करवावहि चातुर्ज कर ।
मति सौ समय निहार, ल्वाइ चलहि श्रीरंग लौ ।
दो०-ठठकत पग मग में धरत, करत मातृ जन भीती ।
सहचारिनि सम रुपिका, बोधत जाँहि सप्रीति ।।
भयन लडैंती जिय मह आनौ । अर्धराति सब सोवत जानौ ।।
श्रीपति ग्रह ते जनक तुमारे । तेहु सुनयना भवन सिधारे ।।
राजकाज करके सब भ्राता । गये राउन को तब भ्रता ।।
कर कर दासी दास प्रनामा । गये सुचित ह्वै निजनिज धामा
आवागमन रहा अवनाही । चलिये प्रिय पति लौ मुदमाही ।
रंगभवन भीतर पहुचाई । निज निज थलन रहैं बिरमाई ।।
ब्रह्म मुहूरत लखि वैदेही । जदपि न त्यागन चहत सनेही ।।
तदपि मातृ गृह सकुचन थोरी । आवैद्वारि निजसयन किशोरी
दो०-कछु दिन ते जह नित्यक्रम, बाँधौ सुखद सषीन ।
जिहि तिहि विधि सिय राम कौं, देहि मिलाइ प्रवीन ।
।। सिद्धिजी के साथ चलना राम ।।
एक दिवस निमिजा बड़भागा । गई सिद्धि ग्रहवसे अनुरागा ।

संग उर मिलानित सुखकारीं । सहोदरी प्रानन लौ प्यारी ।।
निपुन सषिनि दासिनि कौ जाला । सोहेसेवन निरत बिसाला
लक्ष्मीनिधि की तिय सु प्रवीना । आदर बड़उ जथाविधिदीना
नाना बचन बिनोदन माही । अस्त होत रबि जानेउ नाही ।।
स्वार सुन्दरिनि विनय कराई । प्यारी हरि मदिर ते आई ।।
गवन सुपाक मंदिरन कीजै । महा प्रसाद सीस धर लीजै ।।
उभय ननंदन सहित सुभ्रांता । पाई विरचि तियनकी पांता ।।
दो०-मुख सुगंध वीरा विविध, भोजन करै सप्रीति ।
अंग राग सौरभ सुभग, दये परस्पर रीति ।।
चलि आपुन पहुचावन काजै । विचभवन राघव के राजै ।।
चलहिन सिया बरहु गहिहाथा । ल्वाई गइ जह श्रीरघुनाथा ।
बोलि हंसि ईक रतन हमारौ । जौ तुम नीकि विधि उरधारौ
तौ हम तुमहि देहि छन येहीं । वह चिता मनि सम मुददेही ।।
निकट राखनिसि परखैंहु सोई । तजहुन कबहु सुखद जौहोई ।
सुन इस गुढ़ उक्ति मयबानी । विहसी रसिकवर रामबखानी ।
तुमरौ दयौं जन्मप्रति लेहू । महि रतनाग्र भोगता मैंहू ।।
लसै लाल ते सिय उतकंठा । भई कामते हिय उतकंठा ।।
छ०—पहुचाय रंग निकेत महँ, सखिन जुत मुरकै चहै ।
कर लाज भयकौ अग्रसिय कढ़ि वस्त्र करदोहन गहै ।।
कहि सिद्धि हम नहि जात लछमन मंदिर में रहै ।
नहि भेटवहु वासरन ते तह जाय कछु बात कहै ।।
करि प्रबोध सिद्धि मतिमाना । गई रहै लछुमन जाहँ थाना ।

सो०-वैठारी तिनके पास, एक मुहरत लौ सुबुध ।
तुमछित वाक विलस, करहिन हमसौं सीलनिधि ।।
दो०-तब लगि इहां विलविये, हमरे कहे प्रविन ।
आवहु बहुर परसंनहिय, युत सुभगादि सषिन ।।

।। शयन महल ।।

चहुँदिशि मनिमय महल तहँ, मध्य सुकुँज बिशाल ।
पदमराग खम्भावली, गजमुत्ता को जाल ।।
विविध रंग की चाँदनी, परदे बने विचित्र ।
विछे बिछौना मखमली, उदय चित्र शशिमित्र ।।
लच्छे लठकत ललित अति, तहँ कंचन पर्यंक ।
अति कोमल पयकेन सम, विछे वसन तेहि अंक ।।
क्रियो सैन तहँ लाल सिय, मेवासुख अतिलेत ।
रसिक मंजरी सुघर अति, युग पद जलज सुहेत ।।
मदन यंत्र बाजत मधुर मधुर मधुर सुरगाय ।
सुनत सुनत सियलाल को दृगन नीद रही छाय ।।
कियो अलीगन सैन सब निज निज सुखद निवास ।
वहु अलि छाई क्षोम पर निरखति निशा प्रकास ।।

।। अष्टयाम ।।

सेस चारि घटिका निसि जानी । मंगल सजहि थार सुआनी ।
मदनकला दम्पति रूपनिहारी । भरहि दृगनमहँ करबलिहारी
पद्म गन्धा सूरुपिनि हेली । गावै सरस रागगीत नवेली ।।
प्रात माङ्गलिक वस्तु सोहाई । सुषमा तहँ दरसावत आई ।।

दो०-सुचि अभिनयसो सुरति सखिमोहै लखि दम्पती चित्ता।
करवावत सुइच्छा सविधि सुचित कैंकृत नित्ता ॥
शान्ति रूपिनि रहि ढ़िग माही। दुहुन दन्तधावन करवावही।

॥ छप्पय ॥

अग्निकोण में परम ललित एक कुन्ज सोहाई।
बैठे तहँ प्यारिन समेत लालन रघुराई ॥
सहचरि जल दतुइन ले आइ सब बदन धोआई।
दिव्य वसन मुख पोछि कछुक अहलाद बढ़ाई ॥
नाना सुरभि सुनामिनि आली। करहिं सौज सब रचिहाली।
स्नान निकुँज स्वच्छ सोभनी। अन्हवावत तनदरस विलयनी
अंग सुगन्धन मीड़िके निरखहिं बलिजाई। नहवावत सुखदाई
युग चौकी पै बैठाई नहवावत सुखदाई।
दोउके अग पोछत भई सो सुख बरनि न जाई।

दो०-बहुरि तहाँ अशनान करि, गये कलेवा कुन्ज।
सो दक्षिण दिशि राजहीं, खटरस व्यंजन पुन्ज ॥
भोजन करि प्रमुदित भये, गये कुन्ज शृंगार।
सो नैरित्य विराजहीं, कंजन मणि आगार ॥

॥ छप्यप ॥

कीन्ही तहाँ सिंगार पिया प्यारी मनभाई।
नखशिख मणि रचना अनूप छवि वरणि न जाई।
पश्चिम दिशि शृंगार आरति कुन्ज सोहावन।
तहाँ गये रघुवर किशोर बहुकाम लजावन ॥

बैठे मोतिन तखत पर लाल लाड़िली अति छवि।
भूषण वसन अनूप सब झलकत सो जनुशशि रबि ।।
दरपन दइ मुख देखहीं युगल मगन निज रूप में ।
सहचरि सब मोहित भई युगल स्वरुप अनूप में ।।
आरति लई उतारि सहचरी मोद बढ़ाई ।
सकल प्रिया मव हर्षमहा उरमें न समाई ।।
भूषण नखशिख मणिन जराई । अंग-२ रचि सखिन बनाई ।
सोह नवल तन नूतन भूषण । नखशिष सब शृंगार अदूखण।
कंचुकि अंग अनुकुल पेन्हाई । सकल बसनमहँ अतर लगाई ।।
बीरी ललित खवाई बहोरी । सखिअन मनमहँ प्रीति न थोरी
राजिव नयननि अन्जन सोहे । सकल सहचरिन के मनमोहे ।।

।। सिंगार कुन्ज ।।

चहुँदिशि घर सिंगार मध्य सिंगार करावन ।
तहाँ बिछी वर फरस अरुण रंग अतिसोहावन ।।
सिय कहँ लै सब बहिन समेता । गई सहचरि शृंगार निकेता
सिय की सकल सखीं परवीनी । करण लगी सिंगार नवीनी ।।
अङ्ग सकल शुभ गंध लगाई । कमला बिमलसलिल अन्हवाइ
वसन नवीन महाँ छविरासी । पहिराई अति प्रेम सुदासी ।।

।। सभा कुन्ज ।।

गये सभा वायव्य कोण तहँ बैठें जाई ।
सकल प्रियन की भीर महल अदभुत छबिछाई ।

बैठी सब नृप लाडिली पिय संग मन मोहहीं ।
रसिकलाल प्यारीनवल नखशिख अदभुत सोहहीं ।

उत्तरदिशि भोजन गृह सोहै । वरणे छविसो कवि असकोहै ।
आसन भोजन दिव्य सोहाई । प्रियन संग बैठे रघुराई ।।
आइ भोजन थार सोहावन । षटरस भरी ललित अतिपावन
पावत सब मन हर्ष बढ़ाई । व्यंजन अमित स्वाद मनभाई ।।
हाँस बिलास होत बहुरंगा । सबके मन अनुराग अभंगा ।।
भोजन करि अचमनपुनि किन्ही । बीरी ललित सहचरीदीन्ही
चले शयन की कुन्ज सोहावन । सोई सान कोण मनभावन ।।
सेज्जा विविध रंग तहँ सोहे । सब पर उपवरहन मनमोहे ।।
तहँ प्रीतम प्यारिनमिलिगयऊ । बिमल सेजपर शोभितभयऊ
करि पुनि सयन उठे रंग भीने । लाडिली अंश लालभुज दीने।
मुख प्रछालि कछु मेवा खाई । अलिगण करमुख दीन्हधोवाई
पानअतर दूसर सखिदीन्हा । कछु पियलई कछुप्यारिनलीन्हा

।। केलि कुन्ज ।।

दो०-प्रथम आपनी महल सब, देखी मन चित्त लाई ।
सकल महल अदभुत लसे, शोभा वरणिन जाई ।
सबके मन अभिलाष लखि, पिय प्यारी रुचिपाल ।
अमित रूप धरि अलिन संग, करन लगे रसख्याल ।।
काम सदन बहुरूप धरि, लगे बिहरने लाल ।
अमित रूप धरि सखिन तन,प्रविश कीन्ह सियलाल ।

बंगला अष्ट सुमन कर सुन्दर, सुभग तड़ाग सोपानरी ।
प्रथमहिं बैठि मधुर फल पावहिं,गावत अलिगन गानरी
करि पढ़ावहिं कौतुक निरखहिं, कतहुँसो झूलन लागरी ।
खेलहिं चौपर मरम बचन पुनि, बुझवहिं मन अनुराग री ।
चलत फुहारे विविध भाँति के, खेलहिं पुनि रस फाग री ।
पुनिकुंजन 'रसराज' सुयहि विधि निरखहिं जेहि बड़भागरी

॥ छप्पय ॥

चौसर घर सतरंज नई वत्तिस रंग दोहै ।
लोलवोरणि स्याम प्रिया दिशिपीत बनो है।
लाल बोर जोह लाल को रूप सोहावन ।
नेहकली तहँ वो बोजीर पिय जयति करावन ।
प्रिया बोर जो साह हैं सीता रूप अनूप हैं ।
प्रेमकली ढिग राजही सोई ओजीर को रूप है ।
अपर नर्द सवकी सरूप निमिवंश कुमारी ।
दोउ दिशि शोभा करे महाछबि अतुलित भारी ।
पुनि चहुँदिशि सब कुंअरि लसे नखशिख मनहरणी ।
खेलत प्रीतम प्रिया महाचबि जायन बरणी ।
होत अमित कौतुक तहाँ अतिशोभा तनु छाई है ।
श्रीसुखमा निज चालते सिय की जीति कराई है ।

॥ रास कुन्ज ॥

दो०-अमित हास दौदिशि भई, सबके मन अतिमोद ।
राजकुअर नृप कुंअरि संग, करत अनेक बिनोद ।

पुनि प्रभु गये कौतुकागारा। जहँ अनंत खेल बिसतारा ।।
स्वौत पांडुरो धुरस पीता । श्याम अरुण ध्रुम रक्त पुनीता।
पिगलन बरनौ मणि अपारा। तेहि नवमणि के विविधप्रकारा

दो०-यह सब लिखे विविध रंग, अङ्ग उपङ्ग बनाई।
खेलवावहिं सरहज विहसी, रसिक राम रघुराई।
सप्त उर्ध अरु अद्ध में जहँ लगि नृत्य समाज।
तिन में नटति जो नायक तेहि के रुप अरुराज ।।
निरखत रसिक मणि, रामलला सुख गेह।
नारि नवलदेखावहीं, पिय कहँ सहित सनेह ।।
कहुँ होरी की नकल बहु, खेलत नर अरु नारि।
तहँ अबिर अवरख बिमल, उड़त अनेक प्रकारि।
कतहु ब्याह रचनालिखि, मंडप विविध सँवारि।
कहुँ कोहवर रचनालिखि, यूथ यूथ वर नारि ।।

दो०-खंड अनेकन वने तहँ, नौरंग मनिन सँबारी।
तहँ कौतुक सब देखिये, करमें कल को धारी।
कोउ खंड में जायके, कल फेरिये सुदाव।
निकसे कृत्रिम नायिका, नृत्य करै बहुभाव ।।
पुनि दूसर कल फेरिके, उदय होय सारीतार।
यहि विधि कोतुक अमित, को वरनि न पावै पार।

दो०-झुलन को प्रीतम प्रिया आये कुन्ज मंझार।
कुन्जेस्वरि सनमान करि, सजवायो दरबार ।।

हिलि मिलि झुलत डोल दोउ अलि हिय हरने लाल ।
लसत युगल गल एकही, सुसम कुसुम मय माल ॥

॥ छन्द ॥

नृत्यगान की सलाह तहँ आपुस माही ।
लाई नृत्य सिंगार सहचरी जोइ जोइ चाही ॥
सब कुअरिन पहिराई वसन महँ अतर लगाई ।
बीरी दै मुखचंद रंजि पुनि मुकुर दिखाई ॥
लागी साज मीलावने सातों स्वर मंडल छई ।
नृत्यगान करने लगी परमानन्द सुखमय भई ॥
भई परम आनन्द देह सुधि सकल गवाँई ।
होडा होढ़ी नरति सिया दूलह सहित ॥
युगल अनोठी तान लेति गावति मृदु गीत ।
नाना गति ते नृत्यहि गावहि राग नइ नई ।
सब कुअरि एहि भाँति ते विविध गति नृतत भई ।
कोई अनुठी तान लेति सब भाँति संवारी ।
याम एक एहि भाँति ते नृत्यगान सुखअति भई ।

सब कुँअरी निमि वंश की, लालन रूपहिं निहारि ।
रास श्रृंगार वनाइके, सब विधि भई तयारि ॥
लालन हूं श्रृंगार निज, रची महाछवि देत ।
महल बहुल जगमग भई, शोभा केर निकेत ॥
जन्त्रकार सहचरि सकल, आईं सजि निज रूप ।
जन्त्र बजावत मन हरति, गावति राग अनूप ॥

युग युग प्यारिन मध्य में लसत लाल छवि अयत।
नृत्यत मुद्राकार हैं मोहत नयनन सयत॥
कर कर धरि नृत्यत युगल नूपुर बजत उदार।
मध्य सिया संग नृत्यही, स्याम रसिक सुकुमार॥

छप्पय-व्यारु कुँज की सखी एक आई तेहि काला।
लखि सीता बर को अनूप छवि रस मतवाला॥
दई जनाय प्यारी तयार पिय भोजन कीजे।
प्यारिन के संग आइ लाल मोकहँ सुख दीजे॥
उठे लाड़िली लाल तव भोजन के गृह में गये।
सकल प्रियन के संग में बैठि मुदित प्रफुलित भये॥१॥
आवन लगी थार रतन मणि जरित सोहाई।
षट्रस व्यंजन भरी पूप पूरी मन भाई॥
दधि मिश्री मेवन की खीर बरबीर ले आई।
भरी कटोरन धरी लाल प्यारिन ढिग जाई॥
जल की भाजन मणि जरे धरे सकल ढिग सोहहीं।
पावत पिय प्यारिन सहित काम रति मन मोहहीं॥२॥
भोजन कर अंचवन कराई दई पान सहेली।
चले सैन की कुंज लाल सीता अलबेली॥

षऋट विहार

ग्रीषम कुँज में पुनि गये, स्याम राम सुख पाई।
हौज अनेकन रीति के देखी, मन चित लाई॥
कल फेरतें अमित जल, कमलाही को आवा।

पुनि फोहार अनेक विधि देखि सबक्हि भाव ॥
एक दिवस में एहि विधि, देखि ऋतु कुँज ।
शिशिर कुँज निशि सैन भइ, जहँ सुख रस पुँज ॥
पौढ़ा अपनि सह चरिन, लई सुनयना टेरी ।
सुनि आयसु अति मुदित मन, जुरि आई सब नेरी ॥
मृदु कहि सवहि बुझाय, सिय को षट ऋतु कुंज ।
सकल दिखावहु हर्षि हिय, स्याम राम सुख पुँज ॥
जेठ असाढ़ ऐसे गई, करत अनेक विलास ।
पुर भर में आनन्द महा, करणिन जाय हुलास ॥
आई सावन मास जब, झुलत युगल हिंडोला ।
कुँज कुँज प्रति झूलना वनि मणिमय अनमोल ॥
महल निकुँज में पिय राम सिय संग सोहा ।
गौर स्यामल अंग छवि लखि रति पति मन मोहा ॥
उठे लालन संग प्यारी, चले झुलन धाम ।
सह चरित्र की भीर चहुँदिशि, सकल नारि ललाम ॥

॥ ऋतु बिहार ॥

चंद्राननि चहुँओर लिय फुल गेंदा ललित ।
मध्य किशोरी किशोर फूल गेद खेलन लगे ।
विबिध फुल को हार पिय प्यारी पेन्हे दोऊ ।
सजित तन रतिमार सकल फूलन के सजे ।
नख शिख भूषण फूल फुले खड़े सनेह में ।
निरखि नयनअलि भूल सकल प्रियन के सुखरस ।

फूलन खेल अनेक कला अमित तेहि खेल में ।
करि करि सकल अनुठी हास सकल खेलही ।
चलिये शीघ्र कछु खाइये, व्यंजन ललित अनूप ।
चले चतुर भ्राता विहसि, मंगल मोद सरूप ।।
बहुरि अर्धदय फेरि पट, चलि लिवाय निकेत ।
करत दुलार अनेक विधि बनत न उपमादेत ।।
पग धोवाय दासी मुदित बैठे सब राजकुमार ।
परसन लागी सरहज, सकल षटरस चार प्रकार ।।
एक-२ रस में अमृत विधि,व्यंजन बहु सुस्वाद ।
जेवत राघव रसिकमणि, गारी होत मृदुनाद ।।
लावति व्यंजन मधुर अली, करि-२ मृदु मुसुकान ।
बजत चरण कर मधुर भूषण रसमय सान ।।
परसत शौभित करकमल कंचन मनिमय थार ।
लेहु लाल आले सरसवनी, ब्यंजन मसालेदार ।।
तब बोले सीतारमन, छविमय मृदु मुसुकाय ।
लेत सियावर रसभरे, देत जो नागरी नारी ।।
मुख मेंलत वर्णन करत प्रीति रीति अनुसारी ।
मन दीन्हे तिन सब दियो, देहु जो तुमहि सोहाय ।।
तब सिद्धा लाई दही, मिश्री तामहँ रसमय डारी ।
कछु परसति कछु हस्तमँह देत कपोलन प्यारी ।।
यहि विधि हास्य विलास युत पावत राजकुमार ।
निरखत मुख की माधुरी सब हिय हर्ष अपार ।

पीवत वारीसो छबि नजायवखानी । देखि-२हरषि महरानी।
पुनि बोली सिद्धा कर जोरी । वाणी मधुर अमिय रसबोरी ।।
लेहु लाल तरकारी औरी । कहहुतो अबहि लाउ गर्म कचौरी
जो रुचि होय सो माँगहुँ प्यारे । रघुनन्दन तेहिमुखहि निहारे
मंद विहँसि माँगी सो पाई । तेहि छन को सुख बरनि न जाई
भोजन भई श्याम मन भाये । मधुर स्वरन सखी गारी गाये ।
दो०-अचवन समय निहारिके सहचरि भई सचेत ।
जलझारी स्ववर्ण की भरिलई प्रीति समेत ।।

।। झुलन बिहार ।।

सकल कुअँर अचवाय के वीरी ललित खवाय ।
बहुरि कुंवर सब कहँ देई,कुँवर कुअँरिन ढिग पहुँचाय ।
वैठे श्याम अनुज सहित महाँमोद मन माही ।
सरहज सब बैठी तहाँ शोभा वरनिन जाही ।।
बाते रसमय होत वहु सुनि दुलहिन मुसकाही ।
सरहज ननदोई वचन सुनिरति काम लजाही ।।
सुभ मुहूर्त आई जबै दुलहा दुलही समेत ।
सरहज रुख लखि चलत भे झूलन सुखद निकेत
सब सखी कहँ गान करही । जन्त्र वदत सो वरनि न जाही ।।
हास विलास अमित बहुरंगा । होतजात सरहज सब संगा ।।
पहुचे जबही हिंडोल घरमाही । रघुनन्दन मनसुखन समाही ।
लखि रचना तेहि अतिहि मनोहर । बोले रामकुंअरको मनहर
झूलहुँ सबही झुलावहु मोही । सिद्धा कहि हमार मत ओही ।।

रघुनन्दन सुनि अतिसुख पाई। सरहज बीरी ललित खवाई।।
ताहि महल में कुन्ज अनेका। रचना सकल एक ते एका।।
प्रति कुन्जन हिंडोल सुठि सौहैं। रचना सकल कामरति मोहैं।
चारि कुन्ज में चारो भाई। निज दुलहिन संग आनन्द भाई।
दूलहन कहँ दुलहिन समेता। बैठारे हिंडोल अति हेता।।
लगी झुलावन गावन गीता। अतिसुख लहेउ रामअरु सीता।
जन्त्र वजत विशेष सुखदाई। सखियन गान करै मनलाई।।
विविध हास सरहज सब करही। आनन्द उमगि-२उरभरही।
दुलहिन घूंघट में मुसकाही। सो समाज सुख बरणिन जाही
जाल रन्धन रानी सब देखी। जीवन जन्म सुफल करि लेखी।

दो०-बहु बिनोद झूलत महल भई अति परम उदार।
सबहि मगन सुख सिंधु में सव हिय हर्ष अपार।।
आई कुर्जहिंडोर बैठे सखि खवाई पान।
बजन लगे जन्त्र विधि ते होत सुमन हरगान।।
नागरि सब उमंग भरि भरि लै अनोठितान।
पिय प्यारी तहँ रिझावति हरति रति-२ कौ मन।।

सारी सरहज के साथ नृत्यगान हास्य रास परिकर्ण
बैठे सिद्धि सदन कछु राजे। सेवत सखिगन चहुँदिशि भ्राजे।

दो०-नवघन सुन्दर अनु दिवस, सुन्दर सब सुख लेही।
आवत ढिगपुर सुन्दरिनि, सुन्दर आदर देहीं।।
वैठारहि निजपास वोलावहि वचन करहि मृदुहाँस।

सखियन लालन को बुझाई विधि में बैठाई ।
मसनँदत किया अति अनूप छवि वरणिन जाई ।।
पुनि कुंअरिन बैठायउ पिय समीप सादर मुदित ।
कोई वाये कोउ दाहिने जनुबहु शशिधन ढिगउदित
छत्र सकल कुंअरि कुमार ढ़िग सखि लै टाढ़ी ।
चमरढार सब खड़ी भई अदभुत छबि बाढ़ी ।।
अपर सखी सब यथाभाव सेवा लिये सोहे ।
लली लाल छबि सिंधु सकल परिकर मनमोहे ।।

॥ रास बिहार ॥

लक्ष्मीनिधि की प्रिया सकल शोभा गुणखानी ।
रघुनन्दन को मुख निहारि बोली मृदु बानी ।।
सुनहु लाल आनंद धाम सुखधाम बिहारी ।
ह्वै अज्ञातो सखी नाँचि मन हरहिं ते हारी ।
रघुनन्दन बोले मधुरतुम नांचहु तो अतिभली ।
तथ पूरण सुखपावई मन हमार सुनिहू लली।
सिद्धा कही मुसुकाइ नाँचिहो तुमहि नचाई ।
जौ तुम्ह नाँचहु लाल महासुख वरणि न जाई ।।
लाल कही हम नचब ननद तुम्हरी जव नाँचे ।
तब तो अति सुख होय कोई रस रीति न बाँचे ।
जंत्रकार अगणित सखी जोसिय प्यारी की कृपा ।
बाल संग ते सँग रही आई सब हर्षित हिया ।।

सकल जंत्र सम कीन्ह येक स्वर बाजन लागे ।
बाढ़ी स्वरन अलाप सकल प्रमुदित मन जागे ।।
सिद्धा कहि इक सखी महल की सदर दुआरी ।
दै कपाट चलिआउ अबहिं नहिं कोऊ नारी ।।
षट वसु षोडश सहचरी अरु सरहज सब रहगई ।
सब विधि साज सवाँरि के नृत्यरु गाना रंभभई ।।

।। सातो सरहज को गान ।।

सुनहु रसिकमणि रामदुलारे हम सब तुम पर बारी ।
देखत तब मुख कंज माधुरी नयन कंज छबि भारी ।
अधर अरुण पर मुक्ता झलके दलके हृदय हमारी ।
बोलनि मधुर हँसनि छबिसुन्दर अदभुतलाल तुम्हारी
उर मणिमाल पदिक की शोभा लषत नषत शशि हारे।
सिह कटी पर किंकनि चमके पद राजीव ते हारे।
नख अवलींमें लली सब मोंहित जावक अतिहिं सोहाई ।
प्रियाशरण मनहरण लाल तुम मंजु महा छबि छाई ।।

।। महारास ।।

दो०-सरहज की अभिलाष लखि, उठे लाल चितचोर ।
कुंवरि उठि प्रमुदित बदन, नटन लगी कर मोर ।।
होड़ा होंड़ी नृत्यही, सब कुंअरिन मिलि लाल ।
बहु सुख रस अनुभव भई, उमड़्यो आनन्द माल ।।

।। श्री लाल जी को गान ।।

चंचल दृग रतनारी प्यारी तेरी मेरो चित्त हरी ।

विहँसनि नटनि आँगुरी मोरनि झलकनि भूषण अंगजरी ।।
लचकनि कटि अस ग्रीव मनोहर नटनि तन विमन सोहै ।
चमकनि ठमकनि रमकनि की छबि रति मनहार बनो है ।।
सुख सागरि नागरि सुकुमारी, अंग–२ बर टोना ।
प्रियाशरण तब छबि समता की नागरि भयउ न होना ।।

लाड़ित अलबेलीं राज दुलारी ।
सुकुमारी मनहारी प्यारी कमल नयन कजरारी ।।
छवि भारी मन आनन्द कारी मेरी प्राण अधारी ।
प्रियाशरण चिकनारी अलकै अलकै बेसर वारी ।।

।। श्रीकुँवरिन को गान ।।

पिय छबि मौंपै वरणिन जाई ।
क्रीट मुकुट मीनाकृत कुण्डल, सुन्दर अलक सोहाई ।
नासामणि झूलत अधरन पर, अरुण अधर राजत सुखदाई ।
चमकत दशन तड़ित द्यु ति लाजत, विहँसनि अतिछबि छाई।
केशर तिलक बिन्दुयुत झलकत, भृकुटि वंक मदन धनुमाई ।।
कजरारे नयनन की चितवनि, कोटिन काम लजाई ।।
राजकुमार सकल गुणसागर, बोलनि में मधुराई ।
प्रियाशरण मनभावन पिय को लखि बिनु मोल बिकाई ।।

।। छप्पय ।।

महारास भई छवि समुन्द उमड़ी सुखदाई ।
सबकी आस पूरी भई सबकी मन भाई ।।

पुनि बैठे रघुवीर लाल बैठी कुंअरी सब।
बहुरि आइ मनलाज, छपी घूंघट दुलहिनितब।
हँसन लगी सरहज सकल बहुविधि लाल हँसाइ के।
मन वाँछित सुख लीन्ह सब परमानन्द अघाइ के ॥

दुलहा दुलहिन की होली।

दो०-अति सप्रेम रघुलाल को रानी अजिर बोलाइ।
सुनत शासु अज्ञा प्रबल, सब कुमार तहँ आइ ॥
संग आये रघुवंश के कुंवर सकल गुणखान।
सहबाला सव राम के, प्यारे प्राण समान ॥
सब कुंअरौटा येक दिशि, सब कुंअरी एक बोर।
होन लगी मंगल महा, रति रति पति चितचोर ॥
पुर नारी सब महल के, कोठा पर चढ़ि जाय।
चतुर दिसा बैठति भई, खिरकी दइ खोलाय ॥
होरी धूम मची महरानी महल मझार।
राम लखन अरु भरत शत्रुहन चारो राजकुमार ॥
श्रीसीता उर्मिला आदि सब राजकुंअरि छबिसार।
अमित सखिनयुत राजित सुन्दरी शोभा अमित अपार।
उत रघुवंसी कुंअर संग शोभित शोभा शील उदार।
इति निमिकुल कन्या सब ठाढ़ी रंग भरे पिचकार ॥
उड़त अबिर कुमकुमा भरि भरि राजकुमारि कुमार।
मारत दोउ दिशि जय जय उचरत अदभुत होतबहार।

भोडल ढाल दोउ दिशि सबकर अउत कुमकुमा भार ।
चाल चपल दोउ दिशि अति सुन्दर नुपुर की झनकार ।।
प्रेम मगन तन बसन भिजि रहि टूटत मुक्ता हार ।
सब महली नयनन भरी देषति कुँअरिन केर विहार ।।
आँगन भीर भीर पुनि बाहर रंग के परत फुहार ।
चलत दमकला गुप्त प्रगट बहु कोइ न मानत हार ।।
वहु सखि अटाछटा बिद्युत जिमि बरखत रंग सुधार।
ग्राम बधु सब जहँतहँ नृत्यति वहुविधिमणि आगार ।।
नभते सुमन झरि देव लगायो अति हित बारहि बार ।
देव बधु सब नाचति गावति नभ गृहि राजदुआर ।।
होरी विविध खेलि कुँअरि सब सुखदइ राजदुलार ।
प्रियाशरण किमि शोभा वरणै लागत अगम अपार ।।

दो०-एहि विधि होरी सुख अमित, भइ नृप अजिर उदार ।
कुँअरि कुअर मिलि परस्पर, कीन्ही बिविध बिहार ।।
राजकुंअरि अस्नान करि, भूषण बसन संवारि ।
माता ढ़िग ठाढ़ी भई, जननी मुदित निहारि ।।
जनइ महल सुख देखि के, बाहर बैठे आय ।
पुत्र अरु जे जामात सव ढिग बैंठे हर्षाय ।।

राम प्रथम मन कीरति चीनी । गोप सुतादि जू संग्रह कीनी ।
नववियोगमहतेसबकामिनि । व्याकुल अधिक रहैंदिनजामिनि
एकन दुष एकन सुष जोई । भेद सपत्नि निकै तब होई ।।
सबकौ सम संताप बिचारी । दयी सुमत्सर भाव बिसारी ।।

अभिलाषदि दसा दस जेती । इक विन संतत वर्तहि तेती ॥
गुन निधान के गुन अभिरामा । सुमिरत रहइ मिलिवसुजामा
चिंतहि प्रियहि नेह अधिकाई। को अस हित तुब निवेदहिजाई

गोपकुमारी की परिकर्ण

दृग कञ्जलकरुनाजल धोरी । मसिकिय तबकिहुँ वैसकिशोरी
दो०-जटावध्ध बेनी भई, ताहि लेषिनी केइ ।
लिखी विरह पत्री ललित, सबकौ संमत लेइ ॥
विधि सौ सहित आवरन कीनी । इष्ट नाम मुद्रा करदीनी ॥
पठहि राम गुन ढिग सुकवाला । कहा होउतुमसखि इहिकाला
सहवासिनि सव बृत्तिहि जानौ । पत्री लै मिथिलाहि पयानौ ।
ये कत मैं प्रान सनेही देहू । धर्म चारिनी धर्महि लेहु ॥
चली चंचु दावि हरषाई । राघव दरस लाभ तुर जाई ॥
किय प्रनाम देखत जगत्राता । दई सयन मंदिर मह जाता ॥
प्रभु सरवज्ञ तुरत पहिचानी । राख रत्न पंजर सनमानी ॥

॥ छन्द ॥

स्वस्ती मान दिनकुल अवतंस भुवन अधार है ।
उद्यान प्रेम अनूप सौ हम सवन भुषन कार है ।
प्रतिबिबं प्रांनन के नयन विश्रम श्रुति अधिदैवहै ।
अगार बचन के सुचित हृदय कोश सदैव है ।
श्री के हरि शिव ज्यौ सिवाके ईन्द्र ज्यौ इन्द्रानि के ।
तुम तो हमारे नाथ लीजहु प्रनति अपनी जान के ।

ह्वै चले षिन हर्षिकगन सब सुखद दूष दाइक भये।
कमते हमारे प्रान चाहते पयान कौ तुम ढ़िग अये।
जो किंकरी पद कंज की कहचित्त नाहि बिचारिये।
थिर भये रसभोग में किहि हेतु कृपहि विसारिये।
जबलौ पुरी मह आइ निज आनंद महा रमाइहौ।
तब प्राप्ति अवला सर्व हम तिनके न पाइहौ।
नहि स्वर्ग हम हियरत सुभ कै वल्यहु नहि आदरे।
तब पाद पदमा आये बिना इच्छान अज सुषकी करें।
तुम पुर्वते निरहेतु किन भाजन अनुग्रह किंकरी।
अति कँपहि संसय ते हिय कुलदोष ते कह पर हरी।
अवधेश सुत स्वामी जथा मिथिलेश जातिम स्वामिनी।
हम पाव सर्व सविस्व में जु करै रहौ अनुगामिनी।
दो०-जे अपनी तिनके अपुन लिषिऊ विचार।
विसरहु नहि देषहु सपद सुषकर सभा तुमार॥
सुकी गइ जब लै तिन पासा। गनी सकल जीवन की आसा।
कबहू वह पत्री जू सोहाई। सीताधरी सेज पर पाई॥
वाची सकल सुभाव सुनैनी। कीन्ही मनन बुद्धि निज पैनी।
जान परत आसै ते ऐसे। प्रिय प्रति लिखहि प्रियतमा जैसे॥
बहु पतनी पति सेइहि माही। मैं जानहु दूजी तिय नाही॥
हाथ जोर मधुसम मृदुवानी। वोली रंच अनष महसानी॥
केवल रसबर्धन हित सोई। प्रियन मान लघु भूषन होई॥
जह प्रसाद को लिपि सुविज्ञाला। आई कह ते कहव कृपाला।

दो०-निकट भोग सज्जा उपर, भामिनि के छवि देत ।
यहि ओर पत्री निते, राखै प्यार समेत ।।

नेहिनि की सुधि भूलिय नाही । जैबो कबहू हैतिन पाही ।।
जो वे वसहि अवधपुर माही । तौ हम उपालम्भ इक दैही ।।
सकल विलास विभूति दिखाई । रहैं उन्हें किहि ठौर छिपाई ।
परिनय ते पहिलिहु सुभसीला । सुनत रहीतुमरी सब लीला ।
पूछी नहि द्रढ़ करन प्रतीती । अपुन समर्थ कहैं करि प्रीति ।।
बोलि तब जैसो भ्रम धरहू । सो न वे यह निश्चय करहू ।।
वड़े बड़िन कौ आगम जानी । करै बड़े मंगल मुद मानी ।।
जो कछु सतकृत की विधि होई । करै रूप लाइक सब सोई ।।

दो०-बास हेत मंदिरन की, रचना करै नवीन ।
परिच्चर्या हित संग्रहै, अनुचर वर्ग प्रवीन ।।

।। श्री प्रिया प्रीतमजु ।।

सानुज मैं नृप कौ अतिप्यारा । अगताहूँ तिनकीन बिचारा ।।
कबहूं भानुकुल मंडन वारी । आवहि पुत्रवधू अति प्यारी ।।
तिनके हितबहुविभव बिलासा । जो रहु सब जोरत कुलआसा
जो विभूति पितु संग्रह कीनीं । देखि तुमहि तुमरी करिदीनी।
तिनहि निवेदन करि मैं वाला । आनी बहु तिय रूप बिसाला
केवल करन सुतव सेवकाई । तुम स्वामिनि संतत सुखदाई ।
दासी निज चरनन की जानी । करत रहव सासन कल्यानी ।।
यह सुविनय पत्री उन केरी । तब सिय कहेउ मंद हँसि हेरी ।।

दो०-श्री के हरि सिव गौरि कै, इन्द्रशची कै आहिं ।
तिमि हमरे तुमनाथ इमि,लिखहि किंकरी नाहिं ।
सुकृत अमित जस भवननि आवै । रावर अंग संगतब पावै ॥
लगती होइ सुहृदय प्रियासी । अनुचित कहिये तिनहिजोदासी
कौन लाजभय अद्य प्रभु मानौ । राजस धर्म सनातन जानौ ॥
जिनते नृप तनकौसुख लेखहि । तिनकौफेरि कुल अकुलनदेखि
तुम राजाधिराज बसुद्धाता । पुरुषन मैं उत्तम बिख्याता ॥
कीजत मम संकोच बृथाही । उत्तम तियवस होवहि नाही ॥
मुख्य नीति राजन कह येही । रहै सहज निज कारज नेही ॥
तुम उत्तम नायक श्रीमाना । उत्तम चरित्तन के सुनिधाना ॥

॥ छन्द ॥

मै उत्तमानिमि नन्दिनी अपराध नहिं चित मौ नहि धरौ ।
जो तुमहि प्रिय-२ मोहि सौ ततसुखिनि तब सुख अनुसरौ ।
इति विनय करत परंत अब उत चलत सबहि मिलायवी ।
किहि देस की कस रूपगुन कह कौन कुल सुवतायवी ॥
सो०-ध्वजा रुपिनि सीय, परम पतिब्रत धर्म की ।
भई अनख जो हिय मेटी बचन विलास मह ।
दो०-सदा प्रसन्न सुखी प्रियहि, करन सुअधिक प्रसन्न ।
रचना सो बोले मधर, रसपति विधि सम्पन्न ॥
भो रासेश्वरि प्रान हमारी । मो सुभाव की जानन वारी ॥
सकल गुननकी विधि अभिरामा । जोग प्रकृति पूरहुमनकामा
तुमते परम प्रभा मैं लहऊ । कौनहुँ काल पृथक नहि रहऊ ।

मम तुमार सम्बन्ध प्रधाना। वर्तमान महँ सब कर जाना ॥
जाहि जौन आश्रय सुखकारा। मिलहि ताहि निहचै संसारा
बुद्धि निधान अनृत जौ ऐसे। रमनी रमन भये तौ कैसे ॥
त्रिपुर मोहनी सुन्दरताई। करलीनो वसमोहि रमाई ॥
अखिल जन्म सौ प्रिये अनूपा। विरमौ इहि शृंगार सरुपा ॥
दो०-मेरे तुम महँ वर्तहीन चौंबीस अवतार।
तनगुन रूप सुभाव सौ, हौ सब की अधार ॥
॥ सखिन सेवारता प्रीतम राजकिशोरी ॥
सो०-निज सर्वस अभिराम कीने मैं अर्पन तुमहि।
संतत भो वर वाम तब आधीन सुबृत्ति मम।
दो०-सुनि प्रिय बचन सुप्रेम ते भौ स्वर भंग सिहाय।
लीनै मुदित लगाय उर भुज वल्लिन लपटाय ॥
कौनहु दिवससखिनिमहँ सीता। प्रिय गुनवर्नन करहि सप्रीता
वाक बिलास करत कहि कोई। आदर बढ़ेउ मानमहँ होई ॥
पियकौ प्यारकिये बिनमाना। तिपन अन्य विधिजायन जाना
सुनि जहँ रुचि मैं हू मन ल्याऊ। प्रिय मैं पर औगुन नहिं पाऊ
ज्यौ टमौ दसा सुवहहु बनाई। लैहु धनुष सो भृकुटि चढ़ाई ॥
तुमहि निवार रंग गृह आनी। सयन छोड़ि बैठेहु चुपठानी ॥
हृदय लालसा कब प्रिय आवै। कौन रीति सौं मोहि मनावै।
रस निधान आवत गृह माही। देखि दूरिते मृदु मुसक्याही ॥
दो०-अनसीखे दृग लागि रिसि जुरत नहि हँस दैहि।
तब उठाय प्रभु फूल सौ लाइ हृदय सौ लैहि ॥

मो मै प्रेम करत वे जैसे । करत होइ सब के प्रिय ऐसे ।।
सुभगा कहि तुम सौ किहि भागा । देखौ हम राघव अनुरागा
सिरस कुसुम केजीतन हारे । तते चरन अति मृदुल तुमारे ।।
आवत तुमहि लखे जब सोई । कठिन पुहुमि ते संकित होई ।।
पुनिस्वमंत तब विधि यह करही । दृष्टि ललित पदमह भरही
नील कंज पत्रन की श्रैनी । मनहुँ विछावत मग सुख दैनी ।।
तुम स्वाधीन भर्तिका अहऊ । लहत रहै रस जस जब चहऊ ।
दासहु इमिबस नहिं दृग दीनै । अर्ध कटाक्षन मैं जिमि कीने ।
दो०-सर्वस उन अर्पन करौ, चित तुम लीन चुराई ।
तौऊ तुम बिन भावत और न रंचहु सुहाई ।।
प्यार प्रेममद भो मृदु हासिनि । लिय बाँधि निजमय पातिनि
होत एक बन्धन यह दीना । सब अंग बाधत ह्वैन अधीना ।।
सहज अरुन पद जावक सोहै । जनु प्रिय रंग मन मोहै ।।
मनि मंजीर रतिन वरधारै । मनहुँ वसीकर मंत्र उचारै ।।
भरे अतन रस जंघ विराजै । स्तंभ कि पीन प्रेम गृह काजै ।।
लसै सिंह गुरु से कटिश्रौनी । त्रिवलि गौतमी सी छबि नौनी
सुरन सहित काँची तरमाहीं । पर्वस प्रियमन को अन्हवाही ।
कहु जौ नाभि कूप महआवत । बिचरमीन लौं कढ़न न भावत

।। श्रीसीतारामजी एक तत्व वर्णन ।।

लगे बिना मन को किहु भाता । होइन श्रेय कहैं श्रुतिज्ञाता ।।
दूथ बिन रमवौ बनहिन केहु । चिते द्वितिय होय अब मैंहु ।।
रमनि रुप अपुन ते होई । रमत भयौ अपुनुहू प्रभु सोई ।।

जल वीची लौ भिन्न जानौ। उभय विभाग प्रेम को मानौ ।।
तिन विश्वेस मध्य जो रागा। ताहि भक्ति भांषत बड़भागा ।।
तब जन तुम में द्वैतन माने। वेद कहै बुधहु सव जाने ।।
होइ रामते भिन्नन सीता। सिय ते भिन्नन राम प्रतीता ।।
दोनो नित्य दो रुपहि धारे। आहि येकही तत्व विचारे ।।
राम मन्त्र मेंथित बैदेही। सिय मन्त्र में राम सहेही ।।
वरन रुप जह राम बिहारी। सब्द रुप तह जनकदुलारी ।।
जहाँ शब्द बपु रामहिं माने। अर्थ रुपिनी तह सिय जाने ।।
जथवाग सिय होइ नव वानी। अर्थ रुप तब राम प्रमानी ।।
जल में लहर लहर में नीरा। त्यौ तुम प्रभु दुवभाव गंभीरा
दो०-सब हेतुन के हेत हुव, सब तत्वन के तत्व।
संतत गुन ते रुप ते, विलसै तव एकत्व ।।
जथा अयोध्या नित्यहौ कहै तथा मिथिलाहि।
सकल सगुन ऐश्वर्य सौ भेदवाहि नहि याहि ।।
कहँहु अयोध्या तुल्य तिमि मिथिला कौं परमान।
कौन देस किहि नागरी, कबते करहु बखान ।।
निमकुल भुपन की रजधानी। सुनत रहौ चिततै कल्यानी ।।
कैसे तुल्य तीरथ माही। गनना भइस कहब हम पाही ।।
मिथिला नाम कौन विधिपावा। भौकिम महिमें अतुलमहाना
बोली चरनन के सिर नाई। कहाईती हम में निपुनाई ।।
।। सखि की वारता राजकुमार से ।।
आयेहते जब लगईत नाही। गौरववड़ौ कहौ किन माही ।।

रहै अवध मह सरयू तीरा । फिरबौ करे लिये सिसु भीरा ॥
यहि महि नैंतुमहि चढ़ाये । विदित जनक जामात कहाये ॥
पाई लोक सुन्दरी नृपबाला । भये सुविख्यात गुनित बिसाला
दो०-जन्मभूमि जह सिय की, महा सुषन के हेतु ।
सुनहु श्रवन पावन करन चितदै रघुकुल केतु ।
राज्य रतन राजन मह नामी । भये जनक ज्ञानी इहि स्वामी
जहा निमिवंश प्रकाशनवारी । दई भूमिने जिनहि कुमारी ॥
भागवान तुम दशरथ नन्दन । ताहि विवाह भये जगवंदन ॥
चिरते विदित पुरीं यह आगर । सिया जन्मते बहुत उजागर।
सो०-सिय को अराधन कीन महाराज मिथिलेशन ।
प्रगटी श्रीसिय सुवर दयेऊ, बनी रहै सदा बृद्धिकुल ।
पुरी कौशलानाथ तुम्हारी । कहत रहे सुभ जग नर नारी ।
जिहि सौं सुभ जौलौं नहिआई । तौलौ कहि वे मात्र कहाई ॥
अब सीता पद कमल समाना । परे उहाँ कल्यान निधाना ॥
निसिदिन सबहि मोद महबीतै । भई अधिक बैकुंठ पुरीतै ॥
जगमें गृह स्वामिनि को होई । जहाँ रहै तहँ शोभित होई ॥
मिलिबंधू रबिबंशिन जैसी । कौंने मिलहि सुलक्षन ऐसी ॥
जहा निमिकुल अंभोनिधि केरी । चन्द्रकला जगकरत उजेरी
सत्य कहौं रघुवंश प्रबीना । वंश तुम्हार अलंकृत कींना ॥
सींतहु कृपा सुधा बर्षाई । करकै धन्य संपन्न सुखदाई ॥
दो०-सुर पुर नरपुर नागपुर, राखै इहि कीं सब आस ।
पूर रहौ सब विश्व में, अतुलित रुचिर विलास ॥

दो०-ताहि निकासन काम किय, रोम पाटि रस दोण ।
चिढ़त अमृत के कुँभ से, देखि उरज दुहुँ ओर ।।
सोहैं कल्प लतासी वाहै । देहि प्रियहि जो जो रस चाहै ।।
देखत कंबु कंठ त्रय रेखैं । पाई त्रिपुर विभूति सू लेखैं ।।
मुखवर सरद चन्द्र ते नीकौं । करै चकोर तुल्य मन पीकौं ।।
खंजन कंजन के मद गंजन । दृग तब अंजन जुत मनरंजन ।।
भृकुटि कनक लखि धनुष समाना । रीझहिं क्षत्रीवंस प्रधाना ।
भाल भूमि सौभाग विसाला । चहै न ओट हौंन किहुकाला ।।
कृष्ण सुकेसिनि केस तुमारे । सदाचित्त आकर्षन वारे ।।
प्रियमन मृगहि विनोदन वानी । हासपासिसि करहु कल्यानी।
सकल अंग संगिनि तब साटी । अवगाहत सब रति परिपाटी।
विजय होइ तिहि भाग बड़ाई । रहत प्रसंसत नित रघुराई ।।
छ०–गुन लहिय प्रतिष्ठिता, तुम गुनन की सुनिधान हौ ।
सब भाँति धर्म विधान पट, श्रीमान परम सुजान हौं ।
जगलोकनाथ प्रिया न विन सौंभाग्य को अस पावहीं ।
सुभ हेतु त्रयपुर सुन्दरी जहँ कीर्ति उत्तम गावहीं ।।
सो०-इमि सुभगादि प्रवीन, वरनत संभाषन करत ।
रुचिर प्रवीन नवीन, वरनत सीता राम गुन ।।

।। श्रीप्रिया प्रीतमजू को बारता ।।

भोग भवन वैठे इक काला । बोले सियसन राम कृपाला ।।
प्रिय अवध नायक पठवाये । हम तब रूप लोभ इत आये ।।
सखि मंडल जुत तुम सुप्रवीना । निनप्रति अकथनीय मुददीना

पुत्र कलत्र कुटुम्व समेता। निमि नृप प्यार करै पुनिएता ॥
ताहि प्रसंसन कौ मति नाही। मन अभिलाष न इत ते जाही।
येहू पिता धर्म ते ख्याता। वे साक्षात जन्म के दाता ॥
मो ऊपरईश्वर सुबिचारी। मैं मुभ हित अनुसासन कारी ॥
तिन पद दरसनको अभिरामा। चितअकुलात रहत बसुजामा
दो०-जननी कौशिल्यादि मम, बातसल्य की गेह।
तिनके अन्तहकरन कौ, सोखत होइ सनेह ॥
राजकाज मृगयादि विहारन। कौनहुँ भ्रत्यवर्ग हित कारन ॥
कबहु बिलम्ब मिलतमहँ होई। गनैकल्प समते छन सोई ॥
लिखी प्रीति पत्री जिमि आई। ते तुम कौ बसनेह सुनाई ॥
जद्यपि सुद्ध होइ सब माता। लौक विरुद्ध करै नहि ज्ञाता ॥
मैं जो आतमा राम अनूपा। जानै जोग कुशल निमिभूपा ॥
निर्मल बृत्ति सुध्पावत रहई। ब्रह्मानन्द अखंडित लहई ॥
निकट सुचक्षु नाम रमनी के। दैन चछु इन्द्रिहिं सुख नीके ॥
मोहि बुलावहि नित्य सुजाना अवलोकहिं प्रियप्रान समाना
मैं बिचार कीन सुन प्यारी। सादर निकट जाहु जिहिवारी।
अवध गमन को विनय सुहाई। करब पिता को प्रेम सुनाई ॥
तुमहित लिखे पत्र वहूं आवहिं। भली होइ जौ संग पठावहिं।
दो०-करि सम्मत इमि राम जव, गये दरस सुख दैन।
थित ह्वै कछु प्रस्ताव सौ, कहे मनोहर वैन ॥
तात लिखी पत्री ते आई। करत भये बहुदिन पहुनाई ॥
मित्र बंधु सबहु हितकारी। हेरत आवन वाट तुम्हारी ॥

महाराज ते लै सुनि देशू । आबहुँ सानुज कौशल देशू ॥
तिहिते करिदायहिं पठवाइये । नहि वियोग चिंता चितलाइये
पुनि राउर इच्छा अनुसारा । रहिहैं मिलन होत बहुबारा ॥
सील भनित सुनि राघव केरी । उदित भये उत्तर कह हेरी ॥
ताही समय अवध पति पाँती । जो मन को अतिलगत सुहाती
आइ निकट सहचरिन हाथा । बाँचव लगैसु लै निमि नाथा ।
सो०-पत्र प्रसस्ति प्रकार, समुझि विविध आसय सहित ।
भरि आए तिहि बारि, प्रेम वारि वारिज नयन ॥
दो०-बोले राम कुमार प्रति, सुनहुँ वत्स सुखदान ।
तृप्ति लहैं तब दरसते, कहि यन ते मतिवान ॥
जथा पंक्ति रथ कौ तुम प्यारे । तथा सहज मुद करन हमारे।
उनसे भाग्यवान पर नाही । देखत रहहिं जो निकट सदाही।
यह हम कृपा निजहुँ की मानै । अहोभाग ये नैन सिरानै ॥
मन जों तुम यह रहत समाना । केवल सो जानत भगवाना ॥
यह जो पत्र अवधते आवा । ताहूं महँ तुम कहँ बुलवावा ॥
दरस तुम्हार सर्वहिं सुखदाता । तरसै कौसल्यादिक माता ।
हेज करहिं ऐसे प्रियमानी । होइ जथा सुरभी नवव्यानी ॥
बाहिर भीतर की अनुसासन । साधत हमकहँ क्षेम प्रकाशन
दो०-पठवावै हम अवधि कौ, दुतिय आगमन पत्र ।
सानुज भरत सुआवही, जैबौ सुखद एकत्र ॥
अपुन अवधपुर को जनि जाइय । सुखमें राजकिसोरन ल्याइय
प्रिय जजमान कहैं मुनि नाइक । करवाई मंगलविधि लाइक

असंख्यात तिहि संग सुहाई । लई राजलक्ष्मी मुनिराई ।।
गये अवध सुनि अवध भुवाला । आये अग्र लैन तिहि काला ।
करी भलैं स्वागत विधिनाना । ब्रह्मनीक सब धर्म निधाना ।।
श्रीउपकरन अनंत सुभाता । पठयउ श्रीमिथिलापति ज्ञाता ।
देसन के अधिनाथ बिहारी । मोहित भये अभूत बिचारी ।।
तहँ बशिष्ठ अधिकार समेता । लै सुपत्र खोलेउ उपनेता ।।
करन मध्य करिकै बिस्तारा । बाँचेउ मनहु श्रवत मधुधारा ।।

सो०-कौशल राज समाज, सुनि इमि भयेउ प्रसन्नमन ।
मिथिला दरसन काज, भौ उछाह सबके बहुरि ।

दो०-नृपहूं मन चाहै चलन, सुमिरि जनक की प्रीति ।
थिरता ल्यावै समुझि पुनि, देसकाल वयनीति ।।

वर उपदेस गुरुन दिय सोऊ । पठबहु भरत शत्रुहन दोऊ ।।
सावधान सब सचिव बुलाये । सेनृप सकल सेज सजि आये ।।
वहु कुल राजकुमार अनंता । गंधर्वंन से बपु छविवंता ।।
कौशलेस ते लहि वड़माना । सजल धरे अतुलित श्रीमाना ।
गजहय रथ पत्तिन सोभाई । सुचि सेनय सब चमू दिखाई ।।
ध्वज पताक मंगलमय वाजिन । सोभितहोइ जितैतित राजिन
पितुवय सानुज भरत प्रवीने । भये मगन उछित दुति लीने ।
अंतहपुर महँ सुतन बुलावा । विधि पूरव प्रस्थान करावा ।।

दो०-लाये दधि अक्षत तिलक, पहिरे सुमनस दाम ।
सिंह पौर से बढ़त ही, लागे अति अभिराम ।।

वंदन करि बैठत भयउ, अपुन सारथी थान ।
हाँकत हय पुलकित बदन, करत चलेउ बतरान ॥
सिमिटिसिन्धुलौअगिनितवहिनी ।हुवक्रमतेमिथिलापथग्रहिनी
सुखहीं सुख करतहि निवासा । पहुँची शुभ दिन सहितहुलासा
सानुज लक्ष्मीनिधि अनुरागे । आये तहँ लेवै कहँ आगे ॥
बड़ शोभा तिहि समय सुदेखी । दृष्टि परहिं छत्रालि असेषी ।
बाद्य दुंदुभी प्रमुख सुहावन । दुहुतन बजहिं प्रमोद बढ़ावन ॥
मिलौ बडिन को चाहिये जैसे । मिले भरत लक्ष्मीनिधि ऐसे ।
भाषन करत सप्रेम सुजाना । गये लिवाय परम सुभथाना ॥
सबहि जथोचित वास करावा । मनरंजन साहित्य पठावा ॥
दो०-आये प्रमुदित भेट कहँ हालहु भूप विदेह ।
भरत निकट में सुमुख सौ,स्वागत भई सनेह ।
आये भले बिहँसि नृपभाषा । रही भूप दरसन अभिलाषा ॥
आवहिं कब हम उतनहिं जाइय । बड़े पुन्य सौ दरसन पाइय।
अपुन बृद्ध नव वय सब नारी । रहे भोगपुर की रखवारी ॥
हुव रामादि पुत्र जिनमाही । अव अप्रतीति करत भल नाही
इहि विधि प्रेम विनोद निहारी । भयौ सभा लोगन मुदभारी
गये बिदेह नेह महँ धामा । पहुँचे तबलग लखन श्रीरामा ॥
छ०-श्रीराम सानुज भरत सानुज कौ परस्पर भेटिये।
आनन्द धन मैं बिरहभव संताप ततछन मेटिये ॥
सब अवध के समुदाय सो नितनिमि निकेतन जावहीं ।
विधि चार अमृत समान षटरस असन सुन्दर पावहीं ।

सो०-निपुन सुनयना रानि, वलि लेवै कर आरतिनि ।
कबहू अपने पानि भोजन करवावै सरुचि ।।
दो०-सुभगा हँसि कहि सिद्धि सौ, आये भरत सुजान ।
करत रही जिनकी सुरत, वातन में प्रियमान ।।
तिन सौ करन सुवाक बिलासा । सादर बुलवाये निज पासा ।
नाना मुद स्वागत महदीना । बोली चंचल दृगन प्रवीना ।।
देखत तब भ्राता छबिवंता । राखै तहाँ तृप्त परंता ।।
राखहुँ तुमहुँ अतृप्ति अगारी । रुचै न पूरन होइ हमारी ।।
दरसनहू चिरलौ नहिं देहू । परदेसिन को कौन सनेहू ।।
भरत कहावै निपुन महाहीं । विमुख रहै तौ संसय नाहीं ।।
हम सनमुख लेहिं तुमारौ । करै नाम ते अर्थ न न्यारौ ।।
रस अधीस सासन निर्बहई । अनुभोगन में तुम कहँ चहई ।।
दो०-बहु विधि रसमय बलन वर, समय समय अनुसार ।
कहत रहै प्रति मिलन महँ, लहत रहैं सुख सार ।।
निज प्रियानप्रतिकरहिंजोलीला । प्रगट सुहोन देहिं नहिसीला
रुप असीम सीम सौ सोहैं । सब जुवती गन के मन मोहै ।।
सुन्दर मास फालगुन पाई । अवलन हुवरस सौ प्रबलाई ।।
जेवत मैं गारी वहु गावै । नाना रंग बनाय भिजावै ।।
भरै रक्त चूरन की झोली । बाँधे फिरहिं खेलन कहँ टोली ।
लपटी तनसारी रंग भीजी । प्रगटे दुति सु मदन की भीजी ।।
चहई सुकहि परम बाचालै । बंक चितनिवान सी घालै ।।
चारहुँ रघुनन्दन रस धामा । करै यथोचित पूरन कामा ।।

॥ छप्पय ॥

नखशिख भूषन फूले खड़े सनेह मे ।
फूलन खेल अनेक कला अमित तेहि खेल में ।
करि करि सकल विवेक हासकला युत खेलें ।
उड़ी अमित अतर अबीर प्रिया पिय के हाथ से ।
भिजि गयी अंग पुनि चीर अबरख उड़ी सुहावनी ।
पिचकारी रंग साज चहुदिशि सहचरी लिये ।
अरु दमकला अमित कमल मुखी के कर कमल ।
कहूअबरख की ढेर लिये प्रिया सब छबी भरी ।
भरी कुकुमा गुलाल लाल लिये मारत सकल ।
भरि भरि मूठी अबीर सिय लपेटत लाल मुख ।
परसत मंजु शरीर लाल लपटि सिय अंग में ।
पिचकारी चहुँओर छुटी लाल निदेश ते ।
दइ सकल रंगबोर खेल परसपर होय रस ।
रंग भरी होरी खेल लाल प्रिया एक मत भई ।
सहचरि सो करि मेल भूषन बसन उतार दई ।
पहिरे अनूठी चीर मनि भूषन अंग अंग में ।
प्रियन रंगे रघुबीर आय विराजे निकुँज में ।

दो०-सबके सब नातें लगै, राघव मैं सबकाल ।
सब मै सब नातेन की, मान करै कृपाल ॥

क्षीर सिंधु में जिम श्रीसाथा । वास करहिं संतत श्रीनाथा ॥
जथा हिमालय में कल्यानी । मैं तुम युत निवसहु मुदसानी ॥

तथा राम लीने प्रिय सीता । वसे ससुर पुर आलय अतिप्रीता
तन सम्बध जिते जग आही । मुख्य सुतिया पुरुषतिन माही ।।
तिनके उभय पक्ष मह नाता । होत परस्पर अगनित भाता ।।
ताते प्रिय सब कहँ ससुरारी । प्रगट सनातन जह व्यवहारी ।
दिधा रामलीला सुभकारी । इक वास्तविय द्वितीय व्यवहारी
समैं समैं बरतै प्रभु दोई । जाने जिनहि अनुग्रह होई ।।
दो०-मुदजु बहिरतर सुरत, लेति प्रिय के साथ ।
अमित गुनौ तेहितै गनौ,तब दरसन ते नाथ ।

।। श्रीमिथिला जी की वर्णन ।।

सो०-सुमिरत मिथिला नाम, हटत अविधा कठकर ।
भूमितिलक अभिराम,जहँ प्रगटि सिय लाड़िली ।
ध्यान धरत मनमोद, कांचन वन कमला सरित ।
नित्य विलास विनोद, भूमि सकलमणि कांचनी ।
जहाँ बसते निमिवंश वर, सदा एकरस रूप ।
उचित अवस्था देखिये, लीला कलित अनुप ।
सीरध्वज नृपराज वर, जनकराय जेहि नाम ।
भये बिदेही नेहवस, मुरति निरखत श्याम ।
भक्ति रतन राग्य नुगा, रति वात्सल्य ललाम ।
सम्प्रद ज्ञान सुबरन में, युत विराग छबिधाम ।
मंच रंग यह रतन में, सोईहै निज रूप ।
अपनो अपनो लखि परयो,प्रगट करयो जब भूप ।
श्रीसीता हरी राघव रानी । बसे सुभक्त मिथिलापुर जानी ।

करत प्रात मंगल तिहि ठामा। लैवै को दरदसन अभिरामा।
दो०-पुन्य कर्म ये तेनकौ, भव में जो फल होइ।
इमि मिथिला के दरसते, भक्तजन पावहि सोइ।
होइ इतै फल जो प्रिय सुलभ सकल सब कष्ट।
मिथिला सेवन तें फल पावहि सुलभ सपष्ट ॥
यहिमिथिलाकौवास विसाला। बिना भाग नहिमिलतकृपाला
धन्य धन्य वे मनुज सुनीती। परम जत्न कर वसहि प्रतीती॥

मिथिला निवासिन के साथ लीला

दो०-रामहु लखि ललि ससुरपुर, सेवा प्रीति सुभाव।
भुले सुधि बुधि अवध की, मिथिलावास उराव ॥
बालक तरुण बृद्धा नर नारी। निज निज गृहकाज बिसारी॥
औरन शिक्षा करहि सिहाई। यह छवि बिभव सुकृत तैपाई।
जहाँ कहु विहरत सुधि पावही। दरसन बड़े लाभ गुन आवही।
थिति करि लेहु हृदय दृग द्वारन। रक्षहुहर्षि पलक प्रतिहारन
विधि ने परम अनुग्रह कीन्हा। जन्म हमार इहाँ जो दीन्हा॥
षटऋतु भाँतिभाँतिकी लीला। जनकललि रघुवर सुखशीला
होबहितहँविविध भाँतिकेकेली। सहितसखिनअरुसियाअलबेली
नृत्यगान बहु सखिगन गावही। सेवहि सिया रमन मुद भरही
नृत्यकला बहु भाँतिन केरी। करि करि रिझवही सियवरहेरी
दो०-रघुनन्दन कबहु प्रेम वस, बनसी मधुर बजाय।
करहि गान अतिमधुर सुर, सुनि सबहि मोहाय।
कहैकोउ ये कमलातटबिहारी। एककहै एहैमिथिलासुखकारी

सो रस जानत मिथिलावासी। पागे रहत नित आनन्द रासी
दो०-यहि प्रकार मनमोद भारी, सिया दुलहा करहि बिहार।
रस बरषत नित जनकपुर, रसिकन सुख दतार ।।
यहि विधि प्रेम प्रमोद भरी, जात दिवस अरु रैन।
देखि युगल सुमाधुरी, बढ़त हृदय अति चैन ।।
सहित सुनैना तिरहुत राऊ। सेवहिं सियावर सुचि भाऊ ।।
जेहिविधिसुखिश्याम अरुश्यामा। सोई करहिनृपतनमनकामा
सिद्धि कुँवरीलक्ष्मीनिधिभावा। अमित अगाधअकथकरिगावा
कबहु कमला जलकरै बिहारा। कंचन विपिन रास बिसतारा
कबहुँ सिद्धि लै निजकर वीणा। गीत सुनावति प्रेम प्रवीना।
कबहुँ सासु ढ़िग ससु सकासा। बैठहि राम हृदय रसवासा ।।
सभा सदनकवहुबिमलातीरा। बिहरहिभ्रातनसहित रघुबीरा
कबहु श्यामाभाम संगखेलत खेला। सुन्दरभाव प्रेम हिय मेला
श्याम भाम दुनहुँ नृपवारे। इक एकन पर सब निज हारे ।।
सुनहि श्याम मुख सुन्दर गीता। बाद्य वजत उपजावत प्रीता
कबहुँ राम मुख सुन्दर गावन। चहत सुनन कुँअर मतिआयन
दो०-प्रेम विवश रसिकेश्वर, कर ले बीनान।
मोहन राग सुनावही, मोहत मन सुखदेन।
सुनत कुँअर होवहिं रस मंगना। प्रेम प्रवाह बढ़ै नित मंगना।
विहरहि कबहु रामवर वागा। सहित भ्रात मिथिलारसपागा

श्रीमिथिलाजी में राजकुमार के नाना विहार

कबहु झुलन कहुँ हरषि बसंता। उत्सव होत हेतु सियकंता ।।

षटऋतु उत्सव जे सुभगाये। मिथिला होवै परम सुहाये ।।
परमैं कान्तिक सुन्दर सेवा। प्रीति सने कर सखिन सुधेवा ।।
मिथिलावस सिय दुलह उदारा। करत मनोहर चरितअपारा
कुँअरि संग रघुवर रससाने। रहहिं प्रमुदित सुखहिं समाने।
कुँअर राम की प्रीति सुपेखी। जनकलली हिय हर्ष बिशेखी।
अपनेहु घर अति भैया नेहु। भाभी मातु पिता रस गेहु।।
देखि सनी आनंद सुरूपा। रहति मंगन मनभाव अनूपा ।।
लखि लखि दुलह रुप हरषती। रहति रसीं रस पुलकितछाती
यहि प्रकार सिय रघुवर रामा। मिथिलावास करै सुखधामा

दो०-अकथअगाध अगम्यवर,चरित सुनहि पूरे मनकामा।
राम कृपा कोउ रसिक वर, अनुभव कर हियधामा।
यहि प्रकार सिय रामनित, मिथिला करत बिहार।
निरखि निरखि मैंथिल सदा, मनमें मोद अपार।

जे निमिवंशी सहज उदारा। मंत्रीकुल गुरु विप्र सुदारा ।।
प्रेम विवस चह रामहि लावन। भवन अपन करन सुपावन।
सादर जाहिं राम तिन धामा। करहिंग्रहण शुचिभाव ललामा
देखि देखि मिथिला नारि नर। शोचत इते अइहै सियावर ।।
कबहुँ लालसा हमरिहु पुरी। कहत न बनै भाव हिय पुरी ।।
सिया दुलह गरुत लखि लोगु। कहि न सकति आवन योगु ।।
लखि सतभाव एक दिन रामा। धारे अमित रूप अभिरामा।
एकहि साथ गये सब केरे। लखन काहु मर्म हिय हेरे ।।

दो०-मन आशा पुरित किये, दिय अमित सुख जाय ।
भाव ग्रहन सिय नाथकरि, आपन लियो बनाय ।
मिथिला बिहरहि राम कृपाला । प्रेम विवशभक्तनप्रतिपाला
मिथिला भाग्यबिभवसुखसाजा।कहि न सकहि वणिअहिराजा
मानत जाहि राम ससुरारी । नित्या गिनत नैहर सिय प्यारी
मिथिला सकल प्राण समप्यारे । सिया दुलह कहँ करैं सुखारे।
रामहु पगे जासु वर प्रीति । छन वियोग नहि सहै अजिती ।।

।। समाप्त ।।

❀ श्रीमिथिला विलास ❀

।। सवैया ।।

मिथिलापुर ते चहुँ फेर लसैं,
षट् कोस पै रङ्ग उद्यान सोहाई ।
फाटिक भीति बनी चहुँ फेर में,
कूट कि राज रही सम छाई ।।
द्वार कपाट चहूँ दिसि राजत,
तामधि वन चौबीस सुभाई ।
पूर्व दिसा क्रम ते लखु सो सब,
सूरकिशोर सुचित्त चढ़ाई ।।
सन्तान पटीर अशोक मालूर,
रसाल उद्यान पुन्नाग बने हैं ।
प्लक्ष वृन्दावन अर्जुन विल्व,
कदम्ब सुरम्य पलाश घने हैं ।।

पारिजात श्रृंगार सुमालति,
केतकि मधु माध्वीक गने हैं।
सूरकिशोर तमाल सुकञ्चन,
त्यौं कचनार सुहात मने हैं॥
पिप्पल जम्बु तथा वट को वन,
चौविसहू में महाछबि छाजी।
क्षमा रङ्ग की रचना मनि मण्डित
मञ्जु लतान की कुँज सुभ्राजी॥
वापी सरोवर कंज विकासित,
वारि सुधा इव मिष्ट सुसाजी।
फूलि रहे कुमुदालि अनेकन,
रङ्ग के सूरकिशोर सुराजी॥
मत्त द्विरेफ सुगूंजत तापै,
अनेक विहंग सुकूजत सोहैं।
जालि अनेक लगे तरु सुन्दर,
रङ्ग अनेक की पाँति विमोहैं॥
ना अति ह्रस्व न दीरघ हैं सम,
सोहत निस्तल छत्र समोहै।
नव तरु पत्र सुकोमल सूर,
किशोर लसै फल भार झुको हैं॥
वृक्ष अलौकिक कञ्चन के,
सम नीलमनी सम पत्र लस्यो हैं।

फूलि रहे फटिकेन्द्र मनीवर,
सोहत गुच्छन स्वच्छ गस्यो हैं।
विद्रुम के सम लागि रहे फल,
चन्द्रमनी वरवेदि खच्यो हैं॥
पिरोज मनि तकि यौं पर सूर,
किशोर सुकेकिन पंक्ति नच्यो हैं॥
विद्रुम के सम सोहत कोऊ,
चिन्तामनि फूल सुमुक्तनतूले।
वायुमनी सम कोऊ हरे,
दति श्वेत मनी फल फूल अमूले।
कोऊ पिरोज से नील मनी,
फल पंकज रागमनी गुछ फूले।
धूम्रमनी सम पंक्ति लसै कोउ,
सूरकिशोर मनी फल फूले॥
चन्द्रमनी सम दीपत हैं कोउ,
शक्र मनी फल फूल सुदीपैं।
भानुमनी सम कोउ प्रकासत,
ज्वालमनी सम कोउ समीपैं॥
कौस्तुभ से कोउ दीपन हैं तरु,
चिन्तामनी वसु कोउ लसीपैं।
कोउ लसे मनि मानहुँ गारुड़,
सूरकिशोर सुभानु सजींपै॥

कोउ बसन्त मनी कोउ रत्न से,
त्यों नभतार से राजत हैं।
मेघमनी सम कोउ हैं श्यामल,
दाममनी फल भ्राजत हैं॥
चारन मुक्ति से कोउ मनोहर,
कोलमनी कोउ साजत हैं।
पाटल रत्न से कोउ प्रकासत,
सूरकिशोर सुभ्राजत हैं॥
लाल सुमेचक मिश्रित रत्न से,
कोउ सुमानिक से अति रूरे।
पाण्डुर रत्न से कोउ विराजत,
कोउ कपीशमनी छबि पूरे॥
अद्भुत कोउ सुअम्बर रत्न से,
तार से सम्पति अंस बहूरे।
विज्जुमनी सम कोउ लसैं तरु,
सूरकिशोर कोऊ सम सूरे॥
कोउ विचित्रमनी इव सोहत,
वारिमनी इव कोउ सुसोहैं।
हैं यहि भाँति अनेकन रंग,
मनी सम बृक्ष कही सक को हैं॥
लता बहु जाति अनेकन रंग,
सुमुक्तमनी फल फूल विमोहैं।

बृक्षन बृक्ष प्रतान वितान से, सूरकिशोर छबी चित पोहैं ।
पुंजन कुँज अली गन गुंज, भङ्कार दिशान सुपूरि रही हैं ।।
चातक, मोर,चकोर, कपोत,पिकादि विहंग की खान लही हैं ।
रँग विरँग मही परकास, अनेकन रत्न सुराली सही हैं ।
बापिका, कुण्ड, कसार प्रही बहु, सूरकिशोर सुघाट चही हैं ।।
कुँजमनी मय बने मृदु बीचहिं, बीच लसन्त अनन्त जगो हैं ।
कानन काँति अभूत विलोकि कै, मानहु सूर अनन्त उगो हैं ।
रत्न अनेकन वेदि बनी, तिमिकारी अनेकन रंग लगो हैं ।
अकार अनेक बने तेहि सूरकिशोर घनि प्रभा चौंध दृगो हैं ।
शीतल मन्द सुगन्ध वयार, अनंग सुज्वाल बढ़ावन हारी ।
बसन्त नरेश विराजत हैं तहाँ, कानन राज विहंग प्रजारी ।।
हर्म्य चतुर्विध चारु सुकुँज, लतान प्रतान वितान अपारी ।
रत्न वितर्दि सपीठ बने जनु, सूरकिशोर घने रंग न्यारी ।।
रंग विरंग के बृक्ष लसै तरु, के तल पुष्प पराग मृदू हैं ।
मानो विछौने सुवीछि रहे वहु, बृक्षन छाहँ सुछत्र यजू हैं ।।
चीड़ तरुगन चामर से वरु, रम्भ सुरी जनु खासु लसू हैं ।
बृक्ष अनेक सजे जनु फौज से, सूरकिशोर वै भीर समूहैं ।।
कुंजमनी मय लता द्रुम गुलमक, संकुलता तल वेदि बनी हैं ।
त्यों हि द्विरेफन-माल विगुंजत,मानो विपंचि की खानि झनीहैं
नृत्यत मोर सुकोकिल गावत, झिल्लिन खानि नुपूर ध्वनी हैं।
पारावत मानो मृदङ्ग बजावत, सूरकिशोर अनन्द घनी हैं ।।
रंग विपीन के मध्य विराजत, अष्ट गिरी दिशि चारहु माँही।

रम्य पटीर विपीन विराजत, विद्रुम शैल उमंग धिकाहीं ॥
वैडूर्य गिरी पुन्नाग उद्यान में, त्यों पुखराज छबी सरमाहीं।
विद्रुम अरु बैडूर्य विनिर्मित, सूरकिशोर ये प्राचि दिशाहीं।
मध्य बृन्दावन सोह निलाचल,बन्न कदम्ब में श्रीरजताचल ।
नीलमनी अरु रूप विनिर्मित,याम्य दिशा युग सोहत भा भल।
नैपत्थ्याचल नैपत्थ्य विपीन में,बसन्त गिरी जु मधूवन भाकल
पश्चिम नील रु पीत सुरत्नन, निर्मित सूरकिशोर उजासल ।
कञ्चन कानन मध्य सजीवन, शैल सुहावन चारु लसो हैं ।
पद्म विपीनमें मध्य पद्माचल,उदीचि दिशा अतिज्योति जगोहैं
खच्यो है चन्द्रोपल शैल सजीवन, पंकज राग पद्माचल जो हैं।
सूरकिशोर उजोर चहूँ दिशि, अष्टहु अद्रि के कूट उचो हैं ।
चारो दिशा महँ आठहु पर्वत, तुंग छबी अति छाय रही हैं ।
हर्म्य अपार बने मनि खंचित, गोपुर कुंजन ओप लही हैं ॥
रङ्ग विरंग मनी गन आकर, नीर सुनिर्झर घोष सही हैं ।
कन्दर, खोह, गुहा सुविराजत, सूरकिशोर तम जोह नहीं हैं।
वारि के मध्य बने गृह संकुल, हाटक खंचित वारि मनी हैं।
रत्न सोपान तरंगिनि भ्राजत, हर्म्य नगान्तर रम्य बनी हैं।
सूरकिशोर पिधान भा सोहत, मोहत जोहत दीन मनी हैं ।
भूधर रत्न में सौरभ छूट, मयूषन की तर तेज घनी हैं ॥
गुल्म लता, तरु जाति वहू, संकीर्न लगे सम पंक्ति लसी हैं ।
सदा त्रैसम्पति मुक्त मनी मय, डार सबै परसै जु मले हैं ।
नीलमनी सम गुच्छ लसैं, वैडूर्य प्रवाल कहूँ गुछली हैं ।

अनेकन रङ्ग लसैं यहि भाँति,
सुहावन सूरकिशोर अनी है ।।
रङ्ग विरंग विहंग कुरंगम,
भूषित अंग सुरंग करैं ।
दौरत हैं सुनि शब्द अतंक,
कला एक खान दिशान भरैं ।।
यूथ अनेकन रंग शाखामृग,
श्वेत, सुलाल, असीत हरैं ।
खात सबैं फल मिष्ट सुधा सम,
मोदमें सूरकिशोर परैं ।।
रङ्ग विपीन में राजत हैं बहु,
संकुल देव रु देवि अनेका ।
रत्न खचीत बने वहु देवल,
चित्रित जाल सचित्र वनेका ।।
मन्दिर खास तहाँ रंगदेविको,
सेवैं सदा सुरजा अहि जेका ।
सूरकिशोर सियापद कंज कि,
होन चहैं सब चेरि असेका ।।

।। कवित्त ।।

बद्रीवन मध्य राजैं शिलानाथ महादेव,
सेवैं सुर, गन्धर्व, किन्नर सुरेस के ।
विल्ववन मध्य वसैं जहाँ कल्यानेश्वर जू,
करम उद्यान मांहि गिरिजा विशेष के ।।

ललित नैपथ्य वन बसैं जालेश्वर शिव,

युग्म पत्र मध्य वन निबसैं क्षीरेश के।

सोहत अशोक बन मध्य नरसिंह महा,

ते किशोरसूर पूज्य मैंथिल नरेश के॥

॥ सवैया ॥

मिथिला पुर ते षट् कोस लसै उत-

राधिप और जहाँ वनु है।

शिवके करको नृपके पण को,

प्रभुके करको परस्यौ धनु है॥

कलि काल ग्रसे धसिहैं धरनी,

निरखो अबहीं जिनको पनु है।

कह सूरकिशोर लगैं कछु ऐसो,

मनो सियारामहि को तनु है॥

पाप—अगार अपार भरे,

नरजन्म अनेकन संचित हारी।

सुकृत भाजन होत तेही छिन,

जेहि मिथिला—सर नैन निहारी॥

मज्जन, पान रु वास करे,

परदक्षिन कै नित आनन्द भारी।

व्योम के वासी प्रशंसा करैं,

तेहि सूरकिशोर य भाग्य अपारी॥

रङ्ग उद्यान महाछबि सागर,
वरणत पार लहै नहिं बानी।
शेष, महेश, गणेश, पुरन्दर,
लोकप विष्णु, विधी मुनि ज्ञानी॥
श्रीमिथिलामँह वास करैं सब,
अर्चन, बन्दन ध्यानहि ठानी।
सूरकिशोर मुमुक्षुन के हित,
ध्यान के हेतु कछूक बखानी॥
फाटिक निर्मित दुर्ग सुदुर्गम,
नीलमनी मय दूसर भ्राजैं।
तीसर बज्रमनी मय अंचित,
वंसछदा वर तुर्य विराजैं॥
पंचम कंचन, षष्ट प्रवाल सु,
सप्तम मानिक मय दुति साजै।
सूरकिशोर ता मध्य विराजत,
भानुमनी नृप दुर्ग सुराजै॥
दुर्गम दुर्ग प्रती परिखा बनि,
रत्नविनिर्मित घाट निसेनी।
श्री कमला जल पूरित तामधि,
मन्द प्रबाह गँभीर लसेनी॥
फूलि रहे जलजात सुगंजत,
कूजत हैं अलि कुक्कुट-श्रेनी।

शीतल मन्द सुगन्ध बयार सु,
सूरकिशोर वहै सुख देनी ॥
सारीफलाकृति अन्दर आपन,
राजि सराफ वनीक वटूरी ।
कोटिन इन्द्रन से व्यवसाइ,
वसे मधि कोश महारय भूरी ॥
वर्ण सुचार वसै चहु में,
निवसै सुप्रजा सर दुर्गलों रूरी ।
षष्ठम में नृप वास करै वहु,
देश के सूरकिशोर सुजूरी ॥

॥ कवित्त ॥

राजदुर्ग मध्य लसै, कृत्रिम उद्यान चारु,
सफल सफूल पत्र, मृदुल सुस्निग्ध हैं ।
तहाँ शैल कृत्रिम हैं, प्राच्य क्रम ते विलोकि,
शृंगाराद्रि औ चित्राद्रि, मध्वाद्री अमीध हैं ॥
चन्द्राद्री सिमन्ताद्री औ, प्रवराद्रि सुवर्णाद्रि,
हिमाद्रि ये अष्ठम, उतंग भासनीध हैं ।
स्वच्छा चित्रा रंगा, गन्धा सुधारत्ना,
लीला हिमा सूर, किशोर मनीध हैं ॥

॥ सवैया ॥

सप्त सुकक्ष विनिर्मित रत्नन,मध्य विभाग विशाल सुहाई ।
हर्म्य मनोहर दोइ तहाँ लस, कुम्भ ध्वजा वहु रङ्गन लाई ॥
प्राचि दिशा सिरकेतु विराजत, पश्चिम ओर कुशध्वज गाई।

सूरकिशोर जे दर्श करैं अघ, जन्म अनेकन संचित जाई ॥

क०—निमि वंशी महराज अमीध ह्रस्व रोमाजु,

घरनी है तीनि ताके वेदन बखानी हैं ।

जेठी शुभजाया जेहि पुत्र दुइ किशोरसूर,

सीरकेतु कुशकेतु लोक सब जानी है ॥

घरनी है दूजी सदा ताके शत्रुजीत यश-

शाली अरिमर्दन रिपुतापन आनी है ॥

तीजी रानी सर्वदा जू ताके महिमङ्गल औ,

वलाकर तेजशाली महावीर्य मानी है ॥

॥ सवैया ॥

श्रीसिरकेतु के भौन के दक्षिण,मन्दिर एक विशाल विराजै ।

चौकन चौक प्रती चहुँ चौघड़ि, भेरी सनाई मृदङ्ग सुबाजै ।

कोटिन रक्षक वीर लसैं तहँ, कञ्चन दण्ड लिये कर भ्राजै ।

सूरकिशोर तहाँ शत्रुजीत जू, राजत सम्पति-सिन्धु अपाजै ॥

फाटिक विद्रुम मानिक मरकत, वज्र सिमन्त पिरोज मनी है

ताकर निर्मित कक्ष सुसप्तम, सौव अनेकन चित्रबनी हैं ॥

मध्य विभाग बने वसु हर्म्य, सुगोख झरोख वितान तनी है ।

भूमि विचित्र सुमध्य मनोहर, मण्डप सूर किशोर भनी है ।

आठहु भौन के मध्य विराजत, भू अविकार विशाल सुहाई ।

फाटिक सेवित भूमि मनोहर, मध्य में मण्डप नाह अथाई ॥

रंग विरंग पिधान वितान, सुयूप-अली नवरङ्ग निकाई ।

सूरकिशोर अभूत बने सब, अंग खचे नव रत्नन भाई ॥

पूरब सौध बने युग सुन्दर, कञ्चन विद्रुम चारु लसो है।
शत्रु सुजीत तहां नृप राजत, त्यों यशशालि तहाँ निवसों है।
दक्षिन भानुमनी युग मन्दिर, जाहि निहारिकै भानु विमोहै।
सूर किशोर तहां अरिमर्दन, श्री रिपुतापन जू विलसों हैं॥
पश्चिम फाटिक हेम विनिर्मित, थान वितान पिधान तने।
महिमंगल और वलाकर जू, सु तहां निवसै सुख-सिन्धु घने।
उत्तर कौस्तुभ रुक्म सुमन्दिर, भास महा सब भांति बने।
तेज सुशालि लसै बसु बन्धु, महावल सूरकिशोर भने॥
श्रीसिरकेतु के भौन ते पश्चिम,साल अगार सु उच्च विराजै।
कक्ष विशाल सुसात लसै तेहि, चिन्तामनी खचि भूमि सुभ्राजै
गोख झरोख की राजि रही लसि, द्वारन कुम्भ ध्वजा बहुराजै
लक्ष्मीनिधि को वर बास मनोहर, राजत सूरकिशोर तहां जै
सीरध्वज मन्दिर उत्तर के दिशि, मन्दिर एक विचित्र विराजै
गोपुर गोपुर चौघड़ि बाजत, शृंगन में रवि-चन्द्र सु भ्राजै॥
छत्र कँगूरन पै सुविहँगम, बात—प्रसंग सुगुञ्जत राजै।
हय गज यान पदाति हैं संकुल, सूरकिशोर महा धन साजै॥
चन्द्रमनी बैडूर्य पिरोज रु, कौस्तुभ कंचन जू प्रवरा हैं।
सिन्धु सुकक्ष मनोहर निर्मित, हर्म्य सुमण्डप द्वारि वरा है॥
शालिध्वजा शुभ वास तहां तिन,शीलवती तिय कीर्ति वरा हैं
तासु सुता प्रिय चन्द्रकला, सुछवी निधि सूरकिशोर सरा हैं॥
सौध विशाल सुपूर्व दिशा इक, सप्त सुकक्ष सुरंग मनी हैं।
खण्ड बने बहु रङ्ग विचित्र, सुकृत्रिम वृक्षलता कमनी हैं॥

मध्य सुचौक विशाल खची मनि, मध्य स्यमन्त की वेदि बनीहैं
तापर शंभु-कोदण्ड विराजत, सूरकिशोर प्रभा अवनी हैं ॥
अग्नि दिशा शतानन्द विराजत, नैऋ्र्त कोण सुहर्म्य सुहावै ।
वायु दिशा वसु मन्त्रिन के गृह, देवन थान इशान सुभावै ॥
रत्न अनेकन कञ्चन मन्दिर, हैं सर-वापी प्रभा अति छावै ।
सूरकिशोर ये मुख्य प्रवान हैं, देवल संहिता में सब गावै ।
श्रीमिथिला पूरब के दिशि, वेग प्रवाह वही कमला हैं ।
रत्नन घाट विचित्र सुवैठक, तीरन सद्मन की सगला हैं ॥
मुनि अरु सिद्ध तहां वहु योगि, वसै समधी तप, योग रला हैं ।
वर्ण सुचारि तहां नर, मज्जत, सूरकिशोर सुमंजु जला हैं ॥
प्रेम की वारि सिया दृग ते चलि, अम्भ-प्रवाह सोई महि चारो
मंजुलता विधु-अंशुहि निन्दत, त्यों दर कुन्द हिमोपल सारो ।
मिष्ट सुधा इव स्वच्छ समुक्त से, पद्म प्रफुल्लित भौर गुजारो
पुण्य सरीन सोई कमला सिधि, सूरकिशोर श्रुती वद सारो ॥
श्री मिथिला पुर मन्दिर-मन्दिर, श्रीकमला बहु धार वही है ।
द्वारन पै फुलवाई लसै कहुं, त्यों सर वापी सुकुण्ड लही हैं ॥
ऊर्ध्वकला वल ताहुं चटै जल, भीतर चौक सुचारु चही है ।
श्री कमला विन नाहिं कहूं जल, देखिय सूरकिशोर सही है ॥

दूलह श्रीरघुवंश–विभूषन,
दुलहिन श्री मिथिलेश लली है ।
कञ्चन मौर सुचारु लसै सिर,
खचै मनि मुक्त सुज्योति रली है ॥

कारे घने घुंघुराले लसे कच,
श्रुति कुण्डल तम–तोम दली है।
राजत हैं मनि मण्डप में दोउ,
सूरकिशोर लखि जात बली है॥
नृप के गृह बाल–विहार करै,
सियकी पद रेनु जहां लहिये।
मुनि बृन्द उपासक राम विवाह,
सोई नित ठौर हिये गहिये॥
कह सूरकिशोर विचारि यही,
हिम–आतप औ वरसो सहिये।
चुरवो चबिकै फलवो भखिकै,
मिथिला महँ बांधि कुटी रहिये॥
पुरातन पूरण पुण्य सुथान,
पुरी सोइ वेद पुराण विशेखी।
सुरगुनि संगम साठि हजार,
अस्नान किये फल वास निमेखी॥
उद्योतन प्रेमकी सूरकिशोर,
उपासक सन्तन की भुवि पेखी।
कहा बहु काल जिये जगमें,
धिग जीवन जो मिथिला नहि देखी॥
निवही तिहुँ लोक में सूरकिशोर,
विजय रनमें निमि के कुल की।

यश जोइ लग्यो सन्दीप लौ कान,
कथा कमनीय रसातल की ॥
मिथिला वसि राम सहाय चहै,
तौ उपासक कौन कहै भल की ।
जिनके कुल वीच सपूत नहीं,
करैं आस दमादन के वल की ॥
उभै कुल दीपति भामिनि जानकि,
लोकहुँ वेद कि लोकन मेटी ।
भरी सुख संपति औधपुरी,
रजधानी सबै लछनासों लपेटी ॥
करैं मिथिला चित सूरकिशोर,
सनेह की वात न जात समेटी ।
कोटिन सुख जो होई ससुरारि,
तो बाप को भौन न भूलत वेटी ॥
सप्त सहस्र किये बध भूसुर,
भ्रून हत्या शत लक्ष विशेखी ॥
धेनु किये बध पान किये मद,
और अनेकन को कर लेखी ॥
जन्म अनेक दहैं अघ संचित,
जो मिथिला कहुं नैनन देखी ।
सूरकिशोर ते पुण्य के सागर,
जे मिथिला कर वास निमेखी ॥

मिथिला सर्वतः पुण्या सर्वाकारेण शोभिता ।
तस्यां निवासिनां पुण्यं मया वक्तुं न शक्यते ।
धन्यास्ते ये प्रयत्नेन निवसन्ति महामुने ।
मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ।
देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते ।।

।। सवैया ।।

कलि काल बड़ो दल साजि चढ़ो,
सब वेद पुरान भये शिथिला ।
साधु कि ठौर असाधु बसे,
सुथिला जेहि ठौर भये कथिला ।।
वरणाश्रम धर्म विचार गये,
द्विज, तीरथ देव भये निथिला ।
रहि और न ठौर कछू जग में,
तब सूरकिशोर तकी मिथिला ।।
मिथिला कलि–काल ग्रसी सगरी,
तब्र जानकि जू झट दै उघरी ।
सत्संग विलास कथा चरचा,
नित आनन्द मंगल होत झरी ।।
अन सों धन सीं पट–भूषन सों,
सुख–सम्पति मन्दिर आनि धरी ।
कह सूरकिशोर कृपा सिय की,
इक वारहिं बात सबै सुधरी ।।

॥ कवित्त ॥

दुस्तर संसार रोग जन्म औ मरन सोग,
नाना तर दुःख भोग दीन अति जीय है ।
श्रुतिहू पुरानहू में कही सोइ छूटबे की,
अमित उपायन की कलि सों अहीय हैं ॥
मति विकलानी तहाँ और न उपाय आनी,
सद् ग्रन्थ भनी सो उपाय इकबीय है ।
सब आश परिहरि मिथिला में वास करि,
सन्तत किशोरसूर भजियत सीय हैं ॥

❀ श्रीजानकी मधुर षोडशी ❀

चिकुराः कुटिलाः सघना मधुराः श्रवणे मधुरे मणिपुष्पयुते ।
अलिकं मधुरं शशिविन्दुयुतं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ॥
भृकुटी मधुरे स्मरचापनिभे पृथुनेत्रयुगं सदयं मधुरम् ।
सुनसं शुकतुण्डपरं मधुरं मिथिलेशसुता–सकलं मधुरम् ॥
ललितं मुकुर--प्रतिमं मधुरं सुकपोलयुगं दशना मधुराः ।
अधरो मधुरश्चिबुकं मधुरं मिथिलेशसुता–सकलं मधुरम् ॥
कलकम्बुगलो मधुरोंऽसयुगं मधुरं करपद्मयुगं मधुरम् ।
करजं मधुरं हृदयं मधुरं मिथिलेशसुता–सकलं मधुरम् ॥
उदरं मधुरं त्रिवली मधुरा मधुरा सुकटी रशनोल्लसिता ।
मधुरे जघने घुटिके मधुरे मिथिलेशसुता–सकलं मधुरम् ॥
चरणाम्बुरुहं युगलं मधुरं शुकवृन्दगतं प्रपदं मधुरम् ।
पदजं तिमिरैकहरं मधुरं मिथिलेशसुता–सकलं मधुरम् ॥

विमलं मृदुलं वसनं मधुरं मधुरं मधुरं सकलाभरणम् ।
कमनं शिशु–संहननं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
मधुरं मधुरं गमनं मधुरं मधुरं मधुरम् स्खलनं मधुरम् ।
मधुरम् भ्रमणं कलनं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।
अयनं मधुरं चयनं मधुरं शयनं मधुरं श्रयणं मधुरम् ।
अशनं मधुरं हसनं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
स्वनितं मधुरं श्वसितं मधुरं विहितं मधुरं निहितं मधुरम् ।
प्रथितं मधुरं क्वणितं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
मृगितं मधुरम् विदितं मधुरम् गलितं मधुरम् वलितं मधुरम्।
श्रुतिगं मधुरम् मुखगं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
मधुरं मधुरम् चरितं मधुरम् मधुरम् मधुरम् भणितं मधुरम् ।
मधुरं मधुरं मिलनं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
श्रवणं मधुरं स्मरणं मधुरं कथनं मधुरं मननं मधुरम् ।
वरणं मधुरं भरणं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
प्रणता मधुराः प्रणतिर्मधुरा प्रणयो मधुरः करुणा मधुरा ।
सरणिर्मधुरा ग्रहणं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
निगमो मधुरः प्रकृतिर्मधुरा जयनं मधुरं रटनं मधुरम् ।
महितं मधुरं रसितं मधुरम् मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।
जनको मधुरो जननी मधुरा मधुरा अनुजा अनुगा मधुराः ।
सुकुलं मधुरं नगरं मधुरं मिथिलेशसुता-सकलं मधुरम् ।।

॥ कवित्त ॥

देश विदेश अनुप पूर्व उत्तर दिशि तिरहुति ।
रसा ऊर्वराभूमि सकल सम्पत्ति बस वुती ॥
भूमि भाल जियजानु तिलक रचना मिथिला है ।
वर्णत महिमा जासु शेष शारद शिथिला है ॥

देश सुहावन पावन वेद बखानिय ।
भूमि तिलक सम तिरहुति त्रिभुवन जानिय ॥
जगत जलधि तिरहुति कमल, जनकनगर मकरंद ।
प्रेमलता सिय गन्ध शुचि, भ्रमर सु रघुकुल चन्द ॥
तहँ बस नगर जनकपुर परम उजागर ।
कहिसक एक सीता लच्छि जहँ प्रगटी सुखसागर ॥
जग में तीरथधाम बहु अवध समान न एक ।
मिथिला सरिस न अवध सो जानहिं विमल विवेक ॥
जानहि विमल विवेक यहाँ नहिं हठ के कामा ।
परब्रह्म श्रीराम भये लखि चकित ललामा ॥
सिय विभूति ऐश्वर्य, अकथ गुण महिमा जगमें ।
'प्रेमलता' यह रहस गुप्त अति प्रगट न जगमें ॥
मिथिलासी मिथिला सियसी सिय राम से कहते हैं ।
समता जोगन अपरदेव त्रय जिन्हकी पदरज चहते हैं ॥
नमो नमो श्रीजानकी, नमो जनकपुर धाम ।
धनुष तोड़ि दुलहा बने, जहाँ परात्पर राम ॥

मेरे मिथिला देश में धारयो दुलह वेष ।
याते यहि उपासना, चाहिए हमें हमेश ।।
श्रीमिथिला महिमा अकल, निगमा गमहुं न अन्त ।
सो मैं वरणौ कवन विधि, वरणि न सकै अनन्त ।।
दो०-मिथिला मंगल मोदप्रद, नव दुलह चितचोर ।
जनकदुलारी सहित नित, राजत अवध किशोर ।।
धन्य महल सियालाल की, कनकभवन रसधाम ।
विरहत सिय रघुलाल जहाँ,संग अमितवर वाम ।।
सो०-को कहि सकहि प्रभाव, शोभा सीता महल की ।
सुखमा अवधि स्वभाव, सियालाल विलसत जहाँ ।।
अमित महल आदर्शमणी, रचित अली जहाँ सोह ।
रघुवर नित्य विलाश सिय, लखि रतिमन मथमोह ।।
कांचन वन विपिन चरित्र शुभ,सुखप्रद नित्य नवीन ।
सजहि विमल अलिगन नव रसिकन मन सुमीन ।।
चरित विमल निमिवंश वर, पुरी विपिन वर आल ।
विहरत नित्य अखंड जहाँ, रसिक सियावर लाल ।।

।। श्री ह्रस्वरोम महाराज जी का विवाह ।।

वारहलाख्ये कौवेर्य्यां देशे वृन्दारको नृपः ।
वंश्योऽर्क भास्वरस्तस्य जाज्याया वल्लभोऽभवत् ।।
वलायतवलोन्नाथौ तस्य पुत्रौ बभूवतुः ।
शुभजायाऽभवत्पुत्री ह्रस्वरोम्णे तु साऽर्पिता ।।

पूर्व-उत्तर कोणमें बारहल नामके देशमें एक श्रीवृन्दारकजी नाम के राजा हुये हैं, उनके वंश में श्रीअर्कभास्वर महाराज हुये, जिनकी महाराणी श्रीजाज्याजी हुई और उनके श्रीवलायतजी श्रीपलोन्नायजी ये दो पुत्र और श्रीशुभजाया नामकी पुत्री हुई, जो श्रीह्रस्वरोमा महाराज को बिवाही गयीं।

तस्याः पुत्रौ महाभागौ सीरध्वजकुशध्वजौ।
पौत्र्यश्चरूपशालिन्यो भूमिजाद्या मनोहराः॥

उन्हीं श्रीशुभजाया महाराणी के श्रीसीरध्वज महाराज, श्रीकुशध्वज महाराज ये दो पुत्र हुये श्रीकिशोरीजी आदि मनोहर परम रूपवती पुत्रों की पुत्रियाँ हुई।

पूर्वदक्षिणके कोणे विकाशाया महीपतेः।
श्रीभूरिमेधसः पुत्रौ सुमालः कुण्डलस्तथा॥

पूर्व और दक्षिण के कोण में एक विकाशा नाम की पुरी थी वहाँ के राजा श्रीभूरिमेधा महाराज हुये, उनके श्रीसुमालजी व श्रीकुण्डलजी नाम के दो पुत्र हुये।

सुनेत्राकान्तिमत्यौ च सुधाग्रायां बभूवतुः।
अर्पिते सादरं तेन श्रीमत्सीरध्वजाय ते॥

श्रीभूरिमेधा महाराज की श्रीसुधाग्रा महाराणी से श्री शुनयना जी, श्रीकान्तिमतीजी ये दो पुत्रियाँ हुईं। उन दोनों को श्रीभूरिमेधा महाराज ने श्री सीरध्वज महाराज के लिये अर्पण कर दिये।

भूरिमेधोऽनुजः श्रीमान् ज्ञानमेधाः प्रतापवान् ।
गुणाग्रायां तु तत्पत्न्यां जातौ श्रीवीरकान्तकौ ॥

श्रीभूरिमेधा महाराजके छोटे भाई श्रीज्ञानमेधा महाराज बड़े प्रतापी हुये, उनकी गुणाग्रा महारानी से, श्रीवीर, श्रीकान्त, ये दो पुत्र हुये ।

सुदर्शनासुभद्राख्ये तथा तस्यां बभूवतुः ।
बिवाहिते उभे पुत्र्यौ श्रीमद्दर्भध्वजेन ते ॥

तथा उन्हीं महारानीजी से श्रीसुदर्शनाजी, श्रीसुभद्राजी ये दो पुत्रियाँ हुईं । उन दोनों का विवाह श्रीकुशध्वज-महाराज के साथ सम्पन्न हुआ ।

❁ श्रीकिशोरी जू की ननिहाल ❁

अगिनि कोनमें पुरी विकासा । उभयभ्रात नृपकरत निवासा ।
नाम भूरि मेधा जिय जानो । ज्ञान सु मेधा अपर बखानो ॥
श्रीसुधाग्रा प्रिय पटरानी । भूरि सु मेधा की जिय जानी ॥
तिन की पुत्री श्री सुनयना । अम्बा कान्ति मती पुनी भैना ॥
उभय पुत्र पुनि परम सयाने । कुंडल श्री सुमाल जिय जाने ॥
श्रीगुनग्रा दूसरि रानी । ज्ञान सु मेधा की गुण खानी ॥
सुदर्शना सुभद्रा । दोऊ सरस सकल गुण सिध्या ॥
वीर कान्ति युग पुत्र मनोहर । मामा चतुर जानु ये सुन्दर ॥
श्रीसिरध्वज नृप की जगजानी । श्री सुनयना प्रिय पटरानी ॥
काँति मती पुनि सुभग सयानी । पतिसेवा रतिमन क्रमबानी ।
दो०-चाचा श्रीकुश ध्वज्ज के, उभय भई पटरानि ।
सुदर्शना सुभद्रा, प्रिय परम सयानि ॥

उभय पुत्र प्रिय पाय नरेशू । भे कृत कृत कछु रहेउ न शेषू ।।
श्रीलक्ष्मीनिधि और गुनाकर । परमसुहृद दोउ सरस सुछविधर
सुनिधि निधानक पुनि दोउ भ्राता । कुसध्वज नृपसुत विख्याता
अब चहुँभाइनकी जहँ व्याहा । भयउ चरित सो सुनु अवगाहा
पुरी विडालीका दक्षिन देसू । श्रीधर निवसत तहाँ नरेसू ।।
तिय सु कांतिका परम सयानी । पुत्री चतुर सुनन्दा बानी ।।
सिध्या पुनि ऊषा छबिरासी । परम प्रीति रस रहस प्रकासी ।

दो०-उभय पुत्र श्रीकान्ति धर, श्रीयसोधर भ्रात ।
दोऊ नेह निधि सरस सुचि, भयउ भूवन विख्यात ।
श्रीसिध्या को ब्याह वर, भयो लक्ष्मीनिधि साथ ।
वाणी पुनि व्याही गई, कुँवर गुणाकर हाथ ।।
ऊषा सुनिधि सु संगवर, व्याह उछाह अनूप ।
श्रीनिधानक संग सुचि, नन्दा नित्य निरूप ।।

वसो किन राजावन जनके नगरिया सुख दैया ।
मुदु मुसुकाय हरोमन मेरो डारी नेह रसरिया ।।
रसिक रमन चितवन चितचोरन मारी नैन कटिया ।
यहिपुर विच बसाय जनकपुर निकट विदेह बखरिया ।।
सनमुख महल किशोरीजु के रुचि सुचि कनक अटरिया ।
विमल चाँदनी चौक चमन की सुतरु सुगंध डगरिया ।।
सदा बसंत समीर विविध तहँ बिचरहुँ मोद बजरिया ।
ललना ललकि मिलैनित लालहिं सीयसरिस प्रियसरिया ।

सवहि सनाथ करो राज वनरे अतिप्यारी ससुररिया।
हास विलास विविध विधि विलसहु करो परसपररिया ।।
करहि कटाक्ष सुमुख मृगनैनी सरहज मारे नजरिया।
मौन मुदित नित अवधनगर को भेजत रहियो खबरिया ।।

मनोहर मैथिजी जू को धाम ।
मन मोहत जो मोहन जू को मंगल–मोद निधान ।
विष्णु–विरञ्चि–रहत अरुझाये ललित लतन्ह वसुयाम ।
शुक–पिक बनि सुर-वनिता कूजत, सियको नाम ललाम ।
चौदह भुवन तीनि लोकन्ह के, पावन तीर्थ तमाम ।
'प्रेमनिधी' रज कण पर वारों, जय श्री मिथिला धाम ।

मिथिला नगरिया हमर, प्राण के अधार रे ।
मिथिला नगरिया तीनू, लोक के सिंगार रे ।।
मिथिला नगरिया पै, जीवन बलिहार रे ।
मिथिला नगरिया को, लाखों नमस्कार रे ।।
मिथिला की महिमा गावैं, देव सरदार रे ।
मिथिला निवासी संत–रसिक उदार रे ।।
मिथिला न छिन भर छोड़ें दुलहा सरकार रे ।
'प्रेमनिधी' मिथिला की बोलो जयजय कार रे।